बेंजामिन फ्रेंकलिन की आत्मकथा

कार्ल वॉन डोरिन

हिंदी: रमेश वर्मा

अनुवादक : रमेश वर्मा

मूल्य	:	तीन रुपए
प्रथम संस्करण	:	सितम्बर १९५८
प्रकाशक	:	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक	:	इण्डिया प्रिंटर्स, दिल्ली

ट्वायफर्ड, सैंट आसफ के बिशप का निवासस्थान, १७७१

प्रिय बेटे ! अपने पुरखो के जीवन की छोटी से छोटी घटनाओ की जानकारी प्राप्त करने मे मुझे हमेशा खुशी मिलती रही है। तुम्हे याद होगा कि इगलैड मे जब तुम मेरे साथ थे तब मैंने अपने बचे-खुचे सम्बन्धियो से इस विषय मे पूछताछ की थी और इसी उद्देश्य से एक यात्रा भी की थी। मेरा ख्याल है कि मेरे जीवन की अनेक परिस्थितियो को जानने मे भी तुम्हे उतनी ही रुचि होगी क्योकि उनमे से अनेक को तुम अभी तक नही जानते। साथ ही मुझे आशा है कि अपने इस देहात के मकान मे एक हफ्ते के अबाधित आराम का सुख मुझे प्राप्त होगा। इसीलिए उन परिस्थितियो को तुम्हारे लिए लिपिबद्ध किये डाल रहा हूँ। कुछ और चीजे भी मुझे इस दिशा मे प्रेरित कर रही हूँ। मेरा जन्म और पालनपोषण अकिंचनता और अधकार मे हुआ था, लेकिन उनसे ऊपर उठकर मैं समृद्धि और कुछ हद तक सासारिक प्रसिद्धि पा सकने मे सफल हो सका हूँ और अपने जीवन का इतना भाग मैंने काफी सन्तोप के साथ बिताया है। मेरा विचार है कि आगे आने वाली पीढियाँ उन उपायो को जानना चाहेगी जो ईश्वर की परम कृपा से, मुझे आगे बढा सकने मे भली प्रकार सफल हुए है, क्योकि बहुत सम्भव है कि उनमे से कुछ उपाय उनकी अपनी परिस्थितियो मे काम आ सकने वाले अत. अनुसरण योग्य हो।

इस सन्तोष के बारे मे सोचते-सोचते कभी-कभी मैं यह कहने को भी प्रेरित हो उठा हूँ कि मेरी राय ली जाय तो एक बार फिर मैं शुरू से वही जिन्दगी बिताने मे कोई आपत्ति न करूँगा ; हाँ, लेखको की तरह पहले सस्करण की गलतियो को सुधारने का लाभ जरूर उठाना चाहूँगा।

तब मैं शायद गलतियो को सुधारने के साथ-साथ कुछ दुर्भाग्यपूर्ण संयोगो और घटनाओ को अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल घटनाओ से स्थानान्तरित कर दूंगा। परन्तु यह अधिकार न पाने पर भी मुझे उस जीवन की पुनरावृत्ति स्वीकार होगी। किन्तु चूंकि इस आवृत्ति की आशा नही की जानी चाहिए, इसलिए उस जीवन को अपनी स्मृति मे जाग्रत करना और उसे अधिकाधिक स्थायी बनाने के लिए शब्दबद्ध कर देना ही उसकी पुनरावृत्ति के अधिकाधिक समीप है।

बूढे आदमियो मे एक प्रवृत्ति होती है—अपनी और बीते दिनो के अपने कारनामो की बाते करना। आगे मैं भी यही करूँगा। लेकिन इस ढंग से करूँगा कि मेरी बातें किसी को उबाएँ नही, क्योकि उम्र का लिहाज करके वे मुझे अपनी बात कह तो जरूर लेने देगे लेकिन पढना न पढना तो उन्ही की इच्छा पर निर्भर है। और आखिर मे मैं यह भी कह दूं (क्योकि मैं जानता हूँ मेरे इन्कार करने पर किसी को विश्वास न होगा) कि ऐसा करके मैं अपनी अहभावना को शायद काफी हद तक तृप्त कर सकूंगा। मैंने तो कम से कम कभी नही देखा या सुना कि "अहंकार-रहित होकर मै कह सकता हूँ" आदि भूमिका के शब्दो के फौरन बाद ही किसी ने कोई अहकारयुक्त बात लिखी या कही न हो। अधिकतर व्यक्ति अपने अभिमान के बावजूद दूसरो के अभिमान को नापसन्द करते हैं; लेकिन मुझे अनुभव है कि अहकारी व्यक्ति का 'अह' भी अक्सर उसे और प्रभावक्षेत्र के भीतर के दूसरे आदमियो को लाभ पहुँचाता है, और इसीलिए मैं उसे उचित स्थान देता हूँ। अत' अगर कोई आदमी जीवन की अन्य सुविधाओ के साथ-साथ अपने अहं के लिए भी ईश्वर को धन्यवाद दे तो यह नितान्त असगत नही होगा।

ईश्वर को धन्यवाद देने की बात आ गई है तो मैं सम्पूर्ण नम्रता के साथ स्वीकार कर लेना चाहता हूँ कि अपने जीवन की प्रसन्नता मुझे परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से ही मिल सकी है। इसी कृपा

ने मुझे वे उपाय दिये जिनका उपयोग मैंने किया, और इसी कृपा ने उन्हे सफल बनाया। इसी विश्वास से प्रेरित होकर मैं आशा करता हूँ, दृढतापूर्वक तो कुछ कह ही नही सकता, कि भविष्य मे भी उनकी यही कृपा मुझ पर बनी रहेगी, जिससे मेरी प्रसन्नता कायम रहे अथवा परिस्थितियाँ विपरीत हो जाने पर—क्योकि दूसरो के समान दुख मुझ पर भी पड सकता है—उन्हे सहने की शक्ति मुझमे उत्पन्न हो। मेरे भविष्य का स्वरूप केवल उसी को मालूम है, जो हमारी पीडाओ को भी हमारे लिए वरदान बना सकने मे समर्थ है।

मेरे एक चाचा मेरी ही तरह अपने कुल की घटनाओ का सग्रह करने के शौकीन थे। उनके "नोट्स" एक बार मेरे हाथो मे पड गये थे और उन्ही से मुझे अपने पुरखो के वारे मे कई बाते मालूम हुई थी। उन्ही से मुझे पता लगा था कि हमारा वश नाथेम्पटनशायर के एक गाँव एक्टन मे ३०० वरसो से रह रहा था। उससे भी पहले कब से एक्टन हमारा निवासस्थान था, यह उन्हे मालूम था (शायद उस समय से वे वहाँ रह रहे थे जब सारे राज्य के निवासियो ने अपने नामो के आगे उपनाम जोडे थे और उन्होने "फ्रैंकलिन" लगा लिया था, जो पहले एक पद का नाम था)। उनके पास भूमिकर-मुक्त ३० एकड जमीन थी और लोहारी का काम होता था। सब से बडे लडके को हमेशा यही धधा सिखाया जाता था और यह क्रम उनके समय तक चला आया था। मेरे पिता और इन चाचा ने भी अपने सबसे बडे लडको के सम्बन्ध मे इसी परम्परा का पालन किया। एक्टन मे रजिस्टरो का निरीक्षण करने पर मुझे सिर्फ १५५५ के बाद अपने कुल के जन्म, विवाह और मृत्यु का विवरण मिला, इससे पहले वहाँ रजिस्टर ही नही रक्खे जाते थे। उसी रजिस्टर से मुझे पता चला कि मैं पाँच पीढियो तक सबसे छोटे लडके का सबसे छोटा लडका हूँ। मेरे बाबा का जन्म १५९८ मे हुआ था और जब तक वे काफी बूढे और काम करने के सर्वथा अयोग्य नही हो गये तब तक एक्टन मे ही रहे। तब वे आक्सफोर्डशायर के बैनबरी

नामक गाँव मे अपने लडके जान के साथ रहने लगे। जान रंगरेज थे और मेरे पिता ने उन्ही के यहाँ रगाई का काम सीखा था। वही उनकी मृत्यु हुई और वही दफनाया गया। हमने उनकी कब्र का पत्थर १७५८ मे देखा था। उनके बडे पुत्र टामस एक्टन के मकान मे रहे और मरने के बाद मकान और जमीन दोनो अपनी एकमात्र सन्तान–एक पुत्री–के लिए छोड गये। पुत्री और उसके पति वैंलिगब्रारो के निवासी श्री फिशर ने यह सम्पत्ति श्री इस्टेड के हाथो बेच दी। श्री इस्टेड आज भी उसके स्वामी है। मेरे बाबा के चार लडके थे जो वय को प्राप्त हुए थे—टामस, जान, बैन्जामिन और जीसाया। अपने विवरणपत्रो से इतनी दूर होने पर भी मैं यथाशक्ति उनके बारे मे बताऊँगा, और अगर मेरी अनुपस्थिति मे वे कागज खो न गये हो तो उनसे तुम और ज्यादा बातें जान सकोगे।

टामस को अपने पिता से लोहारी की शिक्षा मिली थी; लेकिन उनकी बुद्धि तीव्र थी और "पेरिश" के तत्कालीन प्रमुख सभ्य एस्क्वा-यर पामर ने उन्हे विद्यार्जन मे आगे बढाया था (जैसा उन्होने मेरे सभी भाइयो के साथ भी किया)। फलस्वरूप वे दस्तावेज लेखक के काम के योग्य हो गए और अपने इलाके मे उनका प्रभाव काफी बढ गया। नार्थेम्पटन शहर या काउन्टी[1] या अपने गाँव की जनता की भलाई के सारे कामो के अगुआ वे ही रहते थे; उनके ऐसे कामो के अनेक उदाहरण मुझे सुनाये गये थे। तत्कालीन लार्ड हैलीफैकस अनेक कार्यो का महत्त्व समझकर उनको प्रोत्साहन देने लगे। एक्टन के कुछ बूढे आदमियो द्वारा उनके जीवन और चरित्र का जो विवरण हमे मिला था, मुझे याद है वह तुम्हे असाधारण मालूम पडा था क्योकि उसमे और मेरे जीवन व चरित्र मे अत्यधिक समानता थी। तुमने कहा था यदि "उसी दिन उनकी मृत्यु

---

१. काउन्टी . ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड का भूभाग, जैसे हमारे देश में जिला होता है।

हुई होती तो यही समझा जाता कि उनकी आत्मा आपमे आ गई है।"

जान को रगाई की, और मेरा विश्वास है ऊनी कपडो की रगाई की, शिक्षा दी गई थी। बैंजामिन लन्दन मे रेशमी कपडो की रगाई का काम सीख रहे थे। वे बडे चतुर आदमी थे। मुझे उनकी खूब याद है, क्योकि जब मैं बच्चा था तब वे मेरे पिता के पास बोस्टन पहुँचे थे और कुछ बरसो तक हमारे साथ उसी घर मे रहे थे। उनकी उम्र बडी लम्बी हुई। उनका पोता सैम्युएल फ्रैंकलिन अब बोस्टन मे रहता है। वे मरने पर अपनी कविताओ की दो हस्तलिखित पाडुलिपियाँ छोड गये थे। उनमे अपने दोस्तो और सम्बन्धियो को सम्बोधित करके समय-समय पर लिखी गई उनकी कविताए सगृहीत थी। उन्होने एक "शार्टहैंड" की विधि का आविष्कार किया था, जिसे उन्होने मुझे सिखाया था लेकिन अभ्यास न करने के कारण मै अब उसे भूल गया हूँ। उनमे और मेरे पिता मे एक विशेष प्रकार का स्नेह-सम्बन्ध था, इसलिए मेरा नाम उनके नाम पर बैंजामिन रख दिया गया। वे बडे सात्त्विक पुरुष थे और अच्छे धर्मोपदेशको के प्रवचनो को सुनने के बडे शौकीन थे। इन प्रवचनो को वे अपनी शार्टहैण्ड मे लिख लिया करते थे और इस तरह उनके पास प्रवचनो के कई सग्रह हो गये थे। वे राजनीतिज्ञ भी थे, बल्कि अपनी स्थिति से कही ज्यादा राजनीतिज्ञ। पिछले दिनो लन्दन मे एक सग्रह मेरे हाथ लग गया था जिसमे उन्होने १६४१ से लेकर १७१७ तक के सभी प्रमुख जन-सम्पर्क पैम्फलैटो का सकलन किया था। उन पर पडी संख्याओ से मालूम पडता है कि कई खड अभी तक नही मिल सके है, लेकिन तिस पर भी बडे आकार के आठ और छोटे आकार के चौबीस खड तो मौजूद हैं ही। पुरानी किताबो के एक व्यापारी को यह जिल्दे कही मिल गई थी और कभी मैंने उससे कुछ खरीदा था सो उसे मेरी याद थी और उन्हे वह मेरे पास ले आया था। लगता है पचपन बरस पहले अमेरिका जाते समय चाचा उन्हे यही छोड गये होगे। हाशियो पर उनकी लिखी अनेक टिप्पणियाँ मौजूद हैं।

हमारा यह अज्ञात कुल धार्मिक विप्लव[1] के समय प्रोटेस्टैंट[2] मताव-लम्वी था और महारानी मेरी के शासनकाल मे भी प्रोटेस्टैंट ही रहा। मेरे पूर्वज इस वीच पोप के धर्म का विरोध करने मे अधिक सक्रिय होने के कारण कभी-कभी मुसीवतों के खतरे मे भी रहा करते थे। उनके पास एक अगरेजी वाइविल थी, जिसे छिपाने और सुरक्षित रखने के लिए फीतो की मदद से एक स्टूल के नीचे वाँध दिया गया था। मेरे वावा के वावा जब अपने परिवार को वाइविल सुनाने वैठते थे तो स्टूल को उलटकर घुटनो पर रख लेते थे और फीतो के नीचे ही उसके पन्ने उलटा करते थे। एक बच्चा दरवाजे पर खडा कर दिया जाता था कि अगर धार्मिक न्यायालय का अधिकारी "अपैरिटर" आता दिखाई दे तो वह फौरन भीतर खवर कर दे। अगर वह आता दिखाई पडता तो स्टूल फिर सीधा खड़ा कर दिया जाता और बाइविल पहले की तरह उसके नीचे छिप जाती। यह बात मुझे वेंजामिन चाचा ने ही सुनाई थी। चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल के लगभग अन्त तक हमारा सम्पूर्ण परिवार इगलैण्ड के चर्च को ही मानता रहा। तभी कुछ पादरियो को नियमोल्लघन के अपराध मे चर्च से अलग कर दिया गया और वे नौर्थैम्प्टनशायर मे धर्मसभाए आयोजित करने लगे तो वेंजामिन और जोसिया उनके साथ हो लिये और मृत्युपर्यन्त उन्ही के अनुयायी रहे। शेप सारा परिवार एपिस्कोपल चर्च[3] का अनुयायी वना रहा।

मेरे पिता जोसिया ने छोटी उम्र मे ही विवाह कर लिया था और १६८२ के लगभग अपनी पत्नी और तीन बच्चो सहित न्यू इगलैण्ड आ पहुँचे थे। धर्मसभाएँ कानून द्वारा निपिद्ध करार दी गई थी और अकसर

---

१. धार्मिक विप्लव (Reformation) : प्राचीन ईसाई धर्म में रूढिवाद के विरुद्ध धार्मिक सुधार का आन्दोलन।

२ प्रोटेस्टैंट (Protestant) नया सुधारवादी ईसाइयों का सम्प्रदाय।

३. एपिस्कोपल चर्च : पादरियों द्वारा शासित चर्च।

उनमे अडगे डाले जाते थे। इसी से प्रेरित होकर उनकी जान-पहचान के अनेक व्यक्तियो ने अमरिका जाने का निश्चय किया और मेरे पिता को भी उनका साथ देना पडा। उन्हें आशा थी कि नये देश मे पूरी आजादी के साथ वे अपने धर्म का पालन कर सकेंगे। वहाँ पहली पत्नी से उनके चार बच्चे और हुए तथा दूसरी पत्नी से दस और, यानी कुल मिलाकर सत्रह बच्चे। इनमे से तेरह को अपने पिता के साथ खाने की मेज पर बैठे देखना भी तो मुझे याद है। सभी बडे हुए और सभी ने शादियाँ की। मैं सबसे छोटा लडका आखिर से तीसरी सन्तान था और न्यू इगलैण्ड के बोस्टन नगर मे पैदा हुआ था। मेरी माता, मेरे पिता की दूसरी पत्नी, न्यू इगलैंड मे सबसे पहले आकर बस जाने वालो मे से एक पीटर फाल्जर की पुत्री अबाया फाल्जर थी। काटन मेथर ने अपने उस देश के चर्च के इतिहास "मैग्नालिया क्राइस्टी अमेरीकाना" (Magnalia Christi Americana) मे सम्मानपूर्वक पीटर फाल्जर का नाम लिया है और अगर मुझे शब्द ठीक-ठीक याद है तो "सात्विक, विद्वान् अंगरेज" कहा है। मैंने सुना है कि कभी-कभी वे कुछ स्फुट कविताए लिखा करते थे लेकिन छपी उनमे से केवल एक थी जिसे मैंने अब से कुछ साल पहले देखा था। वह १६७५ मे तत्कालीन साधारण, सबकी समझ मे आ सकने वाले पद्य मे उस समय की सरकार से सम्बन्धित व्यक्तियो को सम्बोधित करते हुए लिखी गई थी। वह बैप्टिस्ट,[1] क्वेकर[2] तथा अन्य मतावलम्बियो की ओर से, जिन्हे तरह-तरह से तंग किया जा रहा था, आत्मिक स्वाधीनता के पक्ष मे था। उसमे आदिवासियो के साथ युद्धो और देश पर आ पडने वाली दूसरी विपत्तियो को इसी उत्पीडन का परिणाम बताते हुए कहा गया था कि परमपिता परमात्मा ने इन भयानक अपराधो के लिए दडस्वरूप ये विपत्तियाँ भेजी है। और आखिर मे लोगो से उन कठोर कानूनो को

---

१. बैप्टिस्ट (Baptist) ईसाई धर्म का एक सम्प्रदाय।

२. क्वेकर (Quaker) ईसाई धर्म का एक सम्प्रदाय।

न मानने की अपील की गई थी। मुझे लगा, वह काफी सम्मानयुक्त सादगी और पुरुषोचित स्वतन्त्रता के साथ लिखी गई थी। आखिर की छः पंक्तियाँ मुझे याद है हालाँकि इस अश की पहली दो लाइने मैं भूल गया हूँ; लेकिन उनका आशय यही था कि मैंने केवल सदाशयता से ही परनिन्दा की है, इसलिए लोग मुझे इसका लेखक मानें—

"क्योंकि परनिन्दा (उनका कथन है)
मै अपने सम्पूर्ण हृदय से घृणित मानता हूँ;
(अतः) शेरबर्न नगर से, जहाँ मैं आजकल रहता हूँ;
अपना नाम घोषित कर रहा हूँ;
अन्यथा न समझो, मै हूँ तुम्हारा सच्चा दोस्त
पीटर फ़ाल्जियर।"

मेरे सभी बडे भाइयो को अलग-अलग धन्धे सीखने के लिए लगा दिया गया था। लेकिन मेरे पिता का इरादा मुझे, अपने बेटो के दसवें भाग के रूप मे, चर्च की सेवा मे अर्पित कर देने का था, इसलिए आठ साल की उम्र मे मुझे ग्रामर स्कूल मे भरती करा दिया गया। लिखने-पढ़ने की उत्कण्ठा मुझमे बचपन से ही थी (निश्चय ही यह बहुत कम उम्र मे ही पनपी होगी, क्योकि जब से मैंने होश सम्हाला था तभी से लिख-पढ सकता था) और उनके मित्रो की राय थी कि मैं जरूर अच्छा विद्यार्थी बनूंगा। इन दोनो कारणो से मुझे पढाने मे उन्हे काफी उत्साह था। चाचा बैंजामिन को भी यह पसन्द था। उन्होने तो यहाँ तक प्रस्तावित किया कि अगर मैं उनकी शार्टहैण्ड विधि सीख लूं तो वे अपने सारे शार्टहैण्ड मे लिखे धर्मोपदेश मुझे दे देंगे, जिससे (मेरा ख्याल है) मुझे अपने कार्य को स्थापित करने मे सहायता मिल सके। फिर भी ग्रामर स्कूल मे मैं पूरा एक साल भी न पढ सका, हालांकि इतने ही समय मे मैं कक्षा का एक साधारण विद्यार्थी न रहकर धीरे-धीरे सबका अगुआ बन गया था और फिर दूसरी कक्षा मे चढा दिया गया था जिससे साल के अन्त तक तीसरी कक्षा मे पहुँच जाऊँ। लेकिन इसी

बीच मेरे पिता का पहला इरादा बदल गया और उन्होने मुझे ग्रामर स्कूल से उठाकर गणित और दस्तावेज सीखने के लिए दूसरे स्कूल मे दाखिल करा दिया। अपने मित्रो को इसका कारण बताते हुए मैंने उनकी बाते सुनी थी कि उनका परिवार बहुत बडा है और कालेज की शिक्षा का खर्च निकालना उनके लिए बडा मुश्किल होता है; और फिर पढने-लिखने के बाद भी तो लोग अपना खर्च बडी मुश्किल से चला पाते है। मेरा यह दूसरा स्कूल उस समय के मशहूर व्यक्ति श्री जार्ज ब्राउनेल द्वारा सचालित था। अपने नम्र, उत्साहवर्द्धक तरीको से वे अपने काम मे सामान्यत काफी सफल माने जाते थे। उनकी शिष्यता मे मैं अच्छे दस्तावेज लिखना तो जल्दी ही सीख गया, लेकिन गणित मे ज़रा भी प्रगति न कर सका और फेल हो गया। दस बरस की उम्र मे मैं फिर अपने पिता को उनके धन्धे मे सहायता देने के लिए घर वापस आ गया। वे उस समय चर्बी की मोमबत्ती और साबुन का व्यापार करते थे। यह धन्धा उन्होने शुरू से नही सीखा था बल्कि न्यू इगलैंड मे पहुँचकर अपना लिया था, क्योकि पहुँचते ही उन्हे मालूम हो गया था कि रगाई की माग वहाँ बहुत कम है और उससे परिवार का खर्च नही चल सकता। मेरा काम वहाँ मोमबत्तियो के लिए बत्तियाँ काटना, पिघलते मोम को साचो मे डालकर मोमबत्तियाँ बनाना, दूकान पर बैठना, फेरी लगाना आदि था।

मुझे यह कारोबार नापसन्द था। समुद्र के प्रति मेरी बडी रुझान थी लेकिन मेरे पिता ने तो जैसे उसके विरुद्ध ऐलान कर दिया था। लेकिन समुद्र के पास रहने के कारण मैं पानी के पास काफी घूमा करता और उसमे नहाया करता था। बचपन मे ही अच्छी तरह तैरना सीख गया था और नाव भी खेने लगा था। बडी या छोटी नाव मे दूसरे लडके भी जब मेरे साथ होते तो साधारणतः मैं ही उनका अगुआ बनाया जाता था, विशेष रूप से कठिनाई की हालत मे तो मेरा ही हुकुम चलता था। दूसरे अवसरो पर मैं लडको का नेता होता था और कभी-कभी उन्हे परेशानियो मे भी डाल देता था। इस तरह का सिर्फ़ एक उदाहरण

मैं तुम्हारे सामने रख रहा हूँ क्योंकि इससे पता चलता है कि बचपन मे ही मुझमे लोकसेवा की भावना उदय हो चुकी थी, यद्यपि तब उसका उचित उपयोग नही होता था।

खाडी के पानी को कुछ हद तक घेरे हुए खारे पानी का एक दलदल-सा था। जब ज्वार आता था तो हम उसके किनारे खडे होकर "मिनो" नामक मछलियाँ पकडा करते थे।

खूब चल-चलकर हम उस दलदली जमीन को कुछ पुख्ता कर पाये थे। मैंने अपने साथियो के सामने एक प्रस्ताव रक्खा कि वहाँ एक घाट बनाया जाय जिसपर ठीक तरह से खड़ा हो सके और पत्थरो के एक बडे ढेर की तरफ ध्यान आकर्षित किया। पत्थर दलदल के समीप बनाये जाने वाले एक नये मकान के लिए इकट्ठा किये गये थे और हमारे उद्देश्य को भली प्रकार पूरा कर सकते थे। योजना के अनुसार, शाम होने पर जब सारे मजदूर चले गये, मैंने अपने सभी खिलाडी साथियो को एकत्र किया और चीटियो की तरह काम करते हुए—कभी-कभी तो एक पत्थर को दो-तीन आदमी मिलाकर उठाते थे—हमने सारे पत्थरो को ले जाकर अपना छोटा-सा घाट तैयार कर लिया। दूसरे दिन सुबह मजदूर पत्थरो को अपनी जगह पर न पाकर बडे परेशान हुए, लेकिन बाद मे सारे पत्थर हमारे घाट पर पाये गये। पत्थर हटाने वालो की तलाश की गई, हम पकडे गये और हमारी शिकायत कर दी गई। कइयो के पिताओ ने उनकी पिटाई की। मैंने अपने पिता को बहुत समझाया कि यह काम बडा फायदेमन्द था, लेकिन उन्होंने मुझे विश्वास दिला दिया कि बेईमानी से किया गया काम कभी लाभदायक नही होता।

मैं सोचता हूँ, तुम उनके व्यक्तित्व और चरित्र के बारे मे कुछ जानना चाहोगे। उनके शरीर की बनावट बडी बढिया थी; वे मँझोले कद के, स्वस्थ और खूब मजबूत थे। वे चतुर थे, काफी अच्छे चित्र बना सकते थे, सगीत भी थोडा बहुत जानते थे और उनकी आवाज़ बडी स्पष्ट और खुशनुमा थी। कभी-कभी दिनभर का काम समाप्त करने के

बाद वे अपने 'वायलिन' पर प्रार्थनागीतो की धुने बजाया और हमारे साथ मिलकर गाया करते थे तो उनकी आवाज़ बडी मधुर मालूम पडती थी। उनमे यन्त्रकुशलता भी थी और मौका पडने पर वे दूसरे धन्धो मे काम आने वाले औजारो का प्रयोग भी कर लेते थे, लेकिन उनकी सब से बडी खूबी थी गम्भीर समस्याओ की—फिर चाहे वे व्यक्तिगत हों अथवा सार्वजनिक—अतरंग समझ और ठोस सम्मति देने की क्षमता। सार्वजनिक कार्यो मे तो कभी भी वे पूरी तरह नही पडे, क्योकि इतने बडे परिवार का उन्हे पालन-पोषण करना पडता था और उनकी परि-स्थितियाँ उन्हे अपने व्यापार से बधा हुआ ही रखती थी; लेकिन मुझे भली प्रकार याद है कि नगर के प्रमुख व्यक्ति अक्सर उनके पास आया करते थे और नगर की अथवा जिस गिरजे से वे सम्बन्धित थे उनकी समस्याओ के बारे मे उनकी सलाह लिया करते और उनकी सम्मति तथा निर्णय का समुचित सम्मान करते थे। लोग कठिनाइयो मे पडकर अपने व्यक्तिगत मामलो मे भी उनसे मशविरा करते थे और अक्सर तो उन्हे विरोधी पादरियो का मध्यस्थ नियत किया जाता था। भोजन के साथ वे, जब भी सभव हो सकता, किसी समझदार पडौसी या मित्र को सलाप के लिए आमन्त्रित करते थे और वार्तालाप के लिए हमेशा कोई न कोई विवेकपूर्ण या लाभदायक विषय उठा लिया करते थे, जिससे उनके बच्चो के मस्तिष्क का विकास हो सके। इस तरह वे हमारा ध्यान भले, उचित और विवेकपूर्ण जीवन-व्यापारो की ओर आकर्षित कर दिया करते थे। मेज पर परोसे जाने वाले खाद्य पदार्थो की तरफ तो कम से कम ध्यान दिया जाता था अथवा बिल्कुल नही दिया जाता था कि वह ठीक तरह पका है या नही, मौसमी है या नही, उसका स्वाद अच्छा है या बुरा, उसी तरह की अमुक वस्तुओ से बढिया है या घटिया आदि। इस तरह मेरा पालन-पोषण ऐसे मामलो के प्रति पूरी उदासीनता मे हुआ था, जिसके फलस्वरूप अपने खाने की चीजो के प्रति मैं इतना उदासीन हो गया और उस पर मेरी दृष्टि ही न पडने लगी कि आज भी अगर मुझसे

पूछा जाय कि कुछ घण्टों पहले भोजन के समय मैंने क्या खाया था तो मैं नही बता सकता। यात्राओ मे मेरे लिए यह एक बडी सुविधा रही है, जबकि मेरे साथियो को इससे कभी-कभी बडी परेशानी होती थी क्योकि उनकी पूर्वसस्कारयुक्त रुचि और भूख उनसे तुष्ट नही हो पाती थी।

मेरी माता के शरीर की बनावट भी पिता की तरह ही बहुत अच्छी थी। अपने दसों बच्चो को उन्होने अपना ही दूध पिलाया था। मैंने अपने पिता या माता को कभी बीमार नही देखा। मृत्यु से पहले वे जरूर बीमार पडे थे। पिता की ८९ वर्ष की अवस्था मे और माता की ८५ वर्ष की अवस्था मे मृत्यु हुई। बोस्टन मे वे साथ-साथ दफनाये गये थे। कुछ बरस हुए उनकी कब्र पर एक सगमरमर पत्थर मैंने लगवा दिया है, जिस पर खुदा है :

जोसिया फ्रैंकलिन
और
उनकी पत्नी अबाया,
यहाँ दफ़न हैं।
पचपन वर्ष तक उन्होने प्रेम से गार्हस्थ्य धर्म
का पालन किया।
सम्पत्ति अथवा लाभदायक नौकरी न होने पर भी,
केवल अनवरत श्रम अध्यवसाय के बल पर
परमात्मा की परम कृपा से,
उन्होने आराम से एक बडे परिवार का पालन किया,
और तेरह पुत्र-पुत्रियो
तथा सत्रह पौत्र-पौत्रियों
का सम्मानपूर्वक पोषण किया।
इस उदाहरण को देखकर पाठको,
अपने व्यवसाय मे लगन से काम करो,

और ईश्वर पर अविश्वास मत करो।
वे एक सात्त्विक और विवेकवान् पुरुष थे,
वे एक विचारशीला और सती महिला थी।
उनके सबसे छोटे पुत्र ने,
उनकी स्नेह-आदरमय स्मृति मे
यह पत्थर लगवाया।
जे० एफ० जन्म १६५५, मृत्यु १७४४, अवस्था ८९ वर्ष
ए० एफ० जन्म १६६७, मृत्यु १७५२, अवस्था ८५ वर्ष

अपने असम्बद्ध लेखन से मैं समझ रहा हूँ कि मैं बूढा हो गया हूँ। पहले मैं अधिक विधिपूर्वक लिखा करता था। लेकिन व्यक्तिगत मुलाकातो और सार्वजनिक समारोहो की पोशाकें अलग-अलग तो होती ही हैं। शायद यह सिर्फ असावधानी ही है।

हाँ, तो अब अपनी कहानी आगे बढाऊँ। अपने पिता के ही व्यापार मे मैं दो साल यानी बारह बरस की उम्र तक लगा रहा। मेरे बड़े भाई जान को भी इस धधे की शिक्षा दी गई थी। पिता से अलग होकर उन्होने शादी की और रोड आइलैड मे अपना अलग कारबार स्थापित कर लिया। अब स्पष्टत यही दिखलाई पड रहा था कि मैं ही उनका खाली स्थान भरूँगा और मोमबत्ती बनाने वाला बनूंगा। लेकिन इस धधे के प्रति मेरी विरक्ति पहले की ही तरह कायम थी और पिताजी को आशका थी कि अगर वे मेरे लिए अधिक रुचिकर कोई दूसरा काम न तलाश कर सके तो मैं अपने भाई जोसिया की तरह भागकर जहाज की नौकरी कर लूंगा और एक बार फिर उन्हे असह्य पीड़ा होगी। इसलिए वे कभी-कभी मुझे अपने साथ टहलाने ले जाते और बढ़ई, राज, खरादी, ठठेरे आदि लोगो को काम करते हुए दिखाते। उनका उद्देश्य था कि मेरी रुझान देखकर वे मुझे वही किसी काम मे लगा दे। तभी से अच्छे कारीगरो को अपने औजारो का कुशल प्रयोग करते देखने में मुझे

मजा आने लगा जो अभी तक कायम है। इससे मुझे फायदा भी हुआ है। आसानी से जब कारीगर नही मिल पाते थे और घर मे छोटी-मोटी मरम्मत करनी होती थी तो मैं खुद उसे कर लेता था, या जब किसी प्रयोग के लिए मुझे किसी मशीन की जरूरत होनी थी और मेरे दिमाग मे उसका विचार ताजा और पका हुआ होता था तो मैं खुद ही उसे बना लिया करता था। यह मैं उन्ही कारीगरो को काम करते देखकर ही सीख सका था। आखिरकार उनका विचार चाकू-छुरियाँ बनाने के रोजगार पर केन्द्रित हुआ। मेरे चचेरे भाई (बैंजामिन चाचा के पुत्र) सैम्युएल ने लदन मे यह धधा सीखा था और वे उस समय तक बोस्टन मे भली प्रकार जम गये थे। मैं कुछ समय के लिए वहाँ भेज दिया गया कि अगर मुझे रुचि हो तो काम सीखूँ। लेकिन उन्होने आशा की कि मुझसे उन्हे काम सिखाने की फीस मिलेगी। इस पर पिताजी नाराज हो गये और उन्होने मुझे फिर घर वापस बुला लिया।

बचपन से ही मुझे पढने का शौक था और जो भी पैसा मुझे मिलता था उसे मैं किताबो मे खर्च कर देता था। 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस'[1] मुझे बडी अच्छी लगती थी और उसके बाद मैंने जॉन बन्यन[2] की पुस्तको का सग्रह अलग-अलग जिल्दो मे खरीद कर लिया। बाद मे उन्हे वेचकर मैंने आर० बर्टन कृत 'हिस्टारिकल कलेक्शन्स' खरीदे। कुल मिलाकर ३० या ४० किताबे थी और सस्ती भी थी। मैंने उन्हे एक फेरी वाले से खरीदा था। मेरे पिताजी के छोटे से पुस्तकालय मे अधिकाश पुस्तके धर्म-सम्बन्धी थी। अधिकतर पुस्तके मैंने पढ डाली थी, लेकिन अब तक मुझे अफसोस होता है कि ज्ञान प्राप्त करने की प्यास जब मेरे भीतर थी, तब मुझे और

---

१. 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' (The Pilgrim's Progress) : सत्रहवीं शताब्दी के अगरेज साहित्यकार जॉन बन्यन कृत प्रसिद्ध रूपक कथा, जिसके कथानक में काल्पनिकता होते हुए भी यथार्थ है। प्रकाशन-तिथि : १६७८।

२. जॉन बन्यन (John Bunyan) : सत्रहवीं शताब्दी (१६२८–८८) के प्रसिद्ध साहित्यकार जो सैनिक भी रह चुके थे और पादरी भी।

अधिक पुस्तके पढने को नही मिली, क्योकि अब तक निश्चित हो चुका था कि मुझे पादरी नही बनना है। प्लूटार्क[1] कृत "जीवनचरित्र"[2] अनेक पुस्तकालयो मे थी और मैंने उसे खूब पढा और आज तक यही सोचता हूँ कि उसे पढने मे लगा समय बेकार नही खर्च हुआ। डेनियल डेफो[3] की भी एक किताब वहाँ थी जिसका नाम था "एसेज़ ऑन प्रोजेक्ट्स"। और भी एक किताब थी—डाक्टर मेथर कृत "एसेज टु डू गुड"। इस आखिरी पुस्तक का प्रभाव शायद मेरी विचारधारा पर काफी पडा था और मेरे भविष्य मे हुई कई प्रमुख घटनाओ पर मेरी परिवर्तित विचार-धारा का प्रभाव हुआ।

पुस्तको के प्रति मेरी रुझान देखकर आखिरकार पिताजी ने मुझे मुद्रक बनाने का निश्चय कर लिया, हालाँकि उनका एक पुत्र (जेम्स) पहले से ही इस धधे मे लगा था। १७१७ मे मेरा भाई जेम्स इगलैड से प्रेस और टाइप लेकर वापस आ गया जिससे वह बोस्टन मे अपना कारबार स्थापित कर सके। यह धधा मुझे अपने पिता के धधे से कही ज्यादा पसन्द था, लेकिन समुद्र का लालच अभी भी बना था। इस रुझान का प्रभाव पडने से पहले ही उसे रोकने के लिए पिताजी मुझे भाई के साथ बाँध देने के लिए अत्यन्त इच्छुक थे। कुछ समय तक तो मैंने

---

१ प्लूटार्क (Plutarch). दूसरी सदी में जीवित प्रसिद्ध जीवनी-लेखक, जिन्होंने अपनी रचनाएँ लैटिन भाषा में लिखी थीं।

२ "जीवनचरित्र" (Lives) प्लूटार्ककृत प्रसिद्ध पुस्तक। इसमें २३ यूना-नियों और २३ रोमनों के जीवन-चरित्र है। प्रत्येक यूनानी व्यक्ति के समकक्ष रोमन व्यक्ति की जीवनी लिखी गई है। १५७९ में नॉर्थ ने इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया था। शेक्सपियर के कुछ नाटकों का आधार यही पुस्तक है।

३ डैनियल डेफो (Danniel Defoe) अंग्रेजी उपन्यासों के वास्तविक प्रवर्तक (१६६०-१७३१)। वैज्ञानिक, सट्टेबाज, दिवालिया, ह्विग और टोरी दोनों विरोधी राजनीतिक दलों के एजेंट, पर्यटक और पत्रकार डेफो की सबसे प्रसिद्ध कृति 'राबिन्सन क्रूसो' (१७१९) है। 'मॉल फ्लैंडर्स' तथा 'रोक्साना' अन्य प्रसिद्ध कृतियाँ है।

विरोध किया लेकिन आखिर मे हार मानकर सिर्फ बारह बरस की उम्र मे मैंने प्रतिज्ञापत्र पर दस्तखत कर दिये। इकरारनामे के अनुसार मुझे २१ वर्ष की उम्र तक शिक्षार्थी बनकर रहना पडेगा और सिर्फ आखिरी साल मे मुझे रोज के काम के हिसाब से मजदूरी मिलेगी। थोडे ही समय मे मैंने धधे मे काफी तरक्की कर ली और अपने भाई के लिए बडा लाभदायक साबित हुआ। अब मुझे और अच्छी किताबें मिलने लगी। एक परिचित एक पुस्तकविक्रेता के यहाँ शिक्षार्थी था। उसकी मदद से कभी-कभी मैं कोई किताब पढने के लिए माँग लाता और जल्दी ही उसे अच्छी हालत मे लौटा आता। कभी-कभी जब कोई किताब शाम को माँगकर लाता और उसे सुबह जल्दी ही वापस करना होता तो रात का अधिक भाग उसे पढते हुए जागकर बिता देता, क्योकि आशका रहती कि शायद फिर कभी जरूरत महसूस होने पर पढने को मिले न मिले।

एक चतुर व्यापारी, जिनका नाम मिस्टर मैथ्यू ऐडम्स था, और जिनके पास पुस्तको का अच्छा सग्रह था, अक्सर हमारे छापाखाने मे आया करते थे। कुछ समय बाद मैं उनकी नजर मे चढ गया। वे मुझे अपने पुस्तकालय मे ले गये और जो पुस्तकें मैं पढ़ना चाहता था उन्होने मेहरबानी से मुझे दे दी। इस समय तक कविता की तरफ मेरी रुझान हो गई और मैं कभी-कभी कुछ लिखने भी लगा। मेरे भाई ने यह सोच कर कि शायद इससे कुछ लाभ हो, मुझे उत्साहित किया और मैं उनके निर्देश से कभी-कभी साहसिक कविताएँ[1] लिखने लगा। उनमे से एक का नाम था "द लाइटहाउस ट्रैजेडी" और उसमे कैप्टेन वर्दीलिक तथा उनकी दो पुत्रियो के डूबने का वृतान्त था। दूसरा था समुद्री डाकू "टीच"

---

१. साहसिक कविताएँ (Ballads) : किसी योद्धा अथवा शहीद के बारे में ओजस्वी पद्य में लिखी कविताएँ। अपने देश में चन्द वरदाई कृत "पृथ्वीराजरासो" और जगनिक कृत "आल्हा" ऐसी ही कृतियाँ है।

काली दाढी वाले की तर्ज के आधार पर एक नाविको का गीत। दोनो ही निकृष्ट कविताएँ थी, निम्नकोटि की शैली मे लिखी हुई; और जब वे छप गईं तो भाई ने मुझे फेरी लगाकर बेचने भेज दिया। पहली तो खूब बिकी, क्योकि वह दुर्घटना थोडे दिन पहले ही हुई थी और उसका खूब शोर हुआ था। इससे मेरा अहकार कुछ बढा, लेकिन पिता जी ने मेरे कारनामे काम जाक उडाकर और यह बताकर कि कवि अधिकतर भिखारी ही होते है, मुझे हतोत्साह किया। इस तरह मैं कवि—और शायद बहुत ही खराब कवि—होते-होते बच गया। लेकिन मेरे जीवन मे गद्य-लेखन का बडा महत्त्व रहा है और विशेष रूप से उसी की बदौलत मेरा विकास हो सका है, इसलिए मैं तुम्हे बताऊँगा कि इस हालत मे कैसे मैं गद्य लिखने की थोडी बहुत योग्यता प्राप्त कर सका।

शहर मे जान कालिन्स नामक एक और पुस्तक-कीट युवक रहता था, जिसे मैं भली प्रकार जानता था। कभी-कभी हम दोनो विवाद किया करते थे। तर्क करने और एक-दूसरे की बातो को काटने का हमे बडा शौक था। यही पर मैं यह भी बता देना चाहता हूँ कि वादविवाद करने की यह प्रवृत्ति बडी खराब आदत मे बदल सकती है। कारण कि दो-चार लोगो के बीच मे इस प्रवृत्ति के उभर उठने से बातो का विरोध करना स्वाभाविक है और परिणामस्वरूप इस आदत का शिकार व्यक्ति उपस्थित लोगो की चिढ का केन्द्र बन जायेगा। इससे बातचीत मे कड़वाहट और खट्टापन तो आ ही जायेगा, साथ ही परस्पर विरक्ति भी पैदा होगी और शायद ऐसी जगहो पर दुश्मनी भी हो जाय जहाँ वास्तव मे जरूरत दोस्ती की हो। पिता जी की धार्मिक वादविवाद सम्बन्धी पुस्तको को पढने पर मैं भी इस आदत का शिकार हो गया था। लेकिन अब मैं समझने लगा हूँ कि वकीलो, विश्वविद्यालय के शिक्षको और एडिनबरा मे शिक्षित सब प्रकार के व्यक्तियो को छोडकर दूसरे समझदार आदमी कभी वादविवाद मे भाग नही लेते।

लेकिन एक बार मुझमे और कालिन्स मे बहस छिड गई। विवाद

का विषय था—स्त्रियो को शिक्षा देने का औचित्य और उनकी अध्ययन-क्षमता। उसका मत था कि स्त्रियो को शिक्षा देना अनुचित है और प्रकृति ने ही उन्हे इस योग्य नही बनाया। मैंने दूसरा पक्ष लिया था, कुछ तो शायद बहस के ही विचार से। वह स्वभावतया ज्यादा बोल रहा था और उसके पास तैयार शब्दो का खजाना था। मेरा ख्याल था कि वह अपने तर्कों की गुरुता के कारण नही, बल्कि अपनी प्रवाहमय वाक् शैली से ही अक्सर मुझ पर हावी हो जाता था। प्रश्न के बारे मे बिना किसी निर्णय पर पहुँचे हम लोग अलग हो गये। चूँकि कुछ समय तक हम एक-दूसरे से मिलने वाले नही थे, इसलिए मैंने अपने तर्को को कागज पर लिखा, उन्हे साफ-साफ उतारा और उसके पास भेज दिया। उसने उत्तर दिया और मैंने फिर लिखा। तीन-चार खत मैंने लिखे और इतने ही कालिन्स ने। एक दिन सहसा पिताजी को मेरे कागज मिल गये और उन्होने उन्हे पढ लिया। उन्होने अवसर निकाला और बिना विवाद किये वे मेरी लिखने की शैली की विवेचना करने लगे। उन्होंने कहा कि मैं शब्दो के हिज्जे अपने विरोधी से ज्यादा सही लिखता हूँ और अपने तर्कों को क्रमानुसार ज्यादा अच्छी तरह रख सकता हूँ। (दोनो ही बातो के लिए मैं छापेखाने का शुक्रगुजार था।) फिर भी वाक्य-विन्यास, विधि और स्पष्टता मे उससे कही पीछे हूँ। कई उदाहरणो से उन्होंने मुझे इसका विश्वास दिला दिया। मैंने उनकी टिप्पणी के औचित्य को स्वीकार किया और उसके बाद लिखने की विधि के प्रति अधिक सतर्क हो गया। मैंने इस दिशा मे सुधार करने का पक्का निश्चय कर लिया।

लगभग इसी समय मुझे "स्पेक्टेटर"[1] की एक अकेली जिल्द मिल

---

१. "स्पैक्टेटर" (The Spectator) : अंग्रेजी के प्रसिद्ध गद्य लेखक रिचर्ड स्टील (१६७२—१७२९) और जोजेफ एडीसन (१६७२—१७१६) द्वारा प्रकाशित एव सम्पादित पत्र। इस पत्र के कालम मध्यवर्ग के पाठकों के लिए होते थे, अतः फैशन, आचार, साहित्य सभी कुछ इसमें प्रकाशित होता था। इस पत्र के द्वारा दोनों लेखकों ने कई नये और अविस्मरणीय चरित्रों की सृष्टि की और निबंध-लेखन का नया स्तर कायम किया।

गई, तीसरी जिल्द थी। मैंने इससे पहले उसकी कोई जिल्द नही देखी थी। उसे खरीदकर मैंने बार-बार पढा और मुझे बडा मजा आया। वह लेखन मुझे बहुत ही सुन्दर लगा और मैं सोचने लगा— क्या इस शैली की नकल करना मेरे लिए सभव है ! इस विचार से मैंने कुछ पन्ने चुन-कर उनके प्रत्येक वाक्य मे व्यक्त विचार को सकेतात्मक ढग से लिख कर उन्हे कुछ दिन यो ही पडा रहने दिया। और फिर किताब मे देखे बगैर मैं उन्हे पूरा करने की कोशिश करने लगा। मैंने प्रत्येक सकेत को पहले की तरह व्यक्त करने की कोशिश की। मैं वही शब्द प्रयोग कर रहा था जो फौरन मेरे दिमाग मे आ रहे थे। तब मैं अपने "स्पैक्टेटर" की मौलिक से तुलना करता, अपनी गलतियाँ पहिचानकर उन्हे शुद्ध करता। लेकिन मैंने पाया कि मेरे पास शब्द-भंडार कम है या मैं उन्हे फौरन सोचकर इस्तेमाल नही कर पाता। मेरा ख्याल था कि अगर मैं कविताएँ लिखता गया होता तो उस समय यह कमी न होती। कारण कि कविता के "चरणो" के उपयुक्त समान उच्चारण परन्तु भिन्न लम्बाइयो वाले शब्दो की आवश्यकता होती या फिर तुक मिलाने के लिए विभिन्न ध्वनियो के शब्दो की आवश्यकता पडती और मुझे हमेशा अनेक प्रकार के शब्दो की खोज मे रहना पडता और ये अनेक प्रकार के शब्द मेरे मस्तिस्क मे स्थिर हो गये होते और मैं उनके प्रयोग मे माहिर हो गया होता। इसलिए मैं कुछ कहानियो को कविता मे लिखने लगा और कुछ समय बाद जब मैं गद्य लिखना लगभग भूल-सा गया था, मैं फिर उसकी ओर मुडा। कभी-कभी मैं अपने सकेतो को गडबड कर डालता और कुछ समय बाद उन्हे अपने अनुसार सबसे अच्छे क्रम मे रखकर वाक्यो की रचना करता और इस तरह "पेपर" पूरा करता। ऐसा मै विचार को क्रमानुसार प्रबधित करना सीखने के लिए करता था। बाद मे, अपने लेखन की भूल के साथ तुलना करने पर अनेक गलतियाँ मुझे मिलती और मै उन्हे सुधारता। कभी-कभी यह कल्पना करके भी मैं बडा खुश होता कि कुछ अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण अर्थो मे मैं भाषा

अथवा शैली को काफी उन्नत कर ले गया हूँ। इससे उत्साहित होकर मैं सोचने लगता कि कभी मैं भी अंग्रेजी का सामान्य लेखक बन सकूँगा। यही मेरी सबसे बडी आकाक्षा थी। ये अभ्यास करने और पढने का समय रात का—काम खत्म होने और दूसरे दिन सुबह फिर शुरू होने से पहले—होता था। या फिर रविवार के दिन, जब मैं कोशिश करके छापे-खाने मे अकेला हो जाता था और सार्वजनिक प्रार्थना मे उपस्थित होने से यथासभव बचता रहता था। अपने पिता के संरक्षण मे रहते समय तो मैं इससे बच न पाता था। यो मैं उस समय भी इसे अपना कर्त्तव्य ही मानता था, लेकिन महसूस करता था (कम से कम मुझे यही महसूस होता था) कि उसके लिए मेरे पास समय नही है।

सोलह साल की उम्र मे मुझे ट्रायोन नामक किसी लेखक की एक किताब मिल गई, जिसमे मासरहित भोजन पर जोर दिया गया था। मैंने यही करने का निश्चय किया। मेरे भाई ने अभी तक शादी नही की थी इसलिए घर मे भोजन का प्रबध न था और वे अपने शिक्षार्थियो के साथ एक दूसरे परिवार मे खाया करते थे। मेरे मास खाने से इन्कार करने पर कुछ असुविधा तो जरूर होने लगी और मुझे अक्सर इसके लिए चिढ़ाया भी जाने लगा। कोशिश करके मैंने ट्रायोन की कुछ खाना पकाने की विधियाँ जैसे आलू या चावल उबालना, जल्दी-जल्दी खीर बना लेना और ऐसी कुछ दूसरी विधियाँ भी सीख ली। तब मैंने भाई के सामने प्रस्ताव रक्खा कि एक हफ्ते मे वे जितना मेरे खाने पर खर्च करते हैं उसका आधा अगर वे मुझे दे दे तो मैं अपने भोजन का अलग इन्तजाम कर लूँ। वे फौरन तैयार हो गये और एक-दो दिन में ही आधा पैसा मैं बचा लेने लगा। किताबे खरीदने के लिए इस तरह कुछ और पैसे मेरे पास हो जाने लगे। इससे मुझे एक फायदा और हुआ। जब मेरे भाई और दूसरे कर्मचारी भोजन करने चले जाते तो मैं छापेखाने मे अकेला रह जाता। मैं फौरन अपना हलका भोजन—जिसमे एक बिसकुट या डबलरोटी का एक टुकड़ा, कुछ मुनक्के या मेवो की "पैस्ट्री" और एक

गिलास पानी के अलावा कुछ नही होता था—कर लेता था और उनके वापस आने तक का बाकी समय पढने के लिए बच जाता था। सन्तुलित खानपान रहने पर साधारणत. मस्तिष्क अधिक काम करता है और समझ तीव्र हो जाती है, इसलिए मेरे अध्ययन की प्रगति शानदार हुई।

इसी समय एक-दो बार अकगणित न जानने के कारण मुझे लोगो के सामने शर्मिन्दा होना पड़ा। स्कूल मे भी दो बार मैं इसमे फेल हुआ था लेकिन इसे भी सीखने का निश्चय करके मैंने काकर लिखित अकगणित की किताब को पढना शुरू किया और विना कठिनाई स्वय सारी पुस्तक खत्म कर गया। मैंने सैलर और शर्मी द्वारा लिखित जहाज़रानी की किताब भी पढी और उसमे अन्तर्हित थोडे से ज्यामिति-शास्त्र से भी परिचित हो गया, हालाँकि इसमे और आगे न वढ सका। और लगभग इसी समय मैंने लॉक[1] कृत "ऑन ह्यूमन अन्डरस्टैंडिंग" तथा द पोर्ट रायल कृत "द आर्ट आव थिंकिग" भी पढ डाली।

भाषा पर अधिकार बढाने मे पक्का इरादा कर ही चुका था। मुझे अग्रेजी का एक व्याकरण मिल गया (मेरा ख्याल है वह ग्रीनवुड कृत था), जिसके अन्त मे अलकारशास्त्र और तर्कशास्त्र दो शब्दचित्र दिये हुए थे। तर्कशास्त्र वाले शब्दचित्र का अन्त सुकरात[2] की शैली मे लिखे गये वाद-विवाद से हुआ था। जल्दी ही मैंने ज़ेनोफान्[3] कृत "सुकरात की

---

१ लॉक (John Locke) प्रसिद्ध अग्रेज विचारक (१६३२-१७०४)। उनके अनुसार विचारों का उद्गम मस्तिष्क में नहीं होता, वल्कि सभी इन्द्रियों से होता है।

२. सुकरात (Socrates). यूनानी भाषा में दार्शनिक विवेचन की गद्य-रचना का आरम्भ सुकरात से ईसापूर्व छठवीं सदी के अन्त और पॉचवीं सदी के प्रारम्भ में हुआ। सुकरात ने अपने आप कुछ नहीं लिखा, लेकिन उनके वार्तालाप वाद में उनके शिष्य प्लेटो ने उनकी मृत्यु के पश्चात् लिपिवद्ध किये। प्रश्नोत्तर-रूप में दार्शनिक विवेचन वाद में अत्यन्त प्रचलित हुआ।

३. जेनोफॉन (Xenophon) · ईसापूर्व पाँचवीं सदी के यूनानी भाषा के इतिहास-लेखक। सरल और स्पष्ट भाषा इनकी विशेषता है। आपने 'सुकरात की स्मरणीय वातें' नामक एक महत्त्वपूर्ण रचना भी लिखी थी।

स्मरणीय बाते" नामक पुस्तक खोज निकाली, उपरोक्त शैली के वाद-विवादो के कई उदाहरण इसमे भी मौजूद थे। मुझे ये बेहद पसन्द आये और मैं इनका अनुकरण करने लगा। अपनी सीधा खडन और निर्णयात्मक तर्क की पद्धति को छोडकर मैंने नम्रतापूर्वक पूछने और शंका करने की आदत डाल ली। शैफ्ट्सबरी[1] और कालिन्स की रचनाओ को पढने का मेरे ऊपर प्रभाव यह पडा कि अपनी धर्म-सहिता के कुछ सिद्धान्तो के प्रति मैं पूरी तरह शकालु हो उठा। इस ढग को अपनाना मेरे लिए सुरक्षित तो था ही, साथ ही मेरे विरोधियो को व्यग्र भी कर देता था। इसलिए मुझे इसमे खूब मजा आने लगा और मैंने इसका अभ्यास जारी रक्खा। धीरे-धीरे मैं इतना कुशल और चालाक हो गया कि अपने से अधिक विद्वान् आदमियो से भी अपनी बात मनवा लेने लगा, जिसका परिणाम उनकी समझ मे शुरू-शुरू मे नही आता था, कि उनको ऐसी परिस्थिति मे फँसा देने लगा था जिससे निकल पाना उनके लिए असभव हो जाता था, और इस तरह उन्हे पराजित कर देता था, हालाँकि हमेशा मैं या मेरा उद्देश्य जीतने काबिल नही होता था। कुछ बरसो तक इसी शैली को अपनाये रहने के बाद मैंने इसे धीरे-धीरे छोड दिया। केवल नम्रतापूर्वक अपनी बात व्यक्त कर देने की आदत मैंने बनाये रखी। जब भी मैं कोई विवादास्पद बात कहता था तो उसके साथ "निश्चितत", "निस्सदेह" और किसी सम्मति को निश्चयता का आवरण पहनाने वाला कोई भी शब्द कभी इस्तेमाल नही करता था, इसके बदले मे "मेरा विचार है," "मेरा ख्याल है," "मैं सोचता हूँ," या "अमुक कारणो से मुझे लगता है कि यह इस तरह होना चाहिए" या

---

१. शैफ्टसबरी (Anthony Ashley Cooper, Seventh Earl of of Shaftesbury) : अंग्रेज कूटनीतिज्ञ (१८०१-१८८५) इन्होंने गरीबों की स्थिति को सुधारने में अपना जीवन लगा दिया। इन्हीं के उपायों से "रेगेड स्कूलों" (Ragged Schools) की स्थापना हुई और "गरीबों के कानूनों" (Poor Laws) में सुधार का प्रयत्न किया गया।

"मैं कल्पना करता हूँ कि यह ऐसा होना चाहिए" या "अगर मै गलती नही कर रहा हूँ तो यह इस प्रकार होना चाहिए" आदि मुहावरो या वाक्यो का प्रयोग करने लगा। मुझे विश्वास है कि बाद मे अपने विचारो का प्रचार करने और समय-समय पर अपने कार्यो मे दूसरे व्यक्तियो को सम्मिलित करने मे यह आदत मेरी बडी महायक हुई है। और चूँकि वार्तालाप के मुख्य उद्देश्य ज्ञान देना या प्राप्त करना, खुश करना या अपनी राय मनवाना है, इसलिए मैं चाहता हूँ समझदार और विचारवान् व्यक्ति एक निश्चित, स्थिर ढग से बातचीत करके भलाई करने की अपनी शक्ति का नाश न करे, क्योकि यह तरीका निश्चित रूप से लोगो को उबाता है और विरोध खडा करता है और सबसे बढकर तो वह लक्ष्य ही नही प्राप्त करने देता जिसके लिए बात कही गई है। फिर चाहे बात करने का उद्देश्य मनोरजन रहा हो या ज्ञान का आदान-प्रदान अथवा हास-परिहास। यदि आप कोई सन्देश देना चाहते हैं तो अत्यधिक निश्चित और दृढतापूर्वक अपनी बात कहने पर हो सकता है कि आपका विरोध होने लगे और लोग ध्यानपूर्वक आपकी बात न सुन पाये। यदि आप दूसरो के ज्ञान से अपना ज्ञान बढाना और अपना विकास चाहते है और साथ ही अपनी वर्तमान सम्मति को भी उतनी ही दृढतापूर्वक पकडे हुए है तो विनम्र, समझदार और वादविवाद को नापसन्द करने वाले व्यक्ति सभवत आपको अपनी गलतियो मे ही छोड-कर चल देंगे। और इन तरीको से अपने सुनने वालो को खुश करने की आशा तो आप कभी कर ही नही सकते और न ही दूसरो से अपनी बात ही मनवा सकते हैं। पोप[1] ने बिल्कुल ठीक कहा है :

१. अलेक्जैण्डर पोप (Alexander Pope). अलेक्जैण्डर पोप (१६८८-१७४४) अंग्रेजी के महान् व्यंग कवि थे। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी कला में व्यंग्य को वहुत सवारा हैं। यूनानी क्लासिकल रचनाओं के अनन्य भक्त। उनकी प्रसिद्ध कृति 'ऐन एसे ऑन मैन' है, जो एक आध्यात्मिक कृति है। डा० सैम्युएल जॉन्सन और ओलिवर गोल्डस्मिथ जैसे प्रतिभाशाली साहित्यिक भी पोप की प्रतिमा से प्रभावित हुए विना नहीं रह सके। अंग्रेजी साहित्य में पोप का वही स्थान है जो हिन्दी साहित्य में केशव का।

"लोगों को शिक्षा ऐसी देनी चाहिए मानो शिक्षा दी नहीं गई,
और अजानी बातों को ऐसा रखा जाय मानो वे भूली बातें हों।"

वह आगे कहते है :

"दृढ़तापूर्वक अवश्य बोलिए, लेकिन यथोचित नम्रता के साथ।"

और मेरा विचार है कि उन्हे इसी पक्ति के साथ एक और पक्ति रख देनी चाहिए थी। जो उन्होने दूसरी पक्ति के साथ रक्खी है, मेरे विचार से इस जगह पर वह कम अच्छी लगती है। पक्ति है :

"क्योंकि नम्रता की अनुपस्थिति विवेक की ही अनुपस्थिति है।"

अगर तुम पूछो कि जिस जगह पर यह है वहाँ कम अच्छी क्यो लगती है। तो मुझे दोनो पक्तियाँ दोहरानी पडेंगी—

"अनम्र शब्दों का कोई समर्थन नहीं किया जा सकता,
"क्योंकि नम्रता की अनुपस्थिति विवेक की ही अनुपस्थिति है।"

अब ज़रा सोचो तो, कि विवेक की अनुपस्थिति (जहाँ बेचारा आदमी इतना अभागा है कि विवेक ही उसमे नही है।) क्या उसकी नम्रता की अनुपस्थिति का औचित्य नही है ?

और क्या ये पक्तियाँ अधिक तर्कसंगत नही मालूम पड़ती ?

"अनम्र शब्दों का केवल यही औचित्य हो सकता है,
नम्रता की अनुपस्थिति विवेक की अनुपस्थिति है।"

लेकिन मैं इसे अपने अधिक योग्य व्यक्तियो पर छोडता हूँ।

१७२० या १७२१ मे मेरे भाई ने एक अखबार निकालना शुरू किया था। अमेरिका मे प्रकाशित होने वाला यह दूसरा समाचारपत्र था और इसका नाम रक्खा गया था "न्यू इगलैंड करेंट" (New England Courant)। इसके पहले का अखबार "बास्टन न्यूज लैटर" (Boston News Letter) था। मुझे याद है उनके कुछ दोस्तो ने उन्हे इसे शुरू करने की सलाह नही दी थी, क्योकि उनके विचार से अमेरिका के लिए एक ही अखबार काफी था और नये अखबार की सफलता का कोई चारा न था। आज (१७७१ मे) अमेरिका मे २५ अखबारो से कम नही

प्रकाशित होते हैं। लेकिन इसके बावजूद उन्होने अपने काम को आगे बढाया और कम्पोज करके उसे छाप ही दिया। उसके बाद अखबार की गड्डी लेकर सडको पर घूमना और ग्राहको के हाथ बेचना मेरा काम था।

उनके कुछ मित्र बड़े प्रतिभाशाली थे जो इस अखबार के लिए छोटे-छोटे लेख लिखकर अपना मनोरजन किया करते थे। इनसे अखबार की साख बढी और माँग भी बढने लगी। उनके मित्र अक्सर छापाखाने मे आया करते थे। उनके वार्तालापो और उनके लेखो को मिली मान्यता की बातें सुनकर मैं भी लिखने के लिए उत्तेजित हो उठा। लेकिन उस समय मैं लडका ही था और मुझे शक था कि भैया अगर जान गये कि अमुख लेख मेरा लिखा हुआ है तो अपने अखबार मे वे उसे कभी भी न छापेंगे। इसलिए अपनी लिखावट बदलकर मैंने बिना कोई नाम दिये एक लेख लिखा और रात मे छापाखाने के दरवाजे के भीतर सरका दिया। सुबह वह पाया गया और हमेशा की तरह जब भैया के दोस्त उनसे मिलने आये तो उनके सामने पेश कर दिया गया। उन्होने उसे पढा और उस पर अपनी राय दी। मैं उनकी बातें भली प्रकार सुन रहा था। मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि उन्होने उसे पसन्द किया और फिर उसके लेखक के बारे मे अन्दाज लगाते हुए उन्ही लोगो का नाम लिया जो अपनी विद्वत्ता और बुद्धिमत्ता के लिए हमारे बीच मशहूर थे। अब मैं सोचता हूँ कि ऐसे निर्णायको को मै सौभाग्य से ही पा सका था और शायद वे उतने प्रबुद्ध नही थे जितना मैं उनके बारे मे सोचता था।

खैर, इससे मुझे बढावा तो मिला ही और कई लेख लिखकर इसी तरह मैंने छापाखाने मे पहुँचाये, जिन्हें पहले लेख के ही समान पसन्द किया गया। इस रहस्य को मैंने काफी दिनो गुप्त रक्खा, यहाँ तक कि इस तरह के लेख लिखने की मेरी बुद्धि लगभग खर्च हो गई। और तभी मैंने पाया कि उनके परिचित मुझे कुछ इस ढग से मानने लगे थे जो

शायद भैया को पसन्द नही आया। उनका ख्याल था–शायद ठीक ही था–कि ऐसा करने पर मैं घमंडी हो जाऊँगा। लगभग इसी समय भैया और मुझमे कुछ अन्तर पड़ने लगा—इसका शायद यह भी एक कारण था। भाई होते हुए भी वे अपने को मेरा मालिक समझते थे और मुझे केवल एक शिक्षार्थी। वे आशा करते थे कि दूसरो की तरह ही मैं भी अपनी सेवाए अर्पित करूँ। इसके विपरीत मेरा ख्याल था कि कुछ कामो मे वे मुझे नीचा दिखाते हैं। साथ ही मैं यह भी चाहता था कि भाई होने के नाते वे मेरा कुछ ज्यादा ख्याल रक्खें। हमारा झगडा अक्सर पिताजी के सामने भी पेश किया जाता और मेरा ख्याल है कि मैं ठीक कहता था या फिर अपनी बात को ज्यादा अच्छी तरह कह सकता था क्योकि उनका निर्णय सामान्यत. मेरे ही पक्ष मे हुआ करता। लेकिन भैया क्रोधी पुरुष थे और अक्सर मुझे पीट दिया करते थे जिसका मैं बहुत ही बुरा मानता था। काम सीखना मुझे बडा मुश्किल मालूम पडने लगा था और मैं हमेशा सोचता रहता था कि किस तरह इस समय को कम किया जाय, कि एकाएक यह अवसर अप्रत्याशित रूप से अपने आप आ गया।[1]

हमारे अखबार मे किसी राजनीतिक विषय पर कोई लेख प्रकाशित हुआ था—किस विषय पर मुझे अब याद नही है। असेम्बली इस लेख पर अप्रसन्न हो गई। अध्यक्ष के वारट पर भैया को गिरफ्तार कर लिया गया, उनसे जिरह हुई और उन्हे एक महीने का कारावास का दड मिला, क्योकि मेरा ख्याल है, वे लेख के लेखक का पता नही बता सके। मुझे भी पकड़कर कौंसिल के सामने पेश किया गया और मुझसे भी जिरह हुई। मैं उन्हें सन्तुष्ट तो नही कर सका लेकिन मुझे एक

१. मेरी समझ में मेरे प्रति उनका यह कठोर और निरंकुश व्यवहार मेरी काल्पनिक शक्ति की भावना के प्रति, जो जीवन भर मुझमें बनी रही, उनकी घृणा को व्यक्त करने का एक साधन मात्र था —बैंजामिन फ्रैंकलिन।

चेतावनी देकर ही वे सन्तुष्ट हो गये। उन्होने शायद मुझे एक नौसिखुआ भर समझा और यह मानकर कि मै अपने मालिक के रहस्यों को खोलूंगा नही, मुझे छोड दिया।

भैया को कारावास का दड दिये जाने का मैंने अपने आपसी झगडो के बावजूद काफी विरोध किया। और जब वे जेल मे थे तो अखबार का सारा भार मेरे ऊपर ही आ पडा और मैंने उसमे शासको को दो-चार रद्दे जमाने का निश्चय किया। भैया ने तो इसे पसन्द किया लेकिन कुछ लोगो ने इसे बिल्कुल दूसरी ही रोशनी मे देखा और मुझे एक ऐसा बुद्धिमान युवक समझना शुरू कर दिया जो परनिन्दा और व्यग्य मे ही मजा लेता है। भैया की जब रिहाई हुई तो उसके साथ-साथ असेम्बली का एक हुक्मनामा (सचमुच बडा विचित्र हुक्मनामा !) भी आया कि "जेम्स फ्रैकलिन भविष्य मे 'न्यू इगलैड करेंट' नामक समाचारपत्र न प्रकाशित करे।"

हमारे छापाखाने मे उन्होने अपने मित्रो के साथ विचारविमर्श किया कि इस स्थिति मे क्या करना चाहिए। कुछ ने प्रस्ताव रक्खा कि हुकम से बचने के लिए अखबार का नाम बदल दिया जाय; लेकिन भैया को इसमे कुछ असुविधाए थी और आखिर मे इसका एक अधिक अच्छा रास्ता निकाला गया कि अखबार भविष्य मे बैंजामिन फ्रैकलिन के नाम से प्रकाशित किया जाय और इस डर से कि कही असेम्बली शक न करे कि वे अब भी अपने शिक्षार्थी के नाम से अखबार छाप रहे है, एक तरकीब सोची गई। वह यह कि शर्तनामा मुझे वापस कर दिया जाय और उसकी पीठ पर लिख दिया जाय कि मैंने अपना काम सीखने का समय पूरा कर लिया है, जिससे मौका आने पर उसे दिखाया जा सके। लेकिन मुझे एक नया इकरारनामा बाकी समय के लिए लिखकर उन्हें देना था जो छिपाकर रक्खा जाने को था, जिससे मेरी सेवाएं बराबर उन्हे मिलती रहें, योजना बडी ही कमजोर थी, लेकिन इसे फौरन कार्यान्वित किया गया और अखबार मेरे नाम से आगामी कई महीनो तक प्रकाशित होता रहा।

आखिरकार मेरे और भैया के बीच एक नया झगडा उठ खडा हुआ। मैंने सोचा कि वे नया इकरारनामा पेश करने की हिम्मत नही करेंगे अत: अपनी आजादी का अधिकार दिखाने का इरादा किया। मेरा यह काम उचित नही था और मैं इसे अपने जीवन की पहली गलती समझता हूँ। लेकिन उस समय इसका अनौचित्य मुझे ज़रा भी नही खलता था, क्योकि क्रोध मे आकर मारपीट करने के विरोध का भाव मेरे भीतर प्रबल था, हालाँकि वैसे उनका स्वभाव बुरा नही था—शायद मैं ही बहुत ज्यादा गुस्ताख और गुस्सा बढाने वाला था।

उन्होने जब देखा कि मैं उनकी नौकरी छोड दूंगा तो उन्होने शहर भर के सारे छापाखाने के मालिको के पास जाकर मुझे नौकरी देने से मना कर दिया, और उन्होंने भी मुझे नौकरी देने से इन्कार कर दिया। तब मैंने न्यूयार्क जाने का विचार किया, क्योकि वही सबसे नजदीक जगह थी जहाँ कोई छापाखाना वाला था। और मैं बोस्टन छोडने की बात अपने मन मे तय कर चुका था क्योकि शासन करने वाली पार्टी मुझसे थोडा चिढ़ने ही लगी थी और अपने भाई के मामले मे असेम्बली की मनमानी कार्यवाहियो को देखकर मुझे यही भान होने लगा था कि कही मैं भी वहाँ ठहरे रहने पर उनकी झपट मे न आ जाऊँ। इसके अलावा धार्मिक मामलो मे दृढ़तापूर्वक विरोध करने के कारण भले आदमी मुझे विश्वास-घाती और नास्तिक समझने लगे थे और तनिक आतक से मुझे देखा करते थे। इस विषय मे मैंने पक्का निश्चय कर लिया लेकिन अब पिताजी भैया का पक्ष लेने लगे तो मै समझ गया कि अगर मैं खुले आम जाने की कोशिश करूँगा तो मुझे रोकने की कोशिशे की जायेंगी। इसलिए मेरे मित्र कालिन्स ने इसका प्रबन्ध करने का जिम्मा लिया। न्यूयार्क जाने वाले एक जहाज के कैप्टेन से कहकर उसने मेरे जाने का इन्तजाम कर दिया। कैप्टेन से कहा गया कि मैं कालिन्स का एक परिचित हूँ, और मेरे दोस्त ऐसी लड़की से मेरी शादी जबर्दस्ती कर देना चाहते है जो एक बच्चे की माँ है। इसलिए मैं खुलेआम नही आ सकता और न यात्रा ही कर सकता

हूँ। मैंने कुछ पैसा इकट्ठा करने के विचार से अपनी कुछ किताबे बेच डाली और चुपचाप जहाज पर सवार हो गया। हवा अनुकूल चल रही थी और तीन दिन के भीतर मैं, १७ वर्ष का एक लड़का, घर से ३०० मील दूर न्यूयार्क पहुँच गया—वहाँ के किसी भी आदमी से मैं परिचित नही था और न कोई सिफारिशी पत्र ही मेरे पास था और पैसा तो बहुत ही कम था मेरी जेब मे।

अब तक जहाजरानी के प्रति मेरा झुकाव समाप्त हो चुका था, वरना अब मैं उसे जरूर पूरा करता लेकिन मैं एक धधा जानता था और अपने को काफी अच्छा काम करने वाला समझता था। इसलिए मैंने वहाँ के छापाखाने के मालिक श्री विलियम ब्रैडफोर्ड को—जो पेंसिलवैनिया के सर्वप्रथम मुद्रक थे लेकिन जार्ज कीथ से लडाई हो जाने के कारण वहाँ से हट आये थे—अपनी सेवाए अर्पित की। वे मुझे नौकरी नही दे सके। क्योकि काम उनके पास कम था और आदमी काफी थे लेकिन उन्होने मुझसे कहा, "मेरे पुत्र का छापाखाना फिलाडेल्फिया मे है और उसके प्रमुख कर्मचारी ऐक्विला रोज की मृत्यु हो गई है; अगर तुम वहाँ जाओ तो मुझे भरोसा है कि वह तुम्हें नौकर रख लेगा।" फिलाडेल्फिया वहाँ से १०० मील दूर था और एक नाव पर सवार होकर मैं अम्बाय के लिए चल पडा। अपना बक्स और सामान मैंने वही छोड दिया कि वह बाद मे जहाज से पहुँच जाएगा।

खाडी पार करते समय तूफान आ गया जिसने हमारी नाव के सड़े हुए पालो को चीर-फाड़ डाला और "किल" न ले जाकर हमे लाग आइलैंड पर जा पटका। रास्ते मे नाव का एक हालैंडवासी मुसाफिर शराब पिये हुए पानी मे गिर पडा। वह डूब ही रहा था कि मैं उसके पास पहुँचा और उसे पकडकर ऊपर ले आया। पानी में डुबकियाँ खाने से उसका दिमाग कुछ सही हो गया था और वह सोने चला गया। जाने से पहले उसने अपनी जेब से निकालकर एक किताब मुझे दी कि मैं उसे सुखा दूँ। वह तो मेरे प्रिय लेखक बन्यन की "द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" का

डच भाषा मे अनुवाद था—अच्छे कागज पर बहुत अच्छे ढग से छपी हुई। इतना अच्छा परिधान तो इसकी मूल भाषा मे भी नही था। अब मुझे मालूम है कि यूरोप की अधिकाश भाषाओ मे इसका अनुवाद हो चुका है और मेरा ख्याल है कि बाइबिल को छोडकर इसी पुस्तक को सबसे ज्यादा पढ़ा गया है। जहाँ तक मैं जानता हूँ जॉन बन्यन ही पहले लेखक थे जिन्होने वर्णन और सवाद का मिश्रण किया था। यह शैली पाठक को बाँधे रखने की काफी क्षमता रखती है और अत्यन्त रोचक प्रसगो मे तो उसे ऐसा मालूम पडने लगता है मानो वह स्वय पात्रो के बीच मौजूद हो और उनकी बातचीत मे हिस्सा ले रहा हो। डिफो ने अपने "राबिन्सन क्रूसो", "मालफ्लैंडर्स", "रेलिजस कोर्टशिप", "फैमिली इन्स्ट्रक्टर" तथा अन्य पुस्तको मे सफलतापूर्वक इसी शैली का प्रयोग किया है और रिचर्डसन[1] ने "पामेला" आदि मे इसी को अपनाया है।

जब हम टापू के पास पहुचे तो पाया कि वहाँ नाव किनारे से नही लगाई जा सकती क्योंकि चट्टानी किनारे पर खूब फेन उठ रहा था। इसलिये लगर डालकर हमने उसके सहारे नाव को किनारे की तरफ घुमाया। कुछ लोग उतरकर पानी के पास आ गये और हमे पुकारने लगे। हमने भी जवाब दिया, लेकिन हवा इतनी तेज थी और लहरें इतनी आवाज के साथ तट से टकरा रही थी कि हम एक-दूसरे की बातो को समझ न सके। किनारे पर छोटी नावें बँधी थी और हमने उन्हे पुकारकर इशारे से कहा कि नावो के जरिए वे हमे किनारे पर उतार लें, लेकिन या तो उन्होने हमारी बात समझी नही या इस काम को असभव समझकर चले गये। रात होने वाली थी इसलिए हमारे पास इसके अलावा और कोई

---

१. रिचर्डसन (Samuel Richardson) : सैम्युएल रिचर्डसन जीवन भर मुद्रण-व्यापार करते रहे, लेकिन वे अंग्रेजी साहित्य के प्रधान निर्माताओं में से एक है। डेफो के "राबिन्सन क्रूसो" के प्रकाशन के २५ साल बाद उनकी "पामेला" प्रकाशित हुई थी (१७४०)। रिचर्डसन ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग के पात्रों के गुणदोषों का ही वर्णन किया है।

चारा नही रह गया था कि हम हवा के शान्त होने की प्रतीक्षा करें। इसी बीच नाव के मालिक और मैने सोने का निश्चय किया—अगर नीद आई तो। और हम दोनो भी उसी छोटी-सी बरसाती मे घुस गये जहाँ वह हालैडवासी, अभी भी पानी से तर, पहले से पडा था। लहरो की फुहारे नाव के आगे के हिस्से पर पड रही थी और पानी रिस-रिसकर हम तक आ रहा था। परिणामस्वरूप कुछ ही देर मे हम लोग भी अपने हालैडवासी दोस्त की तरह भीग गये। इस तरह हम सारी रात पडे रहे—और आराम के नाम पर कुछ भी न मिला। लेकिन दूसरे दिन हवा थम गई और रात होने से पहले-पहले हमने एम्बाय पहुँचने का इरादा किया। समुद्र पर अब तक ३० घटे हो चुके थे और एक बोतल घटिया "रम" के अलावा खाने-पीने को कुछ न मिला था क्योकि जिस पानी पर हम सफर कर रहे थे वह तो खारा था ही।

शाम को मुझे काफी बुखार हो आया और मै बिस्तर पर लेट गया। लेकिन कही मैंने पढा था कि बहुतसा ठडा पानी पी लेने पर बुखार उतर जाता है, मैंने छककर पानी पी लिया। रातभर खूब पसीना छूटता रहा और बुखार उतर गया। सुबह छोटी नाव के जरिये किनारे पर उतरकर मैं पैदल ही अपनी यात्रा पर चल पडा। मेरा लक्ष्य था ५० मील दूर स्थित बर्लिगटन। मुझे बताया गया था कि वहाँ पर मुझे नावे मिल जाएगी जो फिलाडेल्फिया तक का बाकी रास्ता तय करा देगी।

सारा दिन खूब पानी बरसता रहा। मैं बिल्कुल भीग गया और दोपहर तक एकदम थक गया। इसलिए मैं एक छोटी-सी सराय मे रात भर ठहरा रहा। इस समय तक मैं सोचने लगा था कि मैंने घर न छोड़ा होता तभी ठीक था। मेरी सूरत-शकल भी इतनी भद्दी दिखलाई पडने लगी थी कि लोगो के सवालो से मुझे लगने लगा कि वे मुझे काम छोडकर भागा हुआ नौकर समझते हैं और मुझे आशका रहने लगी कि शक पर मुझे गिरफ्तार न कर लिया जाए। फिर भी अगले दिन मैंने अपनी यात्रा जारी रखी और शाम तक एक डाक्टर ब्राउन की सराय मे जा

पहुँचा। वर्लिंगटन वहाँ से आठ-दस मील दूर था। मैं कुछ नाश्ता कर रहा था कि वे मुझसे बातचीत करने लगे और यह देखकर मैं थोडा पढा-लिखा भी हूँ, वडे भाईचारे से और दोस्ताना लहजे मे बातें करने लगे। हमारी जान-पहचान उनके जीवनकाल मे हमेशा रही। मेरा ख्याल है कि वे भ्रमण करते रहने वाले डाक्टर थे क्योकि इंगलैंड का कोई भी घर ऐसा नही था या यूरोप का कोई भी देश ऐसा नही था जिसका विशेष वर्णन वे न कर सके। उन्होने साहित्य का अध्ययन भी किया था। वे वुद्धिमान् थे, लेकिन ईश्वर की सत्ता पर विश्वास नही करते थे और कुछ वर्षो वाद तो उन्होने कविता मे बाइबिल का मजाक ही बनाना शुरू कर दिया, जिस तरह काटन ने वर्जिल के साथ किया था। इस उपाय से कुछ घटनाओ को उन्होने अत्यन्त भद्दे ढग से सामने रक्खा था। अगर उनका कृतित्व प्रकाशित हो गया होता तो कमजोर दिमागों पर अवश्य उसका असर पडता; लेकिन वह कभी प्रकाश मे नही आया।

रात भर उन्ही के घर मे रहा और अगली सुवह वर्लिंगटन पहुँच गया। लेकिन यह जानकर मुझे वडी निराशा हुई कि मेरे पहुँचने से कुछ समय पहले सारी नावें जा चुकी हैं और अब मगलवार से पहले कोई नाव जाने की आशा नही; वह शनिवार था। यह सुनकर मैं शहर मे एक वुढ़िया के पास लौट आया जिससे मैंने नाव मे यात्रा करते समय खाने के लिए एक रोटी खरीदी थी, और उसकी राय पूछने लगा। उसने मुझे नाव जाने तक अपने घर मे रहने का निमत्रण दिया; और पैदल चलते-चलते थक जाने के कारण मैंने उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। यह समझकर कि मैं एक मुद्रक हूँ, वह जोर देने लगी कि मैं वही रहकर अपना धधा शुरू कर दूं। उसे क्या मालूम था कि इस धधे मे कितना सामान पहले ही लगाना पड़ता है। वह वहुत अतिथिपरायण थी और रात्रि के भोजन के समय उसने मुझे वैल का गोश्त खिलाया और बदले मे सिर्फ "एल" का एक गिलास स्वीकार किया। और मैं सोचने लगा कि अब आगामी मंगलवार तक मुझे यही रहना है। लेकिन शाम

को मैं नदी के किनारे टहल रहा था कि फिलाडेल्फिया जाने वाली एक नाव आई। उसमे कई आदमी पहले से थे। नाव के मालिक ने मुझे भी बिठा लिया और चूंकि हवा नही चल रही थी इसलिए सारा रास्ता हमे नाव खेते हुए ही काटना पडा। इस तरह लगभग आधी रात हो गई, लेकिन शहर फिर भी न दिखलाई पडा। कुछ को विश्वास था कि शहर हम पीछे छोड आये हैं और वे आगे पतवार नही चलायेंगे। इसलिए किनारे पर पहुँचकर एक छोटी खाडी मे हमने अपनी नाव खड़ी कर दी। पास ही एक पुराना बाडा था और चूंकि अक्तूबर महीने की सर्द रात थी इसलिए बाडे की लकडियो से हमने आग जलाई और सुबह होने तक वही रहे। सुबह एक आदमी ने पहचान लिया कि वह जगह 'कूपर्स क्रीक' थी जो फिलाडेल्फिया से कुछ आगे पड़ती थी। खाड़ी से बाहर निकलते ही शहर दिखाई पडने लगा और रविवार की सुबह आठ या नौ बजे हम वहाँ पहुँच गये। हमारी नाव मार्केटस्ट्रीट पर जाकर रुकी।

अपनी यात्रा का वर्णन मैंने अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक किया है और फिलाडेल्फिया मे अपने प्रथम प्रवेश की बात भी मैं विस्तार से ही लिखूंगा, जिससे तुम साफ-साफ देख सको कि आज जो महत्त्वपूर्ण स्थान मैं अपने लिए बना पाया हूँ उसका प्रारम्भ कितना अविश्वसनीय था। मैं अपने काम करने के कपडे पहने था क्योंकि अच्छे कपडे समुद्र के रास्ते से आने वाले थे। यात्रा के कारण मैं गन्दा हो गया था और मेरी जेबे कमीजो और मौजो से फूली हुई थी। मैं वहाँ किसी भी आदमी को नही जानता था और यह भी नही जानता था कि कहाँ ठहरा जा सकता है। पैदल चलने, नाव खेने और आराम न कर पाने की वजह से मैं थक गया था और भूखा था; मेरा सारा धन एक डच डालर और तांबे की एक शिलिंग के रूप मे था। शिलिंग मैंने किराये के रूप मे नाव वाले को दे दिया। उसने पहले तो लेने से इन्कार किया क्योंकि नाव खेने मे मैंने काफी सहायता की थी, लेकिन मैंने जिद की तो उसे लेना ही पडा। पास मे कम पैसे होने पर आदमी ज्यादा पैसे होने से कही ज्यादा उदार हो

जाता है—शायद इस डर से कि लोग उसे धनहीन न समझ लें।

अपने चारो ओर देखता हुआ मैं सडक पर चलने लगा कि बाजार के पास मुझे रोटी लिये एक लडका जाता दिखलाई पडा। रोटी का ही भोजन मैं कई बार कर चुका था इसलिए लडके से मैंने उस दुकान का पता पूछा जहाँ से उसने रोटी खरीदी थी। उसने मुझे बताया और मैं फौरन दूसरी सडक पर स्थित नानबाई की दूकान पर जा पहुँचा। मैंने बिस्कुट माँगा, जैसे बोस्टन मे मिला करते थे, लेकिन ऐसा लगता था मानो फिलाडेल्फिया मे बिस्कुट नही बनाये जाते थे। तब मैंने तीन पेनी वाली रोटी माँगी और नानबाई ने जवाब दिया कि ऐसी कोई रोटी नही होती। मुझे पैसों का अन्तर तो मालूम नही था, और न ही मुझे वहाँ के सस्तेपन का कुछ अन्दाज था और न रोटियो के नाम ही मुझे मालूम थे, इसलिए इन बातों पर ध्यान दिये बगैर मैंने उससे तीन पेनी की कोई भी रोटी दे देने को कहा। उसने मुझे तीन बडी-बडी फूली रोटियाँ थमा दी। इस मात्रा पर मुझे आश्चर्य हुआ लेकिन मैंने उन्हें ले लिया और चूंकि जेबो मे जगह बिल्कुल नही थी, इसलिए दो रोटियो को बगल मे दबा लिया और तीसरी रोटी खाता हुआ चलने लगा। इसी तरह चलता हुआ मैं चौथी सडक तक पहुँचा ; रास्ते मे मेरे भावी श्वसुर का घर भी पड़ा। दरवाजे पर खडी एक सुन्दरी ने मुझे देखा और सोचा कि मेरी शकल कितनी हास्यास्पद मालूम पड रही है—और सचमुच बात भी ऐसी ही थी। तब मैं मुडकर चेस्टनट स्ट्रीट पर चलने लगा और ग्रेफर वालनट स्ट्रीट का कुछ हिस्सा पार किया और घूमकर मै फिर मार्केट स्ट्रीट वाले घाट पर पहुँच गया। रास्ते भर मैं रोटी खाता रहा था। घाट पर वह नाव अभी भी खड़ी थी जिस पर मैं आया था। नदी का ठडा पानी पीने के लिए मैं नाव पर चढ गया ; और चूंकि एक रोटी से मेरा पेट भली प्रकार भर गया था इसलिए बाकी दोनो रोटियां मैंने एक औरत और उसके बच्चे को दे दी। वे दोनो उसी नाव मे हमारे साथ आये थे और आगे जाने का इन्तजार कर रहे थे।

इस तरह ताजा होकर मै फिर उसी सडक पर चल पडा। अब तक सडक पर अच्छे-अच्छे कपड़े पहने काफी आदमी मेरी ही दिशा मे चल रहे थे। मैं उनके साथ-साथ चलने लगा और इस तरह बाजार के पास स्थित "क्वेकरो" के एक विशाल सभा-भवन मे जा पहुँचा। मैं उनके साथ बैठ गया। पिछली रात भर आराम न कर पाने के कारण मैं ऊँघ रहा था, और अपने चारो ओर देख रहा था लेकिन सुन कुछ न पा रहा था, इसलिए गहरी नीद मे सो गया और समाप्त होने तक सोता रहा। सभा विसर्जित होने पर एक व्यक्ति ने मेहरबानी करके मुझे जगा दिया। फिलाडेल्फिया का यह पहला घर था जहाँ प्रवेश करके मैं सोया था।

मैं फिर नदी की तरफ चल पडा, लोगो के चेहरो को देखता हुआ। रास्ते मे एक "क्वेकर" युवक मुझे दिखलाई पडा जिसका चेहरा मुझे पसन्द आया और उसे सम्बोधित करके मैंने पूछा कि किसी अजनबी को ठहरने की जगह कहाँ मिल सकती है। हम तब "थ्री मेरिनर्स" नामक सराय के पास ही थे। उसने कहा, "एक जगह तो यही है जहाँ अजनबियो के ठहरने की सुविधा है, लेकिन यह जगह बदनाम है। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हे एक अच्छी जगह दिखा सकता हूँ।" वह मुझे वाटर स्ट्रीट मे स्थित "क्रुक्ड बिलेट" मे ले गया। वही मैंने खाना खाया, और जब मैं खा ही रहा था, तभी सराय के मालिक ने कुछ बड़े चालाक किस्म के सवाल मुझसे पूछे, क्योंकि, मुझे ऐसा आभास हो रहा था, मेरी कम उम्र और सूरत-शक्ल को देखकर उसे सन्देह हो रहा था कि मैं घर से भाग आया हूँ।

खाना खाते ही नीद ने मुझे फिर घेरना शुरू किया और एक बिस्तरा मुझे बता दिया गया तो मैं बिना कपडे उतारे ही उस पर लेट गया। शाम के ६ बजे तक मैं सोता रहा और रात का खाना खाकर जल्दी ही फिर सोने चला गया और अगली सुबह तक गहरी नीद मे खोया रहा। तब मैंने अपने कपड़ो को यथासम्भव ठीक किया और मुद्रक एँड्रब्रेडफोर्ड

के यहाँ पहुँचा। दूकान पर मुझे उसका पिता मिला, जिससे मैं न्यूयार्क मे पहले ही मिल चुका था। वह घोड़े पर सवारी करके मुझसे पहले ही फिलाडेल्फिया जा पहुँचा था। उसने अपने बेटे से मेरा परिचय कराया और एँड्रू ने बड़ी शालीनता से मेरा स्वागत किया। मेरे लिए उसने नाश्ता मंगाया और बताया कि उसे किसी सहायक की जरूरत नही है क्योकि कुछ दिनो पहले एक आदमी उसे मिल गया था। लेकिन उसने बताया, कुछ दिनो पहले शहर मे एक और मुद्रक कीमर ने छापाखाना खोला है, वह शायद मुझे नौकरी दे सके। और अगर वहाँ भी नौकरी न मिल सकी तो मैं खुशी से ब्रैडफोर्ड के घर पर ही रहूँ; वह मुझे धन्धा बढ़ने तक छोटा-मोटा काम देता रहेगा।

वृद्ध ब्रैडफोर्ड ने मुझसे कहा कि वे स्वयं मेरे साथ नये मुद्रक के पास चलेंगे। और जब हम कीमर के पास पहुँचे तो उन्होने कहा, "मित्र, मैं तुम्हारे ही धन्धे के एक नवयुवक को तुम्हारे पास लाया हूँ; शायद तुम्हें किसी ऐसे आदमी की जरूरत हो।" कीमर ने मुझसे कुछ सवाल पूछे और यह देखने के लिए कि मैं कैसे कम्पोज करता हूँ एक "कम्पोजिग स्टिक" मेरे हाथ में पकडा दी और तब कहा कि अभी तो मेरे लिए उसके पास कोई काम नही है लेकिन जल्दी ही वह मुझे नौकर रख लेगा। तब वह ब्रैडफोर्ड को अपने साथ सहानुभूति रखने वाला शहर का एक निवासी समझकर उसके साथ अपने वर्तमान धन्धे और भविष्य की संभावनाओ के बारे मे बातें करने लगा। ब्रैडफोर्ड ने यह नही बताया कि वह नगर के दूसरे मुद्रक का पिता है। कीमर ने जब कहा कि बहुत जल्दी शहर का सारा छपाई का काम समेट लेगा तो बूढा ब्रैडफ़ोर्ड बड़ी चालाकी से स्थान पूछने और छोटी-छोटी शंकाएँ करने लगा, जिससे कीमर को स्पष्ट बताना पड़ा कि किस भरोसे से वह काम कर रहा है और किस तरह अपना व्यापार बढाने का विचार कर रहा है। मैं पास ही खड़ा सारी बातें सुन रहा था और मैंने फौरन पहचान लिया कि उनमे से एक पुराना चालाक खुर्राट था और दूसरा एकदम नौसिखुआ।

ब्रैडफोर्ड ने मुझे कीमर के पास ही छोड दिया और जब मैंने उसे बताया कि बूढा कौन था तो उसे बडा आश्चर्य हुआ।

मैंने देखा कि कीमर के छापाखाने मे एक पुराना टूटा-फूटा प्रेस था और एक छोटा, घिसा हुआ अग्रेजी का "फाट"। इसका इस्तेमाल उस समय वह खुद कर रहा था—एक्विला रोज़ के सम्बन्ध मे लिखा गया एक मर्सिया प्रकाशित करने मे। एक्विला रोज़ का नाम मैं पहले भी ले चुका हूँ। यह बडा प्रतिभाशाली युवक था, बडा सच्चरित्र, नगर मे काफी सम्मानित, असेम्बली का क्लर्क और एक अच्छा कवि। कीमर स्वयं भी कविता लिखता था, लेकिन बडे उदासीन भाव से। उसका तरीका था अपनी कविता को एकदम कम्पोज करने का, इसलिए यह नही कहा जा सकता था कि वह कविता लिखता ही था। चूँकि उसके पास कोई कापी न थी और केसो का एक ही जोडा था और सम्भावना यही थी कि उसके मर्सिया मे ही सारे अक्षर लग जाएँ, इसलिए कोई चारा ही नही था। प्रैस अभी तक काम मे नही लाया गया था और उसके बारे मे वह कुछ भी नही समझता था। मैंने उससे कहा कि प्रैस को काम करने लायक मैं बना दूंगा। और जैसे ही वह अपना मर्सिया तैयार कर चुकेगा मैं आकर उसे छाप दूंगा। तब मैं ब्रैडफोर्ड के पास वापस लौट गया। उसने मुझे समय काटने को थोडा-सा काम दे दिया और मैं वही रहने तथा खाना खाने लगा। कुछ दिनो बाद कीमर ने मर्सिया छापने के लिए मुझे बुलाया। अब उनके पास "केसों" का एक और जोडा हो गया था और एक परचे के पुनर्मुद्रण का काम उसे मिल गया था, सो इसी काम मे उसने मुझे लगा दिया।

मैंने पाया कि दोनो ही मुद्रक इस धन्धे के लिए सर्वथा अनुपयुक्त थे। ब्रैडफोर्ड ने कही पर इसकी शिक्षा नही पाई थी और वह काला अक्षर भैंस बराबर था। कीमर कुछ पढ़ा लिखा तो जरूर था लेकिन था सिर्फ कम्पोज़ीटर जो प्रैस के कामो के बारे मे कुछ न जानता था। वह एक फ्रासीसी पैगम्बर का अनुयायी था और उनके आन्दोलन मे जोश से भाग

ले सकता था। इस समय उसका कोई धर्म न था, पर मौके-मौके पर वह सभी धर्मों को मानता था। दुनिया की उसे कोई जानकारी न थी और जैसा मुझे बाद मे मालूम हुआ, अपनी रचनाओ मे काफी दुष्टता प्रदर्शित करता था। उसे पसन्द नही था कि काम तो मैं उसके यहाँ करूँ और रहूँ ब्रैडफोर्ड के यहाँ। निश्चय ही उसके पास एक मकान तो था पर फर्नीचर नही था, इसलिए वह मुझे अपने यहाँ नही रख सकता था लेकिन उसने मिस्टर रीड के यहाँ, जिनके बारे मे मैं पहले भी लिख चुका हूँ और जो उसके मकानमालिक भी थे, रहने का बन्दोबस्त कर दिया। अब तक मेरे कपडे और बक्स आदि आ गये थे और उस पहले दिन की तुलना मे, जब मैं रोटी खाता हुआ सडक पर जा रहा था, अब मिस रीड की आँखो मे कही ज्यादा भला आदमी दिखलाई पडने लगा था।

अब नगर के कुछ युवको से मेरा परिचय हो चला था, जो अध्ययन के शौकीन थे। उनके साथ मेरा शाम का समय खुशी-खुशी बीतने लगा। अपने परिश्रम और मितव्ययता के आधार पर मेरे पास कुछ पैसा हो गया था और यथासम्भव अच्छी तरह रहने लगा था। बोस्टन को ज्यादा से ज्यादा भूलने की कोशिश करता था और चाहता था कि कोई मेरी वर्तमान रिहाइश के बारे मे जान न सके। सिर्फ मेरा मित्र कालिन्स मेरे बारे मे जानता था, लेकिन उस पर मुझे भरोसा था। मैं उसे लिखता वह उसे गुप्त ही रखता। आखिरकार एक ऐसी घटना हो गई जिसकी वजह से मुझे अपने इरादे के विपरीत जल्दी ही लौटना पडा। मेरे एक बहनोई राबर्ट होम्स बोस्टन और डेलावेयर के बीच यात्रा करने वाले एक जहाज के कप्तान थे। फिलाडेल्फिया से ४० मील दूर न्यूकैसिल मे उन्होने मेरे बारे मे सुना और एक पत्र मुझे लिखा। उसमे लिखा था कि बोस्टन से एकाएक चले आने के कारण मेरे मित्र बडे चिन्तित हैं और मुझे देखने को बड़े इच्छुक हैं। यह भी लिखा कि अगर मैं लौट आऊँ तो सब कुछ मेरे ही अनुसार ठीक हो जायगा। इस विषय मे तो उन्होने बड़ी गम्भीरता से लिखा था। मैंने उनके पत्र के उत्तर मे उन्हे

उनकी सम्मति के लिए धन्यवाद देते हुए अपने बोस्टन छोडने के सारे कारणो को स्पष्ट रूप से लिख दिया, जिससे उन्हें विश्वास हो जाय कि मेरी गलती उतनी बडी नही थी जितनी वे समझते थे।

सूबे के गवर्नर सर विलियम कीथ उस समय न्यूकैसिल मे थे। और कैप्टन होम्स के पास जिस समय मेरा खत पहुँचा, वे गवर्नर के पास ही थे। कैप्टन होम्स ने गवर्नर को मेरे बारे मे बताया और मेरा पत्र भी दिखा दिया। गवर्नर ने कहा कि मैं प्रतिभाशाली युवक मालूम पडता हूँ और इसलिए मुझे उत्साहित किया जाना चाहिए। उनके विचार से फिलाडेल्फिया के मुद्रक निहायत निकम्मे थे और अगर मैं वहाँ जम गया तो जरूर सफल होऊँगा, और जहाँ तक उनका सवाल है, वे मेरे लिए काम का प्रबन्ध करेंगे और अपनी शक्ति भर सब कुछ करेंगे। यह सब मेरे बहनोई ने मुझे बाद मे बोस्टन मे बताया। उस समय तो मुझे कुछ भी मालूम नही था। एक दिन कीमर और मैं साथ-साथ खिडकी के पास काम कर रहे थे कि हमने देखा कि गवर्नर तथा एक और व्यक्ति (जो न्यूकैसिल के कर्नल फ्रेंच साबित हुए) बहुत बढिया कपडे पहने सडक पार करके सीधे हमारे घर के पास आये और हमारा दरवाजा खटखटाने लगे।

कीमर ने सोचा कि वे लोग उससे मिलने आये हैं और वह फौरन नीचे भागा। लेकिन गवर्नर मेरे बारे मे पूछते हुए, ऊपर आये, और अत्यन्त विनम्र भाव से (जो मेरे लिए बिलकुल नई चीज थी) मेरा हाल-चाल पूछने लगे। उन्होने मुझसे परिचित होने की इच्छा प्रकट की और फिलाडेल्फिया मे आते ही उनसे न मिलने के लिए भी झिडकी दी और फिर मुझे एक सराय मे ले जाने की जिद करने लगे, जहाँ वे कर्नल फ्रैंच के साथ (उनके ही अनुसार) बढिया मेडिस चखने जा रहे थे। मैं भारी अचरज में पड गया और कीमर तो जहर दिये गए सुअर की तरह आँखे फाडकर देखने लगा। जो कुछ भी हो, मैं गवर्नर और कर्नल फ्रैंच के साथ थर्ड स्ट्रीट के चौराहे पर स्थित एक सराय मे पहुँचा. मदिरा पीते

हुए गवर्नर ने प्रस्ताव रक्खा कि मैं वहाँ अपना व्यापार शुरू कर दूं, मुझे बताया कि सफलता की काफी सभावनाएं है और उन्होने और कर्नल फ्रेंच दोनो ने मुझे विश्वास दिलाया कि दोनों सरकारों से काम दिलाने में वे रुचि दिखायेंगे और उनका प्रभाव काम आयेगा। मैंने अपना सन्देह व्यक्त किया कि मेरे पिता इसमे मेरी सहायता नही करेंगे। इस पर विलियम ने कहा कि मेरे पिता के नाम वे एक खत लिख देंगे जिसमें फिलाडेल्फिया मे व्यापार शुरू करने के फायदे दिखायेंगे। उन्होने कहा कि वे निश्चय ही मेरे पिता को राजी कर लेंगे। इस तरह यह तय हुआ कि मैं पिता के लिए सर विलियम का सिफारिशी खत लेकर पहले जहाज से बोस्टन चला जाऊँ। तय किया गया कि इस बीच यह इरादा गुप्त ही रक्खा जायेगा अतः हमेशा की तरह मैं कीमर के यहाँ काम करता रहा। गवर्नर कभी-कभी मुझे अपने यहाँ खाने पर बुला भेजते और मुझसे बडे स्नेहपूर्वक, दोस्ताना ढग से बातचीत करते। उस समय मुझे यह सब बडा सम्मानजनक मालूम पड़ता।

१७२४ के अप्रैल मास के अन्त मे एक जहाज बोस्टन जा रहा था। मैंने कीमर से यह कहकर छुट्टी ली कि मैं अपने मित्रो से मिलने जा रहा हूँ। गवर्नर ने पिता जी के नाम एक लम्बा-सा पत्र लिखा जिसमे मेरी खूब बडाई की गई थी और फिलाडेल्फिया मे छापाखाना खोलने की जोरदार सिफारिश की गई थी कि इससे मैं काफी धन कमा सकूँगा। खाडी से निकलते समय हम तूफान मे फँस गये और जहाज मे दरार हो गई। जहाज की यात्रा बहुत ही बुरी गुजरी क्योकि लगभग पूरे रास्ते हमे जहाज से बाहर पानी उलीचते रहना पडा जिसमे मेरी बारी भी आई। लेकिन १५ दिन मे हम सकुशल बोस्टन पहुँच गये। मुझे वहाँ से गये ७ महीने हो चुके थे और मेरे दोस्तों को मेरे बारे मे कुछ भी नही मालूम था क्योकि कैप्टेन होम्स न तो अभी वापस आये थे और न उन्होने मेरे बारे मे कुछ लिखा ही था। अप्रत्याशित ढंग से मेरे पहुँच जाने पर मेरे सारे परिवार को बडा आश्चर्य हुआ, और भैया को छोड़कर सभी मुझे

देखकर बड़े खुश हुए और मेरा स्वागत किया। मैं भाई से मिलने छापाखाने गया था। उनकी नौकरी के समय से कही अधिक अच्छे कपडे मै पहने हुए था—एक नया शानदार सूट मेरे शरीर पर था, घडी थी, और भीतरी जेब मे पाँच पौंड के चाँदी के सिक्के थे। वे मुझसे पूरी तरह खुलकर नही मिले और एक बार सिर से पैर तक मुझे देखकर फिर अपने काम मे लग गये।

फेरी वाले अत्यन्त उत्कठित होकर मुझसे पूछने लगे कि मैं अब तक कहाँ था और वह देश कैसा है और मुझे पसन्द आया है या नही। मैंने उसकी और वहाँ गुजरे अपने सुखमय दिनो की काफी तारीफ की और वापस लौटने के इरादे पर जोर दिया। एक ने पूछा वहाँ का सिक्का कैसा होता है तो मैंने जेब से मुट्ठी भर चाँदी के सिक्के निकालकर उनके सामने फैला दिये। बोस्टन मे कागज के नोट चला करते थे, इसलिए सिक्के देखकर आश्चर्य से उनकी आँखें फैल गईं। तब मैंने अवसर निकाल-कर अपनी घडी उन्हें दिखाई और आखिर मे (भैया अब भी मुँह फुलाये, चुप बैठे थे) मैंने शराब पीने के लिए आठ पेनी का एक सिक्का देकर उनसे विदा ली। इस बार छापाखाने मे मेरे आने का भैया ने बहुत बुरा माना, क्योकि कुछ समय बाद माताजी ने उनसे समझौते की बात की कि हम दोनो भविष्य मे भाइयो की तरह रह सकें तो उन्होंने कहा कि मैंने उनके ही आदमियो के सामने उनका इस तरह अपमान किया है कि उसे वे न तो भूल सकते है और न क्षमा कर सकते हैं। लेकिन यही पर वे गलती कर रहे थे।

गवर्नर का खत पाकर पिताजी को काफी आश्चर्य हुआ लेकिन कुछ दिनो तक उन्होने मुझसे कुछ नही कहा। फिर जब कैप्टेन होम्स लौटकर आये तो उन्होने पत्र उन्हें दिखाया। पूछा कि क्या वे कीथ को जानते है और वह किस किस्म का आदमी है? साथ ही अपनी राय भी बता दी कि गवर्नर निश्चय ही कम बुद्धिमान् है जो एक लडके, जिसके वयस्क होने मे अभी भी तीन साल की देर है, व्यापार मे लगाना

चाहते हैं। होम्स ने कहा कि वे इस योजना के पक्ष में है, लेकिन पिताजी को यह बिल्कुल असभव मालूम पड रही थी और आखिर मे उन्होने साफ इनकार कर दिया। तब उन्होने सर विलियम को एक औपचारिक खत लिखा जिसमे मुझे सरक्षकता प्रदान करने की कृपा के लिए उन्हें धन्यवाद दिया लेकिन साथ ही मुझे व्यापार मे लगाने से इन्कार कर दिया, क्योकि उनके विचार से मैं इतने महत्त्वपूर्ण कारोबार का भार, जिसमे शुरू मे ही काफी रुपया लगता है, सम्हालने के लिए बहुत छोटा था।

अपने मित्र और साथी कालिन्स को, जो पोस्ट आफिस मे क्लर्क था, मैंने अपने नये देश के बारे मे बताया तो वह बड़ा खुश हुआ और उसने भी वहाँ जाने का इरादा कर लिया। मैं अपने पिता के निश्चय की प्रतीक्षा ही कर रहा था कि वह मुझसे पहले ही सूखे रास्ते से रोड आइलैण्ड के लिए चल पडा। अपनी किताबें, जिसमे गणित और विज्ञान का काफी बढ़िया सग्रह था, उसने छोड दी कि मैं अपनी किताबो के साथ उन्हे भी लेकर न्यूयार्क पहुँचूंगा, जहाँ वह मेरी प्रतीक्षा करेगा।

मेरे पिता ने यद्यपि सर विलियम के प्रस्ताव पर अपनी सहमति नही दी, फिर भी वे मुझ पर खुश थे कि जहाँ मैं रहता था वहाँ के इतने महत्त्वपूर्ण व्यक्ति से मैं इतना अच्छा चरित्र का सार्टीफिकेट पा सका था और इतना परिश्रम मैंने किया था और इतनी सावधानी से रहा था कि इतने कम समय मे ही काफी चीजें इकट्ठी कर ली थी। इसलिए जब उन्होंने पाया कि मुझमे और भैया मे समझौता होने की कोई गुंजाइश नही है तो उन्होने मुझे फिलाडेल्फिया वापस जाने की आज्ञा दे दी। उन्होने मुझे वहाँ के निवासियों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करने और उनकी प्रशंसा प्राप्त करने, तथा परनिंदा और बदनामी करने से बचने की सलाह दी, क्योकि उनके विचार से मेरा झुकाव परनिंदा की ही तरफ था। उन्होने कहा कि अनवरत परिश्रम और बुद्धिमत्ता-पूर्वक मितव्ययता से मैं इतना बचा सकता हूँ कि इक्कीस वर्ष की उम्र मे अपना कारोबार स्थापित कर सकूं। उन्होने यह भी कहा कि अगर थोड़ी-

बहुत कमी हो तो वे पूरी कर देंगे। और इस तरह दूसरी बार जब मैं न्यूयार्क के लिए रवाना हुआ तो उनके और माताजी के प्यार के कुछ उपहारो के अलावा यही सलाहें मुझे मिली—इस बार मैं उनकी सहमति से और उनके आशीर्वादो के साथ जा रहा था।

जहाज रोड आइलैण्ड के न्यूपोर्ट नामक स्थान पर ठहरा तो मैं अपने भैया जॉन से मिलने गया, जो कुछ साल पहले शादी करके वही जम गए थे। उन्होंने बडे प्यार से मेरा स्वागत किया क्योंकि वे हमेशा मुझे प्यार करते थे। उनके एक दोस्त वर्नन का कुछ पैसा पेंसिलवानिया मे बाकी था, लगभग पैंतीस पौंड। उन्होने मुझसे कहा कि रुपया लेकर मैं अपने पास रख लूं और बाद मे उनका पत्र पाकर उनके पास भेज दूं। इस आशय का एक पत्र उन्होने मुझे दिया। बाद मे इससे मुझे काफी परेशानी भी हुई।

न्यूपोर्ट मे हमारे जहाज मे न्यूयार्क के कई यात्री आये। इनमे से दो नवयुवतियाँ थी जो साथिनें थीं तथा एक और गंभीर, विचारशील, अधेड क्वेकर महिला, अपने नौकरो के साथ थी। क्वेकर महिला की कुछ भी मदद कर सकने मे अपनी तत्परता मैंने दिखाई थी, जिससे वे प्रभावित हुईं और मेरे प्रति एक उदार भावना उनमे पैदा हो गई। इसीलिए जब उन्होंने मेरी उन युवतियो के साथ रोज बढती घनिष्ठता देखी—और इस घनिष्ठता को वे दोनो बढावा देती थी—तो मुझे एक तरफ ले जाकर उस महिला ने कहा, "नवयुवक, मैं तुम्हारे लिए परेशान हूँ क्योंकि तुम्हारे साथ कोई दोस्त नही है और लगता है तुम दुनिया को जानते नही और न यही जानते हो कि जवानी के लिए कितने परन्दे तैयार रहते हैं। विश्वास करो, वे बहुत बुरी औरतें है। उनके हावभावो से मुझे यही दिखलाई पडता है। अगर तुम सावधान नही रहोगे तो वे तुम्हें जरूर किसी न किसी खतरे मे फँसा देंगी। तुम्हारे लिए वे अजनबी हैं और तुम्हारी भलाई के लिए ही मैं तुम्हें सलाह देती हूं कि तुम उनके साथ सम्पर्क मत बढाओ।" पहले तो मैंने उन्हें इतना बुरा नही समझा था जितना वह प्रौढ़ा कहती थीं, लेकिन

फिर उन्होंने दोनों के बारे में कुछ ऐसी बातें बताईं जो उन्होने सुनी और देखी थी लेकिन जो मेरी जकड मे न आई थीं। अब मुझे उनका कथन सत्य मान लेना पडा। उनकी भली सलाह के लिए मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और उसे मानने का वादा किया। जब हम न्यूयार्क पहुँचे तो दोनो ने मुझे अपने निवासस्थान का पता बताया और घर आकर मिलने का निमत्रण दिया। लेकिन मै टाल गया और अच्छा ही हुआ जो टाल गया। दूसरे ही दिन कैप्टेन को अपने काम मे एक चाँदी का चम्मच तथा कुछ और दूसरे चीजें गायब मिली और इन्हे फौरन शक हो गया कि यह काम उन्ही का है। उन्होने दोनो के डेरे की तलाशी लेने का वारंट निकलवाया, चोरी किया हुआ सामान बरामद किया और बदमाश औरतो को सजा दिलवाई। रास्ते मे हमारा जहाज समुद्र मे डूबी हुई एक चट्टान से टकराते-टकराते बाल-बाल बचा था। यह मुक्ति अपने जीवन के लिए मुझे अधिक महत्त्वपूर्ण लगी।

न्यूयार्क मे मेरा मित्र कालिन्स मुझे मिल गया। वह मुझसे कुछ समय पहले ही वहाँ पहुँच गया था। बचपन से ही हम लोगो मे आत्मीयता थी और हमने एक ही किताबें साथ-साथ पढी थी, लेकिन उसे पढने-लिखने का मुझसे कही ज्यादा समय मिला था और गणित मे उसका दिमाग खूब काम करता था, जिसमे मै उससे कोसो पीछे था। जब मैं बोस्टन मे रहता था तो मेरा अधिकाश खाली समय उसके साथ बातचीत करने मे बीतता था। उसने अपना परिश्रम जारी रक्खा था और कई पादरी तथा दूसरे लोग उसके ज्ञान के लिए उसका आदर करते थे और ऐसा महसूस होता था कि वह जिन्दगी मे कुछ कर दिखायेगा। परन्तु मेरी अनुपस्थिति मे उसने ब्राडी पीने की आदत डाल ली थी, और अपने तथा दूसरे लोगो के बताने पर मुझे पता लगा कि न्यूयार्क पहुँचने के बाद रोज वह ब्राडी के नशे मे धुत रहता था और बडा विचित्र व्यवहार करता था। वह जुआ भी खेलने लगा था जिसमे वह सारा पैसा हार गया था। परिणाम यह हुआ कि उसके मकान का

किराया मुझे ही चुकाना पडा और फिलाडेल्फिया तक का भाडा, वहाँ रहने का खर्च भी मेरे ही सिर आ पडा। इससे मेरी असुविधा बहुत बढ गई।

न्यूयार्क के तत्कालीन गवर्नर बिशप बर्नेट के पुत्र श्री बर्नेट ने जब जहाज के केप्टन से यह सुना कि उसके एक नवयुवक यात्री के पास बहुत सी किताबे हैं तो उन्होने मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। तदनुसार मैं उनके यहाँ गया। कालिन्स को भी जरूर मैं अपने साथ ले जाता लेकिन वह अपने आप मे ही नही था। गवर्नर ने बडी शालीनता के साथ मेरा स्वागत किया। मुझे अपना विशाल पुस्तकालय दिखाया और किताबो तथा लेखको के बारे मे काफी देर तक बातचीत की। यह दूसरा गवर्नर था जिसने मुझ पर मेहरबानी दिखलाई थी, जो मेरे जैसे लडके के लिए सचमुच खुशी की बात थी।

हम फिलाडेल्फिया की ओर चले। रास्ते मे मैंने वर्नन का रुपया वसूल कर लिया, जिसके बिना यात्रा समाप्त करना ही हमारे लिए मुश्किल हो जाता। कालिन्स चाहता था कि उसे किसी मुहाफिजखाना मे काम मिल जाए, लेकिन उन्होने या तो उसकी साँस से पहचान लिया कि वह शराब पीता है या उसके व्यवहार से। इसलिए कुछ सिफारिशो के बावजूद भी उसे कही भी सफलता न मिली। मेरे ही साथ उसी घर मे, मेरे ही खर्चे पर वह रहता रहा। उसे मालूम था कि वर्नन का पैसा मेरे पास है और वह हमेशा मुझसे कर्ज माँगता रहता था और कहता रहता था कि नौकरी मिलते ही सारा कर्ज वह फौरन वापस कर देगा। आखिर मे उसने धीरे-धीरे इतना रुपया ले लिया कि मैं सोच-सोचकर चिन्तित रहने लगा कि पैसा भेजने का परवाना जब आयेगा तब मैं क्या करूँगा।

उसका शराब पीना जारी रहा। कभी-कभी हममे झगडा भी हो जाता, क्योकि नशे मे वह बडा झगडालू हो उठता था। एक बार डेला-पेयर की खाडी मे हम लोग नाव खे रहे थे कि अपनी बारी आने पर

उसने खेने से इन्कार कर दिया। उसने कहा "तुम लोग नाव खेना, मुझे घर पहुँचाओ।" मैंने कहा, "हम नही खेवेंगे।" वह बोला, "तुम्हें खेना पड़ेगा, नही तो सारी रात पानी पर रहो, जो पसन्द हो, करो।" दूसरों ने कहा, "चलो हम लोग ही खे ले। लेकिन इससे क्या जाहिर होता है?" लेकिन मेरा दिमाग तो उसके दूसरे व्यवहारो से खट्टा हो चुका था, इसलिए मैं इन्कार करता गया। अब उसने कसम खाई कि या तो मैं नाव खेऊँ या वह मुझे पानी मे फेंक देगा, और आगे बढकर, पटरे पर पाँव रखकर उसने एक मुक्का मुझे मारा। इस पर मैंने दोनो हाथो से उसे उठाकर सिर के बल पानी मे फैंक दिया। मैं जानता था कि वह अच्छा तैराक है, इसलिए उसके डूबने की मुझे फिक्र न थी, लेकिन इससे पहले कि वह घूमकर नाव को पकड़ सके, हमने दो-चार हाथ मारकर नाव को उसकी पहुँच से बाहर कर दिया। उसके बाद भी जब-जब वह तैरकर नाव के पास आता तो कुछ हाथ मारकर हम नाव को उससे दूर कर देते और उससे पूछते कि क्या वह अब नाव खेवेगा। वह जिद पर अड़ गया था और थककर मर जाने के लिए तैयार था लेकिन नाव खेने के लिए नही। खैर, जब वह काफी थक गया तो हमने उसे पानी से निकाल लिया और शाम को तर-ब-तर घर ले आये। उसके बाद हम दोनो के बीच बातचीत बन्द हो गई। उसी बीच उसकी पश्चिमी द्वीपसमूह के एक कैप्टेन से मुलाकात हो गई, जिसके ऊपर बारबैडोस से एक धनाढ्य व्यापारी के बच्चो को पढाने के लिए एक ट्यूटर लाने का भार था। उसने कालिन्स को अपने साथ ले जाना स्वीकार कर लिया। तब वह मुझसे वादा करके—कर्ज चुकाने के लिए पहली तनख्वाह मिलते ही वह पैसा भेजेगा—चला गया, लेकिन उसके बाद मुझे उसकी कोई खबर नही मिली।

वर्नन के धन को खर्च कर देना मेरी जिन्दगी की पहली सबसे बडी गलती थी; और इससे सिद्ध हो गया कि मुझे किसी महत्त्वपूर्ण व्यापार को सम्हालने के अयोग्य समझकर पिता जी ने भूल नही की थी। पर

उनका पत्र पढकर सर विलियम ने कहा कि वे बहुत घमडी हैं। उनका कहना था कि आदमी आदमी मे बडा फर्क होता है और हमेशा उम्र बढने पर ही विवेक नही प्राप्त होता और जवानी हमेशा विवेकहीन नही होती। वे बोले, "और चूंकि तुम्हारे पिता तुम्हे व्यापार मे नही लगा रहे है, इसलिए मैं खुद जाऊँगा। तुम मुझे इगलैंड से मगाने वाली चीजो की एक सूची दो तो मैं उन्हे मँगा दूंगा। जब तुम्हारे पास पैसा हो जाय तो वापस कर देना। मैं तय कर चुका हूँ कि यहाँ एक अच्छा मुद्रक होना ही चाहिए और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस काम मे सफलता प्राप्त करोगे।" उन्होने यह सब इतनी आत्मीयता से कहा था कि मुझे इसकी सत्यता पर ज़रा भी सन्देह न हुआ। अपना छापाखाना खोलने की बात को अब तक मैंने फिलाडेल्फिया मे गुप्त रक्खा था और अभी भी कोई नही जानता था। अगर किसी को मालूम हो गया होता कि मैं गवर्नर पर निर्भर कर रहा हूँ तो शायद कोई दोस्त, जो गवर्नर को ज्यादा अच्छी तरह जानता होता, मुझे निश्चय ही गवर्नर पर भरोसा करने की सलाह न देता, जैसा कि बाद मे मुझे उनके चरित्र के बारे मे पता लगा कि वे लोगो से वायदे तो बडी तत्परता से करते है लेकिन उन्हे पूरा कभी नही करते, लेकिन मैं तो उन्हे भली प्रकार जानता नही था, फिर कैसे उनके प्रस्ताव को अगम्भीर समझ लेता ? मैं तो उन्हे ससार के सबसे अच्छे आदमियो मे से एक मानता था।

छापाखाने के सामानो की एक सूची बनाकर मैंने उन्हें दी, जिसका मूल्य मेरे अनुमान से लगभग एक हजार पौंड था। उन्होने वह सूची पसन्द की और कहा कि अगर टाइप पसन्द करने और अच्छे से अच्छा सामान खरीदने के लिए मैं ही इगलैंड चला जाऊँ तो लाभ होगा या नही ? और वे बोले, "वहाँ पहुँचकर तुम लोगो से जान पहचान भी पैदा कर सकोगे और फिर वापस लौटकर स्टेशनरी तथा पुस्तको की दुकान के लिए पत्र-व्यवहार भी कर सकोगे।" मैंने कहा कि मेरे जाने से वाकई लाभ होगा। उन्होने कहा, "तुम ऐनिस से जाने के लिए

तैयार हो जाओ।" ऐनिस नामक जहाज साल में एक बार जाता था और उस समय लन्दन और फिलाडेलफिया के बीच चलने वाला अकेला जहाज था। लेकिन ऐनिस कुछ महीनों बाद ही जाने वाला था, इसलिए मैं कीमर के साथ ही काम करता रहा। मुझे हमेशा ख्याल आता रहता कि न जाने कब वर्नन अपना पैसा मांग बैठे—मैं कालिन्स द्वारा खर्च किये धन के बारे मे हमेशा चिन्ताकुल रहता; लेकिन वर्नन ने अपना धन कुछ बरसो तक नही माँगा।

मेरा ख्याल है कि मैं एक बात भूल गया। बोस्टन से मेरी पहली यात्रा मे हमारा जहाज ब्लाक आइलैंड के पास हवा बन्द होने के कारण रुक गया था और जहाज के यात्री मछली मारने लगे थे। काफी मछलियाँ पकड़ी गईं। उस समय तक मै जानवरो का मास न खाने के अपने निश्चय पर दृढ़ था; और उस अवसर पर मैं अपने शिक्षक ट्रोयन के समान सोचने लगा कि कोई भी मछली हमे जरा भी नुकसान नही पहुँचा सकती, इसलिए मछली खाना हत्या करने के ही बराबर है। यह बडा युक्तिसगत मालूम पडता था। लेकिन पहले मुझे मछली बड़ी अच्छी लगती थी और जब भुनी हुई गर्म मछली कढ़ाई से बाहर निकाली गई तो उसकी खुशबू बड़ी बढिया मालूम पड रही थी। कुछ समय तक सिद्धान्त और रुचि मे द्वन्द्व होता रहा। फिर जब बडी मछलियों को चीरा गया तो मुझे भली प्रकार याद है, उनके पेट से छोटी मछलियाँ निकली। तब मैने सोचा—'अगर तुम एक-दूसरे को खा सकती हो तो आदमी तुम्हे क्यो नही खा सकते?' और मैंने भोजन के साथ भरपेट मछलियाँ खाईं। तब उसके बाद तो मैं दूसरे लोगो के साथ खाने लगा; हाँ, बीच-बीच मे कभी शाकाहार पर उतर आता था। विचारशील प्राणी होना कितनी बड़ी बात है, क्योंकि वह हर प्रस्तावित काम के लिए समुचित कारण खोज निकालता है।

कीमर और मेरी घनिष्ठता काफी हो गई थी और हम एक-दूसरे के काफी अनुरूप भी हो गये थे, क्योंकि उसे मेरे व्यापार के इरादे के बारे

मे कुछ भी मालूम नही था। उसमे जोश अब भी काफी था और वाद-विवाद का वह प्रेमी था। फलत हममे अकसर विवाद हो जाया करता। मैं उस पर अपना सुकरात वाला तरीका लगाता और विवाद आदि के विषय से कोसो दूर के सवाल उससे पूछता, लेकिन धीरे-धीरे विषय पर आ जाता जिससे वह बडी मुश्किल मे पड जाता और अपनी ही बात का विरोध करने लगता। आखिरकार वह हास्यास्पद रूप से सतर्क हो गया और विना पहले यह पूछे हुए कि "इस सवाल से मैं क्या नतीजा निकालना चाहता हूँ" वह मेरे साधारण से साधारण सवाल का उत्तर न देता। फिर भी इन विवादो की वजह से वह मुझे इतना अधिक विचारवान् समझने लगा कि उसने मेरे सामने एक नया सम्प्रदाय चलाने के अपने इरादे मे साथी बनाने का प्रस्ताव रख दिया। उसका कथन था कि वह सिद्धान्तो का प्रतिपादन करेगा और मैं सभी विरोधियो का मुँह तर्को से बन्द कर दूँगा जब वह मेरे सामने अपने सिद्धान्तो को स्पष्ट करने लगा तो मैंने पाया कि कुछ बातो मे मेरा उससे गहरा मतभेद है और मैंने साफ कह दिया कि जब तक वह मेरी बात भी थोडी बहुत नही मानेगा, तब तक मैं कोई मतलब नही रक्खूँगा।

कीमर लम्बी दाढी रखता था, क्योकि उसने मौज़ेक के नियमो मे कही पढा था कि "तुम अपनी दाढ़ी के कोनों को कभी नहीं काटोगे।" इसी तरह वह सातवाँ दिन, सेबाथ, भी मानता था। ये दोनो ही बातें उसके लिए आवश्यक थी। मुझे दोनो से ही नफरत थी, लेकिन मैंने इस शर्त पर इन्हे शामिल करना मंजूर कर लिया कि वह पशुओ का गोश्त न खाने का सिद्धान्त लागू करे।

उसने कहा, "मुझे सन्देह है कि मेरा शरीर इसे बर्दाश्त कर सकेगा या नही।" मैंने उसे विश्वास दिलाया कि उसका शरीर इसे बर्दाश्त कर सकेगा और शाकाहार से उसका स्वास्थ्य सुधरेगा। साधारणत· वह बहुत खाना खाता था, लेकिन मैंने तय कर लिया कि अब से उसे कम भोजन दिया जायेगा। उसने यह प्रयोग करना इस शर्त पर स्वीकार

कर लिया कि मैं उसका साथ दूंगा। मैंने उसका साथ दिया और तीन महीने तक यही क्रम चलता रहा। पडोस की एक स्त्री हमारे लिए भोजन बनाकर हमारे पास उसे समय पर ले आती थी। उसे मैंने ४० प्रकार के पकवान की एक सूची दे रक्खी थी जिसमे गोश्त, मछली और चिडियाँ कोई भी नही इस्तेमाल होते थे। इसी सूची मे से वह समय-समय पर भोजन बनाया करती थी। यह झक इस समय मेरे लिए बिल्कुल ठीक थी क्योकि इसमे खर्च बहुत कम होता था—एक हफ्ते मे अठारह पैसे से ज्यादा कभी खर्च नही होता था। तब से अब तक मैं कई बार ४० दिनों का व्रत रख चुका हूँ और तब मैं अपना साधारण भोजन भी एकाएक रोक चुका हूँ और मुझे कोई असुविधा नही हुई। इसीलिए मैं सोचता हूँ कि धीरे-धीरे परिवर्तन करने की सलाह मे कोई तथ्य नही है। मेरा काम मजे से चल रहा था, लेकिन बेचारे कीमर की बुरी दशा थी और इस भोजन से ऊबकर उसने एक सुग्रर भुनवाकर मँगवाया। उसने मुझे और दो महिला मित्रो को भोजन का निमत्रण दिया था। लेकिन भुना सूग्रर बहुत जल्दी मेज पर आ गया और लालच न सम्हाल सकने पर वह हमारे पहुँचने के पहले ही पूरा का पूरा सूग्रर स्वय खा गया।

इस समय मैंने मिस रीड के साथ कुछ "कोर्टशिप" की थी। मै उसे बहुत आदर और प्रेम करता था और मेरे पास विश्वास करने का कारण था कि उसके मन मे भी मेरे प्रति आदर और प्रेम था। लेकिन मैं एक लम्बी यात्रा पर जाने वाला था और हम दोनो ही अभी बिल्कुल कम उम्र—अठारह से कुछ ही ऊपर—थे। इसलिए उसकी माँ ने बडी बुद्धिमत्तापूर्वक तय किया कि हमारा बहुत आगे बढना ठीक नही है, क्योकि शादी, अगर होनी ही है, मेरे इंगलैंड से वापस लौटने के बाद ही ठीक रहेगी जब मैं अपनी आशा के अनुकूल व्यापार मे लग जाऊँगा, शायद वे मेरी आशाओं की नीव मेरे समान मजबूत समझती थी।

इस समय मेरे मुख्य परिचित चार्ल्स आस्बॅन, जोज़ेफ, वाटसन और

जेम्स राल्फ थे। तीनो ही विद्याव्यसनी थे। ग्रास्बर्न ग्रौर वाटसन नगर के प्रसिद्ध महाजन या गाडियो के स्वामी चार्ल्स ब्रागडेन के यहाँ ग्रौर राल्फ एक दूसरे सौदागर के यहाँ क्लर्क थे। वाटसन धर्म मे ग्रास्था रखने वाला समझदार युवक था ग्रौर वडा सच्चरित्र था। वाकी दोनो धार्मिक सिद्धान्तो को इतनी कडाई से नही मानते थे, विशेप रूप से राल्फ। राल्फ ग्रौर कालिन्स दोनो ने मुझे काफी सताया था, इसलिए उनकी जडें भी वहाँ से मेरे ही द्वारा कटी। ग्रास्बर्न समझदार, निष्कपट ग्रौर स्पप्टवक्ता था, ग्रपने मित्रो के प्रति गम्भीर था ग्रौर उन्हे प्रेम करता था, लेकिन साहित्यिक मामलो मे ग्रालोचना करने का बहुत ज्यादा शौकीन था। राल्फ विवेकवान् था, ग्राचारशील था पर भुन्ना कर बोलता था; मेरा ख्याल था उससे बढिया वातचीत करने वाला कोई ग्रौर नही था। दोनो ही कविता के शौकीन थे ग्रौर स्वय भी छोटी-छोटी कविताएँ लिखने लगे थे। हम चारो रविवार को शिलकिल के नजदीक जगलो मे टहलने के लिए ग्रक्सर निकल जाते। वहाँ हम परस्पर ग्रपनी रचनाएँ सुनाते ग्रौर उन पर टीका-टिप्पणी करते। इस तरह के ग्रनेक खुशनुमा ग्रवसर हमारी जिन्दगी मे ग्राये थे।

राल्फ का इरादा कविता का ग्रध्ययन करने का था। उसे तनिक भी सन्देह नही था कि किसी दिन् इसी क्षेत्र मे उसे प्रसिद्धि मिलेगी ग्रौर वह इसी से काफी घन भी कमा सकेगा। उसका दावा था कि ग्रच्छे से ग्रच्छे कवियो ने भी जब लिखना शुरू किया होगा तो उसी के बराबर गलतियाँ करते रहे होगे। ग्रास्बर्न उसे निरुत्साहित करता, विश्वास दिलाता कि उसमे तनिक भी कवित्व-प्रतिभा नही है ग्रौर समझाता कि जो धंधा उसने सीखा है उसी मे ग्रागे बढना ही उसके लिए श्रेयस्कर है। उसका कहना था कि व्यापार के क्षेत्र मे, यद्यपि ग्रभी उनके पास कुछ नही है, ग्रपनी ईमानदारी ग्रौर नियमितता से राल्फ ग्राढतिया की नौकरी पा सकेगा ग्रौर फिर समय ग्राने पर ग्रपना व्यापार कर सकेगा। मैं भी इस राय से सहमत था कि ग्रपनी भाषा के सुधार के लिए तो

कभी-कभी कविता से मन बहला लेना ठीक है, लेकिन उसके आगे नही।

इस पर यह प्रस्ताव रक्खा गया कि अगली बार जब हम चारो मिलेंगे तो अपनी-अपनी रचना सुनायेंगे, जिससे पारस्परिक निरीक्षण, आलोचना और अशुद्धियो को ठीक करके हम अपना विकास कर सकें। भाषा और अभिव्यक्ति का विकास ही चूंकि हमारा उद्देश्य था, इसलिए हमने कल्पना को बिल्कुल ही निकाल बाहर किया और तय किया कि हममे से प्रत्येक को अठारहवें प्रकरण को, जिसमे ईश्वर की अवतारणा की कथा कही गई है, अपने ढग से लिखना है। हमारी मुलाकात का समय नजदीक आया तो राल्फ मेरे घर आया और मुझसे बोला कि उसने काम पूरा कर लिया है। मैंने उसे बताया कि इधर मैं बडा व्यस्त रहा हूँ, सो न तो इस दिशा मे कुछ सोच ही पाया हूँ और न कर पाया हूँ। उसने तब मेरी सम्मति के लिए अपना लिखा प्रबन्ध दिखाया। मुझे वह बडा सुन्दर लगा और मैंने उसकी मुक्त कंठ से प्रशसा की। तब वह बोला, "अब समझ लो कि आस्बर्न को मेरी रचना मे कोई गुण नही मिल सकता, और सिर्फ डाह के कारण सैंकड़ों गलतियाँ निकालता है। वह तुमसे इतनी ईर्ष्या नही करता ; इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस रचना को तुम ले लो और अपना कहकर सामने रक्खो। मैं बहाना कर दूंगा कि मुझे समय नही मिल सका, इसलिए मैं लिख नही पाया। तब हमे मालूम होगा कि वह इसके बारे में क्या कहता है।" मैंने उसकी बात मान ली और रचना को अपनी लिखावट मे फौरन लिख लिया।

हम लोग मिले। वाटसन की रचना पढी गई। उसमे कुछ सौंदर्य तो था, परन्तु गलतियाँ अधिक थी। आस्बर्न की रचना प्रस्तुत हुई। यह ज्यादा अच्छी थी। राल्फ ने न्यायसगत आलोचना की, कुछ गलतियों को बताया लेकिन सौंदर्य की प्रशसा की। उसके अपने पास पढने को कुछ नही था। मैं सबसे पीछे रहता था; मैंने प्रदर्शित किया कि मुझे पढने से माफ कर दिया जाय तो अच्छा होगा, लेकिन माफी का सवाल ही नही उठता था ; अपनी रचना मुझे प्रस्तुत करनी ही पडेगी। मैंने उसे एक

बार पढा और फिर दुबारा पढा । वाटसन और आस्वर्न ने हार मान ली और उसकी प्रशसा करने लगे । राल्फ ने केवल थोडी-सी आलोचना की और कुछ सुझाव दिये । लेकिन मैंने अपनी रचना को ठीक बतलाया । आस्वर्न ने राल्फ का विरोध किया और साफ-साफ कह दिया कि वह जितना घटिया दर्जे का कवि है उतना ही घटिया दर्जे का आलोचक भी । इस पर राल्फ ने विवाद बन्द कर दिया । दोनो साथ-साथ घर को रवाना हुए तो रास्ते मे आस्वर्न ने मेरी रचना के बारे मे अपनी राय और जोरदार शब्दो मे व्यक्त की । उसने कहा कि मीटिंग मे तो उसने अपने पर काबू रक्खा था कि कही मैं उसे अपनी चापलूसी न समझ बैठूं । उसने कहा, "भला बताओ तो कौन कल्पना कर सकता था कि फ्रैंकलिन भी ऐसा लिख सकता है ! यह चित्रण, यह रेखा, यह आग ! उसने तो मौलिक को भी मात दे दी ! साधारण बातचीत मे ऐसा मालूम पडता है कि उसके पास शब्द ही नही है, वह हिचकता है और गलतियाँ करता है ; लेकिन हे भगवान् ! देखो तो, लिखता कैसे है !" अगली बार जब हम फिर मिले तो राल्फ ने बताया कि क्या चालाकी पहली बार की गई थी और आस्वर्न का थोडा मजाक उडाया गया ।

इस घटना ने राल्फ के कवि बनने के निश्चय को दृढ कर दिया । मैंने उसका ध्यान इस तरफ से हटाने की बहुत चेष्टा की लेकिन उसने कविता लिखना जारी रक्खा । आखिरकार पोप ने उसका नशा उतार दिया । फिर भी वह बहुत अच्छा गद्यलेखक तो बन ही गया । उसके बारे मे और ज्यादा फिर कभी बताऊंगा । और शायद आगे कभी बताने का अवसर न मिले, इसलिए यहाँ पर मैं इतना ही कहूँगा कि कुछ बरसो बाद वाटसन की मृत्यु मेरी बाँहो मे हुई । हमारी मण्डली मे वह सबसे अच्छा युवक था ; उसकी मौत का हमे बडा सदमा पहुँचा । आस्वर्न पश्चिमी द्वीपसमूह मे जाकर बड़ा मशहूर वकील बन गया, खूब धन कमाया, लेकिन कम उम्र मे ही मर गया । हम दोनो मे एक बड़ा गम्भीर समझौता हुआ था कि पहले मरने वाला आदमी अगर सभव हो

सके तो दूसरे के यहाँ जाकर पता लगाये कि वह किस हालत में है। लेकिन मैंने अपना वादा कभी पूरा नही किया।

उधर गवर्नर को, मेरा विचार है, मेरा साथ बड़ा अच्छा लगता था, और वे अक्सर मुझे अपने घर बुलाया करते थे। हर वातचीत के दौरान मे मेरे व्यापार चलाने की बात एक निश्चित तथ्य के रूप में पेश की जाती थी। उनका कहना था कि वे अपने कई मित्रो को मेरे लिए सिफारिशी खत लिख देंगे। और एक प्रेस, टाइप, कागज़ आदि खरीदने के निमित्त आवश्यक धन के लिए एक खत लिख देंगे। इन्ही पत्रो के लिए मुझे कई बार बुलाया गया कि तैयार होते ही मिल जायेंगे। लेकिन जब मैं पहुँचता तो फिर आगे की तारीख निश्चित हो जाती। इसी तरह उनके वादे होते गये। यहाँ तक कि जहाज़ के रवाना होने का समय, जो खुद भी कई बार टाला जा चुका था, आखिरकार आ ही गया। तब मैं उनसे पत्र लेने और विदा माँगने गया तो उनके सेक्रेटरी डा० वार्ड बाहर आकर बोले कि गवर्नर इस समय लिखने मे बहुत व्यस्त हैं, लेकिन जहाज़ छूटने से पहले न्यूकासिल जरूर पहुँच जायेंगे और वही पर पत्र भी मुझे मिल जायेंगे।

राल्फ, यद्यपि शादीशुदा था और उसके एक बच्चा भी था, मेरे साथ इस यात्रा पर जाने का निश्चय कर चुका था। उसका प्रत्यक्ष इरादा व्यापारियों से सम्पर्क स्थापित करने का था, जिससे उसे कमीशन पर बेचने के लिए सामान मिल सके, लेकिन बाद मे मुझे पता लगा कि अपनी पत्नी के सम्बन्धियो से अनबन हो जाने के कारण उसका इरादा अपनी पत्नी को छोड़ देने और कभी लौटकर न आने का था। अपने मित्रों से विदा लेकर और मिस रीड से वादों का आदान-प्रदान करने के बाद मैं न्यूकासिल मे रुकने वाले जहाज़ पर सवार होकर फिलाडेल्फिया से चल पड़ा। गवर्नर वहाँ पहुँच चुके थे; लेकिन उनसे मिलने जब मैं उनके डेरे पर गया तो उनके सेक्रेटरी मेरे लिए संसार का सबसे अधिक नम्र उत्तर लेकर बाहर आये कि गवर्नर इस समय अत्यधिक

महत्त्वपूर्ण काम मे व्यस्त है, लेकिन वे जहाज पर पत्र भिजवा देंगे। उन्होने मेरे लिए कामना की थी कि मेरी यात्रा शुभ हो और मैं जल्दी वापस लौटकर आऊँ। मैं कुछ परेशान-सा जहाज़ पर लौट गया, लेकिन अभी भी मेरे मन मे सन्देह तनिक भी न था।

फिलाडेल्फिया के एक प्रसिद्ध वकील मिस्टर ऐंड्रू हैमिल्टन भी अपने पुत्र के साथ उसी जहाज़ पर जा रहे थे। उन्होने एक क्वेकर व्यापारी मिस्टर डेनहैम और मेरीलैंड के लोहे के व्यापारी मेसर्स ओनियन एण्ड रसेल के साथ मिलकर एक बडा कैबिन ले लिया था। इसलिए मुझे और राल्फ को आगे वाले साधारण से कमरे मे एक बर्थ लेने पर मजबूर होना पडा। चूँकि हमे जहाज का कोई आदमी नही जानता था, इसलिए हम बहुत मामूली आदमी समझे जाते थे। लेकिन मिस्टर हैमिल्टन और उनका पुत्र जेम्स, जो अब गवर्नर हो गया है, न्यूकासिल से फिलाडेल्फिया को वापस लौट गये, क्योकि मिस्टर हैमिल्टन को एक गिरफ्तार जहाज़ की पैरवी करने के लिए बुला लिया गया था। जहाज छूटने से पहले उसमे कर्नल फ्रेंच सवार हुए और उन्होने मुझे तथा राल्फ दोनो को कैबिन मे आ जाने का निमन्त्रण दिया क्योकि अब वहाँ काफी जगह थी। इस तरह हम कैबिन मे पहुँच गये।

मैंने सोचा कि कर्नल फ्रेंच अपने साथ गवर्नर के पत्र लेकर आये है और उनसे पूछा कि मेरे लिए उनके पत्र कहाँ हैं। कर्नल ने जवाब दिया कि सभी पत्र एक थैले मे जहाज़ के कप्तान के पास रख दिये गये हैं और अभी मुझे नही मिल सकते; लेकिन इगलैंड मे जहाज़ से उतरने के पहले मेरे मतलब के पत्र मुझे मिल जायेंगे। उस समय के लिए मैं सन्तुष्ट हो गया और हमारा जहाज़ आगे बढता गया। कैबिन के सभी आदमी बडे मिलनसार थे और हम सभी आदमी खूब आनन्द से रह रहे थे, क्योकि हमारे पास अपनी चीजो के अलावा मिस्टर हैमिल्टन की भी ढेरो वस्तुएँ थी। इसी यात्रा मे मिस्टर डेनहैम की मेरे साथ दोस्ती हो

गई, जो उनके जीवन-पर्यन्त बनी रही। वैसे यात्रा अच्छी न थी, क्योंकि मौसम काफी खराब था।

जब हम इंगलिश चैनल मे पहुँचे तो कैप्टेन ने अपना वादा पूरा किया और गवर्नर के खतों को ढूंढ निकालने का मौका दिया। किसी भी खत पर मेरा नाम नही लिखा हुआ था। फिर भी छः-सात खत मैने उठा लिये जो लिखावट से मुझे दिये जाने वाले खत ही मालूम दे रहे थे—इसलिए भी कि उनमे से एक बादशाह के मुद्रक बास्केट के नाम था और दूसरा किसी स्टेशनर के नाम। हम २४ दिसम्बर, १७२४ को लन्दन पहुँच गये। स्टेशनर ही पहले मेरे रास्ते मे पडता था, इसलिए मैं पहले उसी के यहाँ गया और यह कहते हुए कि गवर्नर कीथ ने आपके लिए इसे दिया है वह खत उसे दे दिया। "मैं ऐसे किसी आदमी को नही जानता," उसने कहा, लेकिन लिफाफा खोलने के बाद बोला, "ओह! यह रिडिलसडेन का खत है! मैं पिछले दिनो जान गया हूँ कि वह पक्का गुण्डा है और मैं उसके साथ कोई सम्पर्क नही रखना चाहता और न उसका कोई खत ही मैं लूंगा।" और खत फिर मेरे हाथ मे रखकर वह मुँह फेरकर एक ग्राहक से बातें करने लगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि ये गवर्नर के खत नही हैं; और सारी परिस्थितियो का पुनरावलोकन करने के बाद मुझे उनकी निष्कपटता पर सन्देह होने लगा। मैंने अपने मित्र डेनहैम से मिलकर उनके सामने सारा कच्चा चिट्ठा खोलकर रख दिया। उन्होने मुझे कीथ के चरित्र का आन्तरिक दर्शन कराया। बताया कि इसकी तनिक भी संभावना नही है कि उसने तुम्हारे लिए पत्र लिखे होगे। उसे भली प्रकार जानने वाला कोई आदमी उस पर निर्भर नही करता। साथ ही वह इस विचार पर खूब हँसा कि गवर्नर मुझे उधार के लिए पत्र देगा, क्योंकि बाज़ार मे उसकी कोई साख ही नही थी। मैंने चिन्ता व्यक्त की कि अब मैं क्या करूँगा तो वे बोले, "अपने धन्धे मे ही कोई नौकरी खोजने की कोशिश करो। यहाँ के मुद्रको के साथ काम करके तुम्हारी

योग्यता बढ़ेगी और अमेरिका लौटकर ज्यादा अच्छी तरह धन्धा शुरू कर पाओगे।"

हम दोनो और स्टेशनर तीनो जानते थे वकील रिडिल्सडेन बहुत बडा बदमाश था। मिस रीड के पिता से इकरारनामा लिखवाकर उसने उन्हें लगभग आधा बरबाद कर दिया था। इस खत से यह मालूम हुआ कि हैमिल्टन के खिलाफ कोई गुप्त योजना बनाई जा रही थी (क्योकि यह समझा जाता था कि वह भी हमारे साथ इगलैड पहुँचेगा) और यह भी मालूम हुआ कि रिडिल्सडेन के साथ कीथ का भी सहयोग था। डेनहैम हैमिल्टन का मित्र था और उसका विचार था कि हैमिल्टन को जरूर इसका पता देना चाहिए। थोड़े ही दिनो बाद हैमिल्टन इंगलैड आये। अशतः तो कीथ और रिडिल्सडेन के प्रति बुराई से, अशत. हैमिल्टन के प्रति सदिच्छा से मैं उनके यहाँ गया और वह पत्र उसे दे दिया। पत्र की सूचना उनके लिए बडी महत्त्वपूर्ण थी और उन्होने मुझे बडी आत्मीयता से धन्यवाद दिया ; और उसी समय से वे मेरे मित्र बन गये, जिनका अनेक अवसरो पर मुझे लाभ हुआ।

राल्फ और मैं अभिन्न साथी थे। हमने लिटिल ब्रिटेन मे साढे तीन शिलिंग प्रति सप्ताह के हिसाब से रहने के कमरे ले रखे थे। इतना ही हम उस समय बर्दाश्त कर सकते थे। उसे अपने कुछ सम्बन्धी मिल गये थे, लेकिन वे स्वयं गरीब थे और उसकी मदद नही कर सकते थे। अब उसने लन्दन मे बस जाने और फिर कभी फिलाडेलफिया न लौटने का इरादा प्रकट किया। वह अपने साथ कुछ भी नही लाया था। जितना धन उसके पास था वह जहाज मे ही खर्च हो चुका था। मेरे पास लगभग तेरह पौंड थे ; इसलिए जीविका चलाने के लिए वह अक्सर मुझसे उधार माँगा करता था। इसी बीच वह कही काम पर लग जाने की भी कोशिश कर रहा था। उसने सबसे पहले थियेटर मे प्रवेश पाने का प्रयत्न किया, क्योकि उसे भरोसा था कि वह अभिनय कर सकता है, लेकिन विल्क्स ने, जिसके यहाँ उसने दरख्वास्त दी थी, उसे बड़ी गभीरता-

पूर्वक समझाया कि इस क्षेत्र मे आने का विचार उसे बिल्कुल छोड़ देना चाहिए, क्योंकि इसमें उसकी सफलता असम्भव है। तब उसने पेटर-नास्टर रो के एक प्रकाशक राबर्ट्स के सामने प्रस्ताव रक्खा कि वह "स्पेक्टटेर" की तरह का एक साप्ताहिक पत्र उसके लिए तैयार करे, लेकिन राबर्ट्स ने उसकी शर्तें स्वीकार नही की। तब उसने स्टेशनरो और टेम्पिल के वकीलो का नकलनवीस बनने की कोशिश की, लेकिन कोई जगह न पा सका।

बार्थोलोम्यू क्लोज के एक तत्कालीन मशहूर मुद्रक "पामर्स" में मुझे फौरन काम मिल गया और करीब एक साल तक मैं वही काम करता रहा। मैं काफी मेहनत से काम करता था, लेकिन राल्फ के साथ नाटको और दूसरे मनोरजन के स्थानो मे अपनी कमाई का काफी हिस्सा खर्च कर देता था। मेरे पास जो धन था उसे हम दोनों मिलकर खर्च कर चुके थे और अब रोज कुआँ खोदकर पानी पीने वाला हिसाब हो गया था। ऐसा लगता था मानो वह अपनी पत्नी और बच्चे को काफी भूल गया है; और मैं भी धीरे-धीरे मिस रीड के साथ अपने वादे की बात भूलता जा रहा था। मैंने मिस रीड को सिर्फ एक खत लिखा था, जिसमे सूचित किया था कि मेरे जल्दी लौटने की कोई संभावना नही है; और बस उसके बाद फिर कभी नही लिखा। यह मेरी जिन्दगी की एक और बड़ी गलती थी, और अगर पुनरावृत्ति करने को मिले तो मैं इसे जरूर सुधारूंगा। वास्तव मे, खर्च के कारण ही मैं जहाज के किराये लायक धन जमा करने मे असमर्थ हो रहा था।

"पामर्स" मे मैं वोलास्टन कृत "रेलिजन आव नेचर" के दूसरे संस्करण को कम्पोज करने के काम मे लगा हुआ था। उसके कुछ तर्क मुझे ठोस आधार पर खड़े नही मालूम पड रहे थे, इसलिए मैंने एक छोटा-सा आध्यात्म-विषयक निबंध लिखा जिसमे मैंने उन तर्कों की आलोचना की। इस निबंध का शीर्षक था "स्वाधीनता और आवश्यकता, सुख और दुःख

का विवेचन।"[1] मैंने इसे अपने मित्र राल्फ को समर्पित किया। इसकी थोड़ी-सी प्रतियाँ ही मैंने छापी। इससे मिस्टर पामर मुझे विवेकशील युवक मानने लगे, हालाँकि मेरे पर्चे के विषय को लेकर उन्होंने मुझे काफी गंभीरतापूर्वक झिड़का, क्योंकि उन्हें वे सिद्धान्त घृणित मालूम हुए थे। इस पर्चे को छापना मेरी एक और गलती थी। लिटिल ब्रिटेन मे रहते हुए मैंने एक पुस्तकविक्रेता विल्कॉक्स से जान-पहचान बढा ली थी; उसकी दुकान हमारे डेरे के बिल्कुल बगल मे थी। उसके पास पुरानी किताबो का विशाल सग्रह था। तब घूमने-फिरने वाले पुस्तकालयों के बारे मे कोई न जानता था। लेकिन हम दोनो मे समझौता हो गया कि कुछ उचित शर्तो पर (जिन्हें मैं अब भूल गया हूँ) मैं किताबें लेकर, पढकर वापस कर दूँ। यह मुझे बडा लाभदायक मालूम पडा और इस सुविधा का मैंने यथासंभव लाभ उठाया।

मेरा पर्चा किसी प्रकार एक डाक्टर लायन्स, जो "मानवीय विचारशीलता की निश्चितता"[2] के लेखक भी थे, के हाथो मे पड गया। इससे हम दोनो मे परिचय हो गया। डाक्टर ने मुझे बडा सम्मान दिया। इन विषयो पर बातें करने के लिए वे अक्सर मुझे अपने यहाँ बुलाने लगे और चीपसाईड मे—गली मे स्थित "हार्न्स" नामक एक शराबघर मे ले जाने लगे। उन्होंने ही मुझे "मधुमक्खियो की कथा"[3] के लेखक डाक्टर मैंडविल से परिचित कराया। 'हार्न्स" मे डाक्टर मैंडविल का एक क्लब था जिसकी जान वही थे, क्योंकि वे बडे मसखरे और विनोदी जीव थे। लायन्स ने ही "बाट्सन्स काफी हाउस" मे मेरा परिचय डाक्टर पेम्बरटन से कराया। डाक्टर पेम्बरटन ने मुझसे वादा किया कि वे कभी अवसर

---

१. A Dissertation on Liberty and Necessity, Pleasure and Pain.

२. The Infallibility of Human Judgement.

३. Fable of the Bees

आने पर मुझे सर आइज़क न्यूटन से मिला देंगे ; न्यूटन से मिलने की मेरी बडी आकाक्षा थी, परन्तु यह कभी पूरी न हो सकी।

मैं अपने साथ कुछ विलक्षण वस्तुएँ (Curiosities) भी लेता गया था, जिनमे से प्रमुख था ऐसवेस्टस का बना हुआ एक पर्स, जो आग मे रखने पर खूब उज्ज्वल हो जाता था। सर हेन्स स्लोन उसके बारे मे सुनकर मुझसे मिलने आये और उन्होने ब्लूम्सबरी स्क्वायर मे अपने निवास-स्थान पर आमंत्रित किया। अपनी सारी विलक्षण वस्तुएँ उन्होने मुझे दिखाईं और घेरघारकर मुझे राजी कर लिया कि वह पर्स भी मैं उन्हे दे दूं। पर्स के वदले मे उन्होने मुझे काफी पैसा दिया।

हमारे मकान के एक हिस्से मे महिलाओं के हैट बनाने वाली एक नवयुवती रहती थी, जिसकी दुकान, मेरा ख्याल है, "क्लोयस्टर्स" मे थी। उसका पालन-पोषण शरीफ ढंग से हुआ था और वह बडी समझदार, खुशमिजाज और मधुरभाषिणी थी। राल्फ उसे शाम को नाटक पढकर सुनाया करता। उनमे आत्मीयता हो गई। युवती ने दूसरी जगह घर ले लिया और राल्फ भी चला गया। कुछ समय तक दोनो साथ-साथ रहते रहे, लेकिन राल्फ को अभी तक कोई काम नही मिल सका था और युवती की आमदनी इतनी न थी कि उन दोनो और उसके एक वच्चे का निर्वाह हो पाता। इसलिए राल्फ ने लन्दन से वाहर किसी देहात के स्कूल मे पढाने का विचार किया। अकगणित और वहीखाता रखने मे वह वड़ा कुशल था, इसलिए उसका ख्याल था कि वह शिक्षक वनने के सर्वथा योग्य है। लेकिन यह काम उसे अपने से नीचा मालूम होता था, और उसे विश्वास था कि भविष्य मे समृद्धि उसके लिए है ही—तब भला अगर कोई कह देगा कि एक समय मे वह इतना नीचा काम करता था तो वह क्या करेगा ? इसलिए उसने अपना नाम वदल दिया और मेरा नाम ओढ़कर मुझे सम्मानित किया। यह मुझे पता चला उसके एक खत से, जो कुछ समय वाद मेरे पास आया था। जिसमे लिखा था कि वह एक छोटे से गाँव मे बस गया है (मेरा ख्याल है कि वह बर्क-

शायर मे दस या बारह लड़को को छ पेन्स प्रति सप्ताह प्रति विद्यार्थी की दर से लिखना-पढना सिखाता था)। उसमे उसने लिखा था कि मैं श्रीमती टी—का ख्याल रक्खूं और इच्छा व्यक्त की थी कि मैं उसे लिखूं अवश्य, और अमुक स्थान पर मिस्टर फ्रैंकलिन, स्कूल शिक्षक के नाम लिफाफा भेजूं।

वह मुझे अक्सर लिखता रहता था और एक खंडकाव्य के अश, जिसे वह उन दिनो लिख रहा था, आलोचना और सशोधन के लिए मेरे पास भेजा करता था। आलोचना और सशोधन मैं समय-समय पर अवश्य करता रहता, लेकिन मेरी कोशिश उसका ध्यान इस ओर से हटाने मे ही रहती थी। यग का एक व्यंग उसी समय प्रकाशित हुआ था। मैंने उसका काफी अश नकल करके उसके पास भेज दिया, जिसमे साहित्य के द्वारा सम्पत्ति अर्जन करने की आकाक्षा की मौलिक गलती पर खूब प्रकाश डाला गया था। परन्तु मेरे सभी उपाय व्यर्थ हुए ; खड-काव्य के अश हर डाक से मेरे पास आते रहे। इसी बीच श्रीमती टी—ने अपने मित्र भी खो दिये थे और व्यापार भी चौपट कर दिया था ; इसलिए वे बडी तकलीफ मे थी और अक्सर मुझे बुला भेजा करती थी और सहायतार्थ जो कुछ मै दे सकूं, मुझसे उधार माँग लिया करती थी। मुझे उनका साथ अच्छा लगने लगा और उस समय अपने ऊपर कोई धार्मिक प्रतिबध न होने तथा उनके लिए अपना महत्त्व समझने के कारण मैंने और ज्यादा मेल-जोल बढाने की कोशिश की (एक और गलती)। उन्होने उचित क्रोध से मुझे रोका और मेरे व्यवहार के बारे मे राल्फ को सूचित कर दिया। इससे हम दोनो के बीच दरार पड गई ; और जब वह अगली बार लन्दन आया तो उसने मुझे बताया कि उस पर किये गये अपने सारे अहसानो को मैंने धो दिया है। इससे मुझे मालूम हो गया कि जो कुछ कर्ज उसने मुझसे लिया था—मैंने उसे जरूरत पडने पर दिया था—वह अब मुझे नही मिलेगा। उस समय तो इससे फर्क ही नही पड़ता था क्योकि वह इस स्थिति मे ही नही था। साथ ही

उसकी मित्रता के समाप्त हो जाने पर मुझे यही महसूस हुआ कि मेरे ऊपर से कोई बोझ हट गया है। अब मैंने कुछ रुपया जोड़ने का विचार किया और ज्यादा अच्छे काम की आशा से "पामर्स" को छोड़कर लिंकन्स इन फील्ड्स के निकट "वाट्स" के यहाँ नौकरी कर ली। यह छापाखाना और बडा था। अपने लन्दन प्रवास के शेष दिनों में मैं यही काम करता रहा।

इस छापाखाने मे आने पर मैंने सबसे पहले मशीन पर काम करना शुरू किया, क्योंकि मुझे शारीरिक श्रम की आवश्यकता मालूम पडी, जैसे मै अमेरिका में किया करता था, जहाँ कम्पोजिग करने के साथ-साथ मशीन भी चलानी पड़ती थी। मैं सिर्फ पानी पीता था, दूसरे कर्मचारी, जिनकी संख्या लगभग ५० थी, खूब "बियर" पीते थे। कभी अवसर पड़ने पर मैं दोनों हाथो में टाइपों का एक-एक "फार्म" लिये सीढ़ियाँ चढ-उतर जाता था, जबकि दूसरे लोग दोनों हाथों मे एक फार्म ही उठा पाते थे। इस प्रकार की अन्यान्य कई बातो से वे मुझे देखकर आश्चर्य मे रहते थे कि यह "पानी पीने वाला अमेरिकन" (यही नाम उन्होंने मुझे दिया था) उनसे भी ज्यादा मजबूत है जो "मजबूत" बियर पिया करते हैं। एक शराबखाने का लडका कर्मचारियो की फरमाइश पूरी किया करता था। मशीन पर काम करने वाला मेरा साथी रोज़ नाश्ते से पहले एक पिंट, रोटी और पनीर के नाश्ते के साथ एक पिंट, नाश्ता और दोपहर के खाने के बीच एक पिंट "बियर" पिया करता था। मैं इसे बडा घृणित रिवाज मानता था; लेकिन उसके विचार से शारीरिक श्रम करने के लिए "मजबूत" बियर पीना अत्यन्त आवश्यक था। मैंने उसे समझाने की कोशिश की, कि "बियर" मे पानी मे घुले जौ के दानो या आटे के अनुपात में ही शारीरिक शक्ति देने की क्षमता हो सकती है; कि एक पेनी की रोटी में कही ज्यादा आटा होता है; और इसलिए अगर वह रोटी को एक पिंट पानी के साथ खा जाये तो उसमें एक क्वार्ट बियर से कही अधिक शक्ति पैदा होती है। लेकिन वह पीता रहा, और हर शनि-

वार की रात मे उस बेकार चीज के लिए अपनी तनख्वाह से चार-पाँच शिलिंग देता रहा। यह खर्च मुझे नही करना पडता था। किन्तु इस तरह वे बेचारे हमेशा पैसे की तंगी मे रहा करते थे।

कुछ हफ्तो बाद, वाट्स ने मुझसे कम्पोजिंग विभाग मे जाने को कहा तो मैंने मशीन पर काम करने वालो का साथ छोड दिया। नये विभाग मे कम्पोजीटरो ने शराब के लिए पाच शिलिंग की माँग पेश की। मैंने इसे जबरदस्ती लादा गया कर समझा; मेरे मालिक ने भी यही समझा और मुझे चन्दा देने से मना कर दिया। दो-तीन हफ्तो तक मै अकडा रहा, जिसके फलस्वरूप एक तरह से मुझे समाज से निकाल दिया गया और मेरे साथ तरह-तरह की छोटी-छोटी शैतानिया की जाने लगी। अगर मैं तनिक-सी देर के लिए भी कमरे से बाहर चला जाता तो मेरे छाटे हुए टाइप मिला दिये जाते, पृष्ठ इधर-उधर हटा दिये जाते, मेरा "मैटर" तोड दिया जाता आदि; और सारा दोष गिरजाघर मे रहने वाले भूत पर रख दिया जाता। उनका कहना था कि यह भूत हमेशा उन लोगो को तंग करता रहता है जो बाकायदा सदस्य नही बन जाते। मैं समझ गया कि जिन लोगो के साथ मुझे हमेशा रहना है उनके साथ मिलकर न रहने का क्या परिणाम होता है, और अपने मालिक के संरक्षण के बावजूद मैंने उनकी बात मानकर चन्दा दे दिया।

अब वे मेरे साथ भली प्रकार व्यवहार करने लगे और बहुत जल्दी मैंने उन पर काफी प्रभाव जमा लिया। मैंने उनके गिरजाघर-सम्बन्धी नियमो मे कुछ युक्तिसगत परिवर्तन करने का प्रस्ताव रक्खा और सारे विरोध के बावजूद उसे मनवाकर ही दम लिया। मुझे देखकर उनमे से अधिकाश ने अपना बियर, रोटी और पनीर वाला नाश्ता करना छोड़ दिया, क्योकि उन्हे पता लगा कि पडोस के ही मकान से एक पिंट बियर की कीमत अर्थात् आधी पेनी के तीन सिक्को में ही उन्हे गर्म काजी से भरा एक बडा बर्तन मिल सकता था, जिनमे काली मिर्च छिडकी होती थी, रोटी मसलकर डाली जाती थी और थोडा-सा मक्खन भी रहता

था। यह नाश्ता ज्यादा आरामदेह होने के साथ-साथ ज्यादा सस्ता भी था और इससे मस्तिष्क भी ज्यादा ताज़ा हो जाता था। अब भी जो लोग सारे दिन बियर पिया करते थे, कभी-कभी पैसा न चुका पाने के कारण शराबघर से उधार नही ले पाते थे ; और तब वे मुझसे बियर के लिए व्याज पर कर्ज लिया करते थे ; वे कहा करते थे कि उनकी रोशनी बुझ गई है। मैं शनिवार को तनख्वाह की मेज पर खडा हो जाया करता था और अपना कर्ज़ वसूल कर लिया करता था ; कभी-कभी मुझे हफ्ते भर मे तीस शिलिग उन लोगो के लिए खर्च करने पडते थे। साथ ही मुझे व्यंग्य करने वाला हँसोडा समझा जाता था। इन दो बातों से उनके बीच मेरा सम्मान काफी बढ गया था। मेरी लगातार हाजिरी (मैं सेंट मडे की छुट्टी भी कभी नही लेता था) ने मुझे मालिक की निगाहो मे ऊँचा उठा दिया और कम्पोज करने की मेरी असाधारण शीघ्रता को को देखकर उन्होने मुझे प्रेषण (डिस्पैच) के काम मे लगा दिया। इस काम मे साधारणतः पैसा ज्यादा मिलता था। इस तरह मेरे दिन बहुत ही अच्छी तरह बीतने लगे।

लिटिल ब्रिटेन मे मेरा डेरा काफी दूर पड़ता था। इसलिए मैंने रोमिश गिरजाघर के सामने ड्यूक स्ट्रीट मे दूसरा कमरा ले लिया। यह दो मकानो को छोडकर एक इटालियन गोदाम के ऊपर था। एक विधवा महिला मकान-मालकिन थी। उनकी एक लडकी थी, एक नौकरानी और एक फेरी वाला जो गोदाम की देखभाल तो करता था लेकिन रहता कही और था। पहले जिस मकान मे मैं रहता था, उसमे मेरे चरित्र की जाँच कराने के बाद मुझे उसी दर पर, अर्थात् ३ शिलिग ६ पैस प्रति-सप्ताह पर, रखने को वे राजी हो गईं। उनका कहना था कि मकान मे एक पुरुष के रहने से वे सुरक्षित रहेंगी, इसलिए किराया अपेक्षाकृत कम है। उनकी उम्र काफी थी, वे एक पादरी की लड़की थी इसलिए प्रौटेस्टैंट थी, लेकिन शादी के बाद पति ने उन्हें कैथोलिक धर्म मे दीक्षित करा दिया था। वे अपने पति की स्मृति का बड़ा आदर करती थी।

वे नामी-गिरामी व्यक्तियो के बीच काफी रही थी और चार्ल्स द्वितीय के समय तक के अनेक चुटकुले सुना सकती थी। घुटनो मे गठिया हो जाने के कारण उन्हे लगडाकर चलना पड़ता था, इसलिए वे कमरे से वाहर बहुत कम निकलती थी और उन्हें वही पर किसी के साथ की जरूरत थी। मुझे उनके संसर्ग मे इतना मजा आता था कि जब कभी वे चाहती मैं शाम उनके साथ ही गुजारता। रात के खाने मे हम रोटी के पतले से टुकडे पर ज़रा-सा मक्खन लगाकर आधी-आधी एकोवी खा लेते और आधा पिंट "एल" को बाँटकर पी जाते। लेकिन मनोरंजन तो उनके वार्तालाप मे था। मैं हमेशा समय का पाबन्द रहता था और परिवार को ज़रा भी कष्ट नहीं देता था कि मुझसे अलग होने को ही वे तैयार न होने लगे, मैं उस समय पैसा बचाने पर तुला हुआ था और जब मुझे पता चला कि मेरे छापेखाने के पास ही एक डेरा दो शिलिंग प्रति सप्ताह पर मिल सकता है और मेरी बचत ज्यादा हो जायेगी, तो मैंने उनसे कहा। इस पर वे बोली कि मैं कभी ऐसी वात सोचूं भी नही, और वे भविष्य मे मुझसे दो शिलिंग प्रति सप्ताह ही लेगी। इसके वाद जब तक मैं लन्दन मे रहा तो उन्ही के साथ डेढ शिलिंग प्रति सप्ताह पर रहता रहा।

उनके मकान के ऊपरी हिस्से मे एक सत्तर वर्षीया अविवाहित महिला अत्यन्त एकान्त मे सासारिक क्रिया-कलापो से अलग रहती थी। उनके बारे मे मेरी मकानमालकिन ने वातें वताई, वे रोमन कैथोलिक थीं और युवावस्था मे उन्हे वाहर भेज दिया गया था, जहाँ वे गिरजे की तपस्विनी बनने के इरादे से एक मठ मे रही थी, लेकिन उस देश की जलवायु उनके अनुकूल न सिद्ध हुई और वे इगलैंड लौट आईं। यहाँ कोई मठ है नही, परन्तु वे तो तपस्विनी का जीवन विताने का प्रण कर चुकी थी, इसलिए उन परिस्थितियो मे यथासभव सासारिक व्यापारो से अलग रहने का उन्होने इरादा किया। तदनुसार उन्होने अपनी सारी जायदाद लोकहित के कार्यो मे लगा दी; केवल अपने लिए १२ पौंड प्रति

वर्ष रख लिये। इसमे से भी वे काफी भाग दान-पुण्य के कामो मे खर्च कर देती थीं और स्वयं पानी की काजी पीकर रह जाती, और सिर्फ काजी पकाने के लिए ही आग जलातीं। वे कई बरसो से वहाँ रह रही थी; मकान को किराये पर लेने वाले कैथोलिक किरायेदार उन्हें मुफ्त मे ही वहा रहने देते थे क्योकि मकान मे उनकी उपस्थिति को वे वरदान-स्वरूप मानते थे। रोज एक पादरी उनके पापो को स्वीकार कराने आता था। "एक बार मैंने उनसे पूछा", मेरी मकान-मालिकिन ने मुझसे बताया, "अपनी दिनचर्या के अनुसार आप किसी पादरी को इतना काम कैसे दे सकती है?" इस पर उन्होने उत्तर दिया था, "ओह, बुरे विचारों से बचे रहना असंभव है।" एक बार मुझे भी उनसे मिलने की आज्ञा मिली थी। वे बडी खुशदिल और विनयी थीं तथा बड़े अच्छे ढग से बातचीत करती थी। कमरा साफ था। लेकिन उसमे एक बिछावन, एक मेज और एक स्टूल के सिवा और कोई फर्नीचर न था। मेज पर एक क्रूसीफिक्स और एक किताब थी। स्टूल उन्होने बैठने को दे दिया। चिमनी के ऊपर सैंट वेरोनिका का एक चित्र था जिसमे वे अपना रूमाल दिखला रही थी; रूमाल पर ईसा के रक्त से भरे आश्चर्यजनक चेहरे का प्रतिबिम्ब था। यह सब उन्होने बडी गंभीरता से मुझे समझाया। वे पीतवर्ण दिखलाई पडती थी लेकिन बीमार कभी नही पडती थी और मैं इसे एक और उदाहरण के रूप मे सामने रख सकता हूँ कि इतनी कम आमदनी पर भी जीवन और स्वास्थ्य को कैसे स्थिर रखा जा सकता है।

वाट्स के छापाखाने मे वाइगेट नामक एक बुद्धिमान् युवक से मेरा परिचय हो गया था। उसके सम्बन्धी अमीर थे इसलिए साधारण मुद्रको से ज्यादा अच्छी शिक्षा उसे मिल सकी थी। वह काफी लैटिन जानता था, फ्रेंच बोलता था और अध्ययन को प्यार करता था। मैंने उसे और उसके एक दोस्त को सिर्फ दो बार मे तैरना सिखा दिया और जल्दी ही वे बढ़िया तैराक हो गये। उन्होने मुझे देहात मे रहने वाले कुछ लोगो से परिचित कराया जिनके साथ हम पानी के रास्ते कालेज और डान साल्टेरी

की अद्भुत वस्तुओ के संग्रह को देखने चेल्सी गये। लौटते समय, उन लोगो के कहने पर (अब तक वाइगेट ने उन्हें काफी उत्सुक बना दिया था) कपड़े उतारकर मैं नदी मे कूद गया और चेल्सी के पास से ब्लैकफ्रायर तक तैरता हुआ ही आया। पानी के ऊपर और भीतर मैने अनेक तमाशे दिखाये। उन लोगो के लिए यह बिल्कुल नई चीज थी, उन्हें आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी।

बचपन से ही मुझे इस कसरत मे मजा आता था और मैंने थेवेनॉट की सभी हरकतो और मुद्राओ का भली भाँति अभ्यास कर लिया था। कुछ अपनी तरफ से भी जोड दी थी। मेरा लक्ष्य था कि तैराकी की ये कसरतें सुन्दर, आसान और लाभदायक हो। इस अवसर पर मैंने अपने साथियो को ये सारी कसरतें दिखाई और उनकी प्रशसा से मुझे बडी खुशी हुई। वाइगेट भी तैराकी की कला मे पारगत होना चाहता था, साथ ही मेरी तरह उसे भी अध्ययन का चाव था, इसलिए वह मेरे काफी पास आ गया; आखिरकार उसने प्रस्ताव रक्खा कि हम दोनो साथ-साथ यूरोप का भ्रमण करें और हर जगह अपना काम करके ही रुपया कमायें और अपना पोषण करते चलें। एक बार तो मैं भी इस योजना के प्रति आकर्षित हुआ, लेकिन जब मैंने अपने मित्र श्री डेनहैम से, जिनके साथ अक्सर मैं अपने अवकाश का एक-आध घटा बिताया करता था, इसके बारे मे बताया तो उन्होने मुझे हतोत्साह करते हुए कहा कि मुझे केवल पेन्सिलवानिया वापस लौटने का ही विचार करना चाहिए। वे स्वयं भी लौटने ही वाले थे।

इस सज्जन व्यक्ति के चरित्र की एक बात मुझे अवश्य बतानी चाहिए। पहले वे ब्रिस्टल मे व्यापार करते थे लेकिन कुछ लोगो का कर्ज नही अदा कर सके तो वहाँ धधा खत्म करके कर्जदारो को ब्याज सहित रुपया देने को कहकर अमेरिका चले गये। वहाँ सौदागर की तरह परिश्रम करके उन्होने कुछ ही बरसो मे काफी धन कमा लिया। मेरे साथ जहाज मे इंगलैंड वापस लौटकर उन्होने अपने पुराने कर्जदारो को एक

दावत दी। दावत में उन्होंने सभी व्यक्तियों को कर्ज पर रुपया देने के लिए धन्यवाद दिया। कर्जदारों को उम्मीद नहीं थी कि उन्हें दावत के अलावा भी कुछ मिलेगा, लेकिन जैसे ही उन्होंने अपनी-अपनी तश्तरियों को खोला तो उसमें पूरे ब्याज सहित सारे मूलधन के लिए एक बैंकर के नाम चैक रक्खे हुए थे।

उन्होंने मुझे बताया कि अब वे फिलाडेल्फिया वापस लौटने वाले हैं और वहाँ एक दूकान खोलने के लिए काफी सामान अपने साथ ले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे मुझे अपना क्लर्क बना सकते हैं, और मुझे उनकी हिदायतों के अनुसार उनके रजिस्टर ठीक रखने, उनके पत्रों की नकल करने और दूकान की देखभाल करने का काम करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि जैसे ही मैं इस व्यवसाय को भली प्रकार जान जाऊँगा, वे मुझे आटा, डबलरोटी आदि सामान लेकर पश्चिमी द्वीपसमूह भेज देंगे और दूसरे व्यापारियों से कमीशन पर सामान भी दिला देंगे जिससे मुझे जरूर लाभ होगा, और अगर मैं सारा प्रबन्ध ठीक से कर सका तो वे मुझे अच्छी तरह व्यापार में जाने देंगे। यह प्रस्ताव मुझे बड़ा अच्छा लगा क्योंकि मैं लन्दन से ऊब चुका था और पेन्सिलवानिया में खुशी-खुशी बीते कुछ महीनों को याद किया करता था और फिर वहीं पहुँच जाना चाहता था; इसलिए मैंने फौरन यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और तय हो गया कि पेन्सिलवानिया के सिक्कों में मुझे ५० पौंड प्रति वर्ष वेतन मिलेगा; असल में कम्पोजीटर के काम में मुझे इससे ज्यादा मिल जाता था, लेकिन इसमें उन्नति करने के अवसर ज्यादा थे।

अब मैं (अपने विचार से, हमेशा के लिए) मुद्रण-व्यापार से विदा लेकर अपने नये काम में लग गया। मैं श्री डेनहैम के साथ अनेक चीजें खरीदने व्यापारियों के यहाँ जाता, उन्हें बंडलों में बँधे जाते देखता, इधर-उधर उनके संदेश ले जाता, मजदूरों से सामान को जहाज पर लदवाता; इस तरह जब सारा सामान जहाज पर लद गया तो मुझे कुछ दिनों की फुरसत मिली। एक दिन मुझे एक ऐसे बड़े आदमी का अपने

यहाँ आने का निमत्रण मिला जिन्हे मैं तब तक केवल नाम से ही जानता था—सर विलियम विंटम। मुझे बडा आश्चर्य हुआ पर मैं उनके यहा जा पहुचा। उन्होंने किसी से मेरे चेल्सी से ब्लैकफ्रायर तक तैरने और वाड-गेट तथा एक दूसरे नौजवान को कुछ ही घटो मे तैरना सिखा देने के बारे मे सुन रक्खा था। उनके दो लडके थे जो यात्रा पर निकलने वाले थे; उनकी इच्छा थी कि जाने से पहले लडके तैरना सीख जायें और मुझसे कहा कि अगर मैं उन्हें तैरना सिखा दूं तो वे मुझे अच्छा पारिश्रमिक देंगे। उनके लडके अभी तक शहर नही आये थे और मेरा वहाँ रहना अनिश्चित था, इसलिए इस काम के लिए मैं वादा नही कर सकता था, लेकिन इस घटना से मैंने सोचा कि अगर मैं इगलैंड मे ही रहकर एक "स्विमिंग स्कूल" खोल दूं तो काफी रुपया कमा सकता हूँ। मुझे इस विचार ने इतना प्रभावित किया कि अगर यह प्रस्ताव पहले मेरे सामने आया होता तो मै इतनी जल्दी अमेरिका न लौटता। कुछ बरसों बाद इन्ही सर विलियम विंटम के, जो एग्रेमाट के अर्ल हो गये थे, एक पुत्र से मेरा और तुम्हारा एक आवश्यक काम पडा था, लेकिन इसकी चर्चा मैं इसकी ठीक जगह पर ही करूगा।

इस तरह लन्दन मे मेरे अठारह महीने बीते। मेरे समय का अधि-कांश भाग अपने धधे मे मेहनत से काम करते बीतता और अपनी कमाई का थोडा-सा हिस्सा नाटक देखने या किताबो मे खर्च करता। अपने दोस्त राल्फ की वजह से मुझे पैसो की बहुत तगी रही; उसके ऊपर मेरा लगभग सत्ताईस पौंड का कर्ज था, जिसे पाने की आशा मैं नही करता था। मेरी छोटी कमाई का बहुत बड़ा भाग था यह। इसके बाव-जूद भी मैं उसे प्यार करता था, क्योकि उसमे अनेक बडे प्यारे गुण थे। मैं अपने लिए अधिक धन-सग्रह करने मे तो नही लेकिन कुछ बडे विवेक-वान् व्यक्तियों से परिचय प्राप्त करने मे अवश्य सफल हो सका था जिनके साथ हुए वार्तालापो से मुझे बडा लाभ हुआ; और मैं अध्ययन भी खूब कर सका था।

११ अक्तूबर को हम फिलाडेल्फिया मे उतरे। वहाँ कुछ छोटे-छोटे परिवर्तन हो गये थे। कीथ की जगह पर मेजर गार्डन अब गवर्नर हो गये थे। एक दिन रास्ते मे साधारण नागरिक की तरह जाते हुए कीथ मुझे मिल गये। मुझे देखकर वे थोड़े झिझके तो जरूर, लेकिन बिना बोले आगे बढ गये। मिस रीड को देखकर मैं भी उतना ही शर्मिन्दा हुआ होता, अगर मेरा पत्र पाने के बाद मेरे लौटने की आशा छोड़कर उनके मित्रों ने एक दूसरे व्यक्ति से शादी करने के लिए उन्हे राजी न कर लिया होता। मेरी अनुपस्थिति मे रॉजर नामक एक कुम्हार के साथ उनका विवाह हो गया था। लेकिन उसके साथ वे कभी खुश नही रही और जल्दी ही उससे अलग हो गईं और जब यह पता चला कि रॉजर की एक पत्नी पहले से थी तो उन्होने एक-साथ रहने और उसका नाम रखने से इन्कार कर दिया। वह बढिया कारीगर होते हुए भी बेकार आदमी था, और मिस रीड के मित्रो को उसकी कुशलता का ही लालच था। रॉजर कर्ज से लद गया और १७२७ या १७२८ मे पश्चिमी द्वीप समूह चला गया, जहाँ वह मर गया। कीमर के पास एक अच्छा मकान हो गया था, स्टेशनरी मे भरी-पूरी एक दूकान थी, काफी नये टाइप, कई कर्मचारी (जिनमे से कोई भी अच्छा नही था) थे और लगता था कि उसके पास अब काफी काम आने लगा है।

श्री डेनहैम ने वाटरस्ट्रीट मे एक दूकान किराये पर ली और हमने अपना सामान वहा सजा दिया। मैं बडी मेहनत से कारबार देखने लगा, हिसाब रखना सीखने लगा और कुछ समय मे सामान बेचने में माहिर हो गया। हम दोनो साथ रहते और खाना खाते थे। वे मुझे सच्चे भाव से चाहते थे और पिता की तरह सलाह दिया करते थे। मैं उनका आदर और सम्मान करता था। हम खुशी-खुशी हमेशा साथ-साथ काम करते जाते कि फरवरी १७२७ की शुरूआत मे जब मैंने अपना इक्कीसवा साल पूरा ही किया था, हम दोनों ही बीमार पड गये। मुझे 'प्लूरिसी' हो गई जिसने मुझे लगभग मार ही डाला। मुझे बडी तकलीफ हुई और मैं

ने जीने की आशा ही छोड दी, लेकिन जब मैं फिर अच्छा होने लगा तो मुझे बडी निराशा हुई और बडे कष्ट से मैं सोचने लगा कि अब मुझे फिर वह सब नापसन्द आने वाला काम करना पडेगा। श्री डेनहैम को क्या बीमारी हो गई थी यह मुझे याद नही लेकिन वे आखिरकार इसी बीमारी के शिकार हुए। अपने प्रेम के चिह्नस्वरूप वे मेरे लिए एक मौखिक वसीयत मे थोड़ा-सा धन देकर और मुझे एक बार फिर इतने बडे ससार मे अकेला छोडकर चले गये, क्योकि दूकान का काम उनके उत्तराधिकारियो ने सम्हाल लिया और मेरी नौकरी समाप्त हो गई।

मेरे बहनोई होम्स उस समय फिलाडेल्फिया मे थे। उन्होने मुझसे फिर एक बार मुद्रण-व्यापार मे प्रवेश करने की सलाह दी। कीमर ने मुझे काफी अच्छी सालाना तनख्वाह पर अपने छापाखाने का प्रबन्ध करने का निमत्रण दिया जिससे वह अपनी स्टेशनरी की दूकान पर ज्यादा ध्यान दे सके। लन्दन मे उसकी पत्नी और पत्नी के मित्रो से मैंने उसके चरित्र के दोषो के बारे मे जाना था, इसलिए उनके साथ सम्पर्क रखने को उत्सुक मैं नही रह गया था। मैंने किसी सौदागर के क्लर्क का काम पाने की कोशिश की लेकिन जल्दी ही कोई न पाकर मैं फिर कीमर के साथ हो गया। उसके छापेखाने मे मुझे ये आदमी मिले। वेल्स से आकर पेन्सिलवालिया मे बस जाने वाला तीस वर्षीय ह्यू मेरेडिथ जिसने किसानी का काम सिखलाया था वह ईमानदार व समझदार था, उसकी निरीक्षण-शक्ति ठोस थी, वह कुछ पढता भी था लेकिन शराब पीने की लत भी थी। देहात का रहने वाला युवक स्टीफैन पॉट्स जो खेती-बाडी का ही काम जानता था, विशाल अगो वाला था, बडा मजाकिया मसखरा लेकिन थोडा सुस्त था। इन दोनो को कीमर ने प्रति सप्ताह बहुत कम मजदूरी पर नौकर रखा था और वादा किया था कि हर तीसरे महीने, ज्यो-ज्यो वे उन्नति करते जायेंगे, उनकी तनख्वाह मे एक शिलिंग की वृद्धि होती जायेगी; और बाद मे अच्छी तनख्वाह मिलने की आशा से ही दोनों ने काम करना मजूर कर लिया था। मेरेडिथ को प्रेस मे

काम करना था और पॉट्स को जिल्दसाज़ी विभाग मे और समझौते के अनुसार कीमर को उन्हे सिखाना था, जबकि असलियत यह थी कि वह स्वयं कुछ नही जानता था। एक अपढ आयरिश जॉन था, जिसने कोई काम न सीखा था और कीमर ने एक जहाज के कैप्टेन से उसे चार बरस की नौकरी के लिए खरीद लिया था। उसे भी प्रेस का काम सिखाया जाता था। एक आक्सफोर्ड का विद्यार्थी जार्ज वेब था, जिसे भी कीमर ने चार बरस की नौकरी के लिए खरीद लिया था, उसे कम्पोजिंग सिखानी थी, लेकिन उसके बारे मे फिर बताऊँगा। और एक देहात का लडका डेविड हैरी था जिसे उसने शिक्षार्थी के रूप मे नौकर रक्खा था।

जल्दी ही मैं समझ गया कि अपनी आदत के विपरीत इतनी ज्यादा तनख्वाह पर उसने मुझे क्यों रक्खा था। उसका इरादा था कि इन गँवार, सस्ते आदमियो को मैं काम सिखाऊँ और जैसे ही वे सीख जायेंगे वह मेरे बगैर भी अपना काम चला सकेगा, क्योकि वे सभी आदमी उसके साथ अनुबध कर चुके थे। फिर भी मैं खुशी-खुशी उसके विश्रृंखल छापेखाने को ठीक करने और उसके आदमियो को उनके काम सिखाने लगा। धीरे-धीरे वे सभी अपना काम पहले से अच्छी तरह करने लगे।

किसी आक्सफोर्ड के विद्यार्थी को खरीदे हुए नौकर की हैसियत से पाकर सभी को बड़ा अजीब मालूम पड़ सकता है। उसकी उम्र अठारह वर्ष से ज्यादा न थी और उसने अपनी यह कहानी मुझे सुनाई, कि वह ग्लूसेस्टर मे पैदा हुआ था और उसकी आरम्भिक शिक्षा वही ग्रामर स्कूल मे हुई थी। नाटकों में अपना पार्ट वह बहुत अच्छी तरह अदा करता था, इसलिए विद्यार्थियो में मशहूर हो गया था। वह वहाँ के "पिटी क्लब" का सदस्य था और उसने गद्य और पद्य दोनो ही लिखे थे उसकी कुछ रचनाएँ स्थानीय समाचारपत्रो मे प्रकाशित हुई थी। तब वह आक्सफोर्ड भेजा गया, जहाँ वह लगभग एक साल तक रहा लेकिन वह वहाँ असन्तुष्ट था, क्योकि वह लन्दन जाकर नाटको का

अभिनेता बनना चाहता था। आखिरकार जब हर तीसरे महीने आने वाली पन्द्रह गिन्नियाँ आईं तो अपना कर्ज चुकाने के बजाय वह शहर से बाहर निकला और अपना गाउन भटकटैया की भाडी मे छिपाकर पैदल ही लन्दन जा पहुँचा। लन्दन मे उसका कोई दोस्त न था इसलिए वह बुरी सगत मे पड गया, जल्दी ही उसकी पन्द्रह गिन्नियाँ खर्च हो गई और अभिनेताओ से सम्पर्क स्थापित करने का भी अवसर नही मिला। पैसो की जरूरत हुई तो अपने कपडे गिरवी रख दिये, और फिर रोटियो के भी लाले पडने लगे। एक दिन वह भूखा सड़क पर चला जा रहा था और उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे, कि एकाएक भरती करने वाले एक एजेन्ट का परचा उसके हाथ मे आ गया जिसमे लिखा हुआ था कि जो व्यक्ति अमेरिका मे नौकरी करने के लिए अनुबध कर लेगा उसे फौरन भोजन आदि दिया जायेगा। सीधे एजेन्ट के दफ्तर मे जाकर उसने अनुबध कर लिया और उसे जहाज पर सवार कराकर अमेरिका भेज दिया गया। उसने कभी अपने मित्रो को नही लिखा कि वह कहाँ है और क्या कर रहा है। वह जिन्दादिल, मजाकिया, भले स्वभाव वाला और बडा बढिया साथी था, लेकिन आलसी, विचारहीन और परले सिरे का उद्दण्ड था।

आयरलैंडवासी जॉन् कुछ दिनो बाद भाग गया। बाकी लोगो के साथ मैं बडी शान्ति से रहने लगा क्योंकि वे मेरी काफी इज्जत करते थे। शनिवार को कीमर व्रत रखता था इसलिए उस दिन काम नहीं होता था और मुझे अपने अध्ययन के लिए दो दिन मिल जाया करते थे। पढे-लिखे आदमियो के साथ मेरी जान-पहचान बढ़ती ही गई। कीमर स्वयं भी मेरे साथ बडी सज्जनता और आदरपूर्वक व्यवहार करता था और वर्नन के ऋण को छोड़कर मुझे किसी प्रकार की चिन्ता नही थी। रुपये बचा नही पाता था। उधर वर्नन ने कभी मुझसे माँगा भी नही।

हमारे प्रेस मे कभी-कभी टाइपो की जरूरत पड जाया करती थी,

लेकिन अमेरिका मे टाइप ढालने वाला कोई न था। मैंने लन्दन मे जेम्स के यहाँ टाइप ढलते तो देखे थे, लेकिन ढालने की विधि पर कभी ध्यान न दिया था। फिर भी मैंने कोशिश करके एक साँचा बनाया और अपने पास के टाइपों को उसमें दबा-दबाकर जगह बनाई और फिर सीसा डालकर टाइप तैयार कर ही लिये और साधारण ढंग से कमी पूरी कर ली, अवसर पड़ने पर मैं और भी कई चीजो की खुदाई कर लेता; स्याही बना लेता; गोदाम की रखवाली कर लेता। कहने का मतलब यह कि मैं एकसाथ पीर, बवर्ची, भिश्ती, और खर चारो था।

लेकिन मेरी उपयोगिता चाहे जितनी अधिक थी, मैंने देखा कि ज्यो-ज्यो प्रेस के दूसरे आदमी काम सीखते गये मेरी सेवाओ का महत्व कम होता गया; और कीमर ने मेरी दूसरी तिमाही की तनख्वाह देते समय मुझे बता ही दिया कि मेरी तनख्वाह बहुत ज्यादा है और मुझे उनमे कमी करनी चाहिए। धीरे-धीरे उसकी शालीनता कम होती गई, मालिकाना व्यवहार बढ़ता गया और वह अक्सर मेरी गलतियाँ निकालने, दोष ढूँढने लगा और उबल पड़ने को भी तैयार हो गया। इन सबके बावजूद मैं अत्यन्त शान्तिपूर्वक अपना काम करता रहा और अपने से कहता रहा कि उसकी चिड़चिड़ाहट का कारण अंशतः उसकी विषम परिस्थितियाँ हैं। आखिरकार एक छोटी-सी घटना ने हमारा सम्बन्ध तोड ही दिया। आँगन मे जोर का शोर उठा तो मैंने खिड़की से बाहर झाँककर देखना चाहा कि क्या मामला है। कीमर उस समय सड़क पर था। उसने आँखें उठाकर मुझे देख लिया और तेज स्वर मे क्रोध से मुझसे कहा कि मुझे अपना काम करना चाहिए। उसने मेरी शान के खिलाफ कुछ और शब्द भी कहे और खिडकियों से बाहर झाँकते हुए सभी पड़ौसियों ने भी देखा कि मेरे साथ कैसा व्यवहार किया गया और और यही बात मुझे बींध गई। वह फौरन ही छापेखाने मे आ गया, और बकने लगा। इस पर दोनो ओर से काफी कहा-सुनी हुई और मन

के अनुकूल मौका पाकर उसने मुझे तीन महीने का नोटिस दे दिया, यह कहते हुए कि साधारणत इतने लम्बे नोटिस के लिए वह बाध्य नही है। मैंने उससे कहा कि आगे बातें अनावश्यक हैं क्योंकि मैं इसी क्षण चला जाऊँगा। और अपना हैट लेकर मैं बाहर निकल गया। नीचे मेरेडिथ मिला तो मैंने उससे कह दिया कि मेरी चीजो को सावधानी से मेरे घर पहुचा दे।

मेरेडिथ शाम को मेरे यहाँ आया और हम बाते करते रहे। वह मेरा बडा आदर करने लगा था और मेरे छापाखाना छोड़ देने पर स्वय भी वहाँ रहने को तैयार न था। मैं सोचने लगा था कि वापस बोस्टन लौट जाऊँ, लेकिन उसने मुझे रोका। उसने मुझे याद दिलाया कि कीमर अपनी सभी चीजो के लिए कर्ज से लदा है और उसके महाजन कर्ज के लिए कहने लगे हैं; कि कीमर अपनी दूकान भली प्रकार नही चला पा रहा है और अक्सर नकद पैसो के लिए बिना लाभ चीजें बेच देता है या बिना लिखाये उधार दे देता है, इन बातो से सभावना है कि शायद उसे अपना धन्धा समेटना पडे और तब मैं उसकी खाली जगह को भर सकूँगा। मैंने दलील पेश की कि मेरे पास रुपया नही है। उसने तब मुझे बताया कि उसके पिता की निगाहो मे मेरी बहुत इज्जत है और बात-चीत से मालूम हुआ था कि अगर मैं और मेरेडिथ साझे मे काम करें तो वे आवश्यक धन खर्च करने को तैयार हैं। उसने कहा, "कीमर के साथ मेरा समझौता बसन्त मे खत्म होगा। उस समय तक हम लन्दन से अपना प्रेस और टाइप मँगा सकते हैं। मैं जानता हूँ कि मैं काम नही कर सकता; अगर तुम चाहो तो तुम्हारी व्यापारिक चतुराई लगे और मैं सारी चीजो का प्रबन्ध करूँ। लाभ आधा-आधा बाँट लेंगे।"

प्रस्ताव मेरे अनुकूल था और मैंने अपनी स्वीकृति दे दी। उसके पिता शहर मे थे; उन्होंने भी सम्मति दे दी। उनकी सम्मति दे देने का एक कारण यह भी था कि उन्होंने देखा कि उनके लडके पर मेरा काफी प्रभाव है और मेरे ही कारण लम्बे समय से वह शराब नही पीता।

उन्हें आशा थी कि मेरे अत्यधिक निकट सम्पर्क में रहने पर वह शायद हमेशा के लिए इस बुरी आदत को छोड देगा। मैंने आवश्यक सामान की एक लिस्ट उन्हें दे दी, जिसे वे एक व्यापारी के पास ले गये; सामान के लिए आर्डर भेज दिया गया और तय किया गया कि उसके आ जाने तक यह बात बिल्कुल गुप्त रक्खी जायगी। इस बीच मुझे कोशिश करनी थी कि अगर किसी और छापाखाने मे काम मिल जाय तो मैं कर लूं। लेकिन मुझे कही जगह नही मिली इसलिए कुछ दिनो तक यो ही बेकार रहा। कीमर को उसी समय न्यू जरसी मे कागज के नोट छापने का काम मिलने की आशा हुई। इस काम मे अनेक प्रकार के टाइपों और स्टेंसिलों की आवश्यकता पडेगी, यह वह जानता था और यह भी जानता कि यह काम सिर्फ मैं कर सकता हूँ। उसे भय हुआ कि कही ब्रैडफोर्ड मुझे नौकर रखकर यह काम झटक न ले जाय और उसने सज्जनतापूर्ण संवाद मेरे पास भेजा कि आकस्मिक आवेश मे आकर दो पुराने दोस्तो का अलग-अलग हो जाना ठीक नही। उसमें मुझे वापस लौट आने का निमत्रण दे दिया गया था। मेरेडिथ ने यह प्रस्ताव स्वीकार करने पर मुझे मजबूर कर दिया, क्योंकि इससे मेरे शिक्षण मे उसकी प्रगति निश्चय ही थोडी और हो जायेगी। इस तरह मैं फिर कीमर के यहाँ काम करने लगा और हमारा सम्बन्ध पहले से कही अच्छी तरह चलने लगा। न्यू जरसी का काम मिल गया और मैंने इसके लिए तांबे की तख्ती का प्रेस बनाया जो इस देश मे पहला था; मैंने नोटों के लिए कई तरह के बेलबूटे और डिजाइनें भी बनाई। हम दोनो बर्लिंगटन गये जहाँ सारा काम मैंने भली प्रकार पूरा किया। इसके बदले मे उसे इतना पैसा मिला कि वह काफी समय तक भली प्रकार अपना काम चला सकता था।

बर्लिंगटन मे मेरा राज्य के कई प्रमुख व्यक्तियो से परिचय हो गया। उनमे से कुछ लोगो की एक समिति असेम्बली ने प्रेस की निगरानी के लिए बना दी थी, जिससे गैरकानूनी ज्यादा नोट न छापे जा सकें। इस-

लिए बारी-बारी से वे हमारे साथ रहते और साधारणत' हमारे साथ रहने वाला आदमी अपने साथ के लिए एक-दो मित्रो को लेकर ही आता था। अध्ययन के कारण मेरा मस्तिष्क कीमर के मस्तिष्क से कही अधिक उन्नत था, और मेरा ख्याल है कि इसी कारण मेरी बातचीत का मूल्य उनके निकट अधिक था। वे मुझे अपने घरो मे आमन्त्रित करने, अपने मित्रो से परिचय कराने और मेरे साथ बडी शालीनता से व्यवहार करने लगे; जबकि मालिक होते हुए भी कीमर थोडा उपेक्षित भी हो जाता था। सच तो यह है कि वह वहाँ फबता ही नही था; साधारण जीवन की बातो से अनभिज्ञ, सम्मतियो का कडा विरोध करने का शौकीन, गन्दे रहन-सहन का अभ्यासी, कुछ धार्मिक मामलो मे बडा उत्साही, कुल मिलाकर एक असस्कृत व्यक्तित्व।

हम लगभग तीन महीने वहाँ रहे। उस समय तक न्यायाधीश एलेन, सूबा के सचिव सैम्युएल बस्टिल, असैम्बली के सदस्य आइज़क पियर्सन, जोज़ेफ कूपर और स्मिथ परिवार के कई लोग, सर्वेक्षण जनरल आइज़क डेकॉ आदि मेरे मित्र हो गये थे। आइज़क डेकॉ बडे विवेकवान्, मेधावी व्यक्ति थे। उन्होने मुझे बताया कि उन्होने अपना जीवन बचपन मे ईंटें पाथने वालो के यहाँ मिट्टी सानने की नौकरी से आरम्भ किया था, पढना-लिखना जवान होने के बाद सीखा, सर्वेक्षण करने वालो की जरीब ढोई जो सर्वेक्षण पढाया करते थे, और अब अपने परिश्रम के बल पर अच्छी जायदाद खडी कर ली है। उन्होने मुझसे कहा, "मैं देख रहा हूँ कि तुम शीघ्र ही इस आदमी को इस काम मे परास्त कर दोगे और इसी धधे से फिलाडेल्फिया मे खूब धन कमाओगे।" उस समय तक उन्हें इस बात का सकेत तक नही मिला था कि मैं फिलाडेल्फिया या किसी और जगह छापाखाना खोलने की कोशिश मैं हूँ। बाद मे ये मित्र मेरे लिए बडे लाभदायक साबित हुए, जैसा कि कभी-कभी मैं भी उनके लिए हुआ। वे सभी आजीवन अपने दिनो मे मेरे लिए समान आदर बनाये रहे।

इससे पहले कि मैं अपने सार्वजनिक रूप से व्यापार मे आ जाने का

वर्णन करूँ, यह बता देना ज्यादा अच्छा होगा कि अपने सिद्धान्तों और चरित्र सम्बन्धी नियमों के बारे मे मैं उस समय क्या सोचता था, जिससे तुम देख सको कि मेरे आगामी जीवन की घटनाओ को वे किस हद तक प्रभावित कर सके। मेरे माता-पिता ने बचपन से ही मुझपर धार्मिक प्रभाव डाला था और मेरा पालन-पोषण धार्मिक वातावरण में ही किया था। परन्तु केवल १५ वर्ष की उम्र मे कई बातो पर मुझे शक होने लगा और कई किताबों मे भी मैंने विभिन्न प्रकार की शकाएँ पढी तो मुझे परमपिता की वाणी (Revelation) मे भी सन्देह होने लगा और कई ईश्वरवाद की विरोधी कुछ पुस्तके मेरे हाथ पड गईं; कहा जाता था कि वे बॉयल-लेक्चर मे दिये गए प्रवचनो का साराश थी। हुआ ऐसा कि उन पुस्तको को पढकर मुझ पर वाछित का बिलकुल उलटा ही असर पडा; क्योकि आस्तिको के जिन तर्कों को विरोध करने के हेतु प्रस्तुत किया गया था वे मुझे उनके विरोधो से कही अधिक शक्तिशाली मालूम पडे, कहने का मतलब यह है कि मैं बिलकुल आस्तिक हो गया। मेरे तर्को ने कुछ औरों को भी, विशेषकर कालिन्स और राल्फ को, आस्तिक बना दिया। लेकिन उन दोनों ने ही बाद मे बिना किसी हिच-किचाहट के मेरे साथ बुरा व्यवहार किया। फिर कीथ (जो स्वयं एक स्वतन्त्र विचारक था) का मेरे प्रति और मेरा अपना वर्नन तथा मिस रीड के प्रति व्यवहार (जो मुझे अक्सर बडी तकलीफ पहुँचाते थे) को देखकर मुझे सशय होने लगा कि यह सिद्धान्त सत्य होने पर भी अधिक लाभदायक नही है। लन्दन मे लिखे गये मेरे परचे मे ड्राइडेन की ये पक्तियाँ आदर्श रूप मे उद्धृत थी·

"जो है, ठीक है। यद्यपि अंधा मानव
शृखला का एक भाग, सबसे पास वाली कड़ी ही देख सकता है;
क्योकि उसकी आँखों की शक्ति
सबसे ऊपर रहने वाले की रोशनी के बराबर नही होती।"

इन पक्तियो और परमात्मा की अपरिमित बुद्धि, दयालुता और शक्ति

से मैं इस परिणाम पर पहुँचा था कि इस ससार मे शायद कुछ भी गलत नही होता, और गुण-दोषो का अन्तर खोखला है क्योकि ऐसी चीजें शायद नही हैं। लेकिन यह परिणाम मुझे अधिक विवेकपूर्ण नही मालूम पडा जितना पहले मालूम पडा था, और मैं सोचने लगा कि बिना मेरा दृष्टि पडे कही ऐसी कोई गलती तो मेरे तर्क मे नही प्रवेश कर गई जिसने बाद की सारी बातो को ही नष्ट कर दिया हो, इस तरह की गलतियाँ आध्यात्मिक तर्कों मे आसानी से हो जाती हैं।

मुझे विश्वास हो गया कि जीवन को भली प्रकार चलाने के लिए व्यक्तियो के पारिवारिक कार्यो मे सत्यता, ईमानदारी और गम्भीरता अत्यन्त आवश्यक हैं। मैंने लिखित प्रतिज्ञाएँ की, जो आज भी मेरी कापी मे मौजूद है, कि मैं जीवन भर इन तीनो का पालन करूँगा। परम-पिता की वाणी का उस रूप मे मुझ पर कोई असर नही पडा था, बल्कि मेरी अपनी राय थी कि कुछ काम इसलिए बुरे और दूसरे काम इसलिए अच्छे नही हैं कि उन्हे धर्म-पुस्तक मे न करने या करने के लिए कहा गया है। बल्कि बुरे हैं इसलिए मना किये गये हैं और अच्छे हैं इस-लिए उनके लिए प्रोत्साहित किया गया है। दोनो प्रकार के कामो की प्रकृति और परिस्थितियो का भी इन पर असर पड़ता है। और इसी विश्वास के बल पर, पिताजी की दृष्टि और सलाहो से दूर रहने पर भी, परमात्मा या किसी लोकपाल की कृपा अथवा आकस्मिक अनुकूल परिस्थि-तियो या दशाओ अथवा सभी के कारण ही अजनबियो के बीच बडी मुश्किल परिस्थितियो मे पड जाने पर भी, स्वेच्छा से किसी बडी चरित्र-हीनता या अन्याय का आसरा लिये बिना (जैसी कि मुझ अधार्मिक व्यक्ति से आशा की जा सकती थी) मैं अपने को बनाये रखने मे सफल रहा। मैंने स्वेच्छा से कहा है, क्योकि जिन उदाहरणो को मैंने बताया है, उनमे मेरे यौवन, अनुभवहीनता और दूसरो के बहकावे मे आ जाने आदि के कारण एक प्रकार की अवश्यंभाविता थी। कुल मिलाकर यो कहूँ कि अपनी जीवन-यात्रा शुरू करते समय मेरा चरित्र काफी अच्छा था। मैं

उसका मूल्य समझता था और उसे बनाये रखने का निश्चय कर चुका था।

फिलाडेल्फिया लौटकर आने के थोड़े दिनो बाद ही लन्दन से नये टाइप आ गये। इसके पहले कि कीमर कही और से सुनता हमने ही उसे बता दिया और सारी बातें तय करके उसकी सम्मति से नौकरी छोड दी। बाजार के पास एक मकान किराये पर मिल रहा था, हमने उसे ले लिया। उसका किराया सिर्फ चौबीस पौड सालाना था, लेकिन उसे और कम करने के लिए (बाद मे मुझे मालूम हुआ कि अब यह मकान ७० पौड सालाना किराये पर उठा हुआ है) खिडकियो पर शीशा जडने वाले एक कारीगर टामस गॉडफ्रे और उसके परिवार को उसी मे ठहरा लिया जो किराये का एक बडा भाग हमे देने लगा और हमने उन्ही के साथ भोजन करना शुरू कर दिया। टाइपों के बंडल खोल कर और प्रैस को यथास्थान रख कर हम निवृत्त ही हुए थे कि मेरा एक परिचित जार्ज हाउस एक देहात मे रहने वाले व्यक्ति को साथ लेकर आया, जो रास्ते मे किसी प्रेस का पता पूछते हुए उसे मिल गया था। अनेक प्रकार की चीजे खरीदने मे हमारे पास का सारा पैसा खत्म हो चुका था और इस ग्रामवासी के दिए पाँच शिलिंग, जो इतने उपयुक्त अवसर पर हमे मिले थे, हमारी पहली कमाई थी, इसलिए इन्हें पाकर जितनी खुशी मुझे हुई थी उतनी खुशी बाद में एक क्राउन पाकर भी नही हुई। हाउस के प्रति भी मै अत्यधिक कृतज्ञ हुआ और शायद यह इसी का परिणाम था कि बाद मे मैं नये काम शुरू करने वालो को सहायता देने लगा।

हर देश में अशुभवक्ता होते है जो हमेशा देश का विनाश करते हैं। ऐसा ही एक आदमी उस समय फिलाडेल्फिया मे रहता था; काफी जाना-माना, बूढ़ा आदमी था, बुद्धिमान् मालूम पडता था और गंभीरतापूर्वक बात करता था। उसका नाम था—सैम्युएल मिकिल। मैं उससे परिचित नही था, लेकिन एक दिन मेरे दरवाजे पर उसने मुझे रोककर पूछा कि क्या मैं ही

क

वह नौजवान हूँ जिसने कुछ दिन पहले नया छापाखाना खोला है। मैंने स्वीकृति मे उत्तर दिया तो वह बोला कि वह मेरे लिए बड़ा दुखी है क्योकि इस काम मे वहुत धन खर्च होता है और अब तक लगा मेरा सारा पैसा डूब जायेगा, क्योकि फिलाडेल्फिया की हालत गिरती जा रही है और लोग अभी ही आधे दिवालिए हो चुके है या होते जा रहे हैं। इसकी विपरीत बातें, जैसे नई इमारतो का बनते जाना और किरायो का बढना, उसकी समझ मे बडी गलत थी, क्योकि ये चीजें हमारा विनाश करेगी। और उसने देश मे उपस्थित या निकटभविष्य मे उपस्थित होने वाली विपत्तियों की इतनी विस्तृत जानकारी कराई कि उसके जाने के बाद मैं कुछ हद तक दुखी हो उठा—अगर मैं उसे पहले से जानता होता तो शायद मैंने अपना कारोबार शुरू ही न किया होता। यह आदमी इस नष्ट हो रहे नगर मे रहता रहा और उसी शैली मे उसी तरह की बातें करता रहा। कई बरसो तक उसने मकान नही खरीदा क्योकि सब कुछ नष्ट हो जाने वाला था। और आखिर मे यह देखकर मुझे खुशी हुई कि उसने अपनी बकवास शुरू करने से पहले के दामो से पाँच गुने दाम देकर मकान खरीदा।

मुझे पहले ही बताना चाहिए था कि इससे पहले साल की पतझड़ ऋतु मे हमने अपने पारस्परिक सुधार के हेतु अपने सारे विवेकवान् मित्रो को एकत्र करके एक क्लब बना लिया था और उसका नाम रक्खा था "जन्टो" (Junto)। हम शुक्रवार की शाम को मिला करते थे। इसके नियम मैंने ही बनाये थे, जिनके अनुसार बारी-बारी से प्रत्येक सदस्य को चरित्र-निर्माण, राजनीति या विज्ञान सम्बन्धी एक या अधिक प्रश्न पूछने होते थे, बैठक मे जिन पर विचार-विमर्श किया जाता था, और तीन महीने मे एक बार अपनी रुचि के विषय पर अपना लिखा हुआ निबन्ध पढना होता था। हमारे वादविवाद एक अध्यक्ष की अध्यक्षता मे होते थे और उसका विरोधो के प्रति रुचि या विजय की इच्छा से रहित गम्भीरता और ईमानदारी से सत्य की खोज की दिशा मे प्रेरित

करने वाला होना आवश्यक था। विरोधों को रोकने के लिए निश्चित सम्मतियों या सीधा विरोध करने वाली उक्तियो को कुछ समय बाद अवैध घोषित कर दिया गया और इसका उल्लघन करने वाले को हलके आर्थिक दड देने का विधान बना दिया गया।

सबसे पहले सदस्यो मे से एक था जोजेफ ब्रायेंट्नल। वह वकीलो के दस्तावेज लिखने का काम करता था और भले स्वभाव, दोस्ताना ढग वाला अधेड अवस्था का व्यक्ति था; कविता का प्रेमी था और जो कुछ पाता था सब पढ डालता था और कभी-कभी लिख भी अच्छा लेता था। छोटे-मोटे कामों मे बडा कुशल और बातचीत मे बड़ा समझदार था।

टामस गॉडफ्रे था, जिसने गणित की शिक्षा स्वयं प्राप्त की थी, अपने ढंग का महान्, और बाद मे आजकल के हैडले क्वाड्रैंट का आविष्कारक। लेकिन अपने विषय के अलावा वह कुछ नही जानता था और खुशदिल साथी नही था। अधिकतर महान् गणितज्ञो की तरह, जिसे बाद मे मैं मिलने का अवसर पा सका, वह भी हर बात बिल्कुल ठीक-ठीक चाहता था और ज़रा-ज़रा सी बातो को अस्वीकार करता था या अन्तर बताने लगता था, जिससे बातचीत मे बहुत व्यवधान पहुँचता था। जल्दी ही उसने क्लब छोड दिया।

निकोल्स स्कल, सर्वेक्षक, जो बाद मे सर्वेक्षक जनरल हो गया, पुस्तको से प्रेम करता था और कभी-कभी कविताएँ भी लिखा करता था।

विलियम पार्टन्स, जिसने शुरू से जूते बनाने का धधा सीखा था, लेकिन अध्ययन अच्छा लगने के कारण उसने ज्योतिष सीखने के इरादे से काफी गणित सीखी। बाद मे वह स्वयं ज्योतिष का मखौल उडाने लगा। वह भी सर्वेक्षण जनरल हो गया।

विलियम मॉग्रिज बढई और बड़ा कुशल कारीगर था। बडा विचार-वान्, समझदार व्यक्ति।

ह्यू मेरेडिथ, स्टीफेन पाट्स और जार्ज वेब के बारे मे मै पहले ही बता चुका हूँ।

राबर्ट ग्रेस, धनवान युवक, दयालु, जिन्दादिल और मजाकिया , श्लेष और दोस्तो को प्यार करने वाला ।

और विलियम कोलमैन, जो उस समय का एक व्यापारी का क्लर्क था । लगभग मेरी ही उम्र थी उसकी । बडे शान्त, स्पष्ट विचारो वाला ; खरे हृदय वाला और मेरे जीवन मे परिचित होने वाले किसी भी व्यक्ति से अधिक सुदृढ चरित्र उसका था । बाद मे वह बडा मशहूर व्यापारी और हमारे सूबे का एक न्यायाधीश बना । हमारी मित्रता उसकी मृत्यु तक लगभग चालीस साल कायम रही । हमारा क्लब भी लगभग इतने ही साल तक चलता रहा और सूबे का सबसे अच्छा दर्शन, चरित्र-निर्माण और राजनीति का स्कूल था । हमारे क्लब मे प्रश्न पूछे जाने के एक सप्ताह बाद उन पर वादविवाद होता था, जिससे इस समय मे हम विभिन्न विषयो का अध्ययन करें और अधिक अच्छी तरह बोल सके । यहाँ पर भी हमने बातचीत की अच्छी आदते ही डाली, क्योकि नियमानुसार सदस्यो को अप्रिय लगने वाली बातें करना निषिद्ध था । यही से क्लब का लम्बा जीवन शुरू हुआ, जिसके बारे मे बतलाने के कई अवसर आगे भी आयेंगे ।

इन सबका वर्णन मैंने इसलिए यहाँ दिया है कि इसमे मेरा भी स्वार्थ था, सदस्य हमारे लिए काम खोज पाने मे सहायक होते थे । ब्रायेंट्नल ने विशेषत. प्रयत्न करके क्वेकरो के इतिहास के चालीस वर्क छापने को ला दिये , बाकी मुद्रण कीमर को करना था ; और यह काम हम लोगो ने बडी मेहनत से पूरा किया, क्योकि कीमत बहुत कम थी । यह एक ताव के चौथाई आकार मे पाइका टाइप मे छापा जाना था ।

मैं एक दिन मे उसका एक पृष्ठ कम्पोज कर डालता था और मेरा मित्र उसे प्रेस पर छापता था ; छापने के बाद टाइपो को यथास्थान रखते । (जिससे मैं अगले दिन काम कर सकूँ) कभी-कभी रात के ग्यारह या उससे भी अधिक बज जाते थे, क्योकि हमारे मित्रो द्वारा भेजे गये छोटे-छोटे कामो मे भी कुछ न कुछ समय लग ही जाता था । लेकिन

मैं एक पृष्ठ प्रतिदिन कम्पोज करने के लिए इतना दृढप्रतिज्ञ था कि एक रात 'फार्म' को ढाँचे मे करने के बाद मैंने सोचा कि मेरा उस दिन का काम खत्म हो गया कि सहसा उनमे से एक टूट गया और टाइप बिखर गये, लेकिन मैंने हिम्मत नही हारी और टाइपो को केसो मे यथास्थान रख कर सोने से पहले पुन. उसे कम्पोज कर लिया। हमारा परिश्रम हमारे पडोसियो से छिपा न था और इसी के बल पर हमे चरित्रवान् और उपयोगशील समझा जाने लगा। विशेष रूप से मुझे यह बताया गया कि व्यापारियो के एवरी-नाइट क्लब मे नये छापेखाने की चर्चा चला करती थी और साधारण राय यह थी कि चूँकि शहर मे कीमर और ब्रेडफोर्ड दो मुद्रक पहले से मौजूद हैं, इसलिए नया छापाखाना चल नही सकेगा। लेकिन डा० बेयर्ड (जिनसे उनकी जन्मभूमि स्काटलैंड के सेंट एँड्रूज नामक नगर मे कई बरसो बाद मैं और तुम मिले थे) की राय इसके विरुद्ध थी। उनका कहना था, "फ्रैंकलिन का सा परिश्रम मैंने अभी तक कही नही देखा। जब मैं क्लब से घर वापस जाता हूँ तो वह काम करता रहता है और पडोसियो के सोकर उठने से पहले फिर काम पर जुट जाता है।" इसका दूसरो पर बड़ा प्रभाव पडा और कुछ दिनो बाद ही उनमे से एक ने हमे स्टेशनरी देने का प्रस्ताव लिखा; लेकिन उस समय तक हम दूकान भी साथ-साथ नही खोलना चाहते थे।

अपने ही परिश्रम के बारे मे विशेष रूप से इतनी स्वतन्त्रतापूर्वक मै इसलिए बता रहा हूँ (यद्यपि यह अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना ही है) कि आगे आने वाली पीढ़ियो मे से जो भी इसे पढेंगे, उन्हे मेरे जीवन मे अध्यवसाय के कारण मिलने वाली सफलता के बारे मे जानकर भली प्रकार मालूम हो जायगा कि इस गुण का क्या महत्त्व होता है।

जार्ज वेब ने एक महिला के साथ मित्रता कर ली थी और उस महिला ने उसे इतना धन दे दिया कि वह कीमर से बाकी समय के लिए छुटकारा पा गया। तब वह हमारे पास आया और बोला कि वह हमारे

यहाँ काम करना चाहता है। उस समय हम उसे नौकरी नही दे सकते थे, लेकिन मैंने इतनी मूर्खता की उसे यह बता दिया कि मैं बहुत जल्दी ही एक अखबार निकालने वाला हूँ तब उसे काम दे सकूँगा। मैंने उसे बता दिया कि मेरी सफलता की आशा केवल इसी बात पर निर्भर थी कि ब्रेडफोर्ड द्वारा प्रकाशित शहर का अकेला अखबार बहुत ही घटिया दर्जे का है, बहुत बुरी तरह उसका प्रबन्ध किया जाता है, तनिक भी मनोरंजक नही है, फिर भी ब्रैडफोर्ड को उससे लाभ हो ही जाता है इसलिए मेरा विचार है कि अगर कोई बढिया अखबार निकाला जाय तो वह निश्चय ही सफल होगा। मैंने वेब से अनुरोध किया कि इस बारे मे वह किसी को बताए नही, लेकिन उसने कीमर को बता दिया और कीमर ने मुझसे आगे बढने के लिए फौरन घोषणा कर दी कि वह जल्दी ही एक अखबार प्रकाशित करेगा और वेब को उसमे काम देने का वायदा किया। मुझे इससे बहुत बुरा लगा और मैंने प्रतिक्रियास्वरूप (क्योकि उस समय तक मैं अपना अखबार नही निकाल सकता था) मैंने ब्रैडफोर्ड के अखबार मे कई मनोरजक निबन्ध 'विजी बॉडी' उपनाम से लिखे, जिन्हे बाद मे ब्रायेंट्नल कई महीनो तक लिखता रहा। इस तरह जनता का ध्यान उस अखबार की ओर खिच गया और कीमर की घोपणा पर जिसका हम लोग मजाक उडाया करते थे ध्यान देना बन्द कर दिया गया। फिर भी उसने अखबार का प्रकाशन शुरू किया और नौ महीने तक चलता रहा। इन महीनो मे वह कुल ९० ग्राहक बना पाया था इसलिए बहुत ही थोड़े पैसो मे उसने अपना अखबार मेरे हाथ बेच डालने का प्रस्ताव रखा। उस समय तक मैं पूरी तरह तैयार हो चुका था और मैंने फौरन अखबार ले लिया, कुछ वर्षो के बाद यह मेरे लिए अत्यधिक लाभदायक सिद्ध हुआ।

मैं देख रहा हूँ कि अपनी साझेदारी के बावजूद मैं उत्तम पुरुष ही बोले जा रहा हूँ। इसका कारण शायद यह हो सकता है कि व्यापार का सारा प्रबन्ध मेरे ही ऊपर था। मेरेडिथ कम्पोजीटर नही था, प्रेस भी

ठीक से न चला सकता था और गम्भीर बहुत ही कम रह पाता था। मेरे मित्र इस साझेदारी के बारे मे मेरे लिए दुःख प्रकट किया करते थे लेकिन मैं इसे सफल बनाने के लिए कृतसकल्प था।

हमारे अखबार के पहले अक ऐसे निकले जैसे सूबे मे पहले कभी नही देखे गये थे, ज्यादा अच्छे टाइप और ज्यादा अच्छी छपाई। उस समय गवर्नर बर्नेट और मैसाचुसेट्स असेम्बली के बीच एक विवाद उठ खड़ा हुआ था उसके बारे मे मैंने अखबार में कुछ जोशीली टिप्पणियाँ लिखी जिनका सूबे के प्रमुख व्यक्तियों पर बडा प्रभाव पडा और इस अखबार तथा इसके मैनेजर की खूब चर्चा होने लगी। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही हफ्तो के भीतर वे सब हमारे अखबार के ग्राहक हो गये।

उनके उदाहरण पर और लोग भी चले। हमारी ग्राहक-संख्या लगातार बढ़ने ही लगी। कुछ थोडा बहुत लिखना जो सीख लिया था उसका पहला भला प्रभाव यही पडा। दूसरा प्रभाव यह पडा कि नगर के प्रमुख व्यक्तियो ने देखा कि एक अखबार का प्रबन्ध ऐसा आदमी कर रहा है जो स्वय लिख भी सकता है। उन्होने मुझे उत्साहित करके अनुगृहीत किया। ब्रैडफोर्ड अब भी चुनाव-पत्र कानून और दूसरे सार्वजनिक कामो को छापता रहता था। एक बार उसने असेम्बली की ओर से गवर्नर को दिये गये मानपत्र को बहुत रद्दी ढग से एवं बहुत गलत छापा। हमने उसे शुद्ध और सुन्दर ढग से छापकर प्रत्येक सदस्य के पास एक-एक प्रति भिजवा दी। दोनों मुद्रणो के अन्तर को वे समझ गये, इससे असेम्बली मे हमारे मित्रों की राय की कदर बढ़ गई और सर्वसम्मति से हमे अगले साल के लिए मुद्रक नियुक्त किया गया।

असेम्बली मे जो मेरे मित्र मौजूद थे उनमे मिस्टर हैमिल्टन भी थे, जिनकी चर्चा मैं पहले कर चुका हूँ। वे इंगलेंड से लौट आये थे और असेम्बली के सदस्य हो गये थे। वे मेरा पक्ष पूरी दृढ़ता के साथ लिया करते थे और मेरे प्रति उनका यह व्यवहार मृत्यु तक कायम रहा।

लगभग इसी समय श्री वर्नन ने अपने कर्ज की मुझे याद दिलाई लेकिन वापस करने के लिए जोर नही दिया। मैंने उन्हे उत्तर मे बडी विनम्रतापूर्वक लिखा कि वह थोडा-सा समय मुझे और दे। उन्होने कुछ और प्रतीक्षा करना स्वीकार कर लिया और जैसे ही मेरे पास इतना पैसा हुआ मैंने सधन्यवाद व्याज सहित मूलधन वापस कर दिया। इस तरह अपनी गलती को कुछ हद तक मैं सुधारने मे सफल हुआ।

लेकिन अब एक ऐसी कठिनता सामने आ पडी जिसकी मैं कभी आशा नही करता था। मुझे जो आशाएँ दिलाई गई थी उनके अनुसार छापेखाने की कीमत मेरेडिथ के पिता को अदा करनी थी, लेकिन उन्होने सिर्फ सौ पौड दिये थे जो व्यापारी को दे दिये गए थे, सौ पौड अभी और देने बाकी थे जिनके लिए बेचैन होकर उसने हम सब पर मुकदमा चला दिया। हमारी जमानत हो गई लेकिन हमने देखा कि अगर समय रहते धन नही इकट्ठा किया गया तो मुकदमे का फैसला हमारे विपक्ष मे होगा और हम पर जुर्माना पड जायगा और जिसके फलस्वरूप हमारी सुनहरी आशाएँ चकनाचूर हो जाएँगी क्योकि प्रेस और टाइप सभी कुछ हमे कर्ज चुकाने के लिए आधे दाम पर ही बेच देना पडा।

इस मुसीबत मे मेरे दो सच्चे दोस्त, जिनकी मेहरबानी मैं अभी तक नही भूला और जब तक स्मरणशक्ति कायम रहेगी तब तक नही भूल सकूंगा, अलग-अलग मेरे पास आए (दोनो ने एक-दूसरे से सलाह बिल्कुल नही की थी) और बिना मेरे माँगे हुए सारा रुपया देने के लिए तैयार हो गये जिसमे प्रेस का पूरी तरह से स्वत्वाधिकारी बन जाऊँ; लेकिन वे मेरेडिथ के साथ मेरी हिस्सेदारी को पसन्द नही करते थे क्योकि वह अक्सर शराब पिये हुए सडको पर घूमता दिखलाई पडता और छोटे-छोटे गदे होटलो मे जुआ खेलता हुआ पाया जाता था। वे दोनो मित्र थे विलियम कोलमैन और राबर्ट ग्रेस। मैंने उन्हें बताया कि अगर मेरेडिथ और उसके पिता अपने वादा पूरा करने के लिए तैयार हैं; तो मैं उनसे सम्बन्ध-विच्छेद की बात नही कर सकता क्योकि

मैं अपने को उनके प्रति बड़ा अनुगृहीत समझता था अगर वे रुपया दे सके तो मैं कृतज्ञ बना रहूंगा। मैंने अपने मित्रों से यह कह दिया कि अगर मेरेडिथ और उसके पिता आखिरकार अपनी बात नही ही पूरी कर सके और हमारी हिस्सेदारी खत्म हो गई तो मैं स्वतन्त्रता से मित्रो की सहायता ले सकूंगा।

कुछ दिनों तक यह मामला यूँ ही रहा। एक बार मैंने हिस्सेदार से कहा, "शायद तुम्हारे पिता इस साझे के व्यापार से खुश नहीं है और आगे रुपया देने को तैयार नही हैं। तुमने अगर अकेले व्यापार किया होता तो कोई हिचक नही होती। अगर ऐसी बात है तो तुम मुझे साफ-साफ बता दो, मै खुद अलग होकर कोई दूसरा काम करने लगूंगा।" मेरेडिथ ने जवाब दिया, "मेरे पिता सचमुच असन्तुष्ट है और रुपया देने मे असमर्थ भी है। मै भी उन पर जोर नही डाल सकता। मै समझ गया हूं कि मै इस व्यापार के योग्य नही हूँ। मै किसान हूँ और तीस वर्ष की उमर मे शहर जाकर नया धन्धा सीखने की कोशिश करना ही मेरी एक बडी गलती थी। वेल्स के रहने वाले अनेक व्यक्ति उत्तरी कैरोलाइना मे बसने जा रहे है। वहाँ जमीन सस्ती मिलती है। मेरा इरादा भी उनके साथ वहाँ जाकर खेती करने का है। तुम अपने दोस्तो से मदद माँग सकते हो। कम्पनी को जो कर्ज हमे देना है अगर वह तुम अपने ऊपर ले लो और मेरे पिता को उनका सौ पौंड वापिस कर दो; मेरे छोटे-मोटे कर्जो को उतार दो और मुझे एक नई जीन और तीस पौंड दे दो तो मै साझेदारी से अलग होकर सब कुछ तुम्हें ही दे जाऊंगा।" मैंने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, फौरन इकरारनामा लिखा गया, दस्तखत हुए और उसे मोहरबन्द कर दिया गया। उसकी माँग मैंने पूरी कर दी और थोड़े ही दिनो के भीतर वह वह कैरोलाइना चला गया। अगले साल उसने वहाँ से दो लम्बे खत भेजे जिनमे उस भूभाग का विस्तृत वर्णन किया था—वहाँ की जलवायु, मिट्टी, पशु धन आदि सबका वर्णन उनमे था, और इतना तो

था ही कि इस मामले मे वह अधिकारी व्यक्ति था। इन पत्रो को मैंने अखबारो मे छपा दिया और जनता को इनसे पूरा सन्तोष हुआ।

उसके जाने के फौरन बाद मैं अपने दोनो मित्रो के पास पहुँचा और चूंकि मै किसी को दूसरे के ऊपर तरजीह नही देना चाहता इसलिए अपनी आवश्यकता के आधे रुपये मैंने एक से लिये और आधे दूसरे से। कम्पनी का कर्ज चुका देने के बाद व्यापार अपने नाम मे शुरू किया और भली भाँति प्रचारित किया कि साझेदारी अब खत्म हो चुकी है। मेरा ख्याल है कि यह १७२६ मे या उसके आसपास हुआ था।

लगभग इसी समय लोगो ने और अधिक कागज के नोटो के लिए शोर मचाना शुरू कर दिया। उस समय सूबे मे सिर्फ १५ हजार पौंड के नोट प्रचलित थे और उनकी मियाद भी खत्म होने वाली थी। धनिक नागरिक नोटों की सख्या की बढती के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने प्रचारित किया कि नये इगलैण्ड की तरह यहाँ भी पौड की कीमत महाजनो के लिए बहुत कम हो जायेगी। अपने 'जन्टो' मे हमने इस समस्या पर विचार किया था। मैं कागजी नोटो की संख्या की बढती का पक्षपाती था क्योकि १७२३ मे जब पहली बार नोट छापे गये थे, तब उनका लाभ व्यापार, नौकरी और सूबे मे जनसंख्या की बढती मे स्पष्ट साबित हो गया था, सूबे के सभी पुराने मकान भर गये थे और नये बनने लगे थे। मुझे भली प्रकार याद है कि सबसे पहली बार जब मैं फिलाडेल्फिया की सडको पर डबल रोटी खाता हुआ चल रहा था तब सेकेन्ड और फ्रट स्ट्रीट के बीच वालनट स्ट्रीट के अधिकाश मकानो पर बोर्ड लगे हुए थे जिन पर लिखा था, "मकान किराये के लिए खाली है।" चेस्टनट स्ट्रीट और दूसरी सडको के मकानों का भी यही हाल था, जिससे मुझे आशंका होने लगी थी कि नगर-निवासी शहर छोड़कर जा तो नही रहे है।

'जन्टो' मे हुए इस विषय मे वादविवाद से मेरा दिमाग इस कदर

भर गया कि मैंने "कागजी सिक्कों की प्रकृति और आवश्यकता"[1] नामक एक पैम्फलैट बिना कोई नाम दिए लिखा और छापा। जनसाधारण ने इसका स्वागत किया ; लेकिन धनिकों को बिल्कुल ही पसन्द नहीं आया क्योकि इससे कागजी सिक्को की माँग को बल मिला तथा वह और बढ गई। धनिकों के पास कोई भी ऐसा लेखक नही था जो इसका जवाब दे सकता। फलस्वरूप उनका विरोध कमजोर पड गया और असेम्बली मे प्रस्ताव बहुमत से पारित हो गया। असेम्बली में मौजूद मेरे मित्रों का विचार था कि मैंने कुछ ऐसी सेवा की है जिसका पुरस्कार उन्होंने मुझे नोट छापने के लिए मुद्रक नियुक्त करके दिया ; यह काम बहुत लाभदायक था और मेरे लिए बडा सहायक सिद्ध हुआ। इस तरह अपनी लिखने की योग्यता का एक और फायदा मुझे मिला।

कागजी सिक्को की उपयोगिता समय और अनुभव से इतनी स्पष्ट रूप से सिद्ध हो गई कि इस पर फिर कभी कोई वितंडावाद नही खडा हुआ। यह संख्या बढ़कर ५५ हजार पौंड हो गई और १७३९ में ८० हजार पौंड। गृहयुद्ध के समय तो ३ लाख ५० हजार तक के नोट छापे गए। इस बीच व्यापार, इमारतें और जनसख्या बढती ही गई ; यद्यपि आज मैं सोचता हूँ कि एक सीमा के बाद कागजी सिक्के लाभ की जगह हानि पहुँचाने लगते है।

अपने मित्र हैमिल्टन की मदद से कुछ दिनो बाद मैंने न्युकासिल के कागजी सिक्के छापने का काम ले लिया। उस समय के विचार के अनुसार यह एक लाभदायक काम था। साधारण परिस्थितियो के आदमी को छोटी-छोटी बातें भी बहुत बडी मालूम पड़ती है ; मेरे लिए भी ये सचमुच बहुत बड़ी बातें थी क्योकि इन्होने मुझे बहुत उत्साहित किया। हैमिल्टन ने न्यूकासिल की सरकार के कानून और चुनाव-पत्र छापने का काम भी मुझे दिला दिया और जब तक मैं छापेखाने का धन्धा करता

1. Nature and Necessity of a Paper currency.

रहा तब तक यह काम मेरे ही हाथो मे रहा।

अब मैंने एक छोटी-सी स्टेशनरी की दूकान भी खोल ली। उसमे सब तरह के छापे हुए फार्म रखने शुरू किये। इससे ज्यादा अच्छी तरह छपे हुए फार्म अब तक लोगो के सामने नही आये थे। ब्रायेंट्नल ने फार्मों के छापने मे मेरी मदद की। इस दूकान मे मैं कागज, पार्चमेंट और हिसाव रखने वाली कापियाँ भी रखने लगा। लन्दन मे हवा ईटमैश नामक एक कम्पोजीटर से मेरा परिचय हुआ था। वह वहुत ही होशियार काम करने वाला था। लन्दन से आकर अब वह मेरे साथ काम करने लगा और मैंने एक्विला रोज़ के पुत्र को अपना शिक्षार्थी बना लिया।

छापाखाना स्थापित करने मे जो कर्ज मेरे ऊपर हो गया था अब मैंने उसे धीरे-धीरे उतारना शुरू कर दिया। व्यापारी की हैसियत से अपनी साख जमाने के लिए और नाम स्थापित करने के लिए मैं वास्तव मे परिश्रम तो करता ही था, साथ ही मितव्ययी भी वहुत था। इसके इलावा मैंने यह भी कोशिश शुरू कर दी कि मुझे कोई फजूलखर्च और आलसी न समझे। मैं सादगी से रहता था और वेकार की जगहो पर कभी नही जाता था। मछली मारने और शिकार खेलने मैं कभी नही गया। कभी-कभी कोई किताव जरूर मुझे अपने काम से हटा देती थी, लेकिन ऐसा वहुत कम होता था और यह न तो वुरा था, न ही इससे बदनामी फैलने की सम्भावना थी, और यह सावित करने के लिए कि मैं अपना व्यापार खुद करता हूँ कभी-कभी दुकानो से कागज खरीदने के वाद खुद ही ठेले पर लादकर ले आता था। इस तरह मैं एक परिश्रमी उन्नतिशील नौजवान के रूप मे मशहूर हो गया। व्यापारियों से मैं जो कुछ खरीदता था उसका दाम चुका देता था। इसलिए वे मुझे अपना ग्राहक वनाए रखना चाहते थे। कुछ दुकानदारो ने कहा कि वे मुझे उधार किताबें भी दे सकते है और मेरा काम बडी आसानी से चलने लगा। इस बीच कीमर की साख और व्यापार दिनो-दिन घटता गया; नतीजा यह हुआ कि अपने कर्जदारो का रुपया अदा करने के लिए उसे

अपना छापाखाना बेच देना पड़ा। वह बारबैडौस चला गया और कुछ वर्षो तक बड़ी बुरी स्थिति मे रहता रहा।

उसके शिक्षार्थी डेविड हैरी (जिसे कीमर के साथ काम करते समय मैंने काम सिखाया था) ने उसका छापाखाना खरीदकर खुद काम शुरू कर दिया। पहले तो मुझे यह लगा कि हैरी मेरा जबरदस्त प्रतिद्वन्द्वी है क्योकि उसके दोस्त काबिल थे और उसके काम मे रुचि रखते थे। इसलिए मैंने उसके साथ साझेदारी का प्रस्ताव रक्खा, जिसे उसने (मेरे सौभाग्य से) उपेक्षा के साथ अस्वीकार कर दिया। वह बडा घमंडी था, धनिको की तरह कपड़े पहनता था, रहन-सहन खर्चीला रखता था और इधर-उधर के मनोरजनो तथा विदेशयात्राओ मे रुचि रखता था, उस पर कर्ज होता जा रहा था और व्यापार ढीला पड रहा था। धीरे-धीरे सारा काम उसके हाथ से निकल गया और जब कुछ करने को ही नही रह गया तो वह छापाखाना अपने साथ लिए-दिए कीमर की तरह बारबैडास चला गया। वहाँ उसने किसी समय के अपने मालिक कीमर को नौकर रखा। वे आपस मे खूब लड़ते-झगडते थे; हैरी लगातार पिछडता गया और आखिरकार अपने टाईप और प्रैस बेचकर पैंसिल्वानिया मे खेतीवाडी करने चला गया। इस बार जिस आदमी ने प्रैस खरीदा उसने कीमर को नौकर रखा, लेकिन कुछ वर्षो के पश्चात् कीमर मर गया।

फिलाडेल्फिया मे अब बूढे ब्रेडफोर्ड को छोडकर मेरा कोई प्रतिद्वन्द्वी नही रह गया था। वह पैसे वाला था और मजे से रहता था। अपने साधारण कर्मचारियो से वह कभी-कभी थोडी बहुत छपाई करा लेता था लेकिन अपना व्यापार बढाने को बहुत उत्सुक नही था। फिर भी चूंकि डाकखाना उसी के यहां था, इसलिए कल्पना की जाती थी कि खबरें पाने की सुविधा उसे कही अधिक है; उसका अखबार विज्ञापनो के लिए मेरे अखबार से अच्छा समझा जाता था इसलिए मुझसे कही अधिक विज्ञापन उसे मिलते थे। विज्ञापन मुझे भी मिलते थे लेकिन यह बात

जरूर मेरे पक्ष मे न थी। डाक से मेरे कागज आते जरूर थे और मैं अपना अखबार भी भेजता था लेकिन लोकमत मेरे विरुद्ध था, क्योकि ब्रैड-फोर्ड ने डाक और हरकारो को मेरा अखबार ले जाने के लिए मना कर दिया था और मैं उन्हें रिश्वत देकर छिपा-छिपाकर अपना अखबार भेज पाता था। इसका विरोध भी मैंने किया और उसके हक मे इसे इतनी नीचता माना कि बाद मे जब डाकखाना मेरे यहाँ आ गया, तो मैंने उसकी तरह काम न करने का फैसला कर लिया।

अब तक मैं गॉडफ्रे के साथ ही खाना खाया करता था जो उसी मकान के एक हिस्से मे अपनी पत्नी और बच्चो के साथ रहता था। दुकान के एक हिस्से मे उसने अपना शीशे जडने का काम शुरू कर रखा था हालाँकि वह अपनी गणित मे ही इतना उलझा रहता था कि काम बहुत कम करता था। श्रीमती गॉडफ्रे ने अपने एक सम्बन्धी की लडकी के साथ शादी का प्रस्ताव मेरे सामने रखा। उन्होने जान-बूझकर हम दोनो को साथ लाने की कोशिश की। आखिरकार मैं बडी गम्भीरता से उसके साथ कोर्टशिप करने लगा। लडकी अपने मे बहुत अच्छी थी। लडकी के माता-पिता भी मुझे अक्सर खाने पर बुलाकर उत्साहित करते रहते थे और हम दोनो को अकेला छोड दिया करते थे, यहाँ तक कि वह समय भी आ गया जब सारी बातें तय हो जानी चाहिए। श्रीमती गॉडफ्रे मध्यस्थ बनी। मैंने उनसे बताया कि मैं शादी मे इतना रुपया चाहता हूँ जिससे छापेखाने का मेरा बाकी कर्ज अदा हो जाए। मुझे विश्वास है कि यह धन उस समय सौ पौंड से अधिक नही था। उन्होने मुझे जवाब दिया कि लडकी के माता-पिता के पास पैसा नही है। इसका जवाब मैंने यह दिया कि वह कर्ज के दफ्तर मे अपना मकान गिरवी रख सकते हैं। कुछ दिनो बाद जवाब मिला कि वे इस शादी को पसद नही करते क्योकि ब्रैडफोर्ड से बातें करने पर उन्हे मालूम हुआ है कि छापे-खाने का व्यापार लाभदायक नही होता। कीमर और डैविड हैरी दोनो ही इसमे असफल हुए हैं और मेरी असफलता भी निश्चित है। इसके

साथ ही मुझे मना कर दिया गया कि मैं उनके घर न आऊं और लडकी को भी मुझसे मिलने-जुलने पर रोक लगा दी गई।

मैं नही जानता कि मेरे प्रति सचमुच उनके विचार बदल गए थे या यह केवल एक तरकीब थी, कि उनका ख्याल हो कि मैं और उनकी लड़की एक-दूसरे को इतना प्यार करने लगे हैं कि पीछे लौट पडना अब हमारे लिए संभव नही है और हम उनकी अनुमति के बिना भी शादी कर लेंगे, जिससे वे इस स्थिति में हो जाएगे कि मन चाहे तो रुपया मुझे दें, मन न चाहे तो न दें। मुझे शक था कि यह उनकी चालाकी थी। मैंने इसका विरोध किया और जाना बन्द कर दिया। बाद मे श्रीमती गॉडफ्रे, मेरे लिए अपेक्षाकृत अधिक अच्छा सवाद लाईं और मुझे फिर उस परिवार के समीप खीचना चाहा, लेकिन मैंने उन्हें निश्चित रूप से बतला दिया कि मैं अब उनसे कोई सम्बन्ध नही रखना चाहता। गॉडफ्रे दम्पति को बहुत बुरा लगा, हमारे बीच कहा-सुनी हो गई और वे मकान छोड कर चले गए। मैंने निश्चय कर लिया कि अब किसी भी आदमी को वहाँ नही ठहराऊंगा।

लेकिन इस घटना ने मेरे विचारो को शादी की तरफ मोड़ दिया था। मैंने अपने परिचितो के बीच देखा और दूसरी जगह पर जान पह-चान करने की कोशिश की; लेकिन मुझे जल्दी ही पता लग गया कि मुद्रण-कार्य बहुत ही नीचे दर्जे का समझा जाता है इसलिए मुझे शादी मे रुपया पाने की आशा नही करनी चाहिए, बशर्ते कि मैं केवल रुपये के लिए किसी भी लडकी से शादी न कर लूँ। इसी बीच अपने यौवन मे अनियंत्रित वासना के जोर पकडने पर अक्सर मैं घटिया औरतो के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेता था जिसमे पैसा तो खर्च होता ही था, असुविधा भी काफी होती थी। साथ ही मुझे हमेशा ही डर लगा रहता था कही कोई बीमारी मुझे न हो जाए, लेकिन सौभाग्यवश इससे मैं बचा रहा। पड़ोसियो और पुराने परिचितों की हैसियत से श्रीमती रीड के परिवार के साथ मेरी बातचीत हुआ ही करती थी, क्योंकि इस परि-

वार के लोग मेरे पहली बार फिलाडेल्फिया पहुचने के समय से ही मेरी इज्जत करते थे। मुझे मिस रीड की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति पर बड़ा तरस आता था। वे बडी निराश, बहुत कम खुश रहती थी और लोगो के बीच बैठना पसन्द नही करती थी। उनके दु ख का कारण मैं अपने लन्दन प्रवास के समय पत्र न लिखने को समझता था हालाकि उसकी भली मा इस गलती को अपने ऊपर ओढ लेती थी क्योकि उन्होने लन्दन जाने से पहले हमारा विवाह नही होने दिया था और अनुपस्थिति मे दूसरी जगह उसका विवाह कर दिया था। हमारा पारस्परिक प्रेम फिर जागृत हो गया, लेकिन हमारे विवाह मे कई बाधाए थी। कहा जाता था कि यह विवाह हो नही सकता था क्योकि मेरी एक बीवी इगलैड मे पहले से मौजूद है लेकिन इतनी दूरी से यह आसानी से साबित नही किया जा सकता था, उसके पति की मृत्यु के बारे मे भी खबरे उडी लेकिन कुछ निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता। फिर वह कई तरह का कर्ज छोड गया था, जो मिस रीड से शादी करने वाले को चुकाना पडता। फिर भी इन मुश्किलो के रहते मैंने पहली सितम्बर १७३० को मिस रीड के साथ विवाह कर लिया। जिन असुविधाओ की हम आशा कर रहे थे वे सामने नही आई। मिस रीड मेरे लिए बहुत ही अच्छी और सहायक साथी थी, दुकान की देखरेख करने मे मेरा हाथ बँटाने लगी, हम दोनो साथ-साथ काम करके खूब उन्नति करने लगे और एक-दूसरे को खुश रखने की कोशिश भी। इस तरह मैने अपने जीवन की बहुत बडी गलती को यथासम्भव सुधार लिया।

अब हमारी क्लब की बैठके रेस्तरा मे नही बल्कि मिस्टर ग्रेस के एक कमरे मे, जो इसी मतलब के लिए अलग कर दिया गया था, हुआ करती थी। लगभग इसी समय मैंने एक प्रस्ताव रखा कि प्रश्नो पर वादविवाद करने मे हमारी पुस्तके बहुत सहायक होती है इसलिए क्यो न उन्हे उसी कमरे मे इकट्ठा कर दिया जाए जिसमे हमारी बैठके होती है जिससे मौका पड़ने पर वही उन्हे देखा जा सके, इस तरह अपनी सारी किताबो

को इकट्ठा करके जो पुस्तकालय बन जाएगा उससे पुस्तकें तो सुरक्षित रहेंगी, अवसर पडने पर हम एक-दूसरे की पुस्तको से भी लाभ उठा सकेंगे, जैसे सारी की सारी किताबें एक ही आदमी की हो। इस प्रस्ताव को लोगो ने पसन्द किया और यह सर्वसम्मति से पारित हो गया। कमरे के एक कोने मे सारी किताबे इकट्ठी कर दी गई, जिन्हें हम पुस्तकालय के लिए दे सकते थे। जैसी आशा हम कर रहे थे उनकी सख्या उतनी अधिक न थी। हालाँकि उनसे फायदा जरूर हुआ था, लेकिन अच्छी तरह देख रेख न होने के कारण असुविधाएं भी होती थी, इसलिए लगभग एक साल बाद पुस्तकालय को तोड़ दिया गया और प्रत्येक सदस्य अपनी-अपनी पुस्तकें घर ले गया।

और अब मैंने सार्वजनिक दिनो से सम्बन्धित पहला काम शुरू किया—यह काम था चन्दे से चलने वाले पुस्तकालय को खोलने का। मैंने उसके नियमो को लिखा और उस समय के सबसे बड़े दस्तावेज लेखक ब्रॉकडेन से उचित रूप मे लिखवा दिया। तब 'जन्टो' के अपने मित्रो की मदद से मैंने उसे शुरू करने के लिए चालीस शिलिंग देने वाले पचास आदमी इकट्ठे किए और यह तय हुआ कि वे पचास साल तक दस शिलिंग प्रति वर्ष के हिसाब तक देते जाएगे। कम्पनी का कार्य-काल पचास वर्ष रखा गया, बाद मे हमने एक चार्टर प्राप्त कर लिया जिसके अनुसार कार्यकाल सौ वर्ष कर दिया गया, आज अमेरिका मे चन्दे से चलने वाले अनेकानेक पुस्तकालय हैं और इनकी शुरूआत मेरे स्थापित किए हुए पुस्तकालय से हुई। आज ये पुस्तकालय अपने मे ही बडी चीज हैं। इन पुस्तकालय से अमेरिकावासियो के बात करने का ढंग सुधर गया, हमारे यहाँ के साधारण व्यापारी और किसान दूसरे देशो के पढे लिखे लोगो के बराबर बुद्धिमान् हो गए हैं और शायद सभी राज्यो मे लोग, जो अपने अधिकारो की रक्षा के लिए दृढता दिखला रहे है वह भी इन्ही पुस्तकालयो का प्रसाद है।

याद रखने के लिए: यहाँ तक शुरू मे व्यक्त किए गए इरादे के

अनुसार लिखा गया और इसीलिए इसमे परिवार से सम्बन्धित ऐसी छोटी-छोटी घटनाए है जिनमे किसी और को दिलचस्पी नही हो सकती। बाद के कई वर्षों मे जो कुछ लिखा गया वह इन पत्रो मे दी गई सलाह के अनुसार था और इसीलिए इन पत्रो को भी प्रकाशित किया जा रहा है। गृह-युद्ध के कारण मेरे लिखने मे बाधा पड़ गई थी।

मेरे जीवन की घटनाओ के बारे में वर्णन सहित श्री एबिल जेम्स का पत्र (जिसे मैने पेरिस मे पाया)—

"मेरे प्रिय और सम्मानित मित्र, मै तुम्हें पत्र लिखने का बहुत इच्छुक रहा हूँ लेकिन यही सोचकर नही लिखा कि कही यह पत्र किसी अग्रेज के हाथ मे न पड जाए और कोई मुद्रक इसके किसी अश को प्रकाशित न कर दे कि मेरे मित्र को दु ख और मेरी आत्मा को कष्ट हो।

"कुछ दिन पहले मेरे हाथ मे तुम्हारे लिखे हुए २३ कागज़ के ताव मुझे मिले हैं जिनमे तुमने अपने माता-पिता तथा जीवन के बारे मे अपने पुत्र को लिखा है। इनका अन्त १७३० मे आकर होता है, तुम्हारी लिखावट मे हाशिए पर भी कही-कही पर लिखा गया है। इसकी एक प्रति मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूँ, इस आशा से कि शायद तुम आगे और लिखो तो पहले और बाद के अशो को जोड दिया जाए, अपनी बाद की जिन्दगी लिखना अगर तुमने अभी तक नही शुरू किया है तो फौरन शुरू कर दो। जैसा कि पादरी लोग कहते है, जिन्दगी का कोई भरोसा नही; और अगर दयालु, मानवीय और दानशील बैंजामिन फ्रैंकलिन अपने मित्रो और सारी दुनिया को इतनी मनोरञ्जक और लाभदायक किताब से वचित रखें तो दुनिया क्या कहेगी? यह किताब थोड़े-से आदमियो के लिए भी नही, बल्कि करोडो आदमियो के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। इस तरह की किताबो का नौजवानो के ऊपर बहुत प्रभाव पडता है और इतनी सादगी और सफाई मेरे मित्र के जरनलो को छोडकर कही नही दिखाई पडती। अनजाने यह नौजवानो को प्रतिज्ञा करने पर बाध्य कर देती है कि वे भी इस पत्रकार की तरह

भले और प्रसिद्ध बनें। उदाहरण के लिए तुम्हारी किताब जब प्रकाशित हो जाए (और इसके प्रकाशित होने मे कोई सन्देह नही) तो आज के नौजवान उसी तरह परिश्रमी और खाने-पीने मे सयम रखने वाले हो जाएगे जैसे तुम अपनी नौजवानी मे थे, तो यह कितना बडा वरदान होगा। मैं ऐसे किसी आदमी को नही जानता या कई आदमी मिलकर भी ऐसा समूह नही बना सकते जो तुम्हारी तरह अमेरिका के नौजवानो को अध्यवसाय, व्यापार के प्रति सम्मान, मितव्ययिता और खाने-पीने मे संयम की शिक्षा इतनी अच्छी तरह दे सके। इसका यह मतलब नही कि मेरे विचार से इसके अलावा तुम्हारी किताब मे कोई और गुण होगा ही नही; मेरे विचार इसके बिलकुल विपरीत है; लेकिन अमेरिका के नौजवानो को जो शिक्षा मिलेगी वह इतनी महत्त्वपूर्ण होगी कि उसकी तुलना और कोई चीज नही कर सकती।"

ऊपर वर्णित पत्र और उसके साथ आए कागजो को जब मैने एक मित्र को दिखाया तो उन्होने निम्नलिखित पत्र भेजा:

श्री बैंजामिन वॉन का पत्र

पेरिस, ३१ जनवरी, १७८३

"प्रियवर, आपके एक क्वेकर मित्र द्वारा प्राप्त आपके अपने जीवन की मुख्य घटनाओ के सस्मरण पढने के बाद मैंने आपसे कहा था कि मैं एक पत्र मे लिखूँगा कि इस आत्मकथा का पूरा किया जाना और प्रकाशित किया जाना क्यो लाभदायक होगा। कुछ दिनो तक अनेक दूसरे कामो मे व्यस्त रहने के कारण यह पत्र मैं पहले नही लिख सका। मैं यह भी नही जानता कि इस पत्र को पाने की आशा भी आप कर रहे है या नही, लेकिन इस समय मैं फुरसत मे हूँ इसलिए लिख रहा हूँ—कम से कम वे बाते तो लिख ही रहा हूँ जिनमे मुझे रुचि है और जिनसे मैंने कुछ सीखा है। जिन शब्दो का प्रयोग मैं अपने पत्र मे करूँगा उनसे शायद आप जैसे आचरणवान् व्यक्तियो को कुछ बुरा भी लगे, इसलिए

मैं आपको बताता हूँ कि अगर मैं किसी ऐसे व्यक्ति को पत्र लिखूँ जो आपकी ही तरह भला और महान् परन्तु आपसे कम संकोचशील हो, तो मै यो लिखूंगा। मै लिखूंगा कि श्रीमान्, मैं आपकी आत्मकथा को निम्न-लिखित कारणो से पसन्द करता हूँ : आपकी आत्मकथा इतनी विलक्षण है कि अगर आप इसे नही लिखेंगे तो कोई और निश्चित रूप से लिख देगा, और शायद उसे उतना ही खराब कर देगा जितना इसे आप स्वयं लिखे तो अच्छा बना देंगे। इसके अलावा आपकी आत्मकथा से आपके देश की आन्तरिक परिस्थितियो के बारे मे लोगो को मालूम होगा और ईमानदार तथा साहसी व्यक्ति वहाँ जाकर बसने के लिए आकर्पित होगे। यह देखकर कि अमेरिका के बारे मे लोग कितनी उत्सुकता से जानने के लिए प्रयत्नशील रहते है, और आपकी अपनी प्रसिद्धि इतनी अधिक है, मुझे तो आपके जीवनचरित्र से अधिक अच्छा अमेरिकी उपनिवेशो के बारे मे ज्ञान प्राप्त कराने का दूसरा कोई साधन नही दिखलाई पडता। जो घटनाएँ आपके साथ घटी है वे एक विकासशील देश के आचारो और परिस्थितियो के विवरण से भी सम्बन्धित है और इस दृष्टि से देखने पर मैं नही समझता कि सीज़र और टैसीटस की कृतिया भी मानव-प्रकृति और समाज को इतनी अच्छी तरह समझने का दावा कर सकती है। लेकिन श्रीमान्, मेरी राय मे ये कारण बहुत छोटे है, उन अवसरो की तुलना मे जो आपका जीवन-चरित्र पढकर भविष्य के महान् व्यक्तियो के अवतरण करने मे सहायक होगे, और आपकी "आर्ट आफ वर्चू" (जो आप प्रकाशित करना चाहते है) के साथ मिलकर आपका जीवन-चरित्र व्यक्तिगत चरित्रो के विकास मे, फलत. सार्वजनिक और व्यक्तिगत प्रसन्नता को बढाने मे अत्यधिक सहायक होगे। जिन दो कृतियो की बात मैं कर रहा हूँ, श्रीमान्, उनसे लोगो को अपनी शिक्षा खुद प्राप्त करने का आदर्श उदाहरण मिलेगा। स्कूलो मे दी जाने वाली तथा दूसरी तरह की शिक्षाएँ हमेशा गलत सिद्धान्तो पर आधारित होती हैं और गलत उद्देश्य को प्राप्त करने के बेढगे औजार की तरह काम आती हैं,

लेकिन आपके नियम आसान हैं और उद्देश्य सच्चा ; अभी माता-पिता और नवयुवको को ऐसे ठीक तरीके नही मालूम जिनसे वे अपने जीवन की उचित राह का अनुमान करके अपने को उसी ढंग से तैयार कर सकें। ऐसे व्यक्तियो के लिए आपकी यह खोज कि असली बात व्यक्ति की अपनी शक्ति के भीतर ही होती है, अमूल्य है। बाद के जीवन मे व्यक्ति के चरित्र पर जो प्रभाव पडता है वह बडी देर से आता है, साथ ही बडा कमजोर भी होता है। जवानी के दिनो मे हम अपनी मुख्य आदतें ग्रहण करते है, जवानी के दिनो मे हम व्यापार अथवा विवाह आदि मे अपना साथी चुनते है। और इसलिए यौवन मे ही अगली पीढी की शिक्षाएँ शुरू हो जाती है, यौवन मे ही व्यक्तिगत और सार्वजनिक चरित्रो का निर्माण होता है; और यौवन के बाद बुढापे तक के जीवन के लिए आवश्यक है कि जिन्दगी जवानी मे ही शुरू हो और अगर प्रमुख कार्यो के शुरू करने से पहले साथी चुनते समय शुरू हो तो और भी अच्छा है। आपका जीवन-चरित्र केवल इतना ही नही सिखायेगा कि व्यक्ति को अपनी शिक्षा अपने आप कैसे प्राप्त करनी चाहिए, वल्कि यह भी सिखायेगा कि सुधी व्यक्ति कैसे शिक्षा पाते है, और भविष्य के सुधी व्यक्ति एक दूसरे बुद्धिमान् व्यक्ति के चरित्र का विशद विवरण पाकर उसे पढकर रोशनी पाएँगे और अधिक प्रगति कर सकेंगे। हम देख रहे है कि हमारी जाति अन्धेरे मे ही टटोल रही है और इस विशेष दिशा मे उसका कोई पथ-प्रदर्शक नही है। ऐसी दशा मे कमजोर व्यक्ति ही क्यो ऐसी अमूल्य सहायता से वचित रह जाएँ ? इसलिए श्रीमान्, आप पिताओ और पुत्रो दोनों को दिखलाइए कि कितना काम करना बाकी है, और सभी बुद्धिमान् व्यक्तियों को अपनी तरह वनने का तथा दूसरे व्यक्तियो को बुद्धिमान् वनने का आमन्त्रण दीजिए। हम देखते है कि राजनीतिज्ञ और योद्धा मानव-जाति के प्रति कितने निर्दय होते है और प्रसिद्ध व्यक्ति अपने परिचितो से कितनी बुरी तरह पेश आते है, तव शान्त और निष्कपट व्यवहार करने वाले व्यक्तियो की संख्या बढ़ते देखकर लोगों को

कितना उत्साह मिलेगा ? लोग जब यह पाएँगे कि महान् और साधारण व्यक्तियो को केवल उनके सद्व्यवहार, भले और ईर्ष्या-रहित स्वभाव से ही पहचाना जा सकता है, तो उन्हें प्रसन्नता होगी।

"आप अपने जीवन की जो छोटी-छोटी घटनाएँ लिखेंगे वे भी काफी उपयोगी होगी क्योकि हमे सबसे बढकर साधारण कामो मे दूरदर्शितापूर्ण नियमो की अत्यन्त आवश्यकता है; आपकी पुस्तक एक प्रकार से जीवन को खोलने की चावी होगी और उसमे ऐसी बातो का स्पष्टीकरण होगा जिन्हें सभी व्यक्ति चाहते है और आपकी दूरदर्शिता से लाभ उठा कर वे स्वय बुद्धिमान् बन सकेंगे। व्यक्तिगत अनुभवो के सबसे समीप दूसरे के अनुभवो को मनोरजक ढग से अपने सामने पाना ही होता है, और आपकी कलम मे निश्चय ही इतनी शक्ति है कि आप अपने अनुभवो को रोचक ढग से लिख सके, आप अपने अनुभवो को ऐसी सरलता से व्यक्त कर देंगे कि उनका प्रभाव निश्चय ही पाठको पर पडेगा; और मुझे विश्वास है कि आपने अपनी जीवन-कथा को उतनी ही मौलिक शैली मे लिखा होगा, जितनी मौलिक शैली से आपने राजनीति और दर्शनशास्त्र पर विवाद किये है, और प्रयोगो तथा प्रणालियो के लिए (उनके महत्त्व और दोषो सहित) मानव जीवन से बढकर उपयुक्त और क्या हो सकता है ?

"कुछ लोग अन्धविश्वासी होते है, कुछ कल्पनातीत कल्पनाएँ करने मे सुख का अनुभव करते हैं और कुछ बुरे कामो मे रुचि रखते हैं, लेकिन श्रीमान्, मुझे विश्वास है कि आप अपनी कलम से वही लिखेंगे जो बुद्धिमत्तापूर्ण, व्यावहारिक और भला होगा। आपकी आत्मकथा (मैं सोचता हूँ कि डाक्टर फ्रैंकलिन के साथ आपकी तुलना जो मैं कर रहा हूँ वह चारित्रिक दृष्टि से तो सही है ही, व्यक्तिगत जीवन की दृष्टि से भी सही है) से लोगो को मालूम हो जाएगा कि निर्धन परिवार मे जन्म होने पर आपको कोई शर्म नही है, यह तत्त्व इस दृष्टि से और भी महत्त्वपूर्ण है, क्योकि आप सिद्ध कर देंगे कि प्रसन्नता, अच्छाई और महानता के लिए

पैतृकता जरा भी महत्त्व नही रखती। हम जानते है कि बिना उद्योग किए कोई भी व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त नही कर सकता और हम पायेंगे कि आपने स्वयं योजनानुसार काम किया था। तभी आप महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन सके; हम देख सकते है कि आपके जीवन की घटनाओ से बड़ा बल मिलता है लेकिन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आपने जिन उपायो का सहारा लिया वे अत्यन्त साधारण थे; मतलब यह कि आपने स्वभाव, गुणो, विचारो और आदतो को ही अपना साधन बनाया। आपकी आत्म-कथा से यह भी मालूम पडेगा कि ससार के मच पर प्रवेश करने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करना किसी भी व्यक्ति के लिए अच्छा नही होता। हमारी अनुभूतियाँ अधिकतर क्षणों तक ही सीमित रहती हैं और हम अक्सर भूल जाते है कि आगे आने वाले क्षण कही अधिक हे और व्यक्ति को अपना आचरण इस तरह का बनाना चाहिए कि वह उसे जीवन भर निभा सके। ऐसा मालूम पडता है कि आपने अपने जीवन भर के लिए कुछ गुणो का चुनाव कर लिया था और आपके वर्तमान के क्षण हमेशा सन्तोष और प्रसन्नता के साथ बीतते रहे है और आप कभी मूर्खतापूर्ण अधीरता अथवा पश्चात्ताप से दुखी नही रहे है। इस प्रकार का कार्य-व्यापार उन लोगो के लिए बहुत आसान होता है जो सच्चे अर्थो मे दूसरे महान् व्यक्तियो के उदाहरणो से शिक्षा लेकर अपने व्यक्तित्व मे गुणों का समावेश करने का प्रयत्न करते हैं; और सभी महान् व्यक्तियो मे धैर्य निश्चयत होता ही है। आपके क्वेकर मित्र ने (यहाँ पर फिर मेरे पत्र का विषय डाक्टर फ्रैंकलिन के ही समान है) आपकी मितव्ययिता, अध्यवसाय और सन्तुलित भोजन की प्रशंसा की है जो उनके विचार से प्रत्येक युवक का आदर्श होना चाहिए; लेकिन आश्चर्य यह है कि वे आपकी विनम्रता और भोजन के प्रति उदासीनता को भूल गए जिनके बिना आप उन्नति नही कर सकते थे और अपनी परिस्थितियो से सन्तुष्ट नही रह सकते थे। इससे गरीबी की कीर्ति और अपने मस्तिष्क के सन्तुलन का महत्त्व स्पष्ट रूप से मालूम हो जाता है। अगर आपके ये मित्र

मेरी ही तरह आपकी प्रसिद्धि की प्रकृति को जानते होते तो कहते—"आप के पहले के लेखो और उपायो के कारण जनता निश्चित रूप से आपकी 'आत्मकथा' और 'गुण प्राप्त करने की कला' की प्रतीक्षा करेगी ; और इसके बदले मे आपकी 'आत्मकथा' और 'गुण प्राप्त करने की कला' उन्हे प्रभावित करेगी।" यह एक ऐसा लाभ है जो भली प्रकार जिन्दगी बिताने वाले व्यक्ति को ही प्राप्त होता है और इसके साथ के सभी गुण अधिक अच्छी प्रकार क्रियाशील होते है ; यह इस मानी मे और अधिक लाभदायक होगी कि बहुत से आदमी अपनी मानसिक शक्ति अथवा चरित्र का विकास तो करना ही चाहते है, इसके लिए उनके पास समय और और इच्छा दोनो ही होते हैं लेकिन उपाय नही होते। श्रीमान्, सबसे अन्त मे मैं एक और विचार व्यक्त कर देना चाहता हूँ जिससे आपकी आत्मकथा का महत्त्व केवल आत्मकथा की दृष्टि से ही साबित हो जायेगा। यह लेखनशैली कुछ पुरानी पड गई मालूम होती है लेकिन है यह बडी उपादेय, और आपकी आत्मकथा विशेष रूप से लाभदायक यो सिद्ध होगी कि यह अनेकानेक सार्वजनिक गुण्डो और चालबाजो, अपने को कष्ट देने वाले मूर्ख पादरियो या व्यर्थ की बाते लिखने वाले लेखको की कृतियो की तुलना मे रखी जाएगी। यदि आपके जीवन-चरित्र से दूसरो को भी प्रेरणा मिली कि वे इसी शैली मे कुछ लिखें या लिखने योग्य अपना जीवन बनाये तो इसकी कीमत प्लूटार्क के सभी जीवन-चरित्रो की सम्मिलित कीमत से कही अधिक होगी। लेकिन अब मैं किसी ऐसे व्यक्ति के बारे मे सोचता-सोचता थक गया हूँ जिसके सभी गुण ससार के केवल एक व्यक्ति मे मौजूद हैं और बिना प्रशंसा किए हुए मैं अपना पत्र, प्रिय डाक्टर फ्रैंकलिन, एक व्यक्तिगत अनुरोध से समाप्त कर दूंगा। मेरी उत्कट इच्छा है श्रीमान्, कि आप ससार को अपने मौलिक चरित्र के बारे मे बताएँ क्योकि दूसरे व्यक्ति तो अपने वास्तविक चरित्र को या तो छिपा लेते है या बढ़ा-चढाकर सामने रखते हैं। आपकी अवस्था, आपके चरित्र की सावधानी और आपकी विशेष विचारक्षमता को देखते

हुए यह कहा जा सकता है कि आपके जीवन और आपके मस्तिष्क की प्रवृत्तियों के बारे मे आपसे अधिक कोई नही जान सकता। इस सबके अलावा वर्तमान समय की विशाल क्रान्ति निश्चित रूप से हमारा ध्यान इस परिवर्तन के लेखक की ओर मोड देगी और जब उसमे अनेकानेक अच्छे गुणो का समावेश हो जाएगा तो यह दिखलाना भी अत्यधिक महत्त्व-पूर्ण हो जाएगा कि ये गुण सचमुच प्रभावशाली होते है और चूंकि आपके चरित्र पर अधिक सूक्ष्मता से दृष्टिपात किया जाएगा इसलिए यही उचित है कि वे आदर-योग्य और शाश्वत दिखाई पडें (क्योकि इसका प्रभाव आपके विशाल विकासशील देश पर तो पडेगा ही, इगलैड और यूरोप पर भी अवश्य पडेगा)। मैं हमेशा सोचता रहा हूँ कि मानवीय प्रसन्नता को बढाने के लिए सिद्ध करना आवश्यक है कि आज आदमी विषैला और घृणित जानवर भी नही है, यह सिद्ध करना और अधिक आवश्यक है कि भली प्रकार योजनाबद्ध काम करने से आदमी को बहुत सुधारा जा सकता है और इसी कारण मैं इच्छुक हूँ कि यह सम्मत्ति और अधिक दृढ हो कि आज की पीढी मे भी महान् व्यक्ति है। कारण यह है कि जिस क्षण लोगो को विश्वास हो जाएगा कि भलाई अब ससार मे नही रही तो अच्छे आदमी सभी भले उपायो को निराशाजनक समझकर छोड देंगे और जिन्दगी की कशमकश मे डूब जाएगे या अधिक से अधिक केवल अपनी जिन्दगी को आरामदेह बनाने की कोशिश करेंगे। इसलिए श्रीमान्, आप इस काम को बडी जल्दी पूरा करे। आप अच्छे है इसलिए अपने को अच्छा दिखाएँ, खान-पान मे सन्तुलन रखते हैं इसलिए वही लिखे; और सबसे बढकर यह सिद्ध कर दें कि अपने बचपन से ही आप न्याय, स्वतन्त्रता और शान्ति से इस तरह प्रेम करते हैं कि इनके अनु-सार ही कार्य करना आपके लिए स्वाभाविक हो गया है, जैसा कि हम पिछले सत्रह वर्षों से आपको देखते आ रहे हैं। लिखें, जिससे कि अंग्रेज आपकी इज्जत ही न करें, प्यार भी करने लगें। जब वे आपके देश के निवासियो की भलाई चाहने लगेंगे तो आपके पूरे देश की भलाई चाहने

वाले हो जाएंगे, और जब आपके देशवासी देखेगे कि अग्रेज उनके बारे मे अच्छे विचार रखते है तो वे स्वय इगलैण्ड का भला चाहने लगेगे। आप अपने विचारो को और विस्तृत करे; केवल अग्रेजीभाषियो तक ही न सीमित रहे बल्कि प्रकृति और राजनीति की कुछ बाधाओ को पार करके सारी मानव-जाति की भलाई के बारे मे सोचे। मैंने आपका जीवन-चरित्र तो अभी नही पढा है लेकिन जिस व्यक्ति का जीवन यह है उसे मैं भली प्रकार जानता हूँ इसलिए बहुत कुछ अनुमान से ही लिख रहा हूँ। फिर भी मुझे विश्वास है कि आपका जीवन-चरित्र और वह पुस्तक जिसकी चर्चा मैं कर रहा हूँ ('गुण प्राप्त करने की कला') मेरी मुख्य आशाओ को पूरा करेंगे, यदि आप ऊपर लिखे विचारो के अनुसार लिखे तो मेरी आशा अधिक पूरी हो सकेगी। इतने पर भी यदि आपके विश्वासी प्रशसको को पूरा सन्तोष न हो सका तो भी कम से कम आप की रचना मानव-मस्तिष्क के लिए विचारोत्तेजक तो अवश्य ही सिद्ध होगी। आज का जीवन चिन्ताओ और दुखो से अन्धकारपूर्ण हो रहा है और जो भी व्यक्ति मानव मात्र को अकलुषित प्रसन्नता प्रदान करता है वह जीवन के प्रकाशमान पक्ष को ही बढावा देता है। मुझे आशा है कि इस पत्र मे जो अनुरोध मैंने आपसे किया है उस पर आप ध्यान अवश्य देगे। आपका ही—

बेंजामिन वॉन"

(हस्ताक्षर)

अपने जीवन का विवरण जो पेरिस के निकट पैसी में १७८४ में पुनः आरम्भ किया गया

कुछ समय पहले यह खत मिले थे लेकिन मैं दूसरे कामो में ही इतना व्यस्त रहा हूँ कि उनके लेखकों के अनुरोध की रक्षा नही कर सका। अगर मै घर पर होता और मेरे कागजात मेरे सामने होते तो मैं उनके अनुरोध को और अच्छी तरह रख सकता था, क्योंकि कागजात मेरी याददाश्त की मदद तो करते ही, तारीखे भी सुनिश्चित हो जाती। लेकिन मुझे नही मालूम कि मैं घर कब तक लौटूंगा। और चूंकि इस समय मुझे अपेक्षाकृत कुछ कम काम है, इसलिए मैं अपनी स्मरणशक्ति के बल पर ही यथासम्भव लिखने की कोशिश करूंगा। यदि मैं जीवित घर वापस लौट सका तो इसका सशोधन भी कर सकूंगा और सुधार भी।

जो कुछ मै अभी तक लिख चुका हूँ उसकी कोई प्रति मेरे पास यहाँ नही है, इसलिए मैं नही जानता कि फिलाडेल्फिया सार्वजनिक पुस्तकालय को स्थापित करने मे मैंने जिन उपायो से काम लिया था उनके बारे मे मैंने लिखा है या नही। इस पुस्तकालय का आरम्भ तो बहुत ही छोटे पैमाने पर हुआ था लेकिन आज यह काफी विस्तृत हो चुका है। इसलिए मैं इसी के वर्णन से शुरू करूँगा। अगर पहले ही लिख चुका हूँ तो भी कोई नुकसान नही, इसे काट दिया जायेगा।

जिस समय मैंने पेन्सिलवानिया मे अपना डेरा जमाया था उस समय बोस्टन के किसी भी उपनिवेश मे कोई भी अच्छी पुस्तको की दूकान न थी। न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया के मुद्रक तो वास्तव मे स्टेशनरी-विक्रेता भर थे। वे कागज, पचाग, साहसिक कविताएँ और कुछ साधारण स्कूली किताबें ही वेचा करते थे। लिखने-पढने के शौकीन आदमियों को अपनी किताबे इंगलैंड से मँगवानी पडती थी।

"जन्टो" के हर सदस्य के पास कुछ किताबें थी। जिस रेस्तराँ मे हमारी बैठकें हुआ करती थी, उसे छोडकर हमने एक कमरा किराये पर ले लिया। मैंने सुझाया कि हम सब अपनी सारी किताबें इसी कमरे मे लाकर इकट्ठी कर दें। ऐसा करने पर हमारी अपनी गोष्ठियो के समय जरूरत पडने पर उन्हे देखने मे आसानी तो होगी ही, साथ ही हम सबको एक फायदा और होगा कि हम अपनी मनचाही किताबे घर ले जाकर भी पढ सकेंगे। ऐसा ही किया गया और कुछ समय तक हम लोग पूरी तरह सन्तुष्ट रहे।

इस छोटे से सग्रह का फायदा देखकर मैने सुझाव रखा कि जनता के चन्दे से चलने वाले एक पुस्तकालय का श्रीगणेश किया जाय जिससे अधिक आदमी पुस्तको से लाभ उठा सके। मैंने योजना और आवश्यक नियमो का खाका बनाया और एक चतुर दस्तावेज-लेखक मिस्टर चार्ल्स ब्रोकडेन से इन्हे एक समझौते का रूप देने को कहा। इन नियमो के अनुसार हर एक सदस्य को पहली बार किताबे खरीदने के लिए कुछ धन शुरू मे ही देना था और बाद मे किताबो की सख्या बढाते जाने के लिए वार्षिक चन्दा देना था। उस समय फिलाडेल्फिया मे किताबें पढने वाले आदमी इतने कम थे और अधिकाश व्यक्ति इतने गरीब कि बहुत कोशिश करने पर भी मैं ५० आदमियो से अधिक नही खोज पाया (और वे भी ज्यादातर नवयुवक व्यापारी ही थे।) जो पहली बार मे ४० शिलिग और बाद मे दस शिलिग सालाना चन्दा देने को तैयार थे। इस छोटी-सी पूंजी से हमने काम शुरू किया। किताबे मँगाई गई और हफ्ते मे एक दिन सदस्यो को देने के लिए पुस्तकालय खोला जाने लगा। किताबें उन्हे इकरारनामे पर दस्तखत करने के बाद दी जाती थी कि अगर उन्होने समय पर न लौटाई तो उन्हें दुगने दाम देने पड़ेंगे। इस सस्था का लाभ थोडे ही दिनो मे व्यापक रूप से मालूम हो गया। दूसरे शहरो के लोग इसकी नकल करने लगे। चन्दा इकट्ठा करके पुस्तकालय खोले जाने लगे, किताबें पढने का शौक बढने लगा। उस समय जनता का

मन बहलाने का केवल एक ही उपाय था—किताबें पढना ; इसलिए वे किताबों से भली प्रकार परिचित हो गए। कुछ वर्षो बाद तो दूसरे देशो से आने वाले लोग यह कहने लगे कि हमारे देशवासी अपने ही समान श्रेणी वाले दूसरे देशवासियो से कही ज्यादा पढे-लिखे और होशियार है।

जब हम ऊपर लिखे इकरारनामे पर दस्तखत करने जा ही रहे थे और यह इकरारनामा ५० वर्ष के लिए हम पर और हमारे उत्तराधिकारियो पर लागू होने को था कि दस्तावेज-लेखक श्री ब्रोकडेन ने कहा, "तुम लोग नौजवान हो लेकिन तुममे से शायद ही कोई इकरारनामे का समय खत्म होने तक जीवित रहेगा।" लेकिन हममे से कई लोग आज भी जीवित हैं, लेकिन कुछ वर्षो बाद ही एक कानून द्वारा वह इकरारनामा रद्द कर दिया गया था। इसी कानून से कम्पनियो को काफी अधिकार दे दिये गये थे।

चन्दा इकट्ठा करने मे जितने विरोध का सामना मुझे करना पडा और जितनी हिचकिचाहटे सहनी पडी उनसे मुझे साफ मालूम हो गया कि किसी लाभदायक काम को शुरू करने वाला व्यक्ति कितनी भद्दी स्थिति मे पड जाता है। यही हाल किसी ऐसे काम मे भी होता है जिसमे पडोसियो से अधिक उसका प्रभाव बढने की सम्भावना हो, खासतौर पर तब जब पडोसियो के सहयोग की भी जरूरत हो। इसलिए जितना सम्भव हो सकता था मैं अपने को पीछे रखने की कोशिश करता था और कहता था कि यह कुछ मित्रो की योजना है, जिन्होने मुझसे पढने-लिखने के शौकीन व्यक्तियो मे इसका प्रचार करने को कहा है। इस प्रकार मेरा काम आसानी से चलने लगा। बाद मे भी जब कभी जरूरत पडी तो मैंने इसी बात का सहारा लिया। इस युक्ति से अपनी सफलताओ के बल पर मै निस्संकोच हर आदमी से कह सकता हूँ कि वह भी ऐसा खुशी से कर सकता है। अपने अभिमान को थोडी चोट पहुँचाकर भी भविष्य मे काफी लाभ होता है। अगर कुछ समय तक अनिश्चित भी रहे कि असली काम किसका है तो आपसे अधिक अभि-

मानी कोई व्यक्ति उसे अपनाने पहुँच जाएगा। उस समय यदि आप ईर्ष्या के वश मे होकर भी गलत आदमी के सिर से मुकुट उतारकर सही आदमी के सिर पर रख दे तो भी आप न्यायोचित काम ही करेंगे।

इस पुस्तकालय से मुझे अपना विकास करने का अच्छा साधन मिला, क्योंकि मैं इसमे लगातार अध्ययन कर सकता था। हर रोज पढने के लिए मैंने एक-दो घटे का समय अलग निकाल दिया। इस प्रकार मेरे पिताजी जो ऊँची शिक्षा मुझे देना चाहते थे और मुझे नहीं दे सके, उस नुकसान को कुछ हद तक मैंने पूरा किया। सराय, खेलकूद, या किसी और तरह के मनोरजन मे मैं ज़रा भी समय बरबाद न करता था। साथ ही मैं अपने व्यापार मे हमेशा की तरह आवश्यक मेहनत करता रहा। अपने छापेखाने के प्रति मैं बडा कृतज्ञ था। अपने बच्चों को मुझे शिक्षा देनी थी और इसी व्यापार मे दो और आदमियो से मुकाबला भी करना था जो मुझसे पहले से वहाँ जमे हुए थे। फिर भी मेरी परिस्थितियाँ प्रतिदिन सुधरती ही गईं। मितव्ययिता की मेरी आदत जारी रही। जब मैं बच्चा ही था तब मुझे शिक्षा देते हुए पिताजी सोलोमन की एक कहावत बार-बार कहा करते थे, "जो व्यक्ति अपना काम पूरे परिश्रम के साथ करता है वह नीच आदमियो के सामने नही बादशाहों के सामने गर्व से खडा हो सकता है।" तभी से मुझे महसूस होने लगा था कि मेहनत से ही कोई व्यक्ति प्रसिद्धि और धन दोनो प्राप्त कर सकता है। यह स्मृति भी मुझे उत्साहित करती रहती थी हालाँकि मैं यह नही सोचता था कि मैं सचमुच बादशाहो के सामने खड़ा हो सकूँगा। लेकिन अब तो यह भी हो चुका है। मैं पाँच बादशाहो के सामने खडा हो चुका हूँ और डेन्मार्क के शाह के साथ तो एक ही मेज पर बैठकर खाना भी खा चुका हूँ।

एक अंग्रेजी कहावत है : "जो आदमी उन्नति करना चाहता है उसे अपनी पत्नी से सलाह जरूर लेनी चाहिए।" यह मेरा सौभाग्य ही था कि मेरी पत्नी भी मेरी ही तरह परिश्रमी और मितव्ययी थी। वह मेरे

धन्धे मे खुशी-खुशी मेरी मदद करती, परचो को मोडती और सिलती, दुकान की देखभाल करती, कागज बनाने वालो के लिए फटे-पुराने कपडे आदि खरीदती। हमने घर के काम के लिए कोई नौकर नही रखा था। हमारी मेज बडी साधारण थी, हमारा फर्नीचर सस्ते से सस्ता था। उदाहरण के लिए बहुत दिनो तक नाश्ते मे मै रोटी और दूध (चाय नही) लेता रहा और मेरे खाने की तश्तरी भी मिट्टी की थी जो दो पेनी मे मिलती थी और चम्मच काँसे का था। लेकिन जरा देखो तो, धीरे-धीरे किस तरह शान-शौकत परिवारो मे प्रवेश करने लगती है और सिद्धान्तो के बावजूद बढती ही जाती है। एक दिन सुबह जब मै नाश्ता करने गया तो मैने देखा कि वह चीनी मिट्टी के प्याले मे परोसा गया था और चम्मच चाँदी का था। मेरी पत्नी ने मेरे अनजाने मे यह चीजें मेरे लिए ही खरीदी थी और इनके लिए उसे २३ शिलिंग जैसी भारी रकम खर्च करनी पडी थी। अपने कार्य के लिए उसके पास इसके अलावा और कोई औचित्य नही था कि उसके विचार से सारे पडोसियों की भाँति उसके पति में भी इतनी योग्यता है कि वह चीनी मिट्टी की तश्तरी और चाँदी के चम्मच से खाना खा सके। हमारे घर मे चाँदी और चीनी मिट्टी का यह पहला प्रवेश था, उसके बाद तो वर्ष बीतने के साथ-साथ ज्यो-ज्यो हमारी समृद्धि बढती गई त्यो-त्यो ये चीजे भी बढती गईं और इनका मूल्य कई सौ पौड हो गया।

मेरी शिक्षा प्रेसबैटीरियन धर्म के अनुसार हुई थी। उसके कुछ अंधविश्वासो, जैसे ईश्वर की शाश्वत इच्छा, चुनाव और दुष्टता आदि को मैं समझ नही पाता था, कुछ सिद्धान्तो को मै सदेहास्पद समझता था, इसलिए इस धर्म के अनुयायियों की सभा मे जाना मैंने बहुत पहले ही बन्द कर दिया था। इसलिए भी कि सभाएँ रविवार को होती थी और रविवार मेरा अध्ययन करने का दिन होता था। इस पर भी मैं धार्मिक सिद्धान्तों के बिना कभी भी नही रहा। उदाहरण के तौर पर मैने कभी ईश्वर की उपस्थिति पर सन्देह नही किया, इस पर भी सन्देह नही

किया कि उसने ही इस दुनिया को बनाया है और अपनी अलौकिक बुद्धि से इसे चलाता है। मेरे विचार से ईश्वर की सबसे अच्छी पूजा मानव-मात्र का हित करना ही थी। मेरा विश्वास था कि आत्मा अमर है और सभी अच्छे या बुरे कामो का फल यहाँ या कही और हमे भोगना ही पडता है। इन्हे मै हर धर्म के मूल सिद्धान्त मानता था और चूंकि हमारे देश मे प्रचलित सभी धर्मो मे ये पाए जाते थे इसलिए मै सभी का आदर करता था, इतना जरूर था कि मेरे आदर की मात्रा कम या ज्यादा होती थी और इस पर निर्भर करती थी कि किस धर्म मे कितने अधिक ऐसे सिद्धान्त है जो हमे प्रेरणा नही देते, चरित्र को ऊचा नही उठाते या स्थिर नही रखते, हममे भेद-भाव पैदा करते है और एक-दूसरे का शत्रु बनाते है। सभी धर्मो का आदर करने की वजह से और इस विश्वास पर कि बुरी से बुरी चीज मे भी कुछ अच्छाई जरूर होती है मै ऐसे वाद-विवादो मे हिस्सा नही लेता था जो किसी के दिल मे अपने धर्म के प्रति आदर को कम करे। हमारे सूबे मे आबादी बढती ही जा रही थी और नए-नए पूजा-गृहो की आवश्यकता पडने लगी थी जिन्हें साधारणत. चन्दा इकट्ठा करके खडा कर लिया जाता था, और चाहे जिस धर्म का भी पूजा-गृह खडा करना हो, मैं अपनी शक्ति भर मदद जरूर करता था।

यद्यपि मै सार्वजनिक प्रार्थनाओ मे बहुत कम शामिल होता था फिर भी इनकी शुद्धता और सही ढग से चलाये जाने पर इनकी उपयोगिता पर भी सन्देह नही करता था और फिलाडेल्फिया मे रहने वाले केवल एक प्रेस-बैटीरियन पादरी के खर्च का अपना हिस्सा नियमानुसार दे दिया करता था। वह अक्सर दोस्त की हैसियत से मेरे यहाँ आया करते थे और सभाओ मे न आने के लिए कभी-कभी हल्की भर्त्सना भी किया करते थे, और कभी-कभी तो मुझ पर इतना असर डाल दिया करते थे कि मै प्रार्थना-सभा मे सम्मिलित होने के लिए पहुँच जाता था—एक बार तो ५ रविवार तक मैं लगातार गया था। अगर वह मेरी राय मे अच्छे धर्मो-

पदेशक होते तो शायद मैं सभाओ मे जाता रहता बावजूद इसके कि रविवार को छुट्टी होती थी और मुझे अध्ययन के लिए काफी समय मिल सकता था। लेकिन उनके प्रवचन अपने सम्प्रदाय की अजीबोगरीब शिक्षाओं के बारे मे हुआ करते थे, और मुझे बहुत रूखे, कठोर और अशुद्ध करने वाले मालूम पडते थे क्योकि चरित्र-निर्माण-सम्बन्धी एक भी नियम को लोगो मे उपजाने की कोशिश नही की जाती थी, मानो उन सारे प्रवचनो का एकमात्र उद्देश्य हमे अच्छे नागरिक नही बल्कि प्रेसबैटीरियन बनाना हो।

आखिरकार उन्होने फिलिपियन्स के चौथे अध्याय की कविता पर प्रवचन शुरू किया, "**सबसे अन्त में, मेरे भाइयो, जहाँ कहीं भी आपको सचाई, ईमानदारी, न्याय, शुद्धता, सुन्दरता या अच्छा चरित्र मिले, अगर कहीं आप गुण देखें या प्रशंसा सुनें तो इसी प्रकार सोचें।**" और मेरा विचार था कि इस विषय पर दिए जाने वाले प्रवचन मे चरित्र-निर्माण की बात छोड़ी ही नही जा सकती। लेकिन उन्होने फरिश्ते के अनुसार ही केवल ५ बातो तक अपने को सीमित रखा : (१) पवित्र रविवार को मानना, (२) सार्वजनिक सभाओ मे शामिल होना, (३) पवित्र धर्म-ग्रथो को ध्यान से पढना, (४) धर्म-विधि का पालन करना, (५) ईश्वर के नियत किये हुए पादरियो का उचित सम्मान करना। ये सभी अच्छी चीज़े हो सकती है लेकिन इस विषय पर मैंने इस तरह की अच्छी चीजो की आशा नही की थी। और मैंने तय कर लिया कि अब कभी ऐसा अवसर नही आने दूंगा कि ऐसी बातो से मुझे घृणा करनी पड़े और मैंने उनके प्रवचनो को सुनना बन्द कर दिया। कुछ वर्ष पहले मैंने अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए एक छोटी-सी प्रार्थना-विधि बनाई थी (उदाहरण के लिए १७२८ मे) जिसका नाम मैंने रखा था "विश्वास की धाराएं और धर्म के कार्य।" मैंने फिर इसका उपयोग शुरू कर दिया और सार्वजनिक सभाओ से जाना एकदम वन्द कर दिया। हो सकता है कि कुछ लोग मेरे इस करतब पर मुझे दोषी

ठहराएँ लेकिन मैं बगैर अपनी सफाई दिये इस बात को यही छोड़ देता हूँ क्योकि इस समय मैं अपने जीवन की घटनाओ को बता रहा हूँ, उनके लिए माफी नही माँग रहा।

लगभग इसी समय मैंने चारित्रिक पूर्णता प्राप्त करने के साहसिक और कठिन काम को करने का निश्चय किया। मैं किसी भी समय बिना गलती किये रहना चाहता था, मैं उन सभी पर विजय प्राप्त करना चाहता था जिनकी ओर स्वाभाविक रूप से या रीति-रिवाजो मे फँसकर अथवा लोगो के साथ की वजह से मुझे फँस जाना पडता था। मुझे मालूम था, कम से कम मैं सोचता था कि मुझे मालूम है, कि क्या गलत है और क्या सही। इसलिए मैं नही समझ पाता था कि मैं सही कामो को करने और गलत कामो को न करने मे क्यो नही सफल हो सकता। लेकिन जल्दी ही मुझे मालूम हो गया कि मैंने अपनी कल्पना से कही ज्यादा मुश्किल काम उठा लिया था। एक गलती को न करने की तरफ मैं अपना ध्यान देता तो एकाएक दूसरी हो जाती, एकाग्रता की कमी का फायदा आदत उठा लेती; रुझान कभी-कभी विचार-शक्ति पर हावी हो जाता। आखिरकार मैंने नतीजा निकाला कि केवल यह विश्वास कर लेना ही काफी नही है कि व्यक्ति को पूरी तरह निर्दोष होना चाहिए क्योकि केवल यह विश्वास ही हमे गलतियाँ करने से रोक नही सकता। इसके लिए विरोधी आदतो को तोडकर अच्छी आदतो को अपनाकर अच्छी तरह जमाना होगा। इसके बिना हम किसी चारित्रिक नियमावली का पालन नही कर सकते। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए मैंने नीचे लिखा तरीका निकाला।

पुस्तको का अध्ययन करते हुए मुझे चारित्रिक गुणो के अनेक निरूपण मिले। कई प्रकार की सूचियाँ मुझे बनानी पडी। अलग-अलग लेखको ने कम या अधिक विचारो को एक ही गुण के अन्तर्गत रक्खा था। उदाहरण के लिए परिमित भोजन करना। कुछ लोगो ने इसमे केवल खाने-पीने को ही शामिल किया था, जबकि दूसरो ने भोजन,

रुझान या समुचित मात्रा मे संतुलित काम करने को भी इसी मे रखा था। कुछ ने तो शारीरिक अथवा मानसिक वासना, घृणा और महत्त्वाकाक्षा का सतुलन भी इसके अन्तर्गत माना था। स्पष्टता के लिए मैंने गुणों के अधिक नाम रखने और हर नाम के साथ कम बातें सम्बन्धित करने का इरादा किया। इस प्रकार उस समय जितने गुणो को मैंने आवश्यक या वाछित समझा, उन्हें तेरह नाम दिये और हर एक के साथ कुछ बाते जोड दी, जिस से बिलकुल साफ हो गया कि प्रत्येक गुण से मेरा क्या तात्पर्य था।

नीचे मैं उन तेरह गुणो के नाम, प्रत्येक के अन्तर्गत आने वाली बातो के साथ लिख रहा हूँ :

(१) उचित भोजन (Temperance)—इतना मत खाओ कि आलस्य आने लगे और इतना मत पियो कि होश गँवा बैठो।

(२) मौन (Silence)—उतना ही बोलो जिससे तुम्हारा अपना या दूसरो का लाभ हो। व्यर्थ बातचीत मत करो।

(३) व्यवस्था (Order)—अपनी हर चीज के लिए उचित स्थान नियत करो। अपने हर काम के लिए उचित समय दो।

(४) दृढ़प्रतिज्ञता (Resolution)—जो काम तुम्हे करना हो उसे पूर्ण करने की प्रतिज्ञा करो और एक बार प्रतिज्ञा करने के बाद किसी भी दशा मे उसे अधूरा मत छोडो।

(५) मितव्ययिता (Frugality)—उतना ही खर्च करो जिससे तुम्हारा अपना या दूसरो का लाभ हो अर्थात् धन नष्ट मत करो।

(६) अध्यवसाय (Industry)—समय व्यर्थ मत जाने दो ; हमेशा किसी न किसी उपयोगी काम मे लगे रहो। सारे अनावश्यक कार्यों को दूर रखो।

(७) ईमानदारी (Sincerity)—किसी को धोखा मत दो। अपने विचारो मे न्यायप्रियता और निष्कपटता पैदा करो और बातचीत मे भी इनका ध्यान रखो।

(८) धर्मनीति (Justice)—किसी को चोट मत पहुँचाओ और अगर तुमसे किसी को लाभ हो सकता हो तो उसे लाभ से वचित मत करो।

(९) समभाव (Moderation) अति से बचो, लेकिन जितने दड के भागी दूसरे हो उतना दड उन्हे जरूर दो।

(१०) स्वच्छता (Cleanliness)—अपने शरीर, वस्त्र अथवा निवासस्थान मे तनिक भी गन्दगी न रहने दो।

(११) धैर्य (Tranquillity)—छोटी-छोटी बातो पर या साधारण और अवश्यम्भावी घटनाओ पर अपने मस्तिष्क का सतुलन न बिगड़ने दो।

(१२) आत्मसयम (Chastity)—स्वास्थ्य अथवा सन्तानोत्पत्ति के लिए ही स्त्री से सम्पर्क करो। वासना मे इतना मत बहो कि स्वास्थ्य खो जाये या तुम्हारी अथवा किसी और की शक्ति या इज्जत खतरे मे पड जाये।

(१३) विनम्रता (Humility)—ईसामसीह और सुकरात के आदर्शों का पालन करो।

मैं चाहता था कि ये सारे गुण मुझमे पैदा हो जायें। इसलिए मैंने तय किया कि सारे गुणो पर एकसाथ अपना ध्यान देने के बजाय यह अधिक अच्छा होगा कि मैं एक बार मे एक ही गुण पर पूरा ध्यान दूं और जब उसे प्राप्त कर लूं तभी दूसरे की तरफ बढू। इस प्रकार क्रमश सभी गुण प्राप्त कर सकूंगा। इस विधि का एक लाभ यह भी होगा कि कुछ गुणो को प्राप्त कर लेने के बाद दूसरे गुणो को प्राप्त करना आसान हो जायेगा। इसलिए मैंने तेरह गुणो को ऊपर लिखे क्रम मे व्यवस्थित किया। पहला नम्बर मैंने उचित भोजन को दिया क्योकि इसी से मस्तिष्क मे शक्ति और स्पष्टता पैदा होती है, इसी से पुरानी आदतो के प्रति हमेशा बने रहने वाले आकर्षण से बचने के लिए मस्तिष्क सदा तैयार रहता है। इसे प्राप्त कर लेने के बाद मौन अधिक आसानी से साधा जा सकेगा। मैं इन गुणो को प्राप्त करने के साथ ही साथ अपने ज्ञान मे

भी वृद्धि करना चाहता था और जानता था कि बातचीत मे ज्ञान-वृद्धि जीभ के नही बल्कि कानो के उपयोग से होती है। उन दिनों साधारण लोगों के बीच प्रिय होने के लिए मैं इधर-उधर की बातें अधिक करने, श्लेष में बोलने तथा मजाको मे खूब रस लिया करता था। इस आदत को दूर करने के विचार से मैंने मौन को दूसरा स्थान दिया। मुझे आशा थी कि इससे और दूसरे गुण व्यवस्था से मुझे अपना काम करने और अध्ययन करने का अधिक समय मिलेगा। एक बार प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने की आदत पड जायेगी तो फिर आगे के गुणो को प्राप्त करने का मेरा निश्चय स्थिर रहेगा। मितव्ययिता और अध्यवसाय के बल पर मैं अपना बाकी कर्ज उतार सकूंगा तथा प्रभावशाली और स्वतंत्र हो सकूंगा, जिससे ईमानदारी और धर्मनीति का पालन करने में मुझे बडी आसानी होगी। पाइथागोरस की सुनहरी कविताओ की सलाह के अनुसार मुझे भी यह महसूस हुआ कि रोज अपना निरीक्षण करना बहुत आवश्यक होगा और आत्मनिरीक्षण के लिए मैंने नीचे लिखी विधि का आविष्कार किया।

मैंने एक छोटी-सी कापी बनाई, जिसमे हर गुण के लिए एक सफा नियत किया। लाल स्याही से मैंने हर सफ़े पर खड़ी लाइनें खीची, जिनने सात कालम बन गये, हफ्ते के हर दिन के लिए एक कालम, और हर कालम के ऊपर दिन दिखाने के लिए नाम क्रमश: लिख दिये। इन लाइनों को मैंने लाल स्याही की ही तरह पड़ी लाइनो से काटा और हर लाइन की शुरुआत पर क्रमशः एक-एक गुण का नाम लिख दिया। ऐसा मैंने इसलिए किया कि जब मैं आत्मनिरीक्षण करूँ तो दिन भर में जिस गुण के सम्बन्ध मे मैंने गलती की हो उस गुण के सामने उचित कालम मे एक काला निशान लगा दूं।

पृष्ठों पर खींची गई तालिका

उचित भोजन

इतना मत खाओ कि आलस्य लगने लगे ; इतना मत पियो कि होश गँवा बैठो ।

	रवि वार	सोम वार	मंगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार
उचित भोजन							
मौन	×	×		×		×	
व्यवस्था	×	×			×	×	×
दृढ़प्रतिज्ञता		×				×	
मितव्ययिता		×				×	
अध्यवसाय			×				
ईमानदारी							
धर्मनीति							
समभाव							
स्वच्छता							
धैर्य							
आत्मसंयम							
विनम्रता							

मैंने बारी-बारी से एक-एक हफ्ते एक-एक गुण पर पूरा ध्यान देने का निश्चय किया। इस तरह पहले हफ्ते मे मैंने हर सम्भव कोशिश की कि अनुचित भोजन कभी न करूँ; दूसरे गुणो को मैंने यूँ ही छोड दिया। हर शाम को मैं दिन भर की गलतियाँ उस चार्ट पर अंकित करने लगा। पहले हफ्ते मे मैंने अपनी पहली पंक्ति, पर जिस पर उचित भोजन लिखा था, कोई भी धब्बा नही पडने दिया। मेरा ख्याल है कि इससे मुझे काफी बल मिला और भोजन सम्बन्धी मेरी कमजोरी काफी हद तक कम रही। साथ ही मैने अगले हफ्ते दूसरे गुण पर भी ध्यान देने का ख्याल किया। मैं सोच रहा था कि अगले हफ्ते मे दोनों लाइनों पर काले निशान नही पड़ने दूंगा। इस प्रकार बढते हुए मैं एक पूरा कोर्स तेरह हफ्तो मे पूरा कर लूंगा और साल भर मे इस तरह के चार कोर्स होगे। अगर किसी आदमी को अपने बाग मे बेकार पौधो को उखाडना हो तो वह सारे पौधों को एकसाथ नही उखाडने लगता बल्कि एक-एक क्यारी के पौधे उखाडता जाता है और आखिर मे काम पूरा कर लेता है। इसी तरह अपने दुर्गुणो को दूर करने का इरादा मैंने किया। मुझे उम्मीद थी कि अपनी कापी को देखकर मुझे पता चलता रहेगा कि गुणों को प्राप्त करने की दिशा मे मैंने कितनी प्रगति की है, यहाँ तक कि कुछ समय बाद पूरा कोर्स कई बार खतम करने के बाद जब मैं तेरह हफ्तो के पृष्ठो पर नजर डालूंगा तो मुझे कही काला दाग दिखाई नही पड़ेगा।

मेरी इस छोटी-सी कापी पर आदर्श वाक्यों के रूप मे एडीसन की 'कैटो' नामक कृति की निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखी थी :

"अब से मै यही मानूंगा। यदि हमारे ऊपर भी कोई शक्ति है (और ऐसी शक्ति है, यह सम्पूर्ण प्रकृति अपनी कृतियों के माध्यम से चिल्लाकर कहती है), तो उसे सच्चरित्रता से प्रसन्नता अवश्य होगी, और जिसमें उसे खुशी होगी वही सच्ची प्रसन्नता है।"

विवेक या सदाचार के विषय मे सोलोमन की एक कहावत भी लिख दी थी :

"उसके दाहिने हाथ में दिनों की लम्बाई है और बायें हाथ में समृद्धि तथा सम्मान, उसके कार्य करने का ढंग आह्लादपूर्ण होता है और उसके पथ पर सदा शांति रहती है।"

और मुझे विश्वास था कि ईश्वर ही विवेक का स्रोत है, इसलिए मैंने यह उचित और आवश्यक समझा कि विवेक को प्राप्त करने के लिए मैं ईश्वर से ही सहायता माँगूं। इसके लिए मैंने नीचे लिखी हुई छोटी-सी प्रार्थना बनाई। यह मेरे हर निरीक्षण-चार्ट के ऊपर लिखी रहती थी :

"हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ! समृद्धिशाली पिता ! करुणामय पथप्रदर्शक ! मुझे वह विवेक दो जिससे मै अपने वास्तविक हितों को पहचान सकूँ। मुझे शक्ति दो कि मै उस विवेक के बताए पथ पर दृढ़ता से चल सकूँ। तुम मुझे हमेशा प्यार करते हो इसलिए तुम्हारी दूसरी संतानो के प्रति थोड़ी-बहुत भलाई जो मै कर सकता हूं, उसे मेरी श्रद्धा समझकर स्वीकार करो।"

कभी-कभी मैं एक और छोटी-सी प्रार्थना करता था, जो मैंने टॉमसन की कविताओ मे से नकल की थी :

"प्रकाश और जिन्दगी के पिता, हे सर्वगुणसम्पन्न सर्वोच्च ! मुझे सिखाइए कि अच्छाई क्या है ; आप स्वयं मुझे सिखाइए ! मुझे बचाइए गलतियों, अभिमान और बुराइयो से और हर नीचे काम से; और भर दीजिए मेरी आत्मा को ज्ञान से, सचेत शान्ति और विशुद्ध सच्चरित्रता से; पवित्र, निस्सीम, शाश्वत प्रसन्नता से !"

जो गुण मुझे प्राप्त करने थे उनमे से एक व्यवस्था थी और इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक था कि मेरे हर काम करने का नियत समय हो, इसलिए मैंने हर दिन के चौबीस घटो को विभिन्न कामो के लिए निम्नलिखित ढग से विभाजित किया। यह योजना भी मैंने अपनी उसी कापी मे लिख दी।

प्रातःकाल प्रश्न : आज मैं कौन-सा भला काम करूँगा ?	५ ६ ७	उठकर स्वच्छ होकर सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की प्रार्थना करना। दिन भर के काम की योजना बनाना और उस दिन के लिए विशेष प्रतिज्ञा करना; अध्ययन आगे बढाना; नाश्ता करना।
	८ ९ १० ११	काम।
मध्याह्न	१२ १	पढना, या अपने हिसाब-किताब की जाँच करना और भोजन करना।
	२ ३ ४ ५	काम।
सायंकाल प्रश्न . आज मैंने कौनसा अच्छा काम किया ?	६ ७ ८ ९	चीजों को यथास्थान रखना, रात का भोजन करना। सगीत या मनो-विनोद या वार्तालाप। दिन भर के कामों का परीक्षण करना।
रात्रि	१० ११ १२ १ २ ३ ४	सोना।

आत्मनिरीक्षण की इस योजना के अनुसार मैंने काम शुरू कर दिया और बीच-बीच मे व्यवधान पडने के बावजूद कुछ समय तक जारी रखा। मुझे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि मुझमे अपनी कल्पना से कही अधिक दोष थे। लेकिन दिनो-दिन उन्हे कम होते देखकर मुझे सन्तोष भी मिला। मेरी छोटी-सी कापी अब तक छोटे-छोटे अनेक छेदो से भर गई थी क्योकि पुराने निशानो को मिटाकर मुझे नये निशान बनाने पड़ते थे। इसलिए यह आवश्यक हो गया था कि उमे बदल दिया जाए। बार-बार कापी बदलने की परेशानी से बचने के लिए मैंने एक स्मरण-पुस्तिका के हाथी दात के पन्नो पर अपनी तालिका और विधि को अकित कर दिया। लाइनें मैंने लाल स्याही से खीची जो हाथी दाँत पर गहरी नक्श हो गईं। अपने दोषो के निशान काली पेंसिल से लगाने लगा, जो बाद मे गीले स्पज से पोछकर आसानी से मिटाये जा सकते थे। कुछ समय बाद पूरा कोर्स मैं साल भर मे दोहराने लगा, बाद मे कई वर्षो मे एक कोर्स पूरा करने लगा। आखिरकार वह समय भी आया जब अपनी यात्राओ और अपने काम के सिलसिले मे विदेश-भ्रमण के कारण तथा अनेक प्रकार के कामो के व्यवधान पडने पर मैने कोर्स का अनुसरण करना ही छोड दिया, लेकिन मेरी छोटी-सी कापी हमेशा मेरे साथ रहती थी।

व्यवस्था की योजना ने मुझे सबसे ज्यादा परेशान किया। मैंने देखा कि अगर कोई आदमी ऐसा काम करता है जिसमे अपने समय का मालिक वह खुद होता है तो वह व्यवस्थित ढग से अपने सारे काम कर सकता है। लेकिन किसी व्यापार को चलाने वाले व्यक्ति, जैसे मुद्रक के लिए, यह बडा मुश्किल होता है, क्योकि उसे बाहरी दुनिया से सम्पर्क रखना पडता है और अक्सर दूसरे आदमियो के साथ उनके समय पर भेट करनी पडती है। अपनी चीजो, कागज-पत्रो आदि को उचित जगह पर रखने की बात भी मुझे बडी ही मुश्किल मालूम पडी। बचपन से तो मुझे ऐसी शिक्षा मिली नही थी और मेरी याददाश्त भी साधारण रूप से अच्छी थी। इसलिए व्यवस्थित ढग से काम न करने पर भी मुझे अधिक

परेशानी नहीं होती थी। अतः इस गुण को प्राप्त करने के लिए मुझे बड़े कष्ट-कारक मनोयोग से काम लेना पडा और इसमे होने वाली गलतियो ने मुझे इतना परेशान किया, और मेरा सुधार इतनी धीमी गति से हुआ, और मैं इसी दोष का भागी इतनी बार बना कि एक बार तो मन मे यह आया कि यह कोशिश ही छोड देनी चाहिए। मैंने सोचा कि अपने चरित्र मे दोष रहने पर भी मैं अपना जीवन व्यतीत कर लूंगा। यह बिलकुल वही किस्सा हुआ जो एक बार मेरे पडोसी लोहार के साथ हुआ था। एक आदमी लोहार से कुल्हाड़ी खरीद रहा था और कह रहा था कि पूरे फल को ही धार की तरह चमकदार बना दो। लोहार ने उससे कहा कि अगर तुम पहिया घुमाओ तो मुझे पूरे फल को चमका देने मे कोई एतराज नही है। आदमी पहिया घुमाने लगा। लोहार ने कुल्हाडी के चौडे फल को सान पर दबाया जिससे आदमी को पहिया घुमाने मे बडा परिश्रम करना पडा। बार-बार वह अपनी जगह से उठकर देखता कि फल कितना चमक गया है। आखिरकार पहिया घुमाते-घुमाते वह इतना थक गया कि लोहार से बोला, "मैं यह कुल्हाड़ी बिना चमकाए ही ले जाऊँगा।" लोहार ने जवाब दिया, "नही, पहिया घुमाते जाओ तो धीरे-धीरे पूरी की पूरी फल चमकदार हो जायेगी। अभी तो ज़रा-सी ही चमक आई है।" आदमी बोला, "हाँ, लेकिन मेरा ख्याल है कि चितकबरी कुल्हाड़ी ही मुझे अधिक अच्छी लगती है।" और मेरा विश्वास है कि यही हाल अनेक लोगो के साथ हुआ होगा जिनके पास मेरी जैसी सुविधाएं नही रही होंगी और जो बुराइयो को दूर करने तथा अच्छाइयो को ग्रहण करने मे बड़ी मुश्किल का सामना करते होगे और आखिरकार हारकर कह पड़े होगे कि "हमे तो चितकबरी कुल्हाड़ी ही पसन्द है।" कभी-कभी मेरा तथाकथित विवेक मुझसे कहता कि अपने चरित्र मे जो मैं इतनी अच्छाई चाहता हूँ, क्या वह मेरा एक तरह का दम्भ नही है? और लोग इसके बारे मे जान पायें तो मेरा मजाक नही उड़ायेंगे? यह विवेक यह भी कहता कि सम्पूर्ण रूप से अकलंक चरित्र

से लोग घृणा भी करेंगे और ईर्ष्या भी। और आगे मुझे सुनाई पडता कि अपने परिचितो का सम्पर्क वनाये रखने के लिए सज्जन आदमी को अपने भीतर कुछ न कुछ दोप आवश्यक रूप से वनाये रखना चाहिए।

सच तो यह है कि 'व्यवस्था' के सम्वन्ध मे मुझे यही लगा कि मैं अपने को सुधार नही सकता। अव मैं वूढा हो गया हूँ, मेरी स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ गई है और मुझे व्यवस्था की कमी मालूम पडती है। लेकिन कुल मिलाकर मैं यही कहूँगा कि जिस पूर्णता को मैंने प्राप्त करना चाहा, उसे मैं प्राप्त तो नही कर सका लेकिन इस कोशिश से मुझमे अच्छाइयाँ पैदा हुई और खुशी मिली जैसा कि कोशिश न करने पर कभी भी न हो सकता था। ठीक उस तरह कि सुलेख की कापियो मे सुन्दर अक्षरो की नकल करके उतना ही सुन्दर लिखने की कोशिश करने वाले व्यक्ति पूर्णतः वैसा तो नही कर पाते लेकिन इस कोशिश से उनकी लिखावट सुधर जरूर जाती है, कम से कम स्पष्ट पढ़ी तो जाती है।

आगे आने वाली पीढियो को यह जानकर अच्छा ही लगेगा कि उनका पूर्वज ईश्वर की असीम कृपा से वहुत अच्छी लिखावट का अधिकारी था और ७९ वर्ष की अवस्था मे भी जव वह ये पक्तियाँ लिख रहा था तो भी उसकी लिखावट बहुत अच्छी थी। आगे आने वाले वर्षो मे क्या होगा यह तो ईश्वर ही जानता है लेकिन अगर मेरी लिखावट विगड़ ही गई तो भी अतीत की बातो को याद करके जो खुशी मुझे होगी, वह कम से कम इस पीडा को सहने की शक्ति तो मुझमे पैदा करेगी। उचित भोजन की वजह से ही मेरा स्वास्थ्य वडी उमर तक वहुत अच्छा रहा और आज भी अच्छा है। अध्यवसाय और मितव्ययिता से ही मेरी परिस्थितियाँ जल्दी सुधर सकी, मैं काफी धन प्राप्त कर सका, एक हितकारी नागरिक भी वन सका और पढे-लिखे व्यक्तियो के वीच थोड़ा आदर प्राप्त करने मे भी समर्थ हुआ। ईमानदारी और धर्मनीति के कारण अपने देश का विश्वास मुझे मिला और अनेक सम्मानित काम करने को दिये गये। और इन सारे गुणो को मिलाकर, यद्यपि मैं उन्हे

पूरी तरह प्राप्त नही कर पाया था, फिर भी जो प्रभाव मुझ पर पडा वह यही था कि मेरा स्वभाव बडा शान्त, बातचीत बडी दिलचस्प हो गई जिससे लोग बुढापे मे भी मेरा साथ पसन्द करते हैं, कम उमर वाले व्यक्ति भी। इसलिए मैं यही आशा कर सकता हूँ कि आगामी पीढियो के युवक इस उदाहरण का अनुसरण करके लाभ उठायेगे।

कहा जा सकता है कि मेरी योजना बिलकुल धार्मिक सिद्धान्तों से हीन तो नही थी, लेकिन किसी विशेष सम्प्रदाय के गुण भी उसमें न थे। सच तो यह है कि मैने जान-बूझकर उन्हे अलग ही रखा था। कारण कि मुझे अपनी योजना की उपादेयता और श्रेष्ठता मे पूरा विश्वास था। मैं जानता था कि यह विधि सभी धर्मावलम्बियो के काम आ सकती है। मेरा इरादा इसे अवसर आने पर प्रकाशित करने का था ही, इसलिए मैंने इसमे कोई ऐसी बात नही शामिल की थी, जिससे किसी सम्प्रदाय वाले इसके विरोधी हो जायें। मेरा विचार प्रत्येक गुण के बारे मे एक टिप्पणी लिखने का था, जिसमे मैं यह दिखाना चाहता था कि अमुक गुण से क्या लाभ हो सकते हैं और इसके विपरीत दोष कितनी हानि पहुँचा सकता है। मैंने सोचा था कि अपनी किताब का नाम मैं "गुण प्राप्त करने की कला" (The Art of Virtue)[1] रक्खूंगा, क्योंकि इसमे यही दिखलाया जायेगा कि गुण कैसे प्राप्त करने चाहिएँ। उक्त नाम से यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि इसमें केवल अच्छाइयो की तारीफ ही नही की गई है, जिससे यह नही मालूम होता कि उन्हे कैसे प्राप्त किया जा सकता है। मेरी पुस्तक वैसी नही होगी जैसा धर्मशास्त्रों मे वर्णित वह आदमी था जो जबानी ही अपनी दयालुता व्यक्त किया करता था; भूखो और नगो को वह नही बताता था कि कहाँ और कैसे अन्न और वस्त्र प्राप्त किये जा सकते हैं बल्कि कहता फिरता था कि

---

१. मानव के सौभाग्य के लिए सच्चरित्रता से बढकर और कोई चीज नहीं हो सकती। —(हाशिये पर दी गई टिप्पणी)

भूखों और नगो के पास अन्न और वस्त्र होने चाहिएँ।

जेम्स ii १५, १६.

लेकिन हुआ कुछ ऐसा कि इस पुस्तक को लिखने और प्रकाशित करने का मेरा इरादा कभी पूरा न हो सका। हाँ, कभी-कभी मैंने इस प्रकार के विचारो और तर्कों को लिख अवश्य लिया, यह सोचकर कि वे बाद मे काम आयेंगे। इनमे से कुछ तो अभी भी मेरे पास पडे हैं, लेकिन अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनो मे अपने व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र की और बाद मे सार्वजनिक जीवन की अत्यधिक व्यस्तता के कारण मैं इसका लिखना टालता ही गया, क्योकि मेरे मस्तिष्क मे जमा हुआ था कि यह काम महान् और विशाल है जिसके लिए किसी व्यक्ति को अपना पूरा समय इसी मे लगाना होगा। परिस्थितियाँ ऐसी आती गईं कि मैं अपना समय इस योजना मे न दे सका और यह आज भी अपूर्ण है।

इस पुस्तक मे मेरा इरादा निम्न सिद्धान्त को प्रतिपादित करने और विशद रूप से समझाने का था कि बुरे काम बुरे इसलिए नही है कि उन्हे करना मना है वरन् इसलिए मना है कि वे बुरे है, कि इसलिए संसार मे सुख चाहने वाले हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह अधिक से अधिक गुणो को प्राप्त करने की कोशिश करे, और मेरा इरादा इन परिस्थितियो से उठकर नवयुवको को विश्वास दिलाने का था कि किसी धनहीन व्यक्ति को समृद्धिशाली बनाने के लिए ईमानदारी और परिश्रम से बढकर गुण नही पाए जा सकते। ससार मे सभी जगह पर धनी, व्यापारी, जमीदार और राजदरबारी और राजा होते है, जिनका काम ईमानदार व्यक्तियो के बल पर ही चल सकता है और ईमानदार व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं।

पहले मेरी तालिका मे गुणों की संख्या बारह थी। एक दिन मेरे एक "क्वेकर" दोस्त ने मुझे बताया कि लोग मुझे घमण्डी समझते हैं और मेरा यह घमण्ड बातचीत से जाहिर होता है और किसी विषय पर बहस करते हुए मैं इतने से ही सन्तुष्ट नही हो जाता कि मेरा दृष्टिकोण ठीक

है, बल्कि अपनी बात पर बहुत जोर देकर कहने लगता हूँ और कभी-कभी तो धृष्ट भी हो जाता हूँ। कई उदाहरण देकर मेरे मित्र ने मुझे इस बात का विश्वास दिला दिया। तब मैंने इस बुराई को अपने से दूर करने का निश्चय किया और अपनी सूची मे विनम्रता को भी एक स्थान देकर इस शब्द का बडा विस्तृत अर्थ बताया।

मैं यह नही कह सकता कि इसमे मुझे बहुत सफलता प्राप्त हुई, लेकिन इतना जरूर था कि बाहरी ढंग पर मैं काफी सुधर गया था। मैंने अपने लिए नियम बना लिया कि मैं दूसरे के विचारों का सीधा विरोध नही करूंगा और अपनी बात को बहुत जोर देकर नही कहूँगा। मैंने तो यहाँ तक तय कर लिया (और यह "जन्टो" के पुराने नियमो के बिलकुल अनुकूल था,) कि मैं ऐसे शब्दों का भी प्रयोग नही करूँगा जिनसे निश्चित सम्मतियों का व्यक्तीकरण हो। उदाहरण के लिए "निश्चित रूप से", "निस्सन्देह" आदि। इनकी जगह पर मैंने "मेरा विचार है", "मैं सोचता हूँ", "मै कल्पना करता हूँ कि अमुक वस्तु अमुक प्रकार की होनी चाहिए", "इस समय मुझे ऐसा मालूम पडता है" आदि का प्रयोग करने लगा। जब कोई आदमी ऐसी बात कह देता जो मेरी समझ मे गलत होती तो मैं एकदम उसकी गलती और उसकी बात की निरर्थकता न बतलाता, बल्कि उत्तर देते समय मैं इस तरह अपनी बात शुरू करता कि कुछ बातों और विशेष परिस्थितियों में ही उनकी राय ठीक हो सकती है, लेकिन इस समय तो मुझे अमुक स्थान पर अमुक प्रकार का अन्तर मालूम होता है। अपने तरीके मे इस परिवर्तन का फायदा मुझे दिखाई पडा। बातचीत अधिक प्रसन्नतापूर्वक होने लगी। जिस प्रकार विनम्रतापूर्वक मै अपनी बात कहता, उससे लोग जल्दी प्रभावित होने लगे और विरोध कम होता गया। जब मुझे अपनी गलती मालूम होती तो भी मुझे अधिक बुरा न लगता और जब मैं ठीक बात कहता तो अधिक आसानी से दूसरो की गलती सुधारने और अपनी बात मनवाने मे सफल होता।

मेरी स्वाभाविक रुझान के बिलकुल विरुद्ध यह विधि पड़ती थी,

इसलिए शुरू-शुरू मे मुझे वडा जोर लगाना पडा, लेकिन वाद मे इतनी आदत पड गई और इतनी आसानी होने लगी कि शायद पिछले पचास वर्षो मे किसी ने मुझे कोई अनावश्यक वात कहते हुए भी न सुना होगा। और मेरा विचार है कि (ईमानदारी को छोडकर) इस आदत के कारण अन्य नागरिको को मैने इतना प्रभावित कर लिया कि अगर मै कोई नई सस्था शुरू करना चाहता या पुरानी सस्थाओ मे सुधार की वातें करता तो वे फौरन मान ली जाती। जब मै सदस्य हो गया तो कौन्सिल मे भी मेरी राय का काफी प्रभाव था, वह भी इसी कारण। मै वहुत ही वुरा वक्ता था, लेकिन फिर भी मै अपनी वात मनवा ही लेता था।

सचमुच किसी स्वाभाविक वासना का दमन करना इतना कठिन नही जितना अहकार का दमन करना। इसे छिपाइए, इससे सघर्ष कीजिए, इसे दवा दीजिए, चोट दीजिए, मन भर वुरा-भला कहिए, फिर भी यह जीवित रहता है और समय-समय पर प्रकट हो ही जाता है। इस इतिहास मे शायद तुम कई वार देखोगे कि अपने विचार से मै इसे पूरी तरह पराजित कर चुका था लेकिन वास्तव मे ऐसा नही था। सभव है कि मै अपनी विनम्रता पर ही अहकार करने लगा था।

(यहाँ तक का विवरण पैसी मे लिखा गया—१७८४)

["सन् १७८८ का अगस्त महीना है और मैं अपने घर में बैठकर यह लिखना चाहता हूँ, लेकिन मेरे अधिकतर कागज गृहयुद्ध में खो गये हैं इसलिए मुझे इनसे उतनी सहायता नहीं मिल पा रही है जितनी कि मुझको आशा थी ; फिर भी नीचे के कुछ कागज तो मुझे मिल ही गये हैं।"]

मैंने एक महान् और विशाल योजना के बारे मे लिखा था, इसलिए

उचित यही है कि मै अब इस योजना और इसके उद्देश्यों के बारे मे भी कुछ लिखूं। एक छोटा-सा कागज सौभाग्य से बचा रह गया है और मेरा ख्याल है कि इसी रूप मे इस योजना का जन्म मेरे मस्तिष्क मे हुआ था। देखिए :

१९ मई १७३१। पुस्तकालय मे इतिहास का अध्ययन करते समय कुछ विचार :

" संसार के सभी बडे-बडे काम, जैसे युद्ध, क्रान्ति आदि, दलों द्वारा शुरू और पूरे किये जाते हैं।

" इन दलों का दृष्टिकोण अपना वर्तमान हित या जिसे भी हित कहते हैं, उसकी रक्षा करना होता है।

" अलग-अलग दलो के अलग-अलग अनेक दृष्टिकोणों के कारण विशृंखलता पैदा हो जाती है।

" जब कोई दल अपने मत के अनुसार काम कर रहा होता है तो उसका प्रत्येक सदस्य अपनी स्वार्थ-साधना चाहता है।

" जैसे ही दल अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है, उसके सदस्य फौरन अपने स्वार्थ-साधन में जुट जाते है। इससे दूसरो को तो हानि होती ही है, दल में भी भेदभाव पैदा हो जाता है तथा विशृखलता और अधिक बढ जाती है।

" सार्वजनिक कार्यकर्त्ता बहुत ही कम अपने देश की भलाई के लिए काम करते है, चाहे वे कहे जो कुछ। यद्यपि उनके इन क्रिया-कलापो से देश का कुछ भला हो ही जाता है, लेकिन वे यह नही सोचते कि देश के और उनके हित साथ-साथ चलते हैं। वे परहित की भावना लेकर काम नही करते।

" और सार्वजनिक कामों मे कही कम आदमी मानवता के हित मे काम करते हैं।

" इस समय मुझे ऐसा मालूम पडता है कि 'गुणो के लिए एक संयुक्त दल' (United Party for Virtue) बनाना बहुत जरूरी है।

इस दल मे सभी राष्ट्रो के गुणी और अच्छे आदमी शामिल करने चाहिएँ जो निश्चय ही अच्छे और बुद्धिमत्ता से बनाये हुए नियमो का पालन करेंगे। साधारण नियमो का साधारण व्यक्तियो द्वारा अनुसरण किये जाने से कही अच्छा, सुधी व्यक्तियो का एकमत होकर नियमो का पालन करना होगा।

" इस समय मैं यह सोच रहा हूँ कि जो भला आदमी इस योजना को शुरू करेगा, ईश्वर उस पर अवश्य प्रसन्न होगे और उसकी सफलता तो निश्चित है ही।—बी० एफ०।"

पूरी योजना तैयार करने के बाद मैंने निश्चय किया कि अवकाश मिलते ही सबसे पहला काम यही करूँगा। इसी उद्देश्य से समय-समय पर इससे सम्बन्धित जो विचार मेरे मन मे आते, मैं उन्हे कागज के टुकडो पर लिख लेने लगा। उनमे से अधिकतर अब खो चुके है लेकिन एक बचा रह गया है जिस पर मेरे प्रस्तावित मत का सार मौजूद है, और मैं सोचता हूँ कि ससार के किसी भी ज्ञात धर्म की आवश्यक बातें इसमे हैं। साथ ही इससे किसी भी धर्मावलम्बी को चोट नही पहुँच सकती। मेरा आशय निम्न शब्दो मे लिखा हुआ है :

" ईश्वर एक है जिसने सारी दुनिया को बनाया है।

" वह अपनी शक्ति से ससार पर शासन करता है।

" उसकी पूजा हम सबको करनी चाहिए—उसके प्रशस्ति-गीत गाकर, प्रार्थना करके और उसे धन्यवाद देकर।

" ईश्वर की सबसे अच्छी सेवा मानव मात्र का हित करना है।

" आत्मा अमर है।

" ईश्वर निश्चयत. भले कामो को पुरस्कृत करता है और बुरे कामो के लिए दड देता है, चाहे यहाँ चाहे यहाँ के बाद।"

उस समय मेरा विचार था कि इस मत का प्रारम्भ सबसे पहले नवयुवक अविवाहितो के ही बीच शुरू करना और फैलाना चाहिए ;

और हर आदमी को केवल यह आश्वासन देने पर ही अपने मत मे शामिल नही कर लेना चाहिए कि वह इसका पालन करेगा, बल्कि उसे गुणो को प्राप्त करने वाला तेरह हफ्तो के कोर्स का भी पहले ही अभ्यास करना चाहिए। मेरा विचार यह भी था कि जब तक हमारे मत मे काफी आदमी न हो जाये, तब तक इसे गुप्त ही रखा जाये, जिससे अवाछित व्यक्ति इसमें प्रवेश न पा सकें। प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य होगा कि वह अपने परिचितो मे से ऐसे विवेकवान और अच्छे स्वभाव वाले नवयुवक ढूंढे जिनको बडी सावधानी से धीरे-धीरे इस मत के बारे मे बताया जाये; सदस्यो का यह कर्त्तव्य भी हो कि वे एक-दूसरे के हितो, व्यापार और जीवन मे उन्नति के लिए परस्पर सलाह और सहायता दें। मैं सोचता था कि दूसरे सम्प्रदायो से अलग करने के लिए इसका नाम "स्वतत्र और सरलप्रकृति व्यक्तियो का समाज" (The Society of the Free and Easy) रखा जाये—स्वतत्र, क्योकि गुणो को प्राप्त करने के अभ्यास और आदत के फलस्वरूप दुर्गुणो के शासन से मुक्त, और विशेष रूप से अध्यवसाय और मितव्ययता के कारण कर्ज से स्वतत्र, जिसके वश मे होकर आदमी को अपना मुंह छिपाना पडता है और अपने कर्जदारो का एक प्रकार से गुलाम बन जाना पड़ता है।

इस योजना के बारे मे मैं इतना ही याद कर सकता हूँ; हाँ इतना और, कि इसके बारे मे मैंने दो नवयुवकों को थोड़ा-थोडा बताया था जिन्होने कुछ उत्साह से इसका पालन भी शुरू कर दिया था लेकिन मेरी कठिन परिस्थितियो की वजह से आवश्यक था कि मैं अपने व्यापार पर पूरा ध्यान दूं, जिसके कारण मैं इस योजना को आगे बढ़ाना टालता गया। बाद मे सार्वजनिक और व्यक्तिगत अनेक प्रकार के कामो मे मैं इस कदर फँसता गया कि इसकी बात टलती ही गई, यहाँ तक कि इतनी टल गई कि अब ऐसा काम करने के लिए मुझमे शारीरिक शक्ति ही नही रह गई। आज भी मेरी राय यही है कि इस योजना को कार्या-

न्वित किया जा सकता है और यह बडी लाभदायक सिद्ध हो सकती है, चूंकि इसका पालन करने वाले व्यक्ति निश्चय ही अच्छे नागरिक होगे। मैं इस काम की प्रत्यक्ष विशालता को देखकर घबराया कभी नही क्योकि मैं हमेशा विश्वास करता रहा हूँ कि कम योग्यता वाला व्यक्ति भी महान् परिवर्तन कर सकता है, बशर्ते कि वह एक अच्छी योजना बनाये और सारे मनोरजनो तथा ध्यान बँटाने वाले कामो को बन्द करके उस योजना को पूरा करना ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य बना ले।

१७३२ में मैंने रिचर्ड सांडर्स नाम से अपना पहला वर्ष-बोध (Almanack) प्रकाशित किया। उसके बाद लगभग २५ वर्ष तक मैंने इसे जारी रखा और यह "बेचारे रिचर्ड का वर्ष-बोध" नाम से प्रसिद्ध हो गया। मेरी कोशिश इसे मनोरंजक और लाभदायक दोनो बनाने की हुआ करती थी, इसलिए कुछ समय बाद उसकी इतनी माँग होने लगी कि मुझे काफी लाभ होने लगा—मेरी आय दस हजार पौंड सालाना हो गई। मैंने देखा कि उसे काफी लोग पढते थे और सूबे के हर कोने मे वह पहुँचता था, इसलिए सोचा कि साधारण आदमियो के बीच, जो इस के अलावा कोई किताब नही खरीद सकते, इसीसे शिक्षा दी जाये। इसलिए मैंने कैलेंडर के विशिष्ट दिनो के बीच की छोटी-छोटी जगहो मे आदर्श वाक्य छापने शुरू कर दिये, मुख्यत ऐसे आदर्श वाक्य जो अध्यवसाय और मितव्ययिता को धन तथा अन्य गुण प्राप्त करने का उपाय बतायें। क्योकि अभाव मे रहने वाले व्यक्ति के लिए हमेशा ईमानदारी से काम करना असम्भव है, पर अगर कहावत कहूँ तो यूँ कहूँगा कि खाली बोरा सीधा नही खडा रह सकता।

अनेक युगों और राष्ट्रो के विवेक को अपने मे समोये रखने वाली कहावतें मैंने तब एक जगह इकट्ठी की और उन्हें एक माला मे गूँथकर १७५७ के वर्ष-बोध मे लगा दिया। इनको रूप यह दिया गया कि एक वृद्ध विवेकशील पुरुष नीलामघर मे खडा लोगो को उपदेश दे रहा है। बिखरे हुए आदर्श वाक्यो को इस प्रकार एकत्र कर देने पर लोगो पर उनका

अधिक प्रभाव पड़ने लगा। सारी जनता ने उसे पसन्द किया तो महाद्वीप के सब अखबारो ने उसे पुनर्मुद्रित किया। इगलैंड मे उसके पोस्टर बनवाकर घरों में लगाये गये, फ्रेंच भाषा मे दो अनुवाद हुए और पादरियों तथा जमीदारो ने क्रमशः अपने मतावलम्बियों और किरायेदारों के बीच मुफ्त बाँटने के लिए उन्हे बडी सख्या मे खरीदा। पेंसिलवानिया में चूंकि इसकी वजह से लोगो ने अनावश्यक वस्तुएँ खरीदनी कम कर दी, इसलिए कुछ लोग यह भी सोचने लगे कि इसी कारण देश में समृद्धि बढने लगी, क्योकि उसके प्रकाशन के बाद कई वर्षों मे यह समृद्धि स्पष्ट मालूम होने लगी थी।

अपने अखबार को मैंने शिक्षा देने का दूसरा साधन बनाया और इस उद्देश्य से मैं अक्सर 'स्पेक्टेटर' तथा दूसरे आदर्शवादी लेखको के उदाहरण उसमें प्रकाशित करने लगा। कभी-कभी अपनी लिखी हुई छोटी-छोटी रचनाएँ भी उसमे छाप दिया करता था जो किसी समय 'जटो' मे पढ़ने के लिए लिखी गई थी। इसमे से एक था सुकरात की शैली पर लिखा हुआ वार्तालाप जिसमे सिद्ध किया गया था कि अपने गुणो और अच्छाइयो के बावजूद दुश्चरित्र व्यक्ति समझदार आदमी नही कहा जा सकता; आत्मत्याग पर भी एक लेख लिखा था, जिसमे दिखाया गया था कि जब तक गुणो को रखने की आदत नही पडती और इनके विपरीत रुझानो से स्वतंत्रता नही मिल जाती तब तक व्यक्ति के गुण पूरी तरह सुरक्षित नही होते। १७३५ की शुरुआत मे लिखे हुए मेरे कागजो मे तुम्हे ये बातें मिल सकती हैं।

अपने अखबार की नीति मैंने इस तरह निर्धारित की कि उसमे व्यक्तिगत मनोमालिन्य अथवा पर-दोषारोपण सम्बन्धी बातें न प्रकाशित हो। दुःख है कि कुछ वर्षों से हमारे देश मे ऐसी बातें प्रकाशित करने का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। जब मुझसे इस तरह की कोई चीज प्रकाशित करने को कहा जाता था और उनके लेखक स्वभावतः दलील करते थे कि प्रेस की स्वाधीनता भी आखिर कोई चीज है और समाचार-

पत्र किराये की बग्घी की तरह ही होता है तो इसका जवाब मैं यो देता कि अगर वह चाहे तो मैं अलग से जितनी प्रतियो की उनकी माँग हो छाप सकता हूँ, जिन्हे वे अपने आप वितरित कर ले, मैं स्वय ऐसी बातें प्रचारित करने का भागीदार नही बनना चाहता। मैं कहता कि मैंने अपने ग्राहको को लाभदायक और मनोरजक बातें देने का वादा किया है और मैं उनके अखबार को अगर व्यक्तिगत लडाई-झगडो से भर दूं जिनसे उन्हें कोई दिलचस्पी नही है, तो यह उनके प्रति घोर अन्याय ही होगा। अब हमारे कुछ मुद्रक लोगो के व्यक्तिगत मनमुटावो को प्रकाशित करने मे कोई हानि नही समझते जिनमे अच्छे से अच्छे व्यक्तियो पर कीचड उछाला जाता है, जिसका परिणाम इतनी शत्रुता मे होता है कि द्वन्द्व-युद्धो की नौबत तक आ जाती है। इतना ही नही, उनकी निर्णय-बुद्धि इस कदर कम हो गई है कि वे पडोसी राज्यो की सरकारो पर भी कीचड उछालने वाली बातें छापते हैं। यही हाल हमारे मित्र-राष्ट्रो का भी किया जाता है और इन सबका परिणाम अत्यन्त भयानक हो सकता है। ये बातें मै नौजवान मुद्रको को सावधान करने के लिए लिख रहा हूँ कि इन गदी बातो को वे अपने अखबारो मे प्रवेश न करने दें और अपने धन्धे का अनादर न करें, बल्कि दृढता से इन्कार कर दें, क्योकि मेरे उदाहरण से वह देख सकते हैं कि ऐसा करना उनके लिए हानिकारक नही साबित होगा।

१७३३ मे मैंने अपने एक कर्मचारी को दक्षिण कैरोलाइना राज्य मे स्थित चार्ल्सटन भेज दिया क्योकि वहाँ एक मुद्रक की बडी जरूरत थी। मैंने उसे एक प्रेस और टाइप दिये और एक इकरारनामे पर हम दोनो ने दस्तखत किये जिसके अनुसार ⅓ खर्च दे देने के बाद जो लाभ होगा, उस का ⅓ भाग मुझे मिलता रहेगा। वह शिक्षित व्यक्ति था, ईमानदार भी था, लेकिन हिसाब-किताब रखने मे बडा कमज़ोर था, और यद्यपि कभी-कभी वह मुझे कुछ भेज दिया करता था लेकिन उसके जीते-जी मैं उससे पूरा हिसाब और अपने साझे का विवरण नही पा सका। उसकी मृत्यु

हो जाने के बाद उसकी विधवा ने काम जारी रक्खा। उसका जन्म और पालनपोषण हालैण्ड मे हुआ था, जहाँ मुझे बताया गया है, स्त्रियो को बहीखाता रखने की शिक्षा अवश्य दी जाती है। उसने बीते दिनो की जितनी अच्छी रिपोर्ट हो सकती थी दी और बाद मे व्यवस्थित रूप से और उचित ढंग से हर तीसरे महीने मुझे मेरा भाग भेजना शुरू कर दिया। उसने इतनी सफलता से काम चलाया कि अपने बच्चो को सम्मान-जनक ढग से पोषित तो किया ही साथ ही समझौते की मियाद पूरी होने पर उसने प्रेस मुझसे खरीद लिया और अपने लडके को उसका प्रबन्धक बना दिया।

मैंने इस घटना को इसलिए बताया है कि स्पष्ट मालूम हो जाये कि हमारे देश की युवतियो को बहीखाते की शिक्षा देना कितना जरूरी है। विधवा हो जाने पर सगीत और नृत्य से कही अधिक काम मे आने वाली यही शिक्षा है। क्योंकि इसी के बल पर वे चालाक आदमियों के हथकंडो से बच सकती है और शायद एक लाभदायक सस्था का सचालन भी कर सकती हैं जब तक कि उनका कोई बच्चा बडा होकर व्यापार को सँभाल न ले ; इसी शिक्षा के बल पर वे अपने परिवार को लाभान्वित भी कर सकती हैं और समृद्धि भी बढा सकती है।

१७३४ के लगभग आयरलैंड से हेमफिल नामक एक नौजवान प्रेसबैटीरियन धर्मोपदेशक हमारे बीच आये। वह बडी अच्छी आवाज मे बहुत अच्छे प्रवचन दिया करते थे, मानो सारी बातें वही की वही उनके दिमाग मे आती जा रही हैं और वे बोलते जा रहे है। उन प्रवचनो को सुनने के लिए अनेक धन्धो मे लगे हुए लोग इकट्ठे होते और उनकी प्रशसा करते। दूसरे लोगो के साथ-साथ मैं भी नियमित रूप से सुनने जाने लगा क्योंकि उनके प्रवचनो मे अन्धविश्वास की बातें कम होती थी और गुणो को उत्पन्न करने पर ही जोर दिया जाता था—धर्म की भाषा मे जिन्हें भले काम कहा जाता था—और इसीलिए वे प्रवचन मुझे अच्छे लगते थे। हम मे से जो आदमी अपने को सनातन प्रेसबैटीरियन कहते

थे वे नवयुवक उपदेशक की धर्मनीति से सहमत नही थे। उन लोगो का साथ देने वाले थे बूढे पादरी जिन्होने पादरियो की एक पचायत के सम्मुख उस पर धर्मविरोधी होने का दोष लगाया जिससे उसके प्रवचन बन्द हो जायें। मै नवयुवक पादरी का जोरदार समर्थक हो गया; उसके लिए एक दल खडा करने की मैंने पूरी कोशिश की और हम लोगो ने सफलता की आशा सहित काफी समय तक विरोध का सामना किया। उस अवसर पर दोनो ओर से खूब लेख लिखे गये और मैंने पाया कि बहुत अच्छे वक्ता होते हुए भी वे लेखक अच्छे नही हैं, इसलिए मैंने दो-तीन पैम्फलेट उनके नाम से लिख दिये और अप्रैल १७३५ के गजट मे भी एक लेख प्रकाशित किया। किसी के विरोध मे लिखे गये लेखो की तरह मेरे पैम्फलेट भी उस समय तो बडी उत्सुकता से पढे गये लेकिन जल्दी ही भुला दिये गये। मुझे आशा नही है कि उनमे से किसी की कोई भी प्रति कही सुरक्षित होगी।

इस वाग्युद्ध मे दुर्भाग्यपूर्ण घटना से हेमफिल के पक्ष को बहुत धक्का लगा। हमारे एक विरोधी ने कभी उनका प्रवचन सुन लिया था, जिसकी बडी प्रशसा की जाती थी। उसके विचार से यह प्रवचन या शायद इसका एक हिस्सा ही वह पहले कही पढ चुका था। खोजने पर उसे पता लगा कि यह प्रवचन 'ब्रिटिश रिव्यूज़' मे विस्तृत रूप से दिया हुआ था और डाक्टर फास्टर के प्रवचन का एक भाग था। इस खोज से हमारे दल के कई सदस्यो को बडा बुरा लगा और उन्होने हेमफिल का पक्ष लेना बन्द कर दिया, जिसके फलस्वरूप पादरियो की सभा मे हमे बहुत जल्दी नीचा देखना पडा। फिर भी मैं हेमफिल के साथ बना रहा क्योकि मेरे विचार से दूसरो के लिखे हुए अच्छे प्रवचनो को सुनाना अपने लिखे हुए बुरे प्रवचनो को सुनाने से कही ज्यादा अच्छा है, यद्यपि विरोधी दल के पादरी दूसरी विधि को ही अपनाते थे। बाद मे हेमफिल ने मुझसे स्वीकार किया कि जो प्रवचन वे दिया करते थे उनमे से कोई भी प्रवचन उनका अपना मौलिक नही था; उन्होने यह भी बताया कि उनकी

स्मरण-शक्ति इतनी अच्छी है कि केवल एक बार पढ़ लेने के बाद ही वह किसी भी प्रवचन को याद रख सकते है और मौका पड़ने पर सुना सकते हैं। पराजय के बाद वे हमे छोड़कर कही और किस्मत आजमाने चले गये। उनके जाते ही मैंने प्रार्थना-सभाओ मे जाना छोड दिया और भविष्य मे कभी उधर का रुख नही किया, हालाकि उसके पश्चात् भी कई वर्षों तक पादरियों के खर्च के लिए चन्दा देता रहा।

१७३३ मे मैंने विभिन्न भाषाओं को पढना शुरू कर दिया था और कुछ ही समय मे मैंने फ्रेंच भाषा इतनी सीख ली कि आसानी से उसकी पुस्तके पढने लगा। तब मैंने इटालियन पढना शुरू किया। मेरा एक परिचित भी इटालियन सीख रहा था। वह अक्सर मुझे शतरंज खेलने मे लगा दिया करता था। मैंने देखा कि पढने के लिए मैं जो समय निकाल पाता था उसका काफी हिस्सा शतरज मे ही निकल जाता था, इसलिए मैं एक शर्त पर खेलना मजूर करने लगा कि जीतने वाला दूसरे आदमी को व्याकरण याद करने या अनुवाद करने का काम देने का अधिकारी होगा और यह काम ईमानदारी से हमारी अगली मुलाकात तक कर डालना होगा। हम दोनों ही बराबरी का खेलते थे, इसलिए भाषा सीखने मे भी हममें होड-सी लग गई। बाद में कुछ और परिश्रम करके मैंने इतनी स्पेनिश भी सीख ली कि उस भाषा की पुस्तकें पढ लेने लगा।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि लैटिन स्कूल मे मैं केवल एक ही साल पढ सका था और बाद मे उस भाषा को सीखने का अवसर ही न पा सका था। लेकिन जब मैंने फ्रेंच, इटालियन और स्पैनिश भाषाएँ सीख ली तो एक दिन लेटिन टैस्टामेन्ट को उलटते हुए आश्चर्य से मैंने पाया कि मैं उस भाषा को भी अपनी कल्पना से कही अधिक समझता था। इससे उत्साहित होकर मैंने फिर से लैटिन पढना आरम्भ कर दिया और चूंकि पहली तीनो भाषाओ के ज्ञान ने मेरा रास्ता काफी साफ कर दिया था, इसलिए मैं उसे भी आसानी से सीख गया।

इन बातों से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि जिस विधि से हमे भाषाएँ पढाई जाती है उसमे कही कोई गलती ज़रूर है। हमे बताया जाता है कि लैटिन से शुरू करना ठीक है और उसे जान लेने के वाद उसीसे प्रसूत आधुनिक भाषाओ को जानना ज्यादा आसान होता है; उस पर मजा यह कि हम लैटिन ज्यादा आसानी से सीखने के लिए ग्रीक भाषा पहले नही सीखते। यह सच है कि अगर सीढियो का इस्तेमाल किए बिना आप छत पर पहुँच जायें तो सीढियो पर कदम रखते हुए उतरना बडा आसान होता है, लेकिन निश्चय ही अगर आप पहली सीढी से शुरू करें तो अधिक आसानी से ऊपर पहुँच सकेंगे। और इसलिए मैं अपने नौजवानो की शिक्षा के प्रबन्धको से प्रार्थना करना चाहूँगा कि कई वर्षों तक लैटिन पढने परन्तु उसमे अधिक योग्यता प्राप्त न कर सकने के वाद अनेक नवयुवक पढना छोड देते हैं और इस तरह जो कुछ उन्होने सीखा होता है वह तो व्यर्थ हो ही जाता है साथ ही उनका काफी समय भी नष्ट हो जाता है, इसलिए क्या यह अधिक अच्छा न होगा कि वे फ्रेंच से शुरू करके इटालियन आदि सीखते हुए आगे वढें? हो सकता है कि कुछ समय पढ़ने के बाद वे भाषाएँ सीखना ही छोड़ दें और वे लैटिन तक पहुँचें ही नही, फिर भी कम से कम एक-दो भाषाएँ तो ऐसी सीख ही जायेंगे जो आज के जमाने मे बोली जाती हैं। इससे उनके रोजमर्रा के जीवन मे लाभ तो होगा ही।

दस साल तक बोस्टन से वाहर रहने और अपनी परिस्थितियो को अधिक अनुकूल बना लेने के वाद अपने सम्बन्धियो से मिलने मैं वहां गया। इससे पहले धन की कमी के कारण जाना सम्भव ही नही था। लौटते समय न्यूपोर्ट मे मैं अपने भैया से मिलने गया, जिन्होने वहा अपना एक छापाखाना स्थापित कर लिया था। हम दोनो के पहले के मतभेद अब खत्म हो चुके थे और वे मुझसे वडे सौहार्द्रपूर्वक तथा प्रेम से मिले। उनका स्वास्थ्य वडी शीघ्रता से गिरता जा रहा था और उन्होने मुझसे अनुरोध किया कि उनकी मृत्यु हो जाने पर मैं उनके दशवर्षीय पुत्र

को अपने साथ ले जाऊँ और छापेखाने का कारोबार उसे सिखा दूँ। बाद मे उनकी इच्छा के अनुसार ही मैंने काम किया और उनके पुत्र को काम सिखाने से पहले कुछ वर्षों तक स्कूल मे शिक्षा भी दी। जब तक वह बडा नही हो गया तब तक उसकी मा व्यापार चलाती रही और जब वह बडा हो गया तो मैंने उसे कुछ नये टाइप भी खरीद दिये, क्योंकि उसके पिता के समय के टाइप काफी घिस गये थे। जल्दी ही उनका साथ छोडकर चले आने से मैंने जिस प्रकार अपनी सेवाओं से उन्हें वंचित किया था, उसका पूरा मुआवजा मैंने इस तरह चुका दिया।

१७३६ मे मेरे एक लडके की मृत्यु हो गई। उसकी उम्र केवल ४ वर्ष की थी और वह बडा खूबसूरत था लेकिन उस पर चेचक का आक्रमण हुआ और वह बेचारा बचा नही। मुझे बडा खेद हुआ और आज भी होता है कि मैंने उसे चेचक का टीका नही लगवाया था। यह घटना मैं उन माता-पिताओ के लिए बता रहा हूँ जो अपने बच्चो को टीका नही लगवाते, क्योंकि हो सकता है कि उन्हें भी मेरी ही तरह दुखी होना पडेगा, अगर उनका बच्चा भी मेरे बच्चे की तरह इसी बीमारी का शिकार हुआ हो। मेरे उदाहरण से यह सिद्ध हो जाता है कि बच्चे की मृत्यु का शोक तो प्रत्येक दशा मे होता ही है लेकिन सुरक्षा का ध्यान पहले से रखा जाये तो अधिक अच्छा होता है।

हमारा क्लब, "जन्टो" इतना लाभदायक साबित हुआ था और सदस्यो को इतना संतोष हुआ था कि कुछ लोग अपने मित्रो को भी उसका सदस्य बनाना चाहते थे। ऐसा तभी किया जा सकता था जब हम निर्धारित सदस्य संख्या १२ से ज्यादा सदस्य बनाते। शुरू से ही हमने अपनी संस्था को गुप्त रखने का विचार किया था और इसका पालन भी भली प्रकार किया था; उद्देश्य यह था कि अवांछित आदमियो का प्रवेश इसमे न होने दिया जाये क्योकि उनमे से कुछ ऐसे भी हो सकते थे जिनकी प्रार्थना को अस्वीकृत करने मे हमे बडी कठिनाई होती। मैं उन व्यक्तियो मे से था जो सख्या बढाने के पक्ष मे नही थे। हम लोगों

ने एक लिखित प्रस्ताव रखा कि हममे से प्रत्येक सदस्य एक सहायक क्लब बनाये जिसके नियम बिलकुल हमारे क्लब के नियमो की तरह ही हो; साथ ही इन क्लबो का 'जन्टो' के साथ सम्बध बिलकुल ही न दिखाया जाये। ऐसे क्लबो से लाभ यह होगा कि इन संस्थाम्रो से म्रनेक नवयुवक नागरिको का विकास होगा, उस अवसर पर नागरिको की विचारधारा से अधिक अच्छी तरह परिचय मिल सकेगा। 'जन्टो' के सदस्यो से कहा जायेगा कि वे अपने-अपने क्लबो मे कुछ विशेष प्रश्न पूछें और बाद मे आकर बतायें कि वहा क्या हुआ। इन क्लबो से यह लाभ भी होगा कि हम अपने-अपने धधो को अधिक अच्छी तरह बढा सकेंगे, सार्वजनिक क्षेत्र मे हमारा प्रभाव अधिक होगा और 'जन्टो' की विचारधारा को कई क्लबो द्वारा प्रचारित करके हम अपनी भलाई करने की शक्ति को बढा सकेगे।

यह योजना स्वीकृत हो गई और हर सदस्य ने अपना-अपना क्लब बनाने का निश्चय किया, यद्यपि सफल सभी नही हो सके। केवल ५, ६ क्लब बन सके जिनके अलग-अलग नाम रखे गए, 'वाइन', 'यूनियन', 'बैंड' इत्यादि। वे अपने मे ही काफी लाभदायक थे और हमे भी मनोरजन, सूचनाएँ, और ज्ञान प्रदान करते थे; विशेष अवसरो पर जनमत को हम कितना प्रभावित कर सके है इसका उत्तर भी हमे उनसे मिलता था। इस आखिरी बात के उदाहरण मैं उचित अवसर पर दूंगा।

मेरी पहली तरक्की १७३६ मे हुई जब मै जनरल असेम्वली का क्लर्क चुना गया। उस साल तो यह चुनाव निर्विरोध हुआ लेकिन अगले साल भी जब मेरा नाम प्रस्तावित किया गया (सदस्यो की तरह क्लर्क का चुनाव भी हर साल हुआ करता था) तो एक नये सदस्य ने मेरे विरोध मे लम्बा भाषण दिया जिससे कोई दूसरा उम्मीदवार चुन लिया जाये। फिर भी चुनाव मे विजय मेरी ही हुई, और यह मेरे अनुकूल भी था क्योकि क्लर्क की हैसियत से मुझे तनख्वाह तो मिलती ही थी, साथ ही इस पद पर होने की वजह से मैं सदस्यो के अधिक

समीप रह सकता था जिससे मुझे अपने छापेखाने के लिए चुनाव-पत्र, कानून, कागज के नोट और समय-समय पर निकलने वाले दूसरे सार्वजनिक काम भी मिल सकते थे। कुल मिलाकर यह पद मेरे लिए बडा लाभदायक था।

मैंने इसीलिए इस नये सदस्य का विरोध पसन्द नही किया। यह नया सदस्य धनी और शिक्षित व्यक्ति था और उसमे इतनी योग्यता थी कि भविष्य मे उसके असेम्बली मे काफी प्रभावशाली व्यक्ति बनने की संभावना थी, और सचमुच हुआ भी ऐसा ही। मैंने उसे अपने पक्ष मे करने के लिए अपने को नीचे गिराकर उसका सम्मान नही किया, बल्कि कुछ समय बाद निम्नलिखित दूसरा तरीका अपनाया। मैने सुना कि उनकी लायब्रेरी मे एक बहुत अनोखी और अप्राप्य पुस्तक है और उन्हे एक खत लिखा कि मै उस किताब को पढना चाहता हूँ और अगर वह कुछ दिनो के लिए मुझे दे सकें तो मै बडा अनुगृहीत रहूँगा। उन्होने किताब फौरन भेज दी और एक हफ्ते बाद मैंने दूसरे पत्र के साथ उसे वापस कर दिया जिसमे मैंने इसके लिए उन्हे बहुत धन्यवाद दिया था। अगली बार जब हम सदन मे मिले तो उन्होने मुझसे बडी शालीनतापूर्वक बातें की, जैसा पहले कभी नही किया था और उसके बाद हमेशा मेरे लिए कुछ भी कर सकने को तैयार रहते थे जिसके फलस्वरूप हम दोनों गहरे मित्र बन गये और हमारी मित्रता उनकी मृत्यु तक कायम रही। इससे एक पुरानी कहावत की सत्यता स्पष्ट सिद्ध हो जाती है। कहावत है : **जो आदमी किसी के साथ एक बार अच्छा व्यवहार करता है वह हमेशा यही करने की कोशिश करता है लेकिन आप जिसके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं वह हमेशा ऐसा नहीं करता।** और इससे यह भी साबित हो जाता है कि किसी भी विरोध को बढाने और जारी रखने से कही अधिक अच्छा यह होता है कि उसे बुद्धिमत्तापूर्वक समाप्त कर दिया जाये।

१७३७ के वर्जीनिया के भूतपूर्व गवर्नर और तत्कालीन पोस्टमास्टर

कर्नल स्पॉट्सवुड फिलाडेल्फिया मे अपने सहायक से बड़े असन्तुष्ट हो गये थे क्योकि वह उनके हिसाव-किताव को ठीक से नही रखता था और रजिस्टरो पर उतारने मे वडी असावधानी से काम लेता था। कर्नल ने उसे बरखास्त कर दिया और वह पद मुझे देना चाहा। मैने इसे फौरन स्वीकार कर लिया और वडा लाभदायक पाया। तनख्वाह यद्यपि कम थी, लेकिन इससे जो पत्र-व्यवहार हुआ उससे मेरे अखवार की उन्नति हुई, उसकी बिक्री वढी और छापने के लिए अधिक विज्ञापन मिलने लगे। इस तरह कुल मिलाकर मुझे काफी आमदनी होने लगी। मेरे पुराने विरोधी का अखवार इसी अनुपात मे गिरता गया और मैने उसके उस काम का वदला नही लिया जव पोस्टमास्टर की हैसियत से उसने सवारो द्वारा मेरे अखवारो को ले जाने से मना कर दिया था। इस तरह वह अपना हिसाव-किताव ठीक न रखने की वजह से काफी घाटे मे रहा। यह घटना मैने नवयुवको को शिक्षा देने को सुनाई है कि दूसरो का प्रवन्ध करते समय वे हमेशा हिसाब-किताव ठीक रखें और स्पष्टतापूर्वक ठीक समय पर भुगतान कर सकें। नई नौकरी और व्यापार की समृद्धि के लिए सब से अधिक शक्तिशाली जो सलाह दी जा सकती है वह यही है।

अब मैंने अपना थोडा ध्यान सार्वजनिक कार्यों की ओर देना शुरू किया और शुरूआत बहुत छोटे कामो से की। सबसे पहले मेरा ध्यान शहर के पहरेदारो की तरफ गया जिनका प्रवन्ध बडा अनियमित था। पहरे का प्रवन्ध विभिन्न वार्डों के सिपाही बारी-बारी से करते थे; सिपाही कुछ लोगो से अपने साथ पहरा देने को कह दिया करते थे। जो लोग यह पसन्द नही करते थे, वे मुआवजे के रूप मे उन्हे छह शिलिंग वार्षिक दे दिया करते थे। यह रकम इसलिए होती थी कि उनकी जगह पर दूसरा आदमी रक्खा जाए, लेकिन वास्तव मे यह आवश्यकता से कही ज्यादा थी और सिपाहियो को अच्छा खासा लाभ हो जाया करता था। सिपाही थोडी-सी शराब के वदले मे ऐसे आदमियो को पहरेदार बना

लिया करते थे जिनके साथ रहना भले आदमी पसन्द नही करते थे। पहरे पर भी अक्सर पहरेदार नही पहुंचते थे, बल्कि शराब के नशे मे धुत्त पडे रहते थे। इसलिए मैंने एक निबन्ध "जन्टो" मे पढ़ने के लिए लिखा, जिसमे मैंने इन अनियमितताओ पर प्रकाश डालते हुए जोरदार शब्दो मे कहा कि सिपाहियो को दिया जाने वाला छह शिलिंग का कर ठीक नही है। उदाहरण के लिए एक विधवा दाई पर, जिसके पास सुरक्षित रखने के लिए ५० पौंड से अधिक का सामान नही है, और किसी धनी व्यापारी पर, जिसके मालगोदाम में हज़ारो पौंड की कीमत का सामान भरा रहता है, एक ही कर लगाया जाना अनुचित है।

मैंने यह प्रस्ताव रखा कि सुचारु रूप से पहरे के लिए आवश्यक है कि ऐसे आदमी नौकर रख लिये जायें जो यही काम करे, और कर का उचित विभाजन जायदाद के अनुपात मे किया जाय। "जन्टो" मे इस विचार को स्वीकार कर लेने के पश्चात् इसे दूसरे क्लबों मे भी इस तरह पेश किया गया मानो इसकी उत्पत्ति उसी क्लब मे हुई हो। यद्यपि यह योजना तुरन्त कार्यान्वित नही हुई, लेकिन कम से कम इससे जनसाधारण के मस्तिष्क तो परिवर्तन के लिए तैयार हो गये और इस तरह इसने वह रास्ता बनाया जिस पर चलकर कुछ वर्षो बाद, जब हमारे क्लबों के सदस्य अधिक प्रभावशाली हो गये, एक कानून बन सका।

लगभग इसी समय मैंने एक निबन्ध लिखा (यह पहले "जन्टो" में पढा गया और बाद मे प्रकाशित भी हुआ), जिसमे मैंने उन दुर्घटनाओं और असावधानियों के बारे मे लिखा था जिनके कारण मकानो में आग लग जाया करती थी ; इसके विरुद्ध सावधान किया था और बताया कि कि मकानो को आग लगने से कैसे बचाया जा सकता है। इसे बडा लाभदायक निबन्ध समझा गया और एक योजना का जन्म हुआ कि आग बुझाने के लिए एक कम्पनी बनाई जाय जो खतरा होने पर सामान हटा कर दूसरी जगह सुरक्षित रख सके। यह योजना बहुत जल्दी कार्यान्वित

की गई। लगभग तीस सहयोगी फौरन मिल गये। इसके नियमो के अनु-सार आवश्यक था कि हर सदस्य हमेशा काम करने के लिए तैयार रहे और चमडे की कुछ बाल्टिया, थैले, टोकरियाँ (जिनका उपयोग सामान को बाधने और दूसरी जगह हटाने मे किया जाए) हमारे पास हमेशा रहे ; जो कही आग लगने पर वहाँ फौरन पहुचाई जाए। हमने तय किया कि महीने मे एक बार हम एक स्थान पर मीटिंग करेंगे और एक शाम इसी मे खर्च कर देंगे कि इस बीच आग बुझाने के मसले मे हमने कोई नई चीज सोची हो तो उसे दूसरो को बताया जाए जिससे अवसर पडने पर फायदा उठाया जा सके।

इस सस्था की उपयोगिता जल्दी ही सिद्ध हो गई और इतने अधिक लोग इसके सदस्य बनने के इच्छुक हो गए, जितने हम सुविधाजनक नही समझते थे। इसलिए हमने उन्हें दूसरी कम्पनी बनाने की सलाह दी, जो कुछ ही दिनो के भीतर बन गई। यही क्रम चलता गया और एक के बाद दूसरी कम्पनियाँ बनती गईं, यहाँ तक उनकी सख्या इतनी अधिक हो गई, कि शहर के अधिकाश समृद्धिशाली व्यक्ति उनमे शामिल हो गये। "यूनियन फायर कम्पनी" की स्थापना मैंने सबसे पहले आज से ५० वर्ष पहले की थी और यह आज भी स्थित है और फलफूल रही है, यद्यपि मुझे और मुझसे एक साल बडे एक अन्य सदस्य को छोडकर इसके सभी सस्थापक सदस्यो की मृत्यु हो चुकी है। जो लोग मासिक बैठको मे नहीं आते थे उन पर छोटे-छोटे नकदी के जुर्माने किये जाते थे, जिनसे आग बुझाने वाले इजिन, सीढियाँ, हुक और अन्य उपयोगी सामान खरीद लिये जाते थे। इसलिए आज मैं सोचता हूँ कि ससार के किसी दूसरे शहर मे आग बुझाने के इससे अधिक साधन मौजूद नही है। असल मे इन कम्पनियो के बनने के बाद जब भी कभी कही आग लगी तो एक-दो मकानो से ज्यादा नही फैली और कभी-कभी तो ऐसा हुआ है कि कोई मकान आधा भी नही जल पाया और आग बुझा दी गई।

१७३९ मे आयरलैंड से सम्माननीय श्री व्हाइटफील्ड हमारे बीच

श्राए। उन्होंने भ्रमणशील धर्मोपदेशक के रूप मे बडी ख्याति प्राप्त की थी। शुरू-शुरू मे तो उन्हें गिरजाघरों मे अपने प्रवचन देने की आज्ञा दे दी गई, लेकिन पादरी किसी बात से नाराज हो गये और गिरजाघरो मे उनका प्रवेश निषिद्ध ठहरा दिया गया। फलस्वरूप उन्हे खुले मैदान मे अपने प्रवचन देने के लिए बाध्य होना पड़ा। सभी मतों और श्रेणियो के लोग बडी संख्या मे उनके उपदेश सुनने को पहुचते थे और मैं भी उनमे से एक था। यह देखकर मैं हैरान था कि वे जनता को विश्वास दिलाते थे कि प्रत्येक व्यक्ति 'आधा जानवर तथा आधा दानव है', लेकिन इसके बावजूद उनके वक्तव्य का इतना गहरा असर सुनने वालों पर पड़ता था कि वे उनकी बहुत इज्जत करते थे और प्रशसा करते तो थकते ही नही थे। नगर-निवासियो के मनोभावो मे ऐसा परिवर्तन देख कर मुझे बडा आश्चर्य हुआ और हर्ष भी। धर्म के बारे मे उनके कोई विचार नही होते थे और वे उदासीन रहते थे लेकिन अब ऐसा मालूम पडने लगा मानो सारा संसार ही धर्ममय हुआ जा रहा है; किसी शाम को शहर घूमने निकल जाइए तो हर सडक पर मकानो के भीतर गाये जाने वाले भजनों के स्वर सुनाई पडते रहते थे।

खुले मैदान मे धर्मसभाएँ करने मे बडी असुविधा होती थी क्योकि मौसम के आसरे पर रहना पडता था। इसलिए जल्दी ही सोचा गया कि सभाएँ किसी भवन मे होनी चाहिएँ। चन्दा इकट्ठा करने के लिए लोग नियुक्त कर दिये गये और जल्दी ही इतना धन एकत्र हो गया कि जमीन खरीद ली गई और १०० फुट लम्बी, ६० फुट चौडी लगभग वेस्टमिस्टर हाल के बराबर, एक इमारत बनाने का निश्चय हो गया। सारा काम इतने जोश से किया गया कि आशा से कही अधिक पहले समाप्त हो गया। भवन और मैदान दोनों का प्रबन्ध ट्रस्टियो के हाथ मे सौंप दिया गया और विशेष रूप से प्रबन्ध किया गया कि किसी भी धर्म के उपदेशक अगर फिलाडेल्फिया के निवासियो से कुछ कहना चाहे तो इस भवन का उपयोग निस्सकोच कर सकें; इसका निर्माण किसी विशेष

मत के अनुयायियो के लिए नही वल्कि सर्वसाधारण के लिए हुआ था। अगर कुस्तुनतुनियाँ के मुफ्ती भी कोई धर्मोपदेशक इस्लाम धर्म का प्रचार करने के लिए हमारे पास भेज देते तो उन्हे भी इस भवन का मच खुशी से मिल सकता था।

हमे छोडकर श्री व्हाइटफ़ील्ड अनेक उपनिवेशो मे उपदेश देते हुए जार्जिया जा पहुँचे। इस सूवे मे कुछ ही दिनो पहले लोगो ने वसना शुरू किया था, लेकिन वहाँ मजवूत परिश्रमी लोग नही पहुँचे थे जो खूब मेहनत कर सकते, ऐसे ही आदमियो की वास्तव मे वहाँ आवश्यकता थी, लेकिन पहुँचे वहाँ थे टूटे-फूटे दुकानदारो के परिवार तथा दूसरे दीवालिए कर्जदार। उनमे से अनेक वडे आलसी और सुस्त थे जो जेलो से निकालकर वहाँ भेज दिये गये थे। वे जगल साफ नही करते थे और नये उपनिवेश वनाने की कठिनाइयो को भी नही सहन कर सकते थे, फलस्वरूप वे अधिक सख्या मे मरते जा रहे थे और अपने पीछे अनेकानेक अनाथ बच्चे छोड जाते थे। इस दयनीय परिस्थिति को देखकर श्री व्हाइटफील्ड का दयालु हृदय द्रवित हो उठा और उन्होने वहाँ एक अनाथालय खोलने का विचार किया, जिससे उन अनाथ वच्चो का पालन और शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध किया जा सके। उत्तर के राज्यो मे वापस आकर उन्होने इस उद्देश्य से प्रवचन देना शुरू किया। उनकी वक्तृता का आश्चर्यजनक प्रभाव सुनने वालो के हृदय पर पडता था जिनमे से एक मैं भी था। इस तरह उन्होने काफी धन इस काम के लिए एकत्र कर लिया।

मै इस योजना से असहमत नही था, लेकिन जार्जिया मे मकान बनाने के सामान और मजदूर दोनो ही नही मिल सकते थे और फिलाडेल्फिया से काफी धन खर्च करके उन्हें वहा भेजने की योजना थी, इसलिए मैंने सोचा कि अनाथालय यही क्यो न खोला जाये और अनाथ बच्चो को यही ले आया जाये। यह सलाह मैंने उन्हें दी, लेकिन वे अपनी पहली योजना पर दृढ थे, इसलिए उन्होने मेरी बात नही मानी

और मैंने चन्दा देने से इन्कार कर दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद मैं उनका एक प्रवचन सुन रहा था और उनका इरादा समझ रहा था कि बाद मे वे चन्दा अवश्य मांगेंगे और मैंने मन ही मन तय कर लिया था कि मैं एक कौडी नही दूंगा। मेरी जेब मे उस समय तांबे के कुछ सिक्के, तीन चार चादी के डालर और सोने के पाँच "पिस्टोल" थे। वे बोलने लगे तो मेरा दिल पिघल गया और मैंने सोचा कि सारे ताबे के सिक्के दे डालूंगा। पर उनकी भाषण-कला के एक झटके से मुझे अपने इरादे पर शर्म आने लगी और मैंने तय कर लिया कि मै चादी के सभी डालर दे दूंगा। उन्होंने अपना भाषण इतने शानदार ढग से खत्म किया कि सोना-चादी समेत अपनी सारी जेब मैंने चन्दा इकट्ठा करने वाले व्यक्ति के पात्र मे उलट दी। इस प्रवचन मे हमारे ही क्लब का एक और सदस्य उपस्थित था, जार्जिया की इमारत के बारे मे जिसके विचार मेरे जैसे ही थे और उसे भी पहले से ही आशका थी कि सभा समाप्त होने पर चन्दा मांगा जायेगा, इसलिए वह पहले ही घर मे अपनी जेबे होश्यारी से खाली कर आया था। प्रवचन के समाप्त होते-होते उसमे चन्दा देने की इतनी उत्कट इच्छा उठी कि उसने पास खडे एक पडोसी से उधार मांगा। दुर्भाग्य से जिस आदमी से उसने प्रार्थना की शायद वही आदमी उस भीड मे ऐसा था जिसने धर्मोपदेशक से प्रभावित न होने की कसम खा रक्खी थी। उसने जवाब दिया, "दोस्त होपकिंसन, किसी दूसरे समय मांगो तो मैं दे सकता हूँ लेकिन अभी नहीं क्योंकि मुझे लगता है तुम अपने होश-हवास खो बैठे हो।"

श्री व्हाइटफील्ड के कुछ दुश्मनो ने यह प्रचारित करना शुरू कर दिया कि चन्दे से इकट्ठा किया हुआ धन वे अपने व्यक्तिगत काम मे खर्च कर देंगे, लेकिन मैं उन्हे भली प्रकार जानता था (क्योकि मैंने उनके प्रवचन और जरनल छापे थे) और मुझे उनकी ईमानदारी पर ज़रा भी शक नही था। मैं तो आज भी विश्वास करता हूँ कि अपने सभी काम वे पूरी ईमानदारी के साथ करते थे। मेरा ख्याल है कि उनकी ईमानदारी

के विषय में मेरी गवाही का ज्यादा महत्त्व होना चाहिए क्योंकि हम लोगो मे किसी प्रकार धार्मिक सम्बन्ध नही था। वे कभी-कभी प्रार्थना अवश्य किया करते थे कि मैं भी धर्म को मानने लगूं लेकिन यह संतोष उन्हें कभी नही प्राप्त हो सका कि उनकी प्रार्थना ईश्वर ने सुन ली है। हमारी मित्रता केवल नागरिको के नाते थी, दोनो ओर से बडी गम्भीर थी और उनकी मृत्यु तक कायम रही।

नीचे के उदाहरण से मालूम हो जायगा कि आपस मे हमारे क्या सम्बन्ध थे। एक बार इगलैंड से बोस्टन आने पर उन्होने मुझे लिखा कि वे शीघ्र ही फिलाडेलफिया आने वाले है लेकिन वे नही जानते कि वहा पर ठहरेंगे कहा, क्योकि उनके मित्र और मेजबान श्री बेनेजट फिलाडेलफिया छोडकर जर्मनटाउन चले गये थे। मैंने उन्हें उत्तर दिया, "मेरे घर को आप अपना घर समझिए। अगर आप मेरे घर की छोटी जगह मे ठहरने मे असुविधा न महसूस करे तो आपका यहा पर सहर्ष स्वागत है।" उन्होने उत्तर दिया, "अगर मैं ईसामसीह के नाम यह प्रस्तव रख रहा हूँ तो मुझे इसका पुरस्कार अवश्य मिलेगा।" मैंने उत्तर दिया, "मेरी बात को गलत मत समझिए, मैंने ईसामसीह के नाम पर नही बल्कि आपके लिए ही प्रस्ताव रक्खा है।" हम दोनो के एक मित्र ने मजाक मे कह डाला कि साधु-महात्माओ का नियम होता है कि उनके साथ कोई उपकार किया जाता है तो वह उसका भार अपने कन्धो से से हटाकर भगवान् पर रख देते हैं।

श्री व्हाइटफील्ड को आखिरी बार मैंने लन्दन मे देखा था, जहां उन्होने मेरे साथ अपने अनाथालय के विषय मे बाते की थी और अपना इरादा व्यक्त किया था कि वे उसे एक कालिज का रूप देना चाहते हैं।

उनकी आवाज बडी तेज और स्पष्ट थी और वे अपने शब्दो और वाक्यो का उच्चारण इतनी अच्छी तरह से करते थे कि दूर-दूर तक खड़े लोग भी उनके कथन को भली प्रकार सुन सकते थे। यह प्रभाव इसलिए और बढ जाता था कि चाहे जितनी अधिक सख्या मे सुनने वाले

हों वे हमेशा पूरी निस्तब्धता के बीच उनकी बातें सुनते थे। एक दिन वे शाम को मार्किट स्ट्रीट के बीचों-बीच स्थित कोर्ट हाऊस की सीढियो पर खडे होकर अपना प्रवचन दे रहे थे। यह इमारत मार्किट स्ट्रीट को सम-कोण पर काटने वाली सेकेन्ड स्ट्रीट के चौराहे पर थी। दोनों सडके दूर तक उनके श्रोताओ से भरी पडी थी। मार्किट स्ट्रीट पर खडे लोगो के सबसे पीछे मै खडा था। सहसा मुझे यह लगा कि ज़रा देखूं तो कितनी दूर तक उनकी आवाज साफ-साफ सुनाई पड सकती है और पीछे नदी की ओर खिसक गया; और मैंने पाया कि उनकी आवाज फ्रन्ट स्ट्रीट के पास तक साफ-साफ सुनाई पडती थी, फ्रंट स्ट्रीट मे कुछ दूसरी आवाजें आ रही थी इस वजह से उनकी आवाज बिलकुल स्पष्ट सुनाई नही पड रही थी। मैंने एक अर्द्धवृत्त की कल्पना की जिसका अर्द्धव्यास वह दूरी थी जिस पर मैं खडा था। यह सारी जगह आदमियो से पटी थी और मैंने हर आदमी के लिए दो वर्ग फुट जगह मानकर हिसाब लगाया तो पाया कि ३० हजार से ज्यादा आदमी उनकी आवाज साफ सुन सकते थे। इस हिसाब से मुझे समाचारपत्रो में प्रकाशित उन समाचारों पर विश्वास हो गया कि खुले मैदान मे वे २५ हजार आदमियो को अपना भाषण सुनाया करते थे। इससे मुझे यह भी विश्वास हो गया कि प्राचीन इति-हास में वर्णित सेनापति अवश्य अपनी बड़ी-बडी सेनाओ को आज्ञा दे सकते होंगे (पहले मुझे इस पर काफी सन्देह रहा करता था)।

उनके प्रवचनो को बार-बार सुनने के कारण मैं आसानी से जान जाता था कि कौनसा प्रवचन नया है और कौनसा वे पहले भी सुना चुके हैं। जिन प्रवचनो को वे बार-बार सुना चुके थे उनमे वे इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि हर उच्चारण, स्वर का हर दबाव, आवाज का हर उतार-चढाव इतने उचित समय पर और इतने उचित ढंग से होता था कि उनके विषय से रुचि न रखने पर भी उनकी भाषण-कला के प्रति प्रसन्न हुए बगैर कोई नही रह सकता था। यह खुशी बिल्कुल उसी तरह की होती थी, जैसे मधुर सगीत सुनने पर

आदमी को मिलती है। भ्रमणशील धर्मोपदेशक को एक ही जगह पर स्थिर रहने वाले धर्मोपदेशको की अपेक्षा यह लाभ अवश्य होता है क्योंकि दूसरे प्रकार के उपदेशक अधिक बार अपने प्रवचनो को नही सुनाते और उनका इतना सुधार नही हो पाता।

वे लिखते भी थे और अपने लेखन को प्रकाशित भी कराते थे। इससे कभी-कभी उनके शत्रुओ को बडा लाभ होता था। प्रवचन करते समय भूल से कुछ कह जाने या कभी गलत सम्मति व्यक्त कर जाने को भी बाद मे सुधारा जा सकता है, या दूसरी बातो के साथ उनका दूसरा मतलब समझाया जा सकता है या बिलकुल ही इन्कार किया जा सकता है, लेकिन लिखी हुई चीज को झुठलाया नही जा सकता। आलोचक उनकी रचनाओ की कडी आलोचना करते, जिसका प्रभाव यह पडा कि उनके समर्थको की सख्या कम होने लगी, बढना तो एक प्रकार से रुक ही गया। इसलिए मैं सोचता हूँ कि उन्होने कभी कुछ लिखा न होता तो वे अपने पीछे अपने मत को मानने वाले बहुसख्यक और महत्त्वपूर्ण लोगो का एक दल छोड जाते और उनकी प्रसिद्धि उनकी मृत्यु के बाद भी बढ़ती ही जाती क्योकि उस अवस्था मे उनकी किसी रचना की आलोचना नही हो सकती थी और उनके चरित्र को नीचा नही दिखाया जा सकता था। उनके अनुयायी तब उनमे अनेक गुणो के होने की कल्पना करते रहते, जो उनके प्रति प्रशसा के व्यक्तीकरण होते।

मेरा व्यापार लगातार बढता जा रहा था और मेरी परिस्थितियाँ सुधरती जा रही थी। मेरा अखबार मुझे बडा लाभ पहुँचाने लगा था क्योंकि कुछ वर्षो तक वह आसपास के सूबो का अकेला अखबार रहा था। मैंने इस कहावत की सचाई महसूस की कि **"पहले सौ पौंड कमा लेने के बाद दूसरे सौ पौंड कमाना बहुत आसान होता है, क्योंकि पैसा पैसे को खींचता है।"**

कैरोलाइना की साझेदारी सफल हुई थी इसलिए मैंने दूसरी साझे-दारी भी शुरू की और अपने कर्मचारियो को, जिन्होने वफादारी से काम

किया था, अनेक नये नगरों मे छापेखाने खुलवा दिये, इनके साथ भी वही शर्तें थी जो कैरोलाइना की साझेदारी में रक्खी गई थीं। उनमें से अधिकांश व्यक्ति सफल हुए और छह साल की मियाद बीतने के बाद मुझसे टाइप खरीदकर अपना स्वतन्त्र काम करने लगे। इससे कई परिवारों का भरण-पोषण होना शुरू हो गया। साझेदारी के व्यापार का अन्त अक्सर झगड़े में ही होता है; इस दृष्टि से मुझे बहुत खुशी है कि मेरी साझेदारियाँ बड़ी आसानी से चली और सफलतापूर्वक खत्म हुईं। शायद इसलिए कि अपने शर्तनामे में मैं हर साझेदार के छोटे से छोटे कर्त्तव्य को भी लिखा लेता था, जिससे बाद मे झगड़े का कोई सवाल ही न उठने पाये।

इसलिए साझेदारी में व्यापार करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मैं सलाह दूँगा कि वे मेरे ही उदाहरण का अनुसरण करें; क्योंकि साझे-दारों मे एक-दूसरे के प्रति चाहे जितना विश्वास और सौहार्द शर्तनामे पर दस्तखत करते समय हो फिर भी सम्भावना हमेशा रहती है कि व्या-पार का बोझ उठाने के मामले में छोटी-छोटी ईर्ष्याएँ और एक-दूसरे के प्रति बुरे विचार मन मे आने लगें, जिससे मित्रता और परस्पर सम्बन्धों में अन्तर आ ही जाता है, साथ ही कभी-कभी मुकद्दमे या ऐसी ही अवा-ञ्छित बातों में भी पड़ जाना पड़ता है।

कुल मिलाकर मेरे पास सन्तोष करने के लिए काफी कारण मौजूद थे कि मैं पैंसिलवानिया में अच्छी तरह जम गया था। फिर भी दो बातों के लिए मैं हमेशा दुखी रहता था। वहाँ सुरक्षा के लिए कोई पुलिस नहीं थी और नवयुवकों को शिक्षा देने के लिए कालिज भी नहीं था। इसलिए १७४३ मे मैंने एक प्रस्ताव रखा कि वहाँ एक अकादमी स्थापित की जाए। तभी मुझे ख्याल आया कि रेवरेन्ड मिस्टर पीटर कुछ दिनों से बेकार थे और वे ऐसी संस्था के अधीक्षक होने के सर्वथा योग्य थे। मैंने इस प्रस्ताव के बारे में उनसे बातें कीं लेकिन उन्हें जमी-दारों की सेवा में अधिक लाभ दिखाई देता था इसलिए उन्होंने मेरे

प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। उनके अलावा मैं किसी और योग्य व्यक्ति को नही जानता था। इसलिए योजना को कुछ समय के लिए स्थगित कर देना पडा। अगले साल १७४४ मे मैंने एक 'दर्शन-सभा' (Philosophical Society) प्रस्तावित की और उसे सस्थापित करने मे सफल हुआ। मेरी रचनाओ को जब तुम एकत्रित करोगे तो इस उद्देश्य से लिखा हुआ निबन्ध तुम्हें मिल जायेगा।

अब सुरक्षा के बारे मे स्पेन पिछले कई वर्षों से इगलैण्ड से युद्ध कर रहा था और अब फ्रास भी स्पेन के साथ मिल गया था, जिससे हम लोगो के लिए खतरा बहुत बढ गया था। हमारे गवर्नर टॉमस ने बड़े परिश्रम से क्वेकर असेम्बली मे यह बिल पास कराने की कोशिश की कि सूबे की रक्षा के लिए सेना का होना अत्यन्त आवश्यक है; लेकिन लम्बे समय तक किया गया उनका परिश्रम व्यर्थ साबित हुआ। और तब मैंने यह देखने का निश्चय किया कि निवासियो की खुद की इच्छा से क्या किया जा सकता है। इसके लिए मैंने पहले एक 'प्लेन ट्रूथ' (Plain Truth) नामक पेम्फलेट लिखा और प्रकाशित किया, जिसमे अपनी असुरक्षित दशा पर खूब प्रकाश डाला था और सुरक्षा के लिए सगठन तथा अनुशासन की आवश्यकता पर बल दिया था। इसी मे मैंने जन-साधारण से वादा भी कर लिया कि कुछ ही दिनो के भीतर एक सस्था प्रस्तावित की जायेगी जिसमे सर्वसाधारण को अपना सहयोग देना पड़ेगा। इस पेम्फलेट का एकाएक आश्चर्यजनक प्रभाव पडा। मुझसे अनुरोध किया गया कि मैं इस सस्था की नियमावली बनाऊं। कुछ मित्रो की सहायता से उसका मसौदा तैयार करने के बाद मैंने नागरिको की एक सभा उसी विशाल इमारत मे आयोजित की जिसका जिक्र मैं पहले भी कर चुका हूं। उपस्थिति अच्छी थी, मैंने पहले से ही नियमावली की प्रतियाँ छाप ली थी, जिन्हें मैंने हाल मे बैठे प्रत्येक व्यक्ति को बँटवा दिया। उन्हें लिखने के लिए कलम-दवात भी दिये गए। इस विषय पर मैंने उन्हें दो बातें कही, अपना निबन्ध पढा और उसका विवेचन

किया। तब उसे लोगो मे घुमाया गया और सबने बिना किसी विरोध के उत्सुकतापूर्वक हस्ताक्षर कर दिये।

जब सभा समाप्त हुई और कागज इकट्ठे किए गए तो हमे पता लगा कि १२०० आदमी तैयार थे। दूसरी प्रतियाँ देहातों मे भिजवाई गईं और स्वयंसेवको की संख्या १०,००० से अधिक हो गई। जितनी जल्दी हो सकता था इन लोगो ने हथियार खरीद लिये और अपने आप दस्तो और टुकडो मे बँट गए, अपने अधिकारी स्वय चुन लिये और हर हफ्ते शारीरिक परिश्रम करने और सेना के दूसरे अनुशासन सीखने के लिए इकट्ठे होने लगे। स्त्रियो ने आपस मे चन्दा करके रेशम के बिल्ले बनाकर स्वयसेवको को भेंट किये। इन बिलो पर मेरे द्वारा बताए हुए आदर्श वाक्य विभिन्न तरीको से चित्रित किये गए थे।

इसी बीच सहयोगियो द्वारा कर्नल लारेंस, विलियम एलेन, अब्राम टेलर को और मुझे गवर्नर क्लिन्टन से कुछ तोपें खरीदने के उद्देश्य से न्यूयार्क भेज दिया गया। पहले-पहल तो उन्होने हम लोगो को टका-सा जवाब दे दिया, लेकिन बाद मे अपने सभासदो के साथ भोजन करते समय, जबकि वहाँ के रिवाज के मुताबिक डटकर 'मँडेरा' शराब छानी गई, वे कुछ पसीजे और मंजूर किया कि वे हमे छह तोपें दे देंगे। कुछ और मदिरा के प्याले पीने के बाद वे दस तोपो तक राजी हो गये और अन्त मे बडी सहृदयतापूर्वक उन्होने अट्ठारह तक देना स्वीकार कर लिया। अपनी गाडियो सहित अट्ठारह पौंड वाली तोपें काफी अच्छी थी। शीघ्र ही तोपो को लेकर हम अपने तोपखाने आ पहुँचे और जहाँ हमारे सहयोगी युद्ध के दौरान रातोरात पहरेदारी पर तैनात थे, वहाँ जमा दिया। बाद में मैंने एक आम सैनिक की भाति अपनी ड्यूटी नियमित रूप से बजाना शुरू कर दिया।

इन मोर्चाबन्दियो के दौरान मेरी सक्रियता गवर्नर और उनके सभासदो को पसन्द आई, उन्होने मुझे अपना विश्वासपात्र बना लिया। जहां कही भी अपने संगठन के हित मे विचार-विमर्श की कोई बात

उठती वे मुझसे परामर्श करते। अपने उद्देश्य के लिए धर्म का सहारा लिये जाने के प्रश्न पर मैंने उपवास की घोषणा किये जाने का प्रस्ताव रखा, जिससे सुधार मे वृद्धि हो सके और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए ईश्वर की अनुकम्पा प्राप्त की जा सके। प्रस्ताव उन लोगो ने स्वीकार कर लिया, किन्तु इस प्रान्त मे उपवास का यह प्रथम विचार था, मन्त्री को किसी पूर्व घटना के आधार पर घोषणा का कोई आधार नही मिल पा रहा था। न्यू इगलैण्ड मे, जहाँ मेरी शिक्षा-दीक्षा हुई थी, वहाँ प्रति वर्ष इस प्रकार के उपवास की घोषणा की जाती थी। वह यहाँ कुछ लाभप्रद सिद्ध हुआ, मैंने प्रचलित शैली मे उसे लिपिबद्ध किया, जिसे जर्मन मे अनूदित करके दोनो भाषाओ मे प्रकाशित किया गया। पूरे प्रान्त मे इसका वितरण किया गया। इससे विभिन्न मतो के पादरियो को अपनी प्रार्थना-सभाओ को सगठन मे सम्मिलित करने के लिए प्रभावित करने का अवसर मिला और यदि बीच मे शान्ति ने हस्तक्षेप न किया होता तो क्वेकरो को छोडकर सभी मतावलम्बियो मे यह प्रभाव समान रूप से पडता।

मेरे कुछ मित्रो की राय थी कि इन मामलो मे सक्रिय रहने के कारण उस मत के लोगो को ठेस पहुँचेगी और इस कारण मुझे प्रादेशिक असेम्बली मे अपनी स्थिति खो देनी पडेगी क्योकि वहाँ बहुमत मे वे ही थे। एक नवयुवक ने, जिसके असेम्बली मे कई मित्र थे, और जो मेरे बाद उनके क्लर्क के पद पर नियुक्त होने के अभिलाषी थे, बताया कि मुझे अगले चुनाव मे पद-निवृत्त किया जाने का निश्चय किया जा चुका है। उन्होने बडी सद्भावनापूर्वक मुझे सलाह दी कि मै त्यागपत्र दे दूं, क्योकि निकाले जाने की अपेक्षा इस्तीफा मेरे सम्मान के अधिक अनुकूल होगा। मैंने उन्हे उत्तर दिया कि मैंने कुछ ऐसे लोगो के बारे मे पढ़ा और सुना है जिन्होने यह असूल बना लिया है कि वे किसी पद के लिए कभी इच्छा नही प्रकट करेंगे और न ही अवसर मिलने पर अस्वीकार ही करेंगे। मैंने उनको उत्तर दिया कि थोडे सशोधन के बाद मुझे

उनका असूल स्वीकार्य है ; न मै किसी पद के लिए याचना करूंगा, न किसी पद को नामजूर और न ही किसी पद से इस्तीफा दूंगा। यदि वे चाहेंगे कि मेरी क्लर्की किसी और को दे दें तो वे बाखुशी मुझसे ऐसा करा ले। किन्तु इसे छोडकर मैं कुछ या थोडे समय के लिए अपने विपक्षियो से बदला लेने के अवसर के अधिकार को नही छोड़ूंगा। इसके बाद मैंने उनकी किसी बात पर कान नही दिया, दूसरे चुनाव मे भी यथापूर्व मैं सर्वसम्मति से चुना गया। संभवतः, वे सैनिक तैयारियों सम्बन्धी सभी विवादो मे गवर्नरो से जाकर मिले किन्तु उन्हें सभासदों से मेरी घनिष्ठता नापसन्द थी क्योकि असेम्बली को इससे काफी अर्से से लानतें सहनी पडी थीं और स्वेच्छा से उनका साथ छोड देने से वे प्रसन्न हो जाते। किन्तु महज सघटन के प्रति मेरी दिलचस्पी के आधार पर वे मुझे पदच्युत नही करना चाहते थे, और इसके अतिरिक्त उनके पास कोई दूसरा कारण ही नही था।

वस्तुत. मेरा यह विश्वास निराधार नही कि यदि उनसे सहयोग करने के लिए न कहा जाता तो उनमे से कोई भी देश की सुरक्षा के प्रति असहमत होता। बाद मे मैंने देखा कि मेरे अनुमान से कही ज्यादा सदस्य स्पष्टतया प्रतिरक्षा के पक्ष मे थे, यद्यपि प्रतिरोधात्मक युद्ध के पक्ष मे नही। इस विषय पर अनेक पक्ष-विपक्ष सम्बन्धी पैम्फलेट प्रकाशित किये गये, और कुछ तो भले क्वेकरों द्वारा भी प्रतिरक्षा के पक्ष मे प्रकाशित किये गये, जिनका, मेरा विश्वास है, उनके अनेक नवोदित सदस्यो पर काफी प्रभाव पडा।

अपनी कम्पनी मे घटी एक घटना से मुझे उनके मत का थोडा बहुत अनुमान लगा। यह सुझाव रक्खा गया कि अपने वर्तमान लगभग ० पौण्ड के स्टाक को लाटरी के टिकटो मे लगाकर हमे एक तोपखाना तैयार करने की योजना को पुष्ट करना चाहिए। हमारे नियमो के अनुसार स्ताव के बाद बिना दूसरी बैठक के कोई भी रकम खर्च नही की जा सकती थी। कम्पनी मे तीस सदस्य थे, २२ क्वेकर और शेष आठ

अन्य मतो के। हम आठो सदस्यो ने नियमपूर्वक बैठक मे भाग लिया, और इस ख्याल के होते हुए भी कि कुछ क्वेकर हमारा साथ देंगे, हमे यह विश्वास कदापि न था कि हमारा बहुमत हो सकेगा। श्रीमान् जेम्स मॉरिस नामक एक क्वेकर इस प्रस्ताव का विरोध कर रहे थे। उन्होने इस बात पर बडा खेद प्रकट किया कि आखिरकार यह प्रस्तुत ही क्यों किया गया। उनका कहना था कि सभी साथी इसके विरुद्ध हैं और इसकी वजह से ऐसी फूट पड जायेगी जिससे कम्पनी तक छिन्न-भिन्न हो जायेगी। हमने उन्हे सुझाया कि ऐसी कोई आशका नही ; हम अल्प-सख्यक हैं और यदि सभी बन्धु इस प्रस्ताव के विरुद्ध मत देकर हमे पराजित कर देंगे तो हम सहर्ष समाज की परम्परा के अनुसार उनका कहना शिरोधार्य कर लेंगे। जब विचार का समय आ पहुचा तो प्रस्ताव को मतदान के लिए प्रस्तावित किया गया, उन्होने इस बात की इजाजत दे दी कि यदि हम लोग चाहे तो कायदे के मुताबिक मतदान करा सकते है, लेकिन जैसा कि उनका विश्वास था कि अनेक सदस्य इस प्रस्ताव के विरोध के लिए उपस्थित होने वाले है, इसलिए खरी बात तो यही होगी कि उनकी उपस्थिति के लिए थोडा समय दिया जाए।

अभी हम लोग इस बात को लेकर उलझे हुए थे कि एक वेटर ने आकर मुझको खबर दी कि नीचे कोई दो सज्जन मुझसे बात करना चाहते है। मैं नीचे गया और वहाँ मुझे कम्पनी के दो क्वेकर सदस्य मिले। उन्ही लोगो ने बताया कि ऊपर की सराय मे आठ क्वेकर सदस्य इन्तजार कर रहे हैं, और वे मौका पडने पर, जैसी उन्हे आशा कोई नही है, वे हमारे साथ मत भी देंगे। उन्होने यह भी इच्छा प्रकट की कि यदि उनकी आवश्यकता न पडे तो हम लोग उन्हे न बुलाये, क्योकि इस प्रकार मत देने से वे अपने बडो और बन्धुओ मे कडवे बन जायेंगे। इस प्रकार के बहुमत के प्रति निश्चिन्त होकर मैं पुन. ऊपर पहुँचा और कुछ दिखावे की हिचकिचाहट के बाद एक घण्टा और

प्रतीक्षा के लिए राजी हो गया। श्री मॉरिस ने इसे सर्वथा उचित ही समझा। उनको विरोध करने वाला कोई भी सदस्य दिखाई नही पड़ा, इस पर उन्होने बड़ा आश्चर्य प्रकट किया, अन्त मे एक घण्टा बीत जाने पर प्रस्ताव पर मत लिये गये। आठ मत पक्ष मे और एक विपक्ष मे पडे। चूंकि बाईस क्वेकरो मे से आठ हम लोगो के साथ मत देने के लिए राजी थे और अन्य तेरहों ने अपनी अनुपस्थिति से यह स्पष्ट कर दिया था कि उनकी इस प्रस्ताव का विरोध करने की तबियत नही है, इसलिए बाद मे मैंने क्वेकरो के प्रस्ताव के पक्ष मे एक के विरुद्ध इक्कीस का अनुमान लगाया क्योकि ये सभी सोसायटी के नियमित सदस्य थे और उनकी प्रसिद्धि भी खासी थी। इसके अलावा उन्हे इस बैठक मे प्रस्तुत किये जाने वाले प्रस्ताव के विषय मे समुचित सूचना भी दी जा चुकी थी।

माननीय और विद्वान् श्री लोगन ने, जो हमेशा उस मत के अनुयायी रहे थे, उनके नाम एक पत्र लिखा जिसमे अनेक पुष्ट तर्कों के आधार पर प्रतिरक्षात्मक युद्ध के अनुमोदन की घोषणा की गई थी। उन्होने मेरे हाथ मे ६० पौण्ड सौपे, जिससे तोपखाने के लिए उसका लाटरी के टिकटो मे उपयोग किया जा सके। साथ मे उन्होने इसके निमित्त प्रस्तुत किये जाने वाले पुरस्कारो के सम्बन्ध मे भी मुझे निर्देश दिया। प्रतिरक्षा के सम्बन्ध मे उन्होने मुझे अपने पूर्व स्वामी विलियम पेन की निम्नलिखित एक छोटी-सी कहानी सुनाई। वे इगलैण्ड से अपने इसी स्वामी के अधीन उनके सचिव बनकर आये थे। युद्ध के दिन थे और हमारे जहाज का पीछा एक सशस्त्र जहाज द्वारा किया जा रहा था। शायद दुश्मनो का जहाज था। जहाज के कप्तान ने प्रतिरक्षा की तैयारी की लेकिन उसने विलियम पेन और उनके अन्य क्वेकर साथियो से कहा कि उन्हे उनकी सहायता की आवश्यकता नही पड़ेगी और वे चाहे तो, केबिन मे जाकर आराम कर सकते है। उन्होने किया भी ऐसा ही। केवल जेम्स लोगन ऊपर डेक पर रह गया और उसे एक बन्दूक द दी गई। अनुमानित शत्रु अपना मित्र निकला। अतः कोई लड़ाई नही हुई

लेकिन जब सचिव नीचे यह खबर देने पहुचा तो विलियम पेन ने उसे ऊपर ठहरने के और मित्रो के सिद्धान्त के विरुद्ध, जबकि कप्तान ने इस विषय मे माँग भी नही की थी, जहाज की प्रतिरक्षा मे सहायता देने को ठानने के लिए बुरी तरह फटकारा। सब के सामने इस फटकार ने मुझे उत्तेजित कर दिया और मैं बोला—मैं भी आपका सेवक था, आपने क्यो नही मुझे नीचे जाने का हुक्म दिया ? बल्कि आप चाहते यह थे कि मैं ऊपर ही रुका रहूँ और खतरे की स्थिति मे दुश्मन के जहाज से लडने मे सहायता दूं।

असेम्बली मे कई वर्षों तक क्वेकरो का बहुमत रहा था। अपने युद्ध-विरोधी सिद्धान्तो के कारण उन्हें होने वाली परेशानी देखने के अनेक अवसर मुझे मिले। क्योकि सरकारी निर्देश पर जब कभी फौजी कार्र-वाइयो के लिए धन स्वीकृत करने की बात उठती ये अवसर सहज ही आ जाते। एक ओर तो वे सरकार को अपनी अस्वीकृति से अप्रसन्न करना नही चाहते थे और दूसरी ओर क्वेकरो से भरी-पूरी असेम्बली अपने सिद्धान्तो के विरुद्ध कोई स्वीकृति भी देना पसन्द नही करती थी। फलस्वरूप स्वीकृति से बचने की अनेक प्रकार की युक्तिया निकाली जाती और जब कभी स्वीकृति अवश्यम्भावी हो जाती तो बहुतेरे ढग से कन्नी कटाने के उपायो का सहारा लिया जाता। अन्तत सबसे सीधा ढग यही अपनाया जाता कि "सम्राट् की सेवा के लिए" धन स्वीकृत कर दिया जाता और फिर कभी भी यह जाँचने की कोशिश न की जाती कि धन का उपयोग किस प्रकार हुआ।

किन्तु यदि सीधे सरकार की ओर से अनुदान का आदेश न होता तो किन्ही अन्य मुहाविरो का सहारा लिया जाता। क्योकि उक्त वाक्य को उपयुक्त नही समझा जाता। उदाहरण के लिए, एक बार जब बारूद की कमी पड गई—मेरा ख्याल है कि लूइसबर्ग की सेना के लिए इसकी आवश्यकता पडी थी और न्यू इगलैण्ड की सरकार ने पेंसिलवानिया से कुछ अनुदान की माग की—तो गवर्नर टॉमस ने सदन मे इसका काफी

समर्थन किया, तो भी उन्होने अनुदान इसलिए मंजूर नही किया कि बारूद भी युद्ध का एक अंग है, किन्तु उन्होंने न्यू इगलैण्ड के नाम तीन हजार पौण्ड की सहायता की स्वीकृति दे दी और उस रकम को गवर्नर के हाथो सुपुर्द कर दिया जिससे उसे रोटी, आटा, गेहूँ या अन्य खाद्यान्न खरीदने के निमित्त खर्च किया जा सके। कुछ अन्य सभासदो ने सदन को और अधिक खिज करने की गरज से गवर्नर को यह सलाह दी कि वे इस अनुदान को स्वीकार न करे क्योकि यह उनकी माग से मेल नही खाता, लेकिन उन्होने उत्तर दिया, "मैं यह धन स्वीकार कर लूंगा क्योंकि मैं उनका मतलब अच्छी तरह जानता हूँ, अन्य खाद्यान्न बारूद ही है।" उन्होने उस धन से खरीदा भी बारूद ही और क्वेकरों ने कभी उस पर आपत्ति नही की।

इसी तथ्य को ध्यान मे रखते हुए ही हमे जब अपनी फायर कम्पनी मे अपने लाटरी के प्रस्ताव की सफलता मे आशंका हुई तो मैंने अपने एक सदस्य मित्र श्री सिग से कहा था, यदि हम नाकामयाब रहे तो हम लोग फायर इंजिन खरीदने का प्रस्ताव पेश करेंगे, क्वेकरों को उसमे कोई आपत्ति नही होगी, और तब यदि हम एक-दूसरे को इस कार्य के लिए नामजद करके एक बड़ी-सी तोप खरीद लेंगे तो वह निश्चय ही फायर इजन ही माना जायगा। मेरे मित्र ने उत्तर दिया कि तुम असेम्बली मे काफी दिन रहने के कारण चालाक हो गये हो और तुम्हारी यह योजना उनके गेहूँ या अन्य किसी खाद्यान्न से मेल खाने वाली ही होगी।

क्वेकर मत के अनुयायियों ने एक सिद्धान्त प्रतिपादित करके प्रकाशित किया था कि किसी भी प्रकार का युद्ध नियमानुकूल नही होता। और एक बार प्रकाशित कर चुकने बाद मे वे चाहे अपनी विचारधारा को बदल देते लेकिन इससे छुटकारा नही पा सकते थे। इससे वे समय-समय पर व्यग्रता मे भी पड जाया करते थे और इसीसे मुझे याद आता है कि हमारे ही बीच में रहने वाले डकर्स मत के अनुयायियो ने अधिक समझ से काम लिया था। इसके प्रकाशन के कुछ दिनो बाद ही इस मत के

एक सस्थापक माईकल वेलफेयर से मेरा परिचय हुआ। उन्होने मुझे बताया कि दूसरे धर्मों के उत्साही अनुयायियो द्वारा उनके मत पर मिथ्या दोषारोपण किये जाते हैं और कहा जाता है कि उनके सिद्धात और आचरण अत्यधिक घृणित हैं, जबकि बात ऐसी बिलकुल नही है। मैंने उनसे कहा कि नए मतो के साथ हमेशा ऐसा ही होता है और बताया कि इस प्रकार की गलत धारणाओ को फैलाने से रोकने का एक उपाय यह हो सकता है कि वे अपने विश्वासो और अनुशासन के विषय मे विज्ञप्ति प्रकाशित करा दे। उन्होने बताया कि यह चर्चा उनके बीच मे भी उठी थी, लेकिन निम्न कारण से लोग एकमत नही हो सके: "जब हम लोगो ने मिलकर इस मत को जन्म दिया तो हमारे मस्तिष्कों मे यह विचार ईश्वर ने उत्पन्न किया कि जिन सिद्धान्तो को पहले हम सत्य समझते थे वे गलत निकले और जिन्हें गलत समझते थे वे सत्य साबित हुए। समय-समय पर ईश्वर प्रसन्नतापूर्वक हमे मार्ग दिखाता ही जाता है और हमारे सिद्धातो का बराबर विकास होता जा रहा है और हमारे दोष घटते जा रहे है। हमे यह विश्वास नही है कि हम इस प्रगति की परम सीमा पर आ पहुँचे है और हमारा धार्मिक ज्ञान पूर्णता को प्राप्त कर चुका है और हमे भय है कि यदि हम एक बार अपने विश्वासो और सिद्धान्तो को प्रकाशित कर देंगे तो आगे अपना सुधार करने के इच्छुक नही रह जायेंगे। हमारे बाद आने वाली पीढियो के लोग तो सुधार बिल्कुल पसद ही नही करेंगे क्योकि उनका विचार यह होगा कि उनके पूर्वज और सस्थापक जो कुछ लिख गए है वह पवित्र है और उससे अलग नही हटना चाहिए।"

किसी मत के अनुयायियो की यह विनम्रता शायद मानवता के इतिहास मे एकमात्र उदाहरण है। क्योकि हर दूसरे मत के अनुयायी अपने को सपूर्ण सत्य का अधिकारी समझते है और इसके विपरीत किसी भी मत के लोगो को गलत मानते हैं, जैसे कोहरे से भरे वातावरण मे कोई यात्री चला जा रहा हो तो उसे कुछ दूरी पर अपने सामने, पीछे या दोनो

ओर के खेतो में काम करते हुए आदमी कोहरे से ढके हुए दिखाई देंगे लेकिन अपने पास की चीजें उसे साफ-साफ दीखेंगी, यद्यपि सत्य यह है कि दूसरो के समान वह भी कोहरे से ढका है। इस प्रकार की अशोभन परिस्थितियो से बचने के लिए क्वेकर मतानुयायियो ने पिछले कुछ वर्षो से असेम्बली अथवा मैजिस्ट्रेट के यहा सार्वजनिक सेवाओ में भाग लेना बद कर दिया है। उन्हे अपने सिद्धान्तो को खोने से अधिक अच्छा शक्ति को खो देना मालूम पडा है।

कालक्रम के अनुसार मुझे पहले ही लिखना चाहिए था कि १७४२ मे मैंने कमरो को और अधिक अच्छी तरह गर्म करने के लिए एक खुले स्टोप का आविष्कार किया था। इसमे ईंधन की भी बचत होती थी क्योकि ताजी हवा कमरे मे घुसते ही गर्म हो उठती थी। मैंने अपने बहुत दिनों पहले के एक मित्र रॉबर्ट ग्रेस को एक स्टोप उपहार मे दिया। उनके पास एक लोहे की भट्ठी थी और चूंकि स्टोप की माग लगातार बढती ही जा रही थी इसलिए उसके लिए तख्तियाँ ढालने का काम बडा लाभदायक मालूम पडा। माग को और बढाने के लिए मैंने एक पैम्फलेट लिखा और प्रकाशित किया। इसका शीर्षक था : "सद्य: आविष्कृत पेंसिलवानिया स्टोप का वर्णन" जिसमे उसकी बनावट और कार्य-विधि को विशेष रूप से समझाया गया है, कमरों को गर्म करने की किसी और विधि से अधिक अच्छी यह विधि क्यो है यह दिखाया गया है, और इसके प्रयोग के विरुद्ध जितने तर्क उपस्थित किये गये है उनका उत्तर दिया और निराकरण किया गया है, आदि। इस पैम्फलेट का प्रभाव अच्छा पडा। उसमे वर्णित स्टोप की बनावट से गवर्नर टॉमस इतने प्रसन्न हुए कि उन्होने कुछ वर्षो के लिए केवल मुझे ही इस स्टोप को बनाने का अधिकार देना चाहा, लकिन मैंने इन्कार कर दिया, क्योकि ऐसे अवसरो पर हमेशा एक सिद्धान्त मुझे याद आ जाता है : जिस प्रकार हम दूसरो के आविष्कारो से खूब लाभ उठाते हैं उसी प्रकार अपने आविष्कारो से दूसरो को लाभ उठाने का अवसर हमे खुशी, आजादी और निष्कपटता से देना चाहिए।

फिर भी लन्दन के एक लोहार ने मेरे पैम्फलेट को पढकर और उसमे कुछ परिवर्तन करके (जिससे उसकी कार्यक्षमता मे कुछ कमी ही आई) उसे वहाँ पेटेन्ट करा लिया और जैसा कि मुझे बताया गया है उसने काफी धन कमाया। और यह तो केवल एक उदाहरण है अब दूसरे लोगो ने मेरे उदाहरण को पेटेन्ट कराकर लाभ उठाया, हालाकि उन्हे हमेशा उसमे सफलता नही मिली, लेकिन मैंने कभी उनसे मुकद्दमेवाजी नही की क्योकि पेटेन्टो से फायदा उठाने की कोई इच्छा मुझमे न थी और झगडो से मुझे चिढ थी। इस कालोनी और आसपास की अनेक कालोनियों के घरो मे इस स्टोप का प्रयोग होने से लोगो की लकडी की काफी बचत होने लगी है।

अब तक शान्ति स्थापित हो चुकी थी, इसलिए संघ का काम समाप्त हो चुका था और मैंने अकादमी की स्थापना की ओर पुन ध्यान दिया। इस दिशा मे पहला काम मैंने यह किया कि अपने कुछ सक्रिय मित्रो को, जिनमे से अधिकाश 'जन्टो' के सदस्य ही थे, शामिल कर लिया। दूसरा काम था एक पैम्फलेट लिखना और प्रकाशित करना, जिसका शीर्षक था "पेंसिलवानिया मे युवको की शिक्षा से सम्बन्धित प्रस्ताव"। इस पैम्फलेट को मैंने प्रमुख नागरिको के पास मुफ्त भिजवाया और अपने विचार से जब यह समझा कि उसे पढने के बाद वे तैयार हो चुके होगे तो मैंने अकादमी खोलने और चलाने के लिए चन्दे की माँग की, चन्दा पाच साल के लिए था और सालाना किश्तो मे देना था। इस प्रकार किश्तो से बाटने का तात्पर्य यह था कि चन्दा अधिक इकट्ठा हो सके और ऐसा हुआ भी। यह भी मुझे ठीक से याद है कि पाच हजार पौड से अधिक इकट्ठे हो हो गये थे।

इन प्रस्तावो की भूमिका मे मैंने उसका प्रकाशन अपना कार्य नही बल्कि कुछ जनसेवी सज्जनो का बताया था। मेरा उद्देश्य अपने सिद्धान्त के अनुसार यह था कि जनता के हित की किसी भी योजना के सस्थापक के रूप मे स्वय को प्रस्तुत न करूगा।

इस योजना को शीघ्र कार्यान्वित करने के लिए चन्दा देने वालो ने अपने ही बीच मे से चौबीस ट्रस्टी चुन लिये और तत्कालीन अटर्नी जनरल श्री फ्रासिस और मुझे अकादमी का विधान बनाने के लिए नियुक्त किया। विधान बन गया, और उस पर सबके दस्तखत हो गये। एक मकान किराये पर ले लिया गया, शिक्षक नियुक्त हो गये, स्कूल खुल गए और मेरा विचार है कि यह सब उसी साल यानी १७४९ मे हुआ।

विद्यार्थियों की सख्या शीघ्रता से बढने लगी और जल्दी ही वह मकान छोटा पड गया तो हम लोग किसी उपयुक्त स्थिति मे जमीन की तलाश करने लगे जिससे उस पर इमारत खडी की जा सके। तभी ईश्वर की कृपा से एक बडी-सी इमारत हमे मिल गई, जो थोडी-सी तबदीली के बाद हमारे काम लायक हो गई। इस इमारत का वर्णन मैं पहले ही कर चुका हूँ। इसे व्हाइटफील्ड के श्रोताओ ने बनवाया था और नीचे लिखी विधि से इसे प्राप्त करने मे हम सफल हो सके।

यही पर ध्यान देना चाहिए कि इस इमारत के लिए विभिन्न मतो के अनुयायियो ने चन्दा दिया था, इसलिए इस इमारत तथा इसके साथ की जमीन को संरक्षण मे देने के लिए ट्रस्टियो के चुनाव मे बडी सावधानी बरती गई, जिससे किसी भी मत के अनुयायियो की सख्या अधिक न हो जाये और कुछ समय बीतने पर वे मौलिक आग्रह के विपरीत किसी एक ही मत के लिए उसका उपयोग न करने लगें। इसलिए प्रत्येक मत, जैसे चर्च आफ इंगलैंड, प्रेसबैटीरियन, बैंपटिस्ट, मुराबियन आदि से एक-एक आदमी लिया गया था। किसी ट्रस्टी के मर जाने पर चन्दा देने वालो के बीच चुनाव से उसके द्वारा हुई खाली जगह को भर लिया जाता था। मुराविया मत के अनुयायियो से सहयोगी प्रसन्न न हो सके और उनकी मृत्यु पर उन्होने कह दिया कि अब वे उस मत के किसी भी आदमी को नही लेंगे। अब कठिनता यह आ पड़ी कि उस खाली स्थान को भरा कैसे जाये कि एक मत के दो ट्रस्टी न हो।

कई आदमियो के नाम प्रस्तावित किये गये, लेकिन किसी कारण

स्वीकार न हुए। आखिर एक ने मेरा नाम लिया और कहा कि मैं केवल एक ईमानदार आदमी हूँ और किसी भी मत का अनुयायी नही हूँ। ट्रस्टियो ने इसी कारण मुझे चुन लिया। इमारत बनते समय जो उत्साह चन्दा देने वालो मे था वह धीरे-धीरे समाप्त हो गया और जमीन का किराया देने तथा इमारत के कारण हो गये कुछ कर्ज को चुकाने के लिए ट्रस्टी लोग आगे कुछ चन्दा इकट्ठा नही कर सके, जिस कारण उन्हे बडी परेशानी होने लगी। मैं इमारत और अकादमी दोनो का ट्रस्टी था, इसलिए दोनो के बीच बातचीत कर सकने की अच्छी स्थिति मे था। मेरे यत्नो के फलस्वरूप आखिर मे दोनो ट्रस्टियो के बीच इस प्रकार समझौता हो गया कि इमारत के ट्रस्टी इमारत को अकादमी के ट्रस्टियो के नाम लिख दें और अकादमी के ट्रस्टी इमारत के ऊपर हुए सारे कर्ज को चुकाने के जिम्मेदार बनें और इमारत का एक बडा कमरा हमेशा खुला रखें, जिससे कभी-कभी धर्मोपदेशको के प्रवचन इमारत के निर्माण के मौलिक इरादे के अनुसार हो सकें और गरीब बच्चो को शिक्षा देने के लिए एक नि शुल्क स्कूल चलाये। सारी लिखा-पढी इसी के अनुसार हो गई और कर्ज चुका देने के पश्चात् अकादमी के ट्रस्टियो को इमारत और उसके साथ की जमीन सौंप दी गई। बडे हाल को कई मजिलो मे बाँटकर विभिन्न स्कूलो के लिए ऊपर और नीचे कमरे बना दिये गये। इस प्रकार जल्दी ही इमारत हमारे काम के लायक हो गई और विद्यार्थी उसमे पढ़ने लगे। कारीगरो को तय करने और उनकी देखभाल करने, इमारत बनाने का सामान खरीदने और काम की निगरानी करने का भार मेरे ऊपर डाला गया। मैंने उसे बडी प्रसन्नता के साथ पूर्ण किया क्योकि इससे मेरे अपने व्यक्तिगत व्यापार मे कोई रुकावट नही पडती थी। कारण, पिछले ही वर्ष मैंने एक योग्य, परिश्रमी और ईमानदार साझेदार श्री डेविड हॉल को अपने व्यापार मे शामिल कर लिया था : वह मेरे साथ चार साल काम कर चुका था, इसलिए मैं उसके चरित्र से भली प्रकार परिचित था। उसने छापेखाने का सारा भार मेरे कन्धों से लेकर स्वयं सँभाल लिया।

वह ठीक समय पर मेरा लाभ का हिस्सा मुझे दे दिया करता था। हमारी साझेदारी अठारह वर्ष तक चलती रही और उससे हम दोनों को ही लाभ हुआ।

कुछ समय पश्चात् गवर्नर के एक कानून द्वारा अकादमी के ट्रस्टियों को एक संस्था का रूप दे दिया गया। उसकी आर्थिक स्थिति ब्रिटेन से आए चन्दे और जमीदारो के भूमिदान करने से और सुदृढ हो गई। बाद मे असेम्बली ने भी उसमे बहुत सहायता की, और इस तरह आज के फिलाडेल्फिया विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। शुरू से ही मैं इसका ट्रस्टी हूँ और अब लगभग चालीस वर्ष हो चुके हैं। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि इस अकादमी मे शिक्षित अनेक नवयुवको ने अपने गुणो के कारण काफी प्रसिद्धि पाई है, जनता की सेवा वे कर सके हैं और इस प्रकार अपने देश के आभूषण बन सके हैं।

ऊपर लिखे हुए ढंग से मैंने स्वय को अपने कारबार से मुक्त कर लिया। उस समय मुझे प्रसन्नता थी कि मैं इतनी सम्पत्ति कमा सका हूँ कि अब मैं अपने शेष जीवन मे आराम से दर्शन-सम्बन्धी विषयो का अध्ययन कर सकता हूँ और इस प्रकार अपना मनबहलाव भी। डाक्टर स्पेन्स इगलैंड से भाषण देने के निमित्त अमेरिका आये थे। मैंने उनके सारे वैज्ञानिक उपकरण खरीद लिये और बडी सावधानी से बिजली के प्रयोग आरभ कर दिये।

लेकिन जनता यह सोचने लगी कि अब मेरे पास समय की कमी नही है और मुझे अपने कामों के लिए उपयोग करने लगी। हमारी जनता की सरकार के प्रत्येक विभाग मे मुझे रखा गया और साथ ही साथ कुछ अन्य काम मुझे सौंप दिये गये। गवर्नर ने मुझे शान्ति-स्थापना-आयोग का सदस्य चुना। शहर के कारपोरेशन ने मुझे अपना सदस्य और थोडे ही दिनों के पश्चात् एल्डरमैन बना लिया, और संपूर्ण जनता ने मुझे असेम्बली का सदस्य चुन लिया। असेम्बली का सदस्य चुना जाना मेरी रुचि के सबसे अनुकूल था क्योकि क्लर्क की हैसिअत से असेम्बली मे बैठा हुआ बहसें तो

मैं अवश्य सुना करता था, लेकिन उनमे भाग नही ले सकता था, कभी-कभी तो मैं इन बहसो से इतना ऊब उठा करता था कि जादू के वर्ग या वृत्त या कुछ और बनाकर अपना मनोरजन करने लगता था। और तभी मैं सोचा करता था कि असेम्बली के सदस्य की हैसियत से मेरी उपयोगिता कही अधिक हो सकेगी। मैं नही कहूँगा कि इन सब पदोन्नतियो से मेरी आकाक्षा को बल नही मिला, सचमुच इनसे मुझे बडी खुशी हुई क्योकि जितने निम्न स्तर पर मैंने अपना जीवन आरम्भ किया था उसे देखते हुए यह सब मेरे लिए बहुत ही बडी चीजें थी, और इसलिए मेरे लिए और अधिक प्रसन्नता प्रदान करने वाली थी क्योकि इनसे साबित होता था कि जनसाधारण की मेरे विषय मे कितनी अच्छी राय है और फिर यह राय भी मेरे मागे बिना मुझे मिली थी।

न्यायाधीश का कार्य भी मैंने कुछ दिनो तक किया, लेकिन कुछ मुकद्दमो मे जाने के बाद मैंने देखा कि कानून का जितना ज्ञान मुझे था उससे कही अधिक ज्ञान उस पद पर योग्यता से काम करने के लिए आवश्यक था। धीरे-धीरे मैंने अपने को उससे अलग कर लिया, इस बुनियाद पर कि असेम्बली का सदस्य होने के नाते मुझे और अधिक आवश्यक काम करने पडते है। लगातार दस वर्ष तक हर वर्ष मुझे सदस्य निर्वाचित किया गया और किसी भी बार मुझे मतदाताओ के पास वोट मागने नही जाना पडा और न ही स्पष्ट या परोक्ष रूप से आकाक्षा व्यक्त करनी पडी कि मैं असेम्बली का सदस्य बनना चाहता हूँ। मेरे असेम्बली का सदस्य बनने से मेरे पुत्र को क्लर्क की जगह मिल गई।

अगले वर्ष कार्लाइल मे आदिवासियो के साथ एक संधि हो गई और गवर्नर ने असेम्बली मे एक समाचार भेजा कि वे कमिश्नरो के पद के लिए असेम्बली के कुछ सदस्य चुन ले, कुछ सदस्य कौंसिल से भी चुने जाने थे। असेम्बली के अध्यक्ष श्री नॉरिस ने मुझे चुना, और नियुक्त किये जाने पर हम लोग कार्लाइल पहुँचकर आदिवासियो से मिले।

वे लोग शराब बहुत पीते हैं और नशे मे सारा सतुलन खो बैठते

हैं तथा लडने-झगडने लगते है, इसलिए हमने सख्त हिदायत दे दी कि उन्हे शराब न भेजी जाए, और जब उन्होने इस नशेबन्दी की शिकायत की तो हमने उन्हें बताया कि अगर वे सधिकाल मे शान्तिपूर्वक रहे तो सारा काम समाप्त होने के पश्चात् उन्हें खूब 'रम' दी जायेगी। उन्होने वादा किया कि वे शान्ति बनाये रखेंगे, और उन्होने वादे को पूरा भी किया क्योकि उन्हे शराब नही मिल सकती थी। सधिकाल दोनों दलों के लिए अत्यन्त सन्तोषजनक रूप से समाप्त हो गया। तब उन्होने 'रम' की मांग पेश की, जो उन्हे मिली भी। यह अपराह्न की बात थी। वे स्त्री-पुरुष-बच्चे मिलाकर लगभग सौ व्यक्ति थे और अस्थायी मकानो मे रहते थे। शाम को उनके बीच मे हल्लागुल्ला सुनकर कमिश्नर लोग देखने पहुँचे कि क्या मामला है। हमने पाया कि अपनी झोपडियों के बीच मैदान मे उन्होने खूब बड़ी आग जला रखी है और स्त्री-पुरुष सभी शराब पीकर लड-झगड रहे है। उनके आधे नगे, गहरे रगे शरीर आग की धुँधली रोशनी मे दिखलाई पड रहे थे और वे भयानक रूप से चिल्लाते हुए एक दूसरे के पीछे दौड तथा जलती लकडियो से परस्पर मार-पीट रहे थे। कुल मिलाकर यह दृश्य हमारी नरक की कल्पना के बहुत समीप था। हम लोग किसी भी तरह उन्हें शान्त न कर सके और अपने डेरे पर वापस लौट आए। आधी रात के समय उनमे से अनेक आकर हमारे दरवाजे पीटने लगे और 'रम' की माँग करने लगे, लेकिन हमने इस पर कोई ध्यान न दिया।

अगले दिन उन्हे महसूस हुआ कि रात मे हमारे आराम मे विघ्न डालकर उन्होने गलती की थी और उन्होने अपने तीन समझदार बूढे व्यक्तियो को माफी मागने हमारे पास भेजा। वक्ता ने गलती को स्वीकार किया लेकिन उसका दोष शराब पर मढ दिया और तब यह कहकर शराब को भी दोषमुक्त करने की चेष्टा की कि उस महान् सिरजनहार ने हर चीज को किसी न किसी उपयोग के लिए ही पैदा किया है, और जिसके लिए जो उपयोग निर्धारित किया है उसका उसी ढग से उपयोग

जरूर किया जाना चाहिए। और जब उसने शराब बनाई तो कहा, "यह अमेरिका के आदिवासियो के लिए है जिससे वे मतवाले हो सकें और ऐसा होना ही चाहिए।" और वास्तव मे यदि ईश्वर की यही इच्छा है कि इन बर्बरो को खत्म करके उस जमीन पर किसान बसने लगे तो निश्चय ही उसने शराब को एक हथियार बनाया होगा। समुद्र के किनारे रहने वाली जातियो को यह शराब पहले ही खत्म कर चुकी है।

१७५१ मे मेरे एक विशेष मित्र डॉक्टर टॉमस बाड ने फिलाडेल्फिया मे एक अस्पताल स्थापित करने का विचार किया (बडा ही उपयोगी विचार था यह। इसका श्रेय मुझे दिया जाता है परन्तु मौलिक विचार उन्ही का था) जिसमे गरीब बीमारो को दाखिल करके इलाज किया जाए फिर चाहे वे उसी सूबे के रहने वाले हो या कही और के हो। बडे उत्साह और उमग के साथ उन्होने इसके लिए चन्दा उगाहने का प्रयत्न किया लेकिन यह प्रस्ताव अमेरिका के लिए बिल्कुल नया था। शुरू-शुरू मे तो भली भाति समझा ही नही जाता था, इसलिए उन्हे बहुत ही कम सफलता मिल सकी।

आखिरकार वे मेरे पास आए और बोले कि शायद मेरी सहायता के बिना किसी भी सार्वजनिक काम को सफलतापूर्वक पूरा नही किया जा सकता। उन्होने कहा, "अक्सर मुझसे पूछा गया है कि मैं किसके लिए चन्दा इकट्ठा कर रहा हूँ। इसके बारे मे क्या मैंने फ्रैंकलिन से सलाह ले ली है? और फ्रैंकलिन का क्या ख्याल है? और जब मैंने बताया कि मैंने फ्रैंकलिन से कोई बात नही की (क्योकि मेरा ख्याल था कि तुम इसमे नही पडना चाहोगे) तो उन्होने चन्दा नही दिया बल्कि यह कहा कि वे इस पर विचार करेंगे।" मैंने उनसे उनकी योजना की प्रकृति और सम्भावित उपयोगिता के विषय मे पूछा और उनसे अत्यन्त सन्तोषजनक उत्तर पाने पर स्वय तो चन्दा दिया ही, साथ ही चन्दा इकट्ठा करने मे प्राणपण से जुट गया। फिर भी चन्दा मागे जाने से पहले अपने हमेशा के कायदे के अनुसार समाचारपत्रो मे इस योजना

के विषय मे लिखकर जनता के मन को तैयार जरूर कर लिया। डाक्टर बॉड ने यह भी नही किया था।

बाद मे लोगो ने खुले हाथो से चन्दा दिया लेकिन मैंने देखा कि असेम्बली की सहायता के बिना चन्दे से कोई काम नही चल सकेगा। इसलिए मैंने इस योजना के लिए असेम्बली मे प्रार्थनापत्र देने का प्रस्ताव रखा और प्रार्थनापत्र दिया भी। देहात के सदस्यो ने पहले तो इस योजना को पसन्द नही किया; उन्होने कहा कि इससे केवल शहर मे रहने वालो को लाभ होगा इसलिए इसका खर्च भी शहरी ही उठायें। उन्होने यह शका भी व्यक्त की कि सारे नगर-निवासी भी इस योजना से सहमत नही हैं। मेरे इस कथन पर कि लोगो के चन्दे से ही हम दो हजार पौंड इकट्ठा कर पाये है, उन्होने अपनी राय जाहिर की कि यह कल्पना उचित नही है और इतना चन्दा इकट्ठा कर पाना असम्भव है।

इस पर मैंने अपनी योजना बनाई। मैंने असेम्बली से मोहलत मागी कि मैं चन्दा देने वालो की इच्छा के अनुसार बिल तैयार करूंगा जिसमे असेम्बली की ओर से दी जाने वाली मदद का भी जिक्र होगा। असेम्बली ने मुझे इस आधार पर मोहलत दे दी कि अगर वे मेरी शर्तों को नही मजूर करेंगे तो बिल अस्वीकृत हो जायेगा। मसविदा तैयार करते समय मैंने आवश्यक अंश को एक शर्त के अधीन बना दिया। जैसे, "और जब उपर्युक्त अधिकारी द्वारा इस अधिनियम को चालू किया जायेगा और जब उपर्युक्त चन्दा देने वाले अपने मैनेजर और खजान्ची चुनने के बाद इतने·········मूल्य का चन्दा एकत्रित कर लेंगे (जिसके वार्षिक ब्याज से उपर्युक्त अस्पताल मे गरीब मरीजो के रहने और मुफ्त भोजन देने, सेवा करने, डाक्टरी सलाह और दवाइयां देने का काम लिया जायगा) और असेम्बली के अध्यक्ष को वे लोग सन्तुष्ट कर सकेंगे तो वैधानिक रूप से उपर्युक्त अध्यक्ष को सूबे के खजान्ची के नाम एक पत्र देना होगा जिसमे दो सालाना किश्तो मे दो हजार पौंड उपर्युक्त हस्पताल के खजान्ची को देना होगा। इस धन का उपयोग हस्पताल की स्थापना

करने, इमारत बनाने और अन्य कार्यों मे होगा।"

इस शर्त के कारण बिल पास हो गया क्योंकि जिन सदस्यो ने उसका विरोध किया था उन्होंने देखा कि बिना कुछ खर्च किये वे इस अवसर पर दानशील कहला सकते हैं, और बिल का समर्थन किया। और तब जनता से चन्दा वसूल करते समय हमने बिल की इस शर्त को उसके अच्छे रूप मे प्रयुक्त किया कि जनता को दिल खोलकर चन्दा देना चाहिए क्योकि जो भी चन्दा वे भेजेंगे वह फौरन दूना हो जायेगा। इस प्रकार बिल के इस अनुच्छेद ने दोनो ओर लाभ पहुचाया। जल्दी ही आवश्यक धन से अधिक चन्दा इकट्ठा हो गया और हमने सरकारी सहायता मागी, जो हमे शीघ्र ही मिल गई और हम अपना काम तत्काल आरम्भ करने मे सफल हो सके। एक खूबसूरत और सुविधाजनक इमारत जल्दी ही खडी हो गई। लगातार अनुभव से इस हस्पताल की उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है और यह आज भी जोर-शोर से अपना काम कर रहा है, और मैं अपनी किसी भी ऐसी राजनीतिक चाल को याद नही कर पाता जिसने मुझे इससे अधिक खुशी दी हो। साथ ही इस कार्य मे अपनी चालाकी का इस्तेमाल करने पर भी मैं अपने को क्षम्य समझता हूँ।

लगभग इसी समय रेवरेन्ड गिलबर्ट टेनेन्ट ने मेरे पास आकर मुझसे अनुरोध किया कि मैं एक नया सभागृह बनाने के लिए चन्दा इकट्ठा करने मे उनकी सहायता करू। उस सभागृह का उपयोग प्रेसबैटीरियन मतानुयायियो के लिए किया जाने को था। इनमे से अधिकाश व्यक्ति मिस्टर व्हाईटफील्ड के ही शिष्य थे। मैं नही चाहता था कि बार-बार जनता से चन्दा माँग कर मैं उन्हे अपने प्रति नाराज होने का अवसर दूं। इसलिए मैंने एकदम इन्कार कर दिया। तब उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उन्हे ऐसे कुछ आदमियो के नामो की लिस्ट दूं जिन्हे मैं अपने अनुभव से दानशील और सार्वजनिक कार्यो मे रुचि रखने वाला समझता हूँ। मैंने सोचा कि जिन व्यक्तियो ने मुझे चन्दा दिया है, उनके

नाम अगर मैं किसी और को बता दूं जिससे दूसरे चन्दा इकट्ठा करने वाले उन्हें परेशान करें तो यह भी अच्छा न होगा। इससे मैंने ऐसी सूची देने से भी इन्कार कर दिया। उन्होंने तब कहा कि मैं कम से कम अपनी सलाह तो दे सकता हूँ। मैंने कहा, "हाँ, यह काम मैं बड़ी प्रसन्नता से कर सकता हूँ। सब से पहले तो मैं आपसे यही कहूँगा कि आप पहले-पहल उन्हीं लोगों के पास जायें जिनसे आपको कुछ पाने की उम्मीद है, तब आप ऐसे लोगों के पास जायें जिनके विषय में आप निश्चय रूप से नहीं जानते कि वे देंगे या नहीं, और उन्हें उन व्यक्तियों की लिस्ट दिखायें जो चन्दा दे चुके हों। तब ऐसे लोगों की उपेक्षा मत कीजिए जिनके विषय में आप निश्चय रूप से जानते हैं कि वे कुछ नहीं देंगे, क्योंकि अनेक के विषय में आपका विचार गलत साबित हो सकता है।" वे हँसे और मुझे धन्यवाद देते हुए बोले कि वे मेरी सलाह का लाभ उठायेंगे। उन्होंने यही किया, हर व्यक्ति से चन्दा मांगा और अपनी आशा से कहीं अधिक धन इकट्ठा किया। इसी धन से उन्होंने एक बहुत खूबसूरत विशाल सभागृह स्थापित किया जो आज भी आर्कस्ट्रीट में मौजूद है।

हमारा शहर बड़ी सुन्दर योजना के अनुसार बसा हुआ है। सड़कें चौड़ी सीधी हैं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं लेकिन बहुत समय तक वे कच्ची ही रहीं और वर्षा के दिनों में वजनी गाड़ियों के चलने से उनमें कीचड़ और दलदल बन जाता था, और उन्हें पार करना बड़ा कठिन होता था; और गर्मी में उड़ने वाली धूल तो असह्य होती थी। मैं तत्कालीन जर्सी मार्केट के समीप रहता था और देखता था कि लोगों को कीचड़ में चलकर अपना सामान खरीदने में बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। अन्त में बाजार के समीप थोड़ी-सी जमीन ईंटों से पाट दी गई। जिससे एक बार बाजार में पहुँच जाने के पश्चात् वह पुख्ता जमीन पर पहुँच जाते थे, लेकिन वहाँ पहुँचने तक उनके जूते कीचड़ में सन जाते थे। इस विषय पर बातचीत करने और अखबारों

मे लिखते रहने से मैं अन्त मे सड़क पर ईंटें लगवाने में सफल हो सका। इससे लोगो को बाजार तक पहुँचने मे आसानी होने लगी, लेकिन चूंकि पूरी-पूरी सडकें बँटी हुई नहीं थी इसलिए जब कोई गाड़ी कीचड़ से निकलकर पक्की सडक पर पहुँचती थी तो बहुतसी कीचड़ और मिट्टी वहाँ पर जम जाती थी, फलस्वरूप जल्दी ही पक्की सड़क पर कीचड़ की मोटी पर्त जम गई। उस समय तक शहर मे मेहतर नही थे इसलिए उसकी सफाई नही की जा सकी।

थोडी तालाश करने के पश्चात् मुझे एक गरीब परिश्रमी व्यक्ति का पता चला जो हफ्ते मे दो बार प्रत्येक निवासी के घर के सामने झाड़ू लगाकर गर्द हटाने के लिए तैयार था और हर मकान से छह पैंस प्रति माह मजदूरी चाहता था। मैंने तब एक पैम्फलेट लिखा और छापा, जिसमे मैंने दिखलाया कि इस छोटे से खर्चे से सभी लोगो को कितना लाभ होगा, लोगो के पैरो मे लगकर इतनी अधिक धूल मकानो के भीतर नही पहुँचेगी और वे अपने मकानो को ज्यादा साफ रख सकेंगे। दुकानो को भी अधिक फायदा होगा क्योकि अधिक सख्या मे खरीदार आसानी से उन तक पहुँच सकेंगे, और जब हवा तेज चलती होगी तो उनके सामानो मे गदगी नही पड़ेगी, आदि आदि।

मैंने एक-एक पैम्फलेट हर मकान मे भिजवा दिया और एक-दो दिन वाद लोगो से मिलकर यह पता लगाने गया कि उनमे से कितने व्यक्ति इसके लिए तैयार है। इस पर्चे पर प्रत्येक व्यक्ति ने हस्ताक्षर किये और कुछ समय तक यह योजना भली प्रकार चलती रही। शहर के सारे निवासी बाजार के चारो ओर की सफाई देखकर बडे प्रसन्न हुए, क्योकि यह सभी के लिए सुविधाजनक था। और इससे लोगो मे यह भावना उत्पन्न हुई कि शहर की सभी सडको को पक्का कर लिया जाए। इस काम के लिए अधिक व्यक्ति चन्दा देने के लिए तैयार हो गये।

कुछ समय पश्चात् मैंने शहर की सब सड़को को पक्का करने का बिल तैयार करके असेम्बली मे पेश किया। यह १७५७ मे मेरे

इंगलैंड जाने से पहले की घटना है। बिल मेरे रवाना होने तक पास नहीं हुआ और जब पास हुआ तो इस परिवर्तन के साथ कि सडको का तख-मीना दूसरे ढग से लगाया जाए (जो मेरे विचार से अधिक अच्छा नहीं था) लेकिन इसमे एक और बात यह जोड दी गई कि सडको को पक्का कराने के साथ-साथ उन पर रोशनी भी की जाए। यह निश्चित रूप से एक बडा सुधार था। स्वर्गीय श्री जॉन क्लिफटन ने अपने घर के सामने एक लैम्प जलाकर लोगो को यह दिखलाया कि लैम्प से क्या लाभ हो सकता है और इसी उदाहरण से जनता मे यह धारणा उत्पन्न हुई कि सडको पर भी रोशनी हो। इस सार्वजनिक हित के कार्य का श्रेय भी मुझे ही दिया जाता है। लेकिन यह वास्तव मे है श्री क्लिफटन का। मैने तो केवल उनके उदाहरण का अनुसरण ही किया था। हाँ, इतना अवश्य था कि पहले-पहल लन्दन से मँगाकर जो गोलाकार लैम्प लगाए गए थे, उनकी आकृति को बदलवाने में मेरा हाथ था। लन्दन से मँगाए हुए लैम्पो मे हमे निम्नलिखित असुविधाएं थी : नीचे से हवा पहुँचने के लिए कोई रास्ता न था, जिसकी वजह से धुंआ लैम्प से बाहर न निकलकर उसी के भीतर उमडता रहता था और धीरे-धीरे इतना इकट्ठा हो जाता था कि लैम्प प्रकाश ही न दे पाते थे। इसके इलावा प्रतिदिन उनकी सफाई करने की परेशानी उठानी पड़ती थी और फिर कभी अकस्मात् हाथ लग गया तो उनके नष्ट हो जाने और इस प्रकार बिल्कुल व्यर्थ हो जाने का भी भय था। इसलिए मैंने सुझाया कि चार चौडे शीशे की प्लेटों से लैम्प बनाया जाए, जिनके ऊपर धुंआ निकलने के लिए एक चिमनी हो और हवा के प्रवेश करने के लिए नीचे छोटे-छोटे छेद, जिससे धुंआ आसानी से ऊपर उठ सके। इस प्रकार ये लैम्प साफ रहने लगे और लन्दन वाले लैम्पो की तरह कुछ ही घटो मे काले न पड़ने लगे। उनकी रोशनी प्रात. तक उसी प्रकार चमकती रहती और अकस्मात् धक्का लग जाने पर भी केवल एक ही शीशा टूटने का भय था जो सुगमता से बदला जा सकता था।

प्राय मैं सोचा करता था कि वाक्सहाल मे जलने वाले लैम्पो की सफाई तो लन्दन के नागरिक अवश्य किया करते हैं क्योकि नीचे छेद करना वे अभी तक नही सीख पाए। कुछ छेद अवश्य होते हैं लेकिन दूसरे मतलब के लिए—कि लपट को बत्ती तक जल्दी पहुँचाया जा सके। लगना है कि हवा को अन्दर प्रवेश कराने के लिए छेदो का उपयोग वह नही सोच पाए थे और यही कारण है कि लन्दन की सडको पर जब लैम्प कुछ घटो तक जल चुके होते है तो प्रकाश बहुत कम हो जाता है।

इन सुधारो का वर्णन करने से मुझे एक ऐसे सुधार की याद आ गई है जो मैंने अपने लन्दन-प्रवास के समय फॉदरगिल को समझाया था। जितने व्यक्तियो से मैं परिचित हूँ उनमे से सबसे अच्छे व्यक्तियो मे उनका नाम लिया जा सकता है। वे सार्वजनिक हित के कार्यो को आगे बढाने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। मैंने देखा था कि सूखी सडको पर कभी झाड़ू नही लगाई जाती थी और धूल भी नही हटाई जाती थी। उसे बरसात तक ज्यों का त्यो पडा रहने दिया जाता था, जब वह कीचड मे बदल जाती थी, तब भी उसे यो ही पडा रहने दिया जाता था, यहाँ तक कि फुटपाथो पर दलदल-सा बन जाता था और लोग उन छोटी-छोटी पगडडियो से ही आ-जा पाते थे जिन्हें गरीब आदमी स्वय झाड़ू लगाकर बनाए रखते थे। बडे परिश्रम से यह कार्य किया जाता था और कीचड को ऊपर खुली हुई गाडियो पर लाद दिया जाता था। इन गाडियो की बगल से हर हिचकोले पर कुछ न कुछ कीचड जरूर बाहर गिरता था। कभी-कभी तो पैदल चलने वालो के कपड़े भी खराब हो जाते थे। गर्द-गुबार से भरी हुई सडको को साफ न करने का कारण यह बताया जाता था कि धूल उड-उडकर मकानो तथा दूकानो की खिडकियो से भीतर पहुचेगी।

एक आकस्मिक घटना से पता चला कि थोडे ही समय मे कितनी सफाई की जा सकती है। एक दिन प्रात क्रेवन स्ट्रीट के अपने मकान के दरवाजे पर मैंने एक गरीब औरत को बर्च की झाड़ू से फुटपाथ पर

सफाई करते देखा। वह बहुत पीली और कमजोर मालूम पड रही थी जैसे अभी-अभी बीमारी के पश्चात् उठी हो। मैंने उसे पूछा कि यहाँ झाड़ू लगाने के लिए तुम्हें किसने नौकर रखा है। इस पर उसने कहा, "किसी ने नही, लेकिन मैं बहुत निर्धन और बडी मुसीबत मे हूँ और मैं भले व्यक्तियो के द्वार पर इस आशा से झाड़ू लगाती हूँ कि वे मुझे कुछ न कुछ अवश्य दे देंगे।" मैंने उससे कहा कि तुम पूरी सडक पर झाड़ू लगा दो तो मैं एक शिलिंग दूंगा। यह नौ बजे की बात थी। बारह बजे वह शिलिंग मागने आ गई। उसके धीरे-धीरे काम करने का ढंग देखकर मुझे विश्वास नही हुआ कि इतनी शीघ्रता से उसने कार्य समाप्त कर दिया है और मैंने अपने नौकर को निरीक्षण करने के लिए भेजा। नौकर ने लौटकर बतलाया कि सारी सडक बिल्कुल साफ है और पूरी की पूरी गर्द सडक के बीचोबीच बनी एक नाली मे डाल दी गई है। अगली बार पानी बरसा तो उस गर्द को भी बहा ले गया और इस प्रकार फुटपाथ और लोगों के दरवाजे तक बिल्कुल साफ रहने लगे।

मैंने तब नतीजा निकाला कि अगर एक कमजोर स्त्री तीन घटे मे एक पूरी सडक की सफाई कर सकती है तो कोई शक्तिशाली फुर्तीला मनुष्य आधे समय मे ही इस काम को कर डालेगा। और तभी मुझे इतनी पतली सडक पर एक ही नाली होने की उपयोगिता दिखाई पडी। क्योंकि जब पानी बरसता है तो सड़क पर दोनो ओर से बहकर बीच मे मिलकर इतनी तेज़ धार बनाता है कि वह अपने साथ सारे कीचड को बहा ले जाए, लेकिन अगर दो नालिया हो तो अक्सर वे ज़रा भी सफाई न कर सकें और कीचड़ को अधिक पानी वाला ही बना दें जिससे वह बाद मे गाडियो के पहियो और घोडो के पाँवो से उछलकर फिर फुटपाथ पर आ जाए और फुटपाथ चिकना हो जाए और कभी-कभी तो यह कीचड़ चलते आदमियों पर पड़ जाए। डाक्टर के सामने मैंने जो प्रस्ताव रखा वह इस प्रकार था :

" लन्दन और वेस्टमिंस्टर की सडकों की ज्यादा अच्छी सफाई

करने और उन्हे अधिक साफ रखने के लिए यह प्रस्तावित किया जाता है कि कई चौकीदार रखे जाए जो सूखे मौसम मे गर्द की सफाई करायें और दूसरे अवसरो पर कीचड हटाने और अपनी-अपनी बारी पर कई सडको और गलियो की जिम्मेदारी लें। इस कार्य के लिए उन्हे झाड़ू और दूसरी आवश्यक चीजें दी जायें जो उनके अपने-अपने स्टैण्डो पर रखी जायें और जिन गरीब व्यक्तियो को वे काम पर लगाए उन्हें दी जा सके।

"गर्मी के सूखे महीनो मे गर्द को थोडी-थोडी दूरी पर इकट्ठा कर दिया जाए और यह काम मकानो और दुकानो की खिडकियाँ खुलने से पहले पूरा हो जाए और उसी समय सफाई करने वाले कूडे को बन्द गाडियो मे भरकर दूर ले जायें।

"कीचड को इकट्ठा करने के बाद उसे यूँ ही न पडा रहने दिया जाए जिससे गाडियो के पहियो और घोडो के खुरो द्वारा वह फिर न फैल जाए और इसकी सफाई के लिए मेहतरो को ऐसी गाडियाँ दी जाएँ जो पहियो पर चलने वाली ऊँची न होकर नीची फिसलने वाली हो। उनके पैन्दे जालीदार हो जिन्हें घास फूँस से ढकने के पश्चात् कीचड रखा जाए तो कीचड तो उनमे रह जाए लेकिन पानी बाहर बह जाए, ऐसा होने पर उसका भार बहुत कम हो जाएगा क्योकि अधिक भार तो पानी का ही होता है, इन गाडियो को थोडी-थोडी दूरी पर रखवा दिया जाये और छोटी-छोटी दूसरी गाडियो मे भरकर कीचड उन तक पहुँचाया जाये, जब तक कीचड इकट्ठा किया जाता रहे तब तक वे वही रहे और तब घोडो के जरिए उन्हे हटवा लिया जाए।"

बाद मे मुझे इस प्रस्ताव के अन्तिम भाग की व्यावहारिकता पर सन्देह होने लगा क्योकि कुछ सडकें अधिक सँकरी हैं और उनमे इस तरह के कूडेदान रखवाना बडा कठिन है कि कूडेदान ज्यादा रास्ता न घेरें, लेकिन मेरी राय अब भी यही है कि इस प्रस्ताव का पहला भाग, जिसमे दूकानो के खुलने से पहले सफाई करके गर्द हटा लेने की बात कही गई है, गर्मियो के लम्बे दिनो मे बहुत व्यावहारिक है, क्योकि एक

दिन प्रात: सात बजे स्ट्रैंड और फ्लीटस्ट्रीट से गुजरते समय मैंने देखा कि उस समय पूरा उजाला फैल गया था, सूरज तीन घण्टे से अधिक चमक रहा था फिर भी एक भी दुकान न खुली थी। लन्दन के निवासियो ने अपने-आप तय कर लिया है कि वे मोमबत्ती की रोशनी मे जागेंगे और सूर्य की रोशनी मे सोयेंगे और इस पर भी वे मूर्खतापूर्ण शिकायत करते हैं कि मोमबत्तियों पर कर बहुत अधिक है और उनकी कीमत भी कम नही।

कुछ लोग सोच सकते हैं कि ऐसी छोटी-छोटी बातें न तो ध्यान देने योग्य है और न लिखने योग्य। लेकिन अगर वे इस प्रकार सोचें कि किसी एक व्यक्ति की आँख अथवा किसी एक दूकान की खिडकी पर पहुँचने वाली धूल सचमुच महत्त्वपूर्ण नही होती, परन्तु जब किसी बडे शहर मे इस प्रकार की अनेक घटनाएं अनेक अवसरों पर घटती रहती हैं, तब वे समझ सकेंगे कि इसका इतना बडा महत्त्व है और तभी वे ऐसे आदमियो की बुराई नही करेंगे जो प्रत्यक्षत: छोटे कार्य मे रुचि प्रदर्शित करते है। मानवता का कल्याण कभी-कभी होने वाली बडी-बडी घटनाओ से उतना नही होता, जितना हमेशा होते रहने वाले छोटे-छोटे अनुभवो से। यदि आप किसी व्यक्ति को यह सिखा दे कि उसे अपनी दाढी किस प्रकार बनानी चाहिए और रेज़र को किस प्रकार साफ रखना चाहिए तो आप उस व्यक्ति के जीवन को अधिक सुखी बना पायेंगे, बजाय इसके कि आप उसे एक हजार गिन्नियाँ प्रदान करे। रुपया-पैसा तो बहुत शीघ्र खर्च हो जाता है, बाद मे केवल अफसोस बना रहता है कि उसे ठीक प्रकार से व्यय नही किया गया, लेकिन दूसरी ओर वह नाई का इन्तजार करने की जहमत से बच जाता है और नाई की गन्दी उगलियो, बदबूदार साँस और कुन्द उस्तरो से सुरक्षित रहता है, अपनी सुविधा के अनुसार दाढी बनाता है और तेज उस्तरे से बनाने के कारण उसे किसी भी प्रकार की परेशानी नही होती। इन्ही मनोभावो के साथ मैंने पिछले कुछ पृष्ठ लिखे हैं जिनमे दिये हुए सकेतो से सम्भव है कि उस

नगर का कुछ लाभ हो सके जिसे मैं प्रेम करता हूँ क्योकि उसमे मेरे जीवन के वर्ष सुगमता से व्यतीत हो चुके है और अमरीका के कुछ शहरो के लिए यह उतने ही उपयोगी हो सकते हैं।

कुछ वर्षों तक मैं अमेरिका के पोस्टमास्टर-जनरल द्वारा उनके कई दफ्तरो का कार्यक्रम व्यवस्थित करने और अफसरो का व्यवहार ठीक करने के लिए कन्ट्रोलर नियुक्त किया गया था। १७५३ मे उनकी मृत्यु हो गई और इगलैंड के पोस्टमास्टर-जनरल द्वारा नियुक्त आयोग ने मुझे और श्री विलियम हटर को पोस्टमास्टर-जनरल नियुक्त किया। अमेरिका के दफ्तर ने अभी तक ब्रिटेन के दफ्तर को कुछ भी नही दिया था। तय हुआ कि हम दोनो को मिलाकर छह सौ पौंड सालाना वेतन मिलेगा, अगर हम पोस्टआफिस के द्वारा उतना लाभ कर सके तो। ऐसा करने के लिए कई प्रकार के सुधारो की आवश्यकता थी। आरम्भ मे तो ये सुधार खर्चीले थे जिसका परिणाम यह हुआ कि चौथे वर्ष के अन्त तक आफिस के ऊपर हमारा ही नौ सौ पौंड कर्ज हो गया परन्तु जल्दी ही दफ्तर को लाभ होने लगा, और मन्त्रियो की बदमाशी के फलस्वरूप पदच्युत कर दिये जाने से पहले, जिसकी बात मैं बाद मे करूँगा, हमारे आफिस की आमदनी आयरलैंड के आफिस की आमदनी से तीन गुनी हो गई। मेरे पदत्याग करने के पश्चात् उन्हें इस आफिस से एक धेला भी नही मिल सका।

पोस्टआफिस के ही काम से मुझे इस वर्ष न्यू इगलैंड जाना पडा जहाँ कालिज ऑफ कैम्ब्रिज ने स्वेच्छा से मुझे मास्टर ऑफ आर्ट्स की डिग्री से सम्मानित किया। कनेक्टीकट के जेम्ज कालेज ने भी इससे पहले मुझे यही सम्मान दिया था। इस प्रकार कालेज मे शिक्षा ग्रहण न करने के बावजूद मुझे उनकी उच्चतम डिग्री प्राप्त हो गई। भौतिक विज्ञान की विद्युत् सम्बन्धी शाखा मे सुधार और आविष्कार करने के उपलक्ष्य मे यह डिग्रियाँ मुझे भेट की गई।

१७५४ मे फ्रास के साथ युद्ध की सम्भावना फिर दिखलाई पडने

लगी। इसलिए लार्ड ऑफ ट्रेड की आज्ञा से विभिन्न बस्तियो के कमिश्नरो की एक कांफ्रेंस अल्बैनी मे बुलाई गई, जिसमे छह सम्बद्ध राष्ट्रो के साथ यह विचार किया जाना था कि उनके और हमारे देशो की रक्षा कैसे हो। गवर्नर हैमिल्टन को यह आज्ञा प्राप्त थी। उन्होने असेम्बली को इसे बताया और प्रत्येक सदस्य से प्रार्थना की कि इस अवसर पर आदिवासियो को देने के लिए उपयुक्त उपहार दें। उन्होने अध्यक्ष श्री नॉरिस और मुझे पेंसिलवेनिया के कमिश्नर नियुक्त करके श्री टामसपेन और श्री सैक्रेटरी पीटर्स से मिलने की सलाह दी। असेम्बली ने इस नामजदगी को स्वीकार किया और उपहार के लिए चीजें भी स्वीकृत की, हालाँकि राज्य से बाहर उनका कोई महत्त्व नही था, और हम जून के मध्य मे दूसरे कमिश्नरो से मिले।

रास्ते मे मेरे मस्तिष्क मे एक विचार आया और मैंने उसे योजना का रूप दिया कि सभी कोलोनियो को संयुक्त करके एक ही सरकार के अधीन कर दिया जाये, कम से कम जहाँ तक प्रतिरक्षा और दूसरे महत्त्वपूर्ण सामान्य बातो का सम्बन्ध है। न्यूयार्क से गुजरते समय मैंने अपनी योजना श्री जेम्ज एलेक्जेन्डर और श्री कैनेडी नामक दो सज्जनो को दिखलाई जिन्हें सार्वजनिक कार्यो का बहुत ज्ञान था और उनकी स्वीकृति मिलने के पश्चात् मै इसे कांग्रेस के समक्ष रखने का साहस कर सका। तभी ऐसा मालूम हुआ मानो कई कमिश्नरो ने इसी प्रकार की योजनाएँ बनाई थी। एक पुरानी समस्या पर पहले विचार हुआ। समस्या थी कि सभी कोलोनियो का सघ बनाया जाय या नही और यह सर्वसम्मति से पारित हो गया। तब एक समिति नियुक्त हो गई जिसमे प्रत्येक कोलोनी का एक सदस्य रखा गया। इस सम्मति का कर्त्तव्य अनेक योजनाओ और रिपोर्टों का अध्ययन करना था। हुआ ऐसा कि मेरी योजना पसन्द की गई और कुछ संशोधनो के साथ ज्यो की त्यों छप गई।

इस योजना के अनुसार सामान्य कार्य-व्यापार एक प्रैसीडेन्ट जनरल के अन्तर्गत होने थे, जिसकी नियुक्ति बादशाह की आज्ञा से होनी थी और

अन्य कोलोनियो से जनता के प्रतिनिधि लेकर एक उच्चस्तरीय समिति का निर्माण करना था। इन प्रतिनिधियो का चुनाव कोलोनी की असेम्बली मे से होना था। कांग्रेस मे इस पर रोज विचार-विमर्श होने लगा और साथ ही साथ आदिवासियो की समस्याओ के विषय मे भी बातें होती रही। अनेक विरोध और कठिनाइयाँ सम्मुख रखी गई लेकिन अन्त मे सभी पर विजय प्राप्त कर ली गई और योजना सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गई और आज्ञा दे दी गई कि बोर्ड आफ ट्रेड तथा कई सूबो की असेम्बलियो को प्रतियाँ भेजी जाये। इसका भाग्य भी बडा विचित्र था : असेम्बलियाँ इसे व्यवहार मे नही लाई क्योकि उनके विचार से इससे सत्ता के हाथ मे साधारण अधिकार पहुँच जाते और इंगलैंड मे इसे अत्यधिक जनतान्त्रिक कहा जाता। इसलिए बोर्ड ऑफ ट्रेड ने इस पर अपनी सहमति नही दी और न ही बादशाह की सम्मति के लिए भेजना स्वीकार किया। एक दूसरी योजना बनाई गई जो उद्देश्य की प्राप्ति मे अधिक सहायक मानी गई, जिसके अनुसार सूबो के गवर्नर अपनी समितियो के कुछ सदस्यो सहित एक स्थान पर एकत्र होने थे और सेना एकत्र करने तथा किले बनाने की आज्ञा देने को थे। इसके अनुसार इन सब कामो का खर्च ग्रेट ब्रिटेन के खजाने से मिलने को था जिसे बाद मे ससद के एक कानून द्वारा अमेरिका पर कर लगाकर वापस किया जाना था। मेरी योजना और उसके पक्ष मे मेरे तर्क तुमको मेरे प्रकाशित राजनीतिक कागजो मे मिल जायेगे।

अगले जाडे मे बोस्टन मे होने के कारण गवर्नर शरली के साथ दोनो योजनाओ पर काफी बातचीत हुई। इस वार्तालाप का कुछ अंश भी मेरे कागजो मे मिल सकता है। मेरी योजना को पसन्द न करने के अनेक विरोधी कारण थे जिससे मुझे लगता था कि मेरी योजना ही वास्तव मे सच्ची योजना थी, और मेरी अब भी यही राय है कि अगर उस पर काम किया गया होता तो इगलैंड और अमेरिका दोनो का भला होता। इस प्रकार सगठित कोलोनियाँ इतनी मजबूत हो जाती कि अपनी

रक्षा अपने आप कर सकती। तब इंगलैंड से सेना मँगाने की आवश्यकता न पड़ती। निस्संदेह अमेरिका पर कर लगाने और उसके फलस्वरूप होने वाला रक्तपात भी न हुआ होता, लेकिन ऐसी गलतियाँ नई नही हैं; इतिहास राज्य-सरकारों और राजाओं की गलतियो से भरा पडा है:

" दुनिया की बस्तियो को नजर फैलाकर देखो, कितने कम अपनी भलाई जानते हैं या जानकर पाने की कोशिश करते हैं।"

जो लोग शासन करते हैं उन पर काम का भार सदा रहता है और इसलिए वे नई योजनाओं पर विचार करना या उन्हें पूरा करने की तकलीफ नही उठाते। अतः सार्वजनिक हित के सर्वोत्कृष्ट कार्य पूर्व-योजना के अनुसार नही पूरे हुआ करते बल्कि अवसर से बाधित होकर होते है।

पेंसिलवानिया के गवर्नर ने इस योजना से सहमत होते हुए और इसे असेम्बली मे भेजते हुए कहा था, "मुझे लगता है कि इस योजना को अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक और उचित-अनुचित का भली प्रकार विचार कर बनाया गया है और इसलिए मैं सिफारिश करता हूँ कि सामान्य सदस्य इस पर गौर करे और पूरा ध्यान दें। फिर भी एक सदस्य की जल्दबाजी के फलस्वरूप असेम्बली मे यह योजना उस समय उपस्थित की गई जब मैं अनुपस्थित था। इसे मैंने अन्यायजनक समझा और इसका विरोध किया, क्योकि मुझे इससे काफी निराशा हुई थी।

इस वर्ष बोस्टन की अपनी यात्रा मे इगलैण्ड से अभी-अभी आये हमारे नये गवर्नर श्री मॉरिस से मेरी न्यूयार्क मे मुलाकात हुई। इससे पहले भी मैं उनसे भली प्रकार परिचित था। उनके पास श्री हैमिल्टन के उत्तराधिकारी होने के पत्र थे, जिन्होने प्रतिदिन झगडो से तग आकर इस्तीफा दिया था। श्री मॉरिस ने मुझसे पूछा कि मेरी दृष्टि मे क्या उन्हे भी शासन मे ऐसी असुविधाएँ होगी। इस पर मैंने उत्तर दिया, "नही। इसके विपरीत आप बड़ी सुगमता से शासन चला सकते हैं

बशर्ते कि असेम्बली के साथ किसी प्रकार का झगडा मोल न लें।" उन्होने मुस्कराते हुए कहा, "मेरे प्यारे दोस्त, तुम मुझे झगडो मे न पडने की सलाह कैसे दे सकते हो! तुम जानते हो कि मैं विवादप्रिय व्यक्ति हूँ, इससे मुझे बहुत पसन्नता मिलती है; फिर भी चूंकि मैं तुम्हारी सम्मति का आदर करता हूँ इसलिए वायदा करता हूँ कि सम्भव हो सका तो मैं झगडो मे न पडूंगा।" वादविवादप्रिय होने के उनके ठोस कारण थे। वे भाषणकला मे प्रवीण थे, अत्यन्त कुशाग्र छात्र रहे थे, और इसलिए तर्कयुक्त वार्तालापो मे सफल होते थे। बचपन मे उन्हें इसी प्रकार पाला गया था। मैंने सुना है कि उनके पिता अपने मनोरंजन के लिए अपने बच्चो को आपस मे शास्त्रार्थ कराते थे—शाम का खाना खाने के पश्चात्। परन्तु मेरा अपना विचार है कि यह अभ्यास बुद्धिमत्तापूर्ण नही था क्योकि अपने निरीक्षण से मैं जान गया हूँ, विवाद, विरोध और झगडा करने वाले अपने कामो मे साधारणतया असफल ही रहते हैं, कभी-कभी उनकी विजय अवश्य हो जाती है लेकिन वे सदा इच्छा प्राप्त नही कर पाते, जो उनके लिए अधिक लाभदायक होती। वे फिलाडेल्फिया जा रहे थे और मैं बोस्टन, इसलिए हम अपने-अपने रास्ते पर चल पडे।

वापस लौटते समय न्यूयार्क मे मुझे असेम्बली के कागज देखने को मिले जिनसे यह मालूम हुआ कि मुझसे वायदा करने के बावजूद उनके और असेम्बली के बीच भारी अन्तर इतने ही समय मे पड गया था; और जब तक वे शासन करते रहे, उनके और असेम्बली के बीच लगातार सघर्ष चलता रहा। मुझे भी इसमे भाग लेना पडा क्योकि ज्यो ही वापस लौटकर मैंने असेम्बली मे अपना स्थान लिया तो मुझे श्री मॉरिस के भाषणो और सम्वादो का उत्तर देने के लिए प्रत्येक कमेटी मे रख लिया गया। ये कमेटियाँ हमेशा मुझसे ही आलेख बनाने को कहती थी। उनके सम्वाद और हमारे उत्तर तीव्र कभी-कभी अशोभन गाली-गलौज से भरे हुए होते थे, और चूंकि वे जानते थे कि

असेम्बली की ओर से मैं ही लिखता हूँ इसलिए सोचा जा सकता है कि जब कभी हम आपस मे मिलते होगे, जरूर एक-दूसरे का गला काटते होगे ; लेकिन वे इतने अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे कि इस विरोध से उनके और मेरे व्यक्तिगत सम्बन्धो मे कोई अन्तर नही आया और हम अक्सर एकसाथ खाना खाया करते थे।

एक दिन, जब यह सार्वजनिक संघर्ष अपनी पूरी तेजी पर था, हम सडक पर मिल गये। उन्होने कहा, "फ्रैंकलिन, चलो, मेरे साथ घर चलो और अपनी शाम वहाँ गुजारे, आज कुछ ऐसे व्यक्ति आने वाले है जिन्हे तुम अवश्य पसन्द करोगे।" और मेरा हाथ पकडकर मुझे अपने घर ले गए। भोजन के पश्चात् शराब पीते हुए मनोरजक बातचीत के बीच उन्होने मजाक करते हुए कहा कि उन्हे सैंको पेन्ज़ा का विचार बहुत अच्छा लगता है ; सैंको पैन्जा के सामने जब यह प्रस्ताव रखा गया कि उसे कही का शासक बना दिया जाये तो उसने प्रार्थना की—"मुझे काले आदमियो का शासक बनाया जाये क्योकि वे मेरा विरोध करेंगे तो मै उन्हे बेच डालूंगा।" उनके एक मित्र जो मेरी बगल मे बैठे थे, बोले, "फ्रैंकलिन, तुम इन बदमाश क्वेकरो का साथ क्यों दे रहे हो ? तुम इन्हे बेच दो तो अच्छा नही होगा ? मालिक तुम्हे अच्छा पैसा देगा।" मैंने उन्हे उत्तर दिया, "गवर्नर साहब अभी तक उन्हें पूरी तरह काला नही बना पाये।" और सचमुच गवर्नर ने अपने सभी भाषणो मे असेम्बली को काला करने मे कोई कसर न उठा रखी थी लेकिन जितनी जल्दी वे काला रग चढ़ाते थे उतनी ही जल्दी क्वेकर लोग उसे साफ कर देते थे, और बदले मे वह रग उन्ही के मुँह पर पोत देते थे, इसलिए यह देखकर कि कही उन्हें खुद नीग्रो न बना दिया जाए, वे और श्री हैमिल्टन दोनों ही इस सघर्ष से ऊब गए और उन्होने शासन छोड दिया।

इन सार्वजनिक सघर्षों की जड मे हमारे पीढियों से चले आये गवर्नर ही थे। जब उनके सूबों की सुरक्षा के लिए किसी प्रकार का कर लगाया जाने वाला होता था तो वे अविश्वसनीय नीचता से अपने

कर्मचारियो से कह दिया करते थे कि अगर उस कानून मे उनकी बडी-बडी जमीदारियो को छूट न दी जाये तो कानून पास ही न होने दिया जाये। यहाँ तक कि उन लोगो ने अपने मातहतो से प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा रखे थे कि वे इन आज्ञाओ का अक्षरश पालन करेगे। असेम्बली मे तीन वर्ष तक इस अन्याय के विरुद्ध सघर्ष चलता रहा लेकिन वाद मे उसे ही झुकना पडा। अन्तत गवर्नर मॉरिस के उत्तराधिकारी कैप्टन डेनी ने इन आज्ञाओ का उल्लघन किया, कैसे—यह मैं आगे बता रहा हूँ।

लेकिन मैं अपनी कहानी बडी तेजी से कहने लगा हूँ। गवर्नर मॉरिस के शासन-काल मे कुछ व्यापारिक शर्तें हुई थी, वे भी मैं छोड़े जा रहा था।

एक प्रकार से फ्रास के साथ युद्ध शुरू हो गया था। और मैसाच्युसेट्स की खाडी की सरकार ने क्राऊन प्वाइन्ट पर आक्रमण करने की योजना वनाई और सहायता माँगने के उद्देश्य से श्री क्विसी को पेसिलवानिया और श्री पॉवल (जो बाद मे गवर्नर-जनरल हुए) को न्यूयार्क भेजा। मैं असेम्बली मे था, उसे भली प्रकार जानता था और श्री क्विसी के ही देश का रहने वाला था। इसलिए उन्होने मुझसे अनुरोध किया कि मैं अपने प्रभाव से सहायता दिलवाऊँ। मैंने उन्हें उनका भाषण लिखवाया जिसे सबने बहुत पसन्द किया। उन्होने वस्तुओ के रूप मे दस हजार पौंड की सहायता देना स्वीकार किया। लेकिन गवर्नर ने इस बिल पर अपनी स्वीकृति देने से इन्कार कर दिया (उस बिल मे श्री क्विसी के लिए सहायता और दूसरी सहायताओ को शामिल किया गया था) उनका कहना था कि जब तक इसमे एक अनुच्छेद यह नही जोड दिया जायेगा कि जमीदारो को इसके फलस्वरूप लगने वाले कर मे कोई हिस्सा नही देना होगा तब तक वे अपनी सम्मति नही देगे।

असेम्बली यद्यपि न्यू इगलैड की सहायता करना चाहती थी, लेकिन समझ नही पा रही थी कि कैसे करे। श्री क्विसी ने गवर्नर की सहमति लेने की बहुत कोशिश की लेकिन वे जिद पर अड गये थे।

तब मैंने गवर्नर की सहायता के बिना इस कार्य को करने का एक तरीका सुझाया कि कर्ज के दफ्तर के ट्रस्टियों से सहायता ली जाये। कानून की रू से असेम्बली को कर्ज के दफ्तर से कर्ज लेने का अधिकार था। उस समय दफ्तर मे सचमुच धन नही था। इसलिए मैंने प्रस्ताव किया कि धन धीरे-धीरे एक वर्ष में दिया जाये, और उस पर पांच प्रतिशत ब्याज रहे। मेरे विचार से इस आज्ञा से वस्तुएँ आसानी से खरीदी जा सकती थी। असेम्बली ने बहुत ही कम हिचकिचाहट के साथ प्रस्ताव को स्वीकार किया। कागज फौरन छापे गये और मुझे उन पर हस्ताक्षर करके यथास्थान देने का भार सौंपा गया। उन्हें धन देने के लिए फड उस समय सूबे मे प्रचलित कर्ज के रूप में दिये गये कागजी नोटो का ब्याज और मादक वस्तुओं पर लगाये गये कर से प्राप्त होने को था। सभी लोग जानते थे कि यह धन आवश्यकता से कही अधिक है। इसलिए उन्हे फौरन उधार वस्तुएँ मिल गईं और बदले मे यही बॉड दे दिये गये। इसके अतिरिक्त बहुतसे धनिक व्यक्तियों ने, जिनके पास नकद रुपया था, वह बॉड खरीद लिये क्योकि वे उनके लिए बहुत-लाभदायक थे। उन पर ब्याज तो मिलता ही था, साथ ही किसी भी तरह के सिक्के पर उनका उपयोग किया जा सकता था। परिणाम यह हुआ कि बडी उत्सुकता के साथ वे खरीद लिये गये और कुछ ही सप्ताहो मे समाप्त हो गये। इस प्रकार यह महत्त्वपूर्ण कार्य मेरे उद्योग से पूर्ण हो सका। श्री क्विसी ने एक बड़े खूबसूरत स्मृति-पत्र मे असेम्बली को धन्यवाद दिया और वे अपने उद्देश्य मे पूर्णतया सफल होकर घर गये; उसके पश्चात् मेरी और उनकी अत्यन्त घनिष्ठ और प्रेममय मित्रता हमेशा कायम रही।

ब्रिटिश सरकार ने अल्बैनी मे प्रस्तावित उपनिवेशो के संगठन की आज्ञा देना और उन्हे अपनी सुरक्षा अपने आप करने देना स्वीकार नही किया। कारण यह था कि वह सोचती थी कि उपनिवेशो मे कही इतनी अधिक सेना न हो जाये कि उनकी शक्ति बढ जाये। वह

उपनिवेशो के प्रति सतर्क और शंकित हो उठी और सुरक्षा के लिए ब्रिटिश की दो टुकडियो के साथ जनरल ब्रैडक को भेज दिया। वे वरजीनिया मे स्थित अलैक्जेण्ड्रिया पर उतरे और वहाँ से मेरीलैंड मे स्थित फ्रेडरिक टाउन मे पहुँचे, जहाँ वे सवारियो की प्रतीक्षा करने लगे। असेम्बली को कही से सूचना मिल गई थी कि जनरल ब्रैडक के मन मे उनके विरोध मे पक्षपात है और वे जनता की सुरक्षा के स्थान पर उसका उल्टा ही अधिक करेंगे। असेम्वली ने मुझसे कहा कि मैं असेम्वली की हैसियत से नही बल्कि पोस्टमास्टर-जनरल की हैसियत से उनसे मिलूँ और इस रूप मे वातें करू कि मैं यह तय करने को आया हूँ कि उनके और कई सूबो के गवर्नरो के बीच आने-जाने वाले पत्रो को किस प्रकार पहुँचाया जाये कि वह जल्दी से जल्दी और निश्चित रूप से लोगो को मिल सकें, क्योकि उन्हे गवर्नरो के साथ पत्र-व्यवहार तो लगातार करना ही पडेगा। असेम्बली ने वायदा किया कि मेरी यात्रा का खर्च वह स्वयं उठायेगी। इस यात्रा मे मेरा लडका मेरे साथ था।

हम लोगो ने जनरल को फ्रेडरिक टाउन मे ही पाया। उन्होने कुछ व्यक्तियो को मेरीलेंड और वरजीनिया के पृष्ठ-प्रदेशो मे गाडियाँ लाने को भेजा था और अब बैचैनी से उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं उनके साथ कई दिन ठहरा रहा। रोज उनके साथ भोजन करता और उनके सारे पक्षपातो को दूर करने का मेरे पास पूरा अवसर था। मैंने उन्हें बताया कि उनके आगमन से पहले असेम्बली क्या कर चुकी है और उनके कार्य को सुगम बनाने के लिए क्या करने को तैयार है। मैं विदा होने वाला था कि जिन गाडियो को वे मँगाना चाहते थे उनके कागज उनके पास आए जिनसे पता चला कि गाडियाँ केवल पच्चीस थी और सभी काम लायक नही थी। जनरल और उनके अधिकारियो को आश्चर्य हुआ। उन्होने घोषणा कर दी कि यात्रा आगे होना असम्भव है और उन्होने मन्त्रियो के ऊपर सारा अपराध मढ दिया जिनकी बदौलत वे ऐसी जगह उतरे थे जहाँ सामान जाने के लिए गाडियाँ तक नही थी,

क्योकि कम से कम डेढ सौ गाडियो की उनको आवश्यकता थी।

मेरे मुँह से निकल पडा कि बड़े दु:ख की बात है कि वे पेंसिलवानिया में नही उतरे क्योंकि वहाँ लगभग हर किसान की अपनी गाड़ी होती है। जनरल ने उत्कठापूर्वक मेरे शब्दो को पकडते हुए कहा, "आप वहाँ के प्रभावशाली व्यक्ति हैं और सम्भवत: हमारे लिए गाडियो का प्रबन्ध कर सकें, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप यह भार अपने ऊपर ले लें।" मैंने उनसे पूछा कि गाडियों के मालिको को क्या मेहनताना दिया जायेगा और मेरी इच्छा थी जो भी शर्तें तय हो, उन्हे बाकायदा एक शर्तनामे पर अवश्य लिखा जाये। आवश्यक शर्तें मैंने लिखी और उन्होने मान ली। एक कमीशन बनाने तथा उसे कार्य रूप मे परिणत करने के लिए सूचनाएँ तैयार की गईं। यह शर्तें क्या थी यह इस विज्ञापन से मालूम हो जायेगा जो मैंने लकास्टर पहुँचते ही प्रकाशित किया था। इस विज्ञापन का तत्काल व्यापक प्रभाव हुआ और लोग इसके प्रति उत्कठित हो उठे, इसलिए मैं इसे विस्तार से नीचे दे रहा हूँ।

विज्ञापन

"लकास्टर २६ अप्रैल १७५५। डेढ सौ ऐसी गाडियों की, जिनमे से प्रत्येक मे चार घोड़े जोते जाते हो और पन्द्रह सौ सवारी के घोडो की आवश्यकता बादशाह सलामत की सेवा को है जो विल्स क्रीक मे पहरा देने के लिए जा रही है। जनरल ब्रैडक ने प्रसन्नतापूर्वक मुझे इन्हे किराये पर लाने का भार सौपा है इसलिए सर्वसाधारण को सूचना दी जाती है कि मै आज से लेकर बुधवार की शाम तक लंकास्टर मे ही मिलूँगा और उसके पश्चात् बृहस्पति की प्रात: से शुक्रवार की शाम तक पार्क मे मैं गाडियो और घोड़ों तथा सवारी के घोडो को निम्नलिखित शर्तो पर किराये पर लूँगा : (१) चार घोडेवाली गाडी को एक दिन के लिए पन्द्रह शिलिंग दिया जायेगा और काठी समेत घोड़े के लिए दो शिलिंग प्रतिदिन, काठी रहित घोडे का किराया

अठारह पेंस प्रतिदिन होगा। (२) गाडियाँ अथवा घोडे जैसे ही विल्स क्रीक मे पहुँच जाएगे उनका किराया आरम्भ हो जायेगा। बीस मई या उसके आसपास। उनके विल्स क्रीक पहुँचने और काम समाप्त हो जाने के पश्चात् वापिस लौटने के लिए उचित पारितोपिक दिया जायेगा। (३) प्रत्येक गाडी और काठी वाले या काठी रहित घोडे की उपयोगिता निष्पक्ष व्यक्तियो द्वारा सिद्ध की जायेगी। चुनाव मुझमे तथा घोडे-गाडी के मालिक के बीच होगा। अगर रास्ते मे कोई गाडी नष्ट हो गई या घोडा मर गया तो उनका मुआवजा दिया जायगा। (४) सात दिन की तनख्वाह पेशगी दी जायेगी और मेरे द्वारा प्रत्येक गाडी और घोडे के मालिक को प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किये हुए मिल जायेंगे और बाकी पारिश्रमिक जनरल ब्रैडक या सेना के किसी दूसरे ऊँचे अधिकारी द्वारा काम समाप्त होने पर या आवश्यकता पडने पर समय-समय पर मिलेगा। (५) गाडियो के ड्राइवर अथवा किराये के घोडो की देख-रेख करने वाले व्यक्तियो को किसी भी दशा मे सिपाहियो की ड्यूटी नही करनी पडेगी। गाडी अथवा घोडो से सम्बन्धित कामो को छोडकर वे दूसरे काम नही करेंगे। (५) ओट, अनाज अथवा अन्य वस्तुएँ जो गाडियो और घोडो की सहायता से कैम्प मे लाई जायेंगी यदि वह घोडो से बच सकी तभी उचित मूल्य देकर सेना द्वारा उनका प्रयोग किया जायेगा।

नोट—मेरा पुत्र विलियम फ्रैंकलिन कम्बरलैंड काउटी के किसी व्यक्ति के साथ इस प्रकार का अनुबन्ध करने का अधिकारी है।

—बैंजामिन फ्रैंकलिन"

लकास्टर, यार्क और कम्बरलैन्ड के काउन्टियो के निवासियो से

"दोस्तो और देशवासियो,

"कुछ दिन पूर्व मैं फ्रैड्रिक के कैम्प मे घूमते-घामते पहुँच गया था। वहाँ मैंने देखा कि जनरल और उनके मातहत अधिकारी इस बात से बड़े परेशान हुए कि उन्हे दोनो चीजें आसानी से मिल सकती है, परन्तु हमारी असेम्बली और गवर्नर के बीच मतभेद होने के कारण धन का

प्रबन्ध नहीं किया गया और न इसके लिए और कुछ सोचा गया।

"इरादा था कि इन काउन्टियों में सशस्त्र सैनिक जल्दी भेजे जाये कि वे अच्छी से अच्छी गाडियाँ और घोडे आवश्यकता के अनुसार ले लें और उन्हे चलाने तथा उनकी देखरेख करने के लिए जितने भी आदमियो की आवश्यकता हो उन्हें जबरदस्ती नौकर रख लिया जाये।

"मुझे आशंका हुई कि इस अवसर पर, और विशेष रूप से जबकि उनकी मानसिक स्थिति इतनी खराब है, ब्रिटिश सैनिकों के इन काउन्टियो मे जाने पर वहाँ के निवासियों को बडी असुविधा होगी क्योंकि सैनिक जनता के विरोध मे ही है। इसलिए मैंने स्वेच्छा से यह भार अपने कंधों पर ले लिया है कि उचित और न्यायपूर्ण ढंग से जो कार्य किया जा सकता है वह हो जाय। इन पिछड़ी हुई काउन्टियो की जनता ने कुछ दिन पूर्व असेम्बली मे शिकायत की थी कि वहाँ सिक्कों की बहुत कमी है, अब वह अवसर आ गया है जब आप काफी धन कमा सकते है और अपने बीच बँटवारा भी कर सकते है, क्योकि यदि यह यात्रा एक सौ बीस दिन तक जारी रही, जैसी कि सम्भावना है, तो गाडियाँ और घोड़ो का किराया तीस हजार पौंड से अधिक होगा जो आपको चादी या सोने के खरे सिक्कों मे दिया जायेगा।

"यात्रा बडी सुगम होगी क्योंकि सेना एक दिन मे बारह मील से अधिक का सफर नही करेगी और गाड़ियो तथा सामान लादने वाले घोडो पर उतना ही सामान लादा जायेगा जो सेना की देखभाल के लिए नितान्त आवश्यक होगा। साथ ही उन्हें सेना के साथ ही चलना होगा, आगे-आगे जल्दी नही। इसके अलावा सेना की भलाई के लिए ही उनकी सुरक्षा का पूरा-पूरा प्रबन्ध किया जायेगा, फिर चाहे वे सफर कर रहे हों या कैम्पों मे सुस्ता रहे हों।

"यदि आप सचमुच बादशाह की भली और वफादार प्रजा है, जैसा

कि मेरा विश्वास है, तो आप इस समय वहुत आवश्यक सेवा कर सकते हैं और अपने लिए भी परिस्थितियो को आसान वना सकते हैं। यदि आपमे से प्रत्येक व्यक्ति एक गाडी और चार घोड़े भी न दे सके तो भी तीन-चार व्यक्ति मिलकर उनका प्रवन्ध कर सकते हैं और कोई एक आदमी चालक वन सकता है और उसके बाद पारिश्रमिक मिलने पर उसे उचित अनुपात से आप अपने वीच विभाजित कर सकते हैं। दूसरी ओर यदि आप स्वय अपने वादशाह और देश की सेवा करना इतने अच्छे और उचित शर्तो पर स्वीकार नही करते तो आपकी वफादारी पर पूरा सदेह किया जायेगा। वादशाह का काम तो पूरा होगा ही। वहादुर सैनिक इतनी दूर से आपकी सुरक्षा के लिए आये हैं और वे आपकी जहालत की वजह से यो नही पडे रहेगे, गाडियो और घोडो का इन्तजाम किया ही जायेगा, और शायद इसके लिए उन्हें आपके साथ कडा व्यवहार करना ही पडेगा और तव आपके पास अपना रोना रोने के सिवा कोई चारा नही रह जायेगा। और सम्भवतः आपकी वातो पर किसी को भी दया न आयेगी, कोई ध्यान नही देगा।

"इस कार्य मे मेरा अपना कोई विशेष हित नही है, सिवा इसके कि मैं लोगो की भलाई करने का सन्तोष प्राप्त कर सकूँ। इस तरह भविष्य मे जो कुछ भी मैं कर सकता हूँ उसके लिए मुझे तकलीफ होगी—गाडियों और घोडो का यह उपाय सफल न होगा तो चौदह दिन के भीतर जनरल को उत्तर दे देना होगा, और मेरा ख्याल है कि घुडसवार सेना के कैप्टन सर जॉन सैन्ट क्लेयर अपनी एक टुकडी समेत इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए फौरन सूवे मे घुस पडेंगे जिसे सुनकर मुझे वहुत दुःख होगा क्योकि मैं आप सबका सच्चा मित्र और हितैषी हूँ।

—वैंजामिन फ्रैंकलिन"

वैगन-मालिको आदि को पेशगी के तौर पर देने के लिए जनरल से मुझे आठ सौ पौण्ड मिले थे, लेकिन रकम अपर्याप्त होने के कारण मैंने दो सौ पौण्ड और भी दे डाले, फलस्वरूप दो सप्ताह के भीतर ही २५६

घोडो सहित एक सौ पचास वैगन हमारे कैम्प के लिए रवाना हो गए। विज्ञापन मे किसी वैगन या घोडे के गुम होने की स्थिति मे मूल्य के अनुसार भुगतान का वायदा किया गया था। किन्तु वैगन-मालिकों ने यह कहते हुए कि वे जनरल ब्रैडक को नही जानते, फिर किस आधार पर उनके वायदे पर भरोसा किया जाय, यह माँग की कि मैं बौंड प्रस्तुत करूँ। मैंने भी उनका कहना मान लिया।

एक दिन शाम को कैम्प मे कर्नल डनबर की रेजीमेण्ट के अफसरो के साथ खाना खाते समय, उन्होने अधीनस्थ अफसरो के बारे में अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि उनमे से सभी इतने समृद्ध नही और उजाड प्रदेश से होते ही इतने लम्बे प्रयाण के दौरान, जहाँ से कुछ भी खरीदना नही है, वे स्टोर में जरूरत की सारी चीजें इकट्ठी करने मे असमर्थ होगे। मैंने बड़ी हमदर्दी से उनके मसले को सुना और उन्हे कुछ सहायता उपलब्ध कराने का प्रयत्न करने का सकल्प भी किया। वैसे मैंने अपने इरादे के बारे में उनके सामने कुछ कहा नही। किन्तु दूसरे ही दिन मैंने असेम्बली (विधानसभा) की समिति को, जिसके सुपुर्द कुछ सरकारी धन रहता था, एक पत्र लिखकर जोरदार सिफारिश की कि इन अफसरो के मामले पर विचार किया जाय। साथ ही मैंने यह भी प्रस्तावित किया कि रोजमर्रा की नाश्ते की कुछ और वस्तुओ को उपहारस्वरूप उनके पास भेजा जाना चाहिए। मेरे बेटे ने, जिसे शिविर-जीवन और उसकी आवश्यकताओ की थोडी-बहुत पकड थी, मेरी खातिर एक सूची भी तैयार कर दी जिसे मैंने अपने पत्र से सलग्न कर दिया था। समिति ने मजूरी दे दी और मेरे बेटे की देख-रेख में सारी चीजे इस हिसाब से रवाना कर दी कि वे भी वैगनो के साथ-साथ शिविर मे पहुँच गई। इसमे कुल बीस पार्सल थे, और प्रत्येक मे इतनी चीजें थी :—

६ पौण्ड लोफ शुगर

६ पौण्ड बढिया मस्कोवाडो शुगर

१ पौण्ड वढिया हरी चाय
१ पौण्ड वढिया वोहिया चाय
६ पौण्ड वढिया ग्राउण्ड काफी
६ पौण्ड चाकलेट
१–२ टिन वढिया सफेद विस्कुट
१–२ पौण्ड गोल मिर्च
१ पीपा वढिया सफेद अंगूरी शराव
१ ग्लूसेस्टर पनीर
२० पौण्ड वढिया मक्खन
२ दर्जन पुरानी मडेरा शराव।
२ गैलन जमैका स्पिरिट
१ वोतल सरसो का आटा
२ हैम
१–२ दर्जन सूखे "टग"
६ पौण्ड चावल
६ पौण्ड किशमिश

अच्छी तरह से वँधे-वँधाये ये वीसो पार्सल वीस घोड़ों पर लादकर एक-एक अफसर को भेंट स्वरूप भेजे गये। अत्यन्त कृतज्ञतापूर्वक ये भेंटे स्वीकार की गईं और दोनो रेजीमेन्टो मे कर्नलो ने अत्यन्त आभारपूर्ण लहजे मे मेरी इस सहृदयता का अपने पत्रो मे वखान किया। वैगन आदि उपलब्ध कराने के मेरे व्यवहार से जनरल को अधिक सन्तोष हुआ और उसने मुस्तैदी से पेशगी का मेरा हिसाव चुका दिया। उसने वार-वार धन्यवाद-ज्ञापन के साथ-साथ मुझसे आगे भी अपने लिए सहायता के रूप मे सामान भेजते रहने का अनुरोध किया। मैंने यह भी मंजूर कर लिया। उस वडी सहायता से उसकी पराजय की खवर सुनने तक मैं उसकी सहायता मे व्यस्त रहा। इस प्रकार मैं उसे अपने एक हजार पौण्ड से भी अधिक दे चुका था। वाद मे मैंने इसका हिसाव

भी उसके पास भेज दिया। मेरी खुशनसीबी थी कि जग के कुछ ही दिन पूर्व उसके हाथ मे पैसे आ गए और उसने फौरन मेरे नाम एक हजार पौड के भुगतान का आर्डर भेज दिया, शेष अगले खाते मे डाल दिया। मैं इस अदायगी को खुशनसीबी इसीलिए कहता हूँ कि शेष रकम मुझे फिर कभी नही मिल पाई।

मेरे विचार से यह जनरल बहादुर आदमी था और सम्भवतः किसी यूरोपीय युद्ध मे एक कुशल अफसर की हैसियत से उसने नाम कमाया होगा। किन्तु उसे बेहद आत्मविश्वास था, रेगुलर फौजो की अहमियत के बारे मे उसकी बेहद आस्था थी और अमेरिकावासियो तथा अमरीकी आदिवासियो के प्रति वह बेहद उपेक्षा का भाव रखता था। हमारे आदिवासी दुभाषिये जार्ज क्रोधन उसके प्रयाण मे दो सौ ऐसे लोगों के साथ शामिल हुए थे। यदि उसने उसके साथ नरमी का बर्ताव किया होता तो पथ-प्रदर्शक, स्काउट आदि के रूप मे ये लोग उसकी सेना के बडे काम आ सकते थे, किन्तु उसने उन्हें कोई तरजीह नही दी और उसकी उपेक्षा की, फलस्वरूप धीरे-धीरे उन लोगो ने जनरल से विदा ले ली।

एक दिन बातचीत के दौरान मे उसने मेरे सामने अपनी सारी योजनाओं को पेश करते हुए कहा था कि ड्यूक्वेज़ने फोर्ट को फतह करने के बाद मैं नियागरा की ओर बढूंगा और उसे अधिकृत करने के बाद यदि मौसम मुआफिक रहा तो फ्रोन्टेनास पर धावा बोलूंगा। मेरा अनुमान है कि मौसम साथ देगा ही, क्योकि ड्यूक्वेज़ने मे मुझे मुश्किल से तीन या चार दिन लगेगे और फिर मेरे देखने मे ऐसी कोई चीज ही नही जो नियागरा की ओर मार्च करने से मुझे रोक सके। जंगलो और झाडियो को काटकर बनाये सँकरे रास्ते को ध्यान मे रखते हुए—जिससे होकर जनरल की सेना को आगे बढना था और फिर पहले के पन्द्रह सौ फ्रैंच सैनिको की हार का ख्याल करते हुए जिन्होने इराक्वाय प्रदेश पर हमला किया था—मेरे मन मे इस अभियान के प्रति कुछ भय और शंकाएँ उठी थी। किन्तु मै केवल इतना कहने का साहस कर पाया था,

"जी हाँ, आप बिल्कुल ठीक कहते है, तोपचियो से लैस, इतनी बढिया फौज के साथ यदि आप ड्यूक्वेज़ने पहुँच जाते हैं तो—जैसा कि हम लोग सुनते है, उस स्थान की न तो अभी पूरी तरह किलेबन्दी हो पाई है और न ही वहाँ कोई जबर्दस्त सेना ही है—आपको कोई दिक्कत नही पडेगी। आपके अभियान मे मुझे केवल आदिवासियो के द्वारा छिपकर वार करने से सम्बन्धित बाधा दिखाई पडती है, जो इस तरह के हमले करने मे बडे दक्ष होते है और करीब चार मील के सँकरे रास्ते पर, जिससे होकर आपकी सेना को गुजरना होगा, उनके हमले की काफी आशका रहेगी और वे आपकी टुकडियो को धागे की तरह तहस-नहस कर सकते हैं क्योकि आपकी और टुकडियाँ ऐसी हालत मे मदद के लिए एक जगह पहुँच नही सकेगी।"

मेरी इस गैर-जानकारी पर मुस्कराते हुए जनरल ने उत्तर दिया, "आपके नौसिखिये अमेरिकी सैनिको के लिए ये जगली, सचमुच बडे कडे दुश्मन साबित हो सकते है, लेकिन महाशय शाही सैनिको और सधी फौजो पर उनका कुछ भी प्रभाव जमा सकना नामुमकिन है।" एक फौजी अफसर से उसके पेशे के बारे मे विवाद मे पडने की असभ्यता से मैं सचेत था ही, सो मैंने आगे कुछ नही कहा। लेकिन दुश्मन ने, जैसा कि मैंने उस लम्बे सँकरे रास्ते पर खतरे की आशका की थी, अवसर का लाभ नही उठाया, बल्कि मुकाम से नौ मील की दूरी तक विना किसी व्यवधान के फौजो को आगे बढने दिया, और तभी जब सेना ने एक नदी पार करके अपनी सभी टुकडियो के एकत्र होने के इन्तजार मे पडाव डाल रखा था, साथ ही पीछे छोड़े किसी भी जगल की बनिस्बत काफी खुली जगह भी थी कि पेडो एव झाड़ियो के पीछे से दुश्मनो ने पहली पक्ति पर जोरदार गोलाबारी शुरू कर दी। यही पर जनरल को पहली बार सुराग मिला कि शत्रु आस-पास ही छिपे हैं। यह अग्रिम टुकडी, चूँकि अभी अव्यवस्थित थी, जनरल ने फुर्ती से इनकी सहायता के लिए और टुकड़ियाँ इकट्ठी की।

वैगनो, और सामानो और पशुओ के सहारे सारा काम बडी ही हडबडी मे किया गया था, ठीक इस दौरान उन पर गोलियाँ बरस रही थी। घोडे पर सवार अफसर सहज ही निशाने मे आ जाते थे, उन्हे तक-तक कर वे निशाना लगाते, फलत. घुडसवार बडी तेजी से धराशायी होने लगे। सैनिक भी जो इस गडबडी मे एकत्र थे, कुछ तो आदेशो को सुन पा रहे थे, कुछ नही, खडे-खडे उनमे से दो-तिहाई गोली के शिकार हो गये, और अन्तत. आतंकित होकर सारे के सारे पीठ दिखाकर भाग निकले।

गाडी वाले अपनी-अपनी गाडियो मे जुते घोडो मे से एक को खोल कर भाग खडे हुए। तत्काल दूसरे लोगो ने भी उनका अनुसरण किया, और इस प्रकार सारी गाडियाँ, खाद्य पदार्थ, शस्त्रास्त्र और अन्य सामान शत्रु के हाथो जा पडा। जनरल घायल हो गये, जिनको बड़ी कठिनाई से हटाया गया। उनके सचिव श्री शरली उनके पास ही मारे गए। साथ ही ८६ अफसरो मे से ६३ मारे गये अथवा घायल हो गये, तथा ११०० आदमियो मे से ७१४ आदमी शेष रहे। यह ११०० सैनिक सारी सेना मे से चुने गये थे, शेष सिपाहियो को पीछे कर्नल डनबर के साथ छोड़ दिया गया, जिन्हे अपेक्षाकृत अधिक वजनी सामान, खाद्य-पदार्थ और असबाब के साथ बाद मे आना था। भगोडो का पीछा शत्रुओ ने किया और वे डनबर के पडाव मे जा पहुँचे। वहाँ आतंक फैल गया, जिसका प्रभाव डनबर तथा उसके सिपाहियो पर तत्क्षण पडा। यद्यपि अब उनके पास एक हजार से अधिक सिपाही थे और ब्रैडक को हराने वाले शत्रुओ की संख्या आदिवासी और फ्रासीसी दोनो को मिलाकर ८०० से अधिक न थी फिर भी उन्होने आगे बढने और खोये हुए सम्मान को अशत: पुन प्राप्त करने के बजाय सारे सामान, शस्त्रास्त्र आदि को नष्ट कर देने की आज्ञा दे दी जिससे भागकर बस्ती मे पहुँचने के लिए उनके पास अधिक घोडे रहे और बोझा कम। वहाँ उन्हे वर्जीनिया, मेरीलैंड और पेंसिलवानिया के गवर्नरो के सवाद मिले कि वे अपनी टुकडी सीमान्त प्रदेशो मे जमा दें, जिससे निवासियो की कुछ सुरक्षा हो सके।

परन्तु देश को पार करते हुए अपनी योजना उन्होने जारी रखी और फिलाडेल्फिया पहुँचकर ही अपने को सुरक्षित पाया, जहाँ के निवासी उनकी रक्षा कर सकते थे। इस सम्पूर्ण कार्य-कलाप से हम अमेरिका-वासियो को पहली बार लगा कि अग्रेज सैनिको की बहादुरी के बारे मे हमारे ऊँचे विचारो का आधार मजबूत नही था।

इसके अतिरिक्त अमेरिका मे अपने आगमन के पश्चात् बस्तियो से दूर पहुँचने के पहले अपने प्रथम प्रस्थान मे ही उन्होने निवासियो को मारा-पीटा और अनेक ज्यादतियाँ की, कुछ गरीब परिवारो को तो पूर्णतः नष्ट-भ्रष्ट कर दिया तथा विरोध करने पर अन्य व्यक्तियो का अपमान किया, गालियाँ दी, यहाँ तक कि कैद भी रखा। इन सबसे हमे मालूम हो गया कि अगर हमे अपनी सुरक्षा करनी है तो ऐसे रक्षको से बचना होगा। १७८१ मे हमारे फ्राँसीसी दोस्तो का व्यवहार कितना भिन्न था। वे रोड टापू से वर्जीनिया से हमारे अधिक घने बसे भागो मे से होकर गये थे और लगभग ८०० मील का रास्ता तय किया था। लेकिन किसी को भी अवसर नही दिया कि कोई उन पर सुअर, मुर्गी अथवा एक सेब तक की चोरी का अपराध लगा सके।

कैप्टन ऑरमे जनरल का एक व्यक्तिगत सचिव था। बुरी तरह घायल हो जाने पर जनरल के साथ ही उसे भी लाया गया था और कुछ दिनो बाद जनरल की मृत्यु तक उसके साथ ही रहा। उसने मुझे बताया कि पहले दिन सारे समय वह चुप रहा था और रात मे केवल इतना कहा, "कौन जानता था ऐसे समय को?" दूसरे दिन फिर वह खामोश रहा और आखिरकार इतना ही बोला, "हम अब ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं कि उनसे कैसे निपटना चाहिए।" इसके कुछ मिनट बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।

जनरल की सभी आज्ञाओ, सूचनाओ और पत्र-व्यवहार-सहित सचिव के सारे कागज शत्रु के हाथो मे पड गये और उन्होने चुनकर कई दस्तावेजो का अनुवाद फ्रेंच भाषा मे करवाया और युद्ध-घोषणा होने से

पहले ब्रिटिश राज्य के शत्रुतापूर्ण इरादो को सिद्ध करने के लिए मुद्रित करा लिये। इन्ही मे मैंने मन्त्रालय को लिखे हुए जनरल के कुछ पत्र देखे, जिनमे सेना के लिए की गई मेरी महान् सेवाओ की खूब प्रशसा की गई थी और सिफारिश की गई थी कि मुझ पर अधिक ध्यान दिया जाए। डेविड ह्यूम ने भी (जो कुछ वर्षो के बाद लार्ड हर्टफोर्ड के सचिव बने थे, जब वे फ्रास मे मत्री थे, और बाद मे जनरल कॉनवे के सचिव नियुक्त हुए, जब वे राज्यमत्री थे) मुझे बताया कि उस दफ्तर मे कागजो के बीच उन्होने देखा था कि ब्रैडक ने मेरी बडी जोरदार सिफारिश की थी। परन्तु यात्रा असफल रही थी और ऐसा लगता है कि मेरी सेवाओ को अधिक महत्त्वपूर्ण नही समझा गया क्योकि इन सिफारिशो का मेरे लिए कोई उपयोग नही हुआ।

उनकी ओर से व्यक्तिगत रूप से पुरस्कार मैंने केवल एक ही मांगा था; वह यह कि वे अपने अफसरो को आदेश दे कि वे और अधिक खरीदे हुए गुलामो को भरती न करे; और जिन्हे भरती कर लिया गया है उन्हे भी अलग कर दिया जाय। इसके लिए वे फौरन राजी हो गए थे और मेरी प्रार्थना पर अनेक गुलाम अपने मालिको के पास पहुँचा दिए गए। जब डनबर के ऊपर सेना की अध्यक्षता करने का भार आया तो वह इतना उदार नही रह गया। हारकर अथवा यो कहा जाय कि भागकर डनबर फिलाडेल्फिया आया था और मैंने लकास्टर काउटी के तीन किसानो के नौकरो को बरखास्त कर देने का प्रार्थनापत्र दिया और याद दिलाई कि इस बारे मे स्वर्गीय जनरल की क्या आज्ञाएं थी। डनबर ने मुझसे बताया कि कुछ ही दिनो मे वह न्यूयार्क चल पडेगा, और बीच मे ट्रैन्टन मे ठहरेगा और वायदा किया कि अगर नौकरो के मालिक वहाँ पहुँच जाएँ तो वह उनके नौकर वापिस कर देगा। तदनुसार वे खर्च करके और मुसीबत उठाकर ट्रैन्टन पहुँचे, लेकिन उसने अपना वायदा पूरा करने से इन्कार कर दिया। इस तरह मालिको को निराशा भी हुई और हानि भी।

ज्योही गाडियो और घोडो के नुकसान की बात सबको मालूम हुई त्योही सारे के सारे मालिक आकर मुझसे उनके दाम माँगने लगे, जैसा कि मैंने बाँड मे कहा था। उनकी इस माँग से मुझे काफी परेशानी हुई। मैंने उन्हे बताया कि उनका पैसा खजान्ची के पास तैयार है, लेकिन रुपया देने के लिए आज्ञा सबसे पहले जनरल शरली से प्राप्त करनी है और मैंने उन्हे विश्वास दिलाया कि मैंने जनरल के पास पत्र द्वारा प्रार्थना भेज दी है। परन्तु जनरल शरली काफी दूर थे और उनका उत्तर जल्दी नही मिल सकता था, इसलिए मैंने मालिको से कहा कि उन्हे थोडा धैर्य अवश्य रखना होगा। उनके सन्तोप के लिए इतना काफी नही था और उनमे से कुछ ने मुझ पर दावे कर दिए। आखिरकार इस भयानक परिस्थिति से जनरल शरली ने ही मुझे उबारा। उन्होने मालिको की माँगो की जाँच करके समुचित धन देने की व्यवस्था के लिए कमिश्नर नियुक्त कर दिए। कुल मिलाकर लगभग २० हजार पौड देना था, जो मुझे तो तहस-नहस ही कर देता।

इस पराजय का समाचार पाने से पहले दोनो डाक्टर एक बडी शानदार आतिशबाजी का आयोजन करने के लिए धन एकत्रित करने के वास्ते चन्दा-पत्रक लेकर मेरे पास आये। यह आतिशबाजी द्यूक्ज़ेने के किले पर अपनी विजय के उपलक्ष्य मे खुशी प्रकट करने के लिए हो रही थी। मैं गम्भीर हो गया था और बोला था कि मेरे विचार से खुशी मनाने का अवसर आ जाने पर, खुशियो की तैयारियाँ करने का हमारे पास काफी समय रहेगा। उन्हे आश्चर्य हुआ कि मैंने फौरन उनके प्रस्ताव को मान क्यो नही लिया। उनमे से एक ने कहा, "क्या आपका विचार है कि हम किले को जीत नही पायेंगे ?" 'मैं नही जानता कि पराजय नही होगी, लेकिन इतना जानता हूँ कि युद्ध की घटनाएँ बडी अनिश्चित हुआ करती हैं।" मैने अपनी आशका के कारण उन्हें समझाए। चन्दा इकट्ठा करने का विचार छोड दिया गया और इस प्रकार वे उस निराशा से बच गये जो आतशबाजी तैयार कर लेने के बाद उन्हें

मिलती। बाद मे किसी दूसरे अवसर पर डाक्टर बांड ने कहा कि उन्होने मेरी बात को क़तई पसन्द नही किया था।

वैडक की पराजय से पहले गवर्नर मॉ स ने सम्वाद पर सम्वाद भेजकर असेम्बली को परेशान कर रखा था। वे किसी तरह असेम्बली को प्रान्त की प्रतिरक्षा के लिए धन इकट्ठा करने को ऐसे कानून बनाने पर बाधित कर देना चाहते थे जिसमे दूसरे लोगो के साथ-साथ जमीदारो को कर न देना पड़े। और उन्होने असेम्बली के वे सभी बिल अस्वीकृत कर दिये जिनमे इस मतलब का अंश नही था। अब खतरा और प्रतिरक्षा दोनों की आवश्यकता बढ़ गई थी इसलिए उन्होने सफलता की अधिक आशा के साथ अपने प्रयत्नो को दोबाला कर दिया। फिर भी असेम्बली दृढ रही क्योंकि उसे विश्वास था कि वह न्याय-पथ पर है और महसूस करती थी कि अगर उसने रुपये-पैसे से सम्बन्धित किसी बिल को गवर्नर द्वारा सशोधित हो जाने दिया तो वह अपना एक अनिवार्य अधिकार खो देगी। आखिरकार एक बिल मे तो, जिसमे ५० हजार पौंड एकत्र करने का प्रस्ताव था, गवर्नर केवल एक ही शब्द का सशोधन चाहते थे। बिल के शब्द थे, "वास्तविक और व्यक्तिगत सभी प्रकार की सम्पत्ति पर कर लगाया जायेगा, और जमीदारो को छूट नही मिलेगी।" उनका संशोधन था कि 'नही' की जगह पर 'ही' कर दिया जाये। संशोधन बहुत छोटा था लेकिन बहुत महत्त्वपूर्ण। फिर भी जब ब्रैडक की पराजय का हाल इंगलैड पहुँचा तो वहाँ हमारे मित्रो ने, जिनके पास हमने गवर्नर के सम्वादों के असेम्बली द्वारा दिये गये सभी उत्तर सावधानी से भेज दिये थे, जमीदारों के खिलाफ आन्दोलन आरम्भ किया कि गवर्नर को इस तरह की हिदायत देकर उन्होने नीचतापूर्ण और अन्यायपूर्ण काम किया है। कुछ लोगो ने तो यहाँ तक कह दिया कि अपने प्रान्त की प्रतिरक्षा के मार्ग मे रोड़ा बनकर उसने अपने सारे अधिकार खो दिये है। इससे वे डर गये और उन्होने अपने रिसीवर जनरल को आज्ञा दे दी कि इस काम के लिए

असेम्वली द्वारा जितना भी धन इकट्ठा किया जाये उसमे वह पांच हजार पौंड और जोड दें।

यह सूचना सदन को दे दी गई और इस धन को सामान्य कर के स्थान पर स्वीकार कर लिया गया, एक नया विल वनाया गया और इस रूप मे यह बिल पास कर लिया गया। इस कानून के द्वारा मुझे धन—साठ हजार पौड—को यथास्थान वितरित करने के लिए कमिश्नरो मे से एक नियुक्त किया गया। बिल का स्वरूप निर्धारित करने और पारित करने मे मैने बडी तत्परता से कार्य किया था और उसी समय एक स्वयसेवको की सेना स्थापित करने और प्रशिक्षण देने के लिए एक दूसरा विल भी तैयार किया, जो असेम्वली मे विना किसी विशेप कठिनाई के पारित हो गया, क्योंकि इसमे क्वेकरो को इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतत्र रखा गया था। सेना के निर्माण के लिए आवश्यक ससर्ग को वढाने के उद्देश्य से मैंने एक सम्वाद लिखा, जिसमे ऐसी सेना के विरुद्ध जितने भी तर्क मेरी समझ मे आये उन्हें मैंने लिखा और उत्तर दिया। यह सम्वाद मुद्रित हुआ और मेरा विचार है कि इसका बहुत प्रभाव पडा।

नगर और देहात मे कई टुकडियाँ वनी और उन्होंने कवायद सीखना शुरू कर दिया। तभी गवर्नर ने मुझे उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश की प्रतिरक्षा का अधिकारी नियुक्त किया। इस क्षेत्र पर शत्रुओ के आक्रमण अक्सर होते रहते थे और मेरा काम था—जनता की सुरक्षा के लिए सेना तैयार करना और किलो की एक कतार खडी करना। मैंने इस सेना सम्बन्धी कार्य को हाथ मे ले लिया, यद्यपि मैं अपने को इस योग्य नही समझता था। गवर्नर ने मुझसे सारी शक्तियो सहित एक कमीशन दिया और कुछ अवसरो के लिए खाली कमीशन फार्म भी दिये कि मैं जिस व्यक्ति को उचित समझूँ अफसर वना दूँ। मुझे आदमी इकट्ठा करने मे तनिक भी परेशानी नही हुई और जल्दी ही मेरे-नीचे ५६० सिपाही हो गए। मेरा लडका जो कनाडा के विरुद्ध पिछली लडाई मे सेना का एक

अफसर था, मेरा सचिव था और मेरे लिए बडा लाभदायक सिद्ध हुआ। आदिवासियो ने मुराबियन लोगों द्वारा बसाये एक गाँव नाडिनहट को जला दिया था और निवासियो को कत्ल कर दिया था ; लेकिन उस स्थान को किला बनाने के लिए उपयुक्त समझा जाता था।

वहाँ जाने के लिए मैंने सारी टुकडियो को बेथलहेम मे इकट्ठा किया। बेथलहेम उन दिनो एक प्रसिद्ध बस्ती थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि वे प्रतिरक्षा के लिए इतनी अच्छी तरह तैयार थे। नाहिनहट के विनाश ने उन्हे बता दिया था, उनके ऊपर किसी भी समय खतरा आ सकता है। प्रमुख इमारतो के चारो ओर सुरक्षा के विचार से बाडे बना दिये गये थे। निवासियो ने न्यूयार्क से कुछ शस्त्रास्त्र भी मँगवा लिये थे और मकानो की पक्की खिडकियो पर छोटे-छोटे पत्थर इकट्ठे कर लिये थे कि अगर आदिवासी आक्रमण करे तो उनकी औरतें ऊपर से पत्थर फेक सके। हथियारबन्द कुछ व्यक्ति पहरा देते थे और पहरा इतने क्रमानुसार बदला जाता था, मानो मिलिट्री का ही हो। निस्सदेह स्पैंजेनबर्ग के साथ बातचीत करते हुए मैने अपना यह आश्चर्य व्यक्त किया, क्योकि मुझे मालूम था कि उन्होने कोलोनियो मे शस्त्रास्त्र-कर से अपने को पार्लियामेट के एक विशेष कानून द्वारा मुक्त करा लिया था। मै सोचता था कि वे अनाप-शनाप ढग से हथियारो का प्रयोग करेगे। उन्होने उत्तर दिया कि यह सिद्धान्त तो नही परन्तु इस कानून को प्राप्त करते समय कुछ लोगो का विचार अवश्य ऐसा था। परन्तु इस अवसर पर निवासियो को स्वय आश्चर्य था कि केवल कुछ लोगो को छोडकर सभी लोग इसका पालन कर रहे थे। ऐसा मालूम होता था या तो वे स्वयं को धोखा देते थे या पार्लियामेट को, परन्तु सामान्य जानकारी और वर्तमान खतरे की आशका कुछ इधर-उधर की सुनी-सुनाई बातो से अधिक मजबूत सिद्ध हुई।

जनवरी मास का आरम्भ था, जब हमने किले खडे करने के काम मे हाथ लगाया। मैने एक दस्ता मिनिसिंक की ओर भेजा और हिदायत

दी कि प्रान्त के उत्तरी भाग की रक्षा के लिए वहाँ एक किला खडा किया जाये और दूसरा दस्ता उसके दक्षिण की ओर भेजा और ऐसी ही हिदायते दी। फिर अपनी बाकी सेना के साथ नाडिनहट जाने का निश्चय किया, जहाँ एक किले की तत्काल आवश्यकता थी। मुरावियनों ने हमारे औजार और माल-असबाब के लिए पाँच गाडियो का प्रवन्ध कर दिया।

बेथलहेम से चलने के तुरन्त पहले ११ किसान जो आदिवासियो द्वारा अपने खेतो से हटा दिये गए थे, मेरे पास आये और बन्दूके माँगने लगे जिससे वे वापस जाकर अपने पशुओ को ला सकें। मैंने प्रत्येक को एक-एक बन्दूक और अन्य उपयुक्त हथियार दिये। हमने अभी कुछ मीलो का ही फासला तय किया होगा कि पानी बरसने लगा और सारे दिन बरसता रहा। हमे शरण देने के लिए सडक पर कोई घर वगैरह नही थे, इसलिए उसी प्रकार चलते हुए शाम होने पर हम एक जर्मन के खलिहान मे पहुँचे और सिकुड-सिमटकर सो गए। उस समय हम पानी से बिलकुल तर थे। अच्छा ही हुआ कि हम पर रास्ते मे आक्रमण नही हुआ क्योकि हमारे हथियार वहुत ही साधारण किस्म के थे और हमारे सिपाही अपनी बन्दूको की नालियो को सूखी न रख सके थे। आदिवासी इस काम मे बड़े माहिर होते हैं जो कि हम नही थे। उस दिन उन्होने उपर्युक्त ११ किसानो पर आक्रमण किया और दस को मार डाला। बचे हुए किसान ने आकर सूचना दी कि उसकी और उसके साथियो की बन्दूके बिल्कुल गीली हो गई थी, इसलिए चल ही नही रही थी।

दूसरे दिन मौसम साफ था। और हम आगे बढते हुए वीरान नाडनहट जा पहुँचे।

पास ही एक लकडी काटने की मिल थी, जिसके आसपास तख्तों के कई ढेर पडे हुए थे। इन्ही तख्तो से हमने झोपडियाँ बना ली। यह काम मौसम को देखते हुए अत्यन्त आवश्यक था, क्योकि हमारे पास

एक भी खेमा नही था। वहाँ पहुँचकर हमारा सबसे पहला काम था—देहात के लोगो द्वारा जल्दी-जल्दी मे आधे दफनाये हुए लोगो को अच्छी तरह दफनाना।

दूसरे दिन प्रात हमारे किले की योजना बनी और जमीन पर निशान लगा दिये गए। इसकी परिधि चार सौ पचपन फुट थी और पेड़ो के इतने ही तनो की आवश्यकता थी जिनमे से प्रत्येक का व्यास एक फुट हो और वे एक-दूसरे से मिलाकर गाड दिये जाते। हमारी ७० कुल्हाडियाँ फौरन पेडो को काटने के काम मे लग गईं और चूंकि हमारे आदमी इस काम मे बहुत निपुण थे इसलिए बहुत जल्दी काफी काम हो गया। इतनी तेजी से पेडो को गिरते देखकर मुझे कुतूहल हुआ और जब दो व्यक्तियो ने एक चीड के पेड को काटना शुरू किया तो मैंने घडी देखी। छह मिनट मे उन्होने उसे काट कर जमीन पर गिरा दिया और मैंने देखा कि उसका व्यास चौदह इंच था। हर चीड के वृक्ष से १८ फुट लम्बे-नुकीले तीन तख्ते बनते थे। एक ओर ये काम हो रहे थे और दूसरी ओर हमारे आदमी तीन फुट गहरी खाई खोदने मे लगे हुए थे, जिसमे तख्तो को गाडा जाना था। अब तक सारे मृत शरीर हटाये जा चुके थे और गाडियो की कीले निकालकर आगे और पीछे के पहिये अलग कर दिए गए और इस प्रकार हमारे पास जगल से उस जगह तक तख्ते लाने के लिए दस गाड़ियाँ हो गईं और प्रत्येक गाड़ी मे दो घोडे जोत दिए गए। जब घेरे मे तख्ते लगा दिए गए तब हमारे बढइयो ने घेरे के भीतर लगभग छह फुट ऊँचा प्लेटफार्म चारो ओर बना दिया जिस पर खडे होकर सिपाही छेदो से बन्दूकें चला सके। हमारे पास एक तोप थी, जिसे हमने एक कोने पर लगा दिया और लगाते ही एक गोला दागा, जिससे आसपास मौजूद आदिवासियो को मालूम हो जाए कि हमारे पास इस प्रकार के हथियार भी हैं। इस तरह हमारा यह किला, अगर इस बेचारे बाड़े को किले के शानदार नाम से पुकारा जा सके तो, एक सप्ताह मे बनकर तैयार हो गया, हालांकि हर दूसरे दिन इतना

पानी बरसता था कि आदमी काम न कर पाते थे।

इससे मुझे यह निरीक्षण करने का मौका मिला कि आदमी जब काम करते हैं तभी सन्तुष्ट रहते है, क्योकि जिस दिन वे काम करते थे प्रसन्नचित्त रहते थे और यह सोचकर कि उन्होने दिन-भर खूब परिश्रम से काम किया है शाम का समय हँमी-खुशी से बिताते थे, लेकिन जिस दिन वे काम नही कर पाते थे, चिडचिडाते और एक-दूसरे से झगडते थे, गोश्त-रोटी आदि मे नुक्स निकालते थे और हमेशा बुरे मूड मे रहते थे। इस अवसर पर मुझे एक जहाज के कप्तान की याद आती थी जिसका सिद्धान्त ही यह था कि वह अपने आदमियो को हमेशा काम मे लगाये रखे, और एक दिन जब मेट ने बताया कि वह सारा काम कर चुके है और अब उनके लिए कोई काम नही है तो कैप्टन ने कहा, "ओह, उन आदमियो से कहो कि वह माँज-माँज कर लगर को चमका दें।"

इस तरह के किले को नीची निगाह से जरूर देखा जा सकता है लेकिन आदिवासियो के विरुद्ध यह काफी सुरक्षित था क्योकि उनके पास तोपे नही थी। हमे महसूस होने लगा कि हमने एक सुरक्षित जगह बना ली है और आवश्यकता पडने पर वहाँ वापस लौट सकते हैं, इसलिए अब हमने छोटी-छोटी टुकडियो मे आसपास की भूमि का निरीक्षण करना शुरू कर दिया। हमे आदिवासी तो एक भी नही मिला लेकिन पास की पहाडियो पर वे जगहे जरूर मिली, जहाँ से छिपकर उन्होने हमारी कार्यवाही देखी थी। उन जगहो को छिपने योग्य बनाने मे वह बडे कौशल का परिचय देते थे, जिसे बताना मुझे आवश्यक मालूम होता है। जाड़े के दिन थे, इसलिए उन्हें आग की जरूरत थी, लेकिन जमीन पर अगर आग जलाते तो उन्हे भय था कि हम लपटो को देखकर उनकी छिपने की जगह जान जायेगे। इसलिए उन्होने जमीन मे तीन फुट व्यास के और उससे भी कुछ गहरे गड्ढे खोद लिये थे। हमने वह जगह देखी जहाँ जगल मे अधजले कुन्दो से उन्होने अपनी कुल्हाड़ियो से कोयले काटकर अलग कर लिये थे। उन्ही कोयलो से वे गड्ढो के भीतर आग जला लेते

थे। घास पर बने निशानो से हमने जाना कि वे गड्ढे के चारो ओर लेट जाते थे और अपने पाव गर्म रखने के इरादे से उनमे लटका देते थे ; यह उनकी एक आवश्यकता है। इस तरह से जलाई हुई आग से न तो रोशनी होती थी, और न लपटे, न चिनगारियाँ और न धुँआ ही उठता था और उनकी उपस्थिति का पता किसी को भी न लगता था। ऐसा मालूम पड़ता था कि उनकी सख्या अधिक नही थी और उन्होने महसूस किया था कि हमारी संख्या उनसे कही अधिक है, इससे आक्रमण करने पर उनकी ही हानि होती।

एक उत्साही प्रेसबैटीरियन श्री बियटी हमारे धर्म-उपदेशक थे और मुझसे शिकायत किया करते थे कि लोग उनकी प्रार्थना-सभाओ और उपदेशो मे शामिल नही होते। आदमियो को जब भर्ती किया गया था तो यह वादा किया था कि वेतन और दूसरी आवश्यक चीजों के अलावा उन्हे 'रम' की बोतलें भी भेज दी जाया करेंगी। और यह 'रम' प्रत्येक व्यक्ति को आधी प्रात. और आधी साय ठीक समय पर दी जाती थी और मैं देखता था कि वे 'रम' लेने के लिए बिना नागा ठीक समय पर उपस्थित हो जाते थे। इस पर मैंने श्री बियटी से कहा, "शायद यह आपकी शान के खिलाफ हो कि आप 'रम' बाँटने वाले आदमी का काम करें, लेकिन अगर आप प्रार्थनाओ के बाद ही स्वयं 'रम' बाँटें तो सारे आदमी आपके उपदेश अवश्य सुनेंगे।" विचार उन्हें पसन्द आया और उन्होने यह काम करना शुरू कर दिया। 'रम' नापने के लिए कुछ आदमियो की मदद से उन्होने यह काम पूरी सफलता के साथ पूरा किया और जितनी भीड ठीक समय पर उनकी सभाओं मे अब होने लगी उतनी पहले कभी नही हुई थी, इसलिए मैं सोचने लगा था कि सेनाओ मे, धर्म-सभाओ मे न जाने पर जो दण्ड दिये जाते हैं उनसे यह विधि कही अधिक अच्छी है।

यह काम मुश्किल से समाप्त ही हो पाया था और हम किले में सारा सामान अच्छी तरह रख ही पाये थे कि मुझे गवर्नर का एक पत्र

मिला जिसमे लिखा था कि उन्होने असेम्बली की बैठक बुलाई है और मेरी उपस्थिति वाञ्छनीय है। लिखा था कि अगर सीमान्त प्रदेश की अवस्था ऐसी हो कि मेरा वहाँ रहना अत्यन्त आवश्यक न हो तो मेरा चला आना जरूरी है। असेम्बली के मेरे मित्रो ने अपने पत्रो मे जोर डाला था कि अगर सम्भव हो सके तो मैं बैठक मे अवश्य आऊँ। मेरे तीनो प्रस्तावित किले अब तक बन चुके थे और इस सुरक्षा के हो जाने पर निवासी अपने-अपने फार्मो पर सन्तोषपूर्वक रहने को तैयार थे, इसलिए मैंने वापस लौटने का इरादा किया। एक और कारण से मै वापिस लौटने के लिए राजी हुआ। न्यू इगलैड के एक अफसर कर्नल क्लैपहम ने, जो आदिवासियो के साथ युद्ध के अनुभवी थे, हमारा किला देखा और उसका नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया। मैंने उन्हें एक कमीशन दिया और सारे सैनिको को पक्तिबद्ध खडा कराकर कमीशन उनके सामने पढ़ा और कर्नल क्लैपहम का परिचय कराते हुए कहा कि सेना-सम्बन्धी कार्यों मे अपने अनुभवो के कारण उनका नेतृत्व करने के योग्य वे मुझसे कही अधिक है। इसके बाद उन्हे कुछ बढावा देकर मैं वापिस चल पडा। बैथलहेम तक कुछ लोग मुझे छोडने आये और इतने दिनो की थकावट मिटाने के लिए कुछ दिन मैंने वहाँ आराम किया। पहली रात, बडे अच्छे बिस्तर पर लेटे हुए मुझे नीद ही नही आई क्योकि नाडिनहट मे अपनी झोपड़ी के फर्श पर एक-दो कम्बल पर पडे रहने से यह बिल्कुल भिन्न था।

बेथलहेम मे मैंने मुरावियनो की आदतो को जानने की कोशिश की। कुछ लोग मेरे साथ गये थे और सभी का व्यवहार मेरे प्रति अच्छा था। मैंने पाया कि वे सबके लाभ के लिए मिलकर काम करते थे, एकसाथ बैठकर खाना खाते थे और बडी सख्या मे एक-साथ मिलकर कमरो मे सोते थे। उनके सोने के कमरे मे छत से बिल्कुल नीचे छोटे-छोटे छेद बने थे, जो मेरे विचार से हवा के आवागमन के लिए ठीक ही रखे गए थे। मैं उनके गिरजे मे भी गया, जहाँ मुझे मधुर सगीत सुनने को

मिला, आरगन बाजे के साथ मे बेला, तम्बूरा, बाँसुरी, क्लैरिनेट आदि बजाये गये। मुझे पता चला कि उनके धर्म-उपदेश साधारणतः पुरुष, स्त्री और बच्चो की मिली-जुली भीड़ को नही दिए जाते थे, जैसा कि हमारे यहाँ सामान्य रिवाज है, परन्तु कभी केवल विवाहित व्यक्ति इकट्ठे होते थे और कभी केवल उनकी पत्नियाँ,—कभी नवयुवक और कभी नवयुवतियाँ और कभी उनके बच्चे। मतलब यह कि हर वर्ग अलग-अलग इकट्ठा होता था। मैंने बच्चो को दिया जाने वाला उपदेश सुना। बच्चो को भीतर बुलाकर कतारो से लगी बेंचो पर बिठाया गया, लडके अपने नवयुवक शिक्षक के नेतृत्व मे थे और लडकियाँ एक नवयुवती शिक्षिका के। उपदेश बच्चो की योग्यता के अनुसार लिखा गया मालूम होता था। वह उन्हे खुशनुमा सुपरिचित आवाज मे दिया गया। मानो उनसे भले बनने का अनुरोध किया जा रहा हो। बच्चो का व्यवहार बडा सतुलित था, लेकिन वे पीले और बीमार-से मालूम पड रहे थे। जिससे मुझे लग रहा था कि वे या तो घर के भीतर ज्यादा रखे जाते हैं या उन्हे उपयुक्त कसरत करने की आज्ञा नही मिलती।

मैंने मुरावियनो की शादियो के बारे मे भी पूछताछ की कि क्या यह सही है कि उनके विवाह लाटरी डालकर तय किए जाते है। मुझे बताया गया कि लाटरी से चुनाव विशेष परिस्थितियो मे ही होता है। वैसे साधारणतया जब किसी नवयुवक की इच्छा विवाह करने की होती है तो वह अपने गुरुजनो को बता देता है और वे नवयुवतियो की अभिभाविकाओ से परामर्श करते है। चूंकि ये गुरुजन अपने-अपने शिष्यो के स्वभाव और रुचि को भली प्रकार जानते हैं, इसलिए वे अच्छी तरह समझ सकते हैं कि किस नवयुवक का विवाह किस नवयुवती के साथ होना चाहिए और साधारणतया उनके निर्णयो को स्वीकार कर लिया जाता है। परन्तु उदाहरण के लिए अगर किसी युवक के लिए दो-तीन युवतियाँ समान रूप से उपयुक्त मालूम पडें तब लाटरी का सहारा लिया जाता है। मैंने तर्क किया कि अगर विवाह-सम्बन्ध विवाहेच्छुक

युवक-युवतियो की अपनी पसद के अनुसार नही होगा तो अनेक विवाहों के असफल रहने की आशका हो सकती है। मुझे सूचना देने वाले आदमी ने उत्तर दिया, "ऐसा तो तब भी हो सकता है, जब आप दोनो पार्टियो को चुनाव करने की स्वतन्त्रता दे दें।" और मैं इससे इन्कार नही कर सकता।

फिलाडेल्फिया लौटकर मैंने पाया कि ऐसोसियेशन शान से चल रही थी और वे निवासी, जो क्वेकर नही थे, काफी सख्या मे उसमे आ गये थे। उन्होने अपने-अपने दस्ते बना लिये थे, कप्तान, लेफ्टिनेंट और दूसरे अफसर नये कानून के अनुसार चुन लिये थे। डाक्टर भी मुझसे मिले और उन्होने बताया कि जनता मे कानून के प्रति सद्भावना पैदा करने मे उन्होने कितनी कोशिश की है। उन्होंने इस सफलता का काफी श्रेय अपने प्रयत्नो को दिया। मैंने इसका श्रेय अपने सम्वाद को देने का साहस किया। लेकिन मैं यह नही जानता था कि उनकी बातों मे कहाँ तक सचाई है। इसलिए मैंने उनसे उनकी राय सुन ली और उन्हें खुश रहने का मौका दिया। मेरा विचार है कि ऐसे अवसरो पर यही करना सबसे अच्छा है। अफसरो की बैठक मे मुझे रेजीमेन्ट का कर्नल चुना गया, जिसे इस बार मैंने स्वीकार कर लिया। मुझे याद नही कि कितनी टुकडियाँ कुल मिलाकर हमारे यहाँ थी, लेकिन हमने लगभग १२०० हृष्ट-पुष्ट नौजवानो की परेड कराई, जिनके साथ पीतल की छह तोपों वाला एक तोपखाना भी था। इसे इस्तेमाल करने मे वे इतने कुशल हो गये थे कि एक मिनट मे बारह बार गोले दाग सकते थे। पहली बार जब मैंने अपनी रेजीमेट का निरीक्षण किया तो वे मेरे घर तक आये और द्वार पर कई तोपो की सलामी दी; इस धमाके से मेरे बिजली के उपकरण के कई काच के गिलास टूट गये। और मेरा नया सम्मान ही इतना अस्थायी साबित हुआ, क्योकि इगलैण्ड में इस कानून का विरोध किए जाने पर कुछ दिनो बाद हमारे सभी कमीशन तोड दिए गए।

अपने कर्नल के पद के थोड़े समय के भीतर मैं वर्जीनिया जाने वाला

था। इस पर मेरी रेजीमेंट के अफसरो ने इरादा किया कि वे मेरे साथ शहर के बाहर लोअर फेरी तक मुझे पहुँचाने चलेंगे। जिस समय मैं घोडे पर सवार हो रहा था वे सख्या मे ३४० के बीच वर्दी-पेटी पहने, घोडो पर सवार मेरे द्वार पर आ खडे हुए। इस योजना का मुझे पहले पता न था वरना मैं इसे फौरन रोक देता, क्योकि ऐसा कोई दिखावा मुझे किसी भी अवसर पर पसद नही है। उनकी उपस्थिति से मुझे बडी खिझलाहट हुई क्योकि मैं उन्हे अपने साथ जाने से रोक नही सकता था। इससे अधिक बुरी बात यह हुई कि जैसे ही हम लोग चले, उन्होने तलवारें खीच ली और सारे रास्ते नंगी तलवारे लिये रहे। किसी ने इसका वर्णन प्रोप्राइटर के पास लिख भेजा और उसने इसका बहुत बुरा माना। जब वह प्रान्त मे था, तब उसे अथवा उसके किसी गवर्नर को इस प्रकार का सम्मान नही मिला था, और उसका कहना था कि यह सम्मान राज्य-वंश के राजकुमारो को ही शोभा देता है। हो सकता है कि उसका यह कहना सही हो क्योकि ऐसे मामले मे शिष्टाचार मुझे न तब मालूम था और न आज मालूम है।

इस बेवकूफी-भरे कारनामे से मेरे प्रति उसका विरोध बढ ही गया जो पहले से ही कम नही था। असेम्बली मे उसकी जायदाद पर कर न लगाने के प्रश्न पर मैंने उसका जबरदस्त विरोध किया और जोरदार शब्दो में कहा कि ऐसा करके वह अपनी नीचता और अन्याय का प्रदर्शन कर रहा है। उसने मन्त्रिमण्डल मे मुझ पर आक्षेप लगाया कि सदन मे अपने प्रभाव के कारण मैं बादशाह के कार्यो मे जबरदस्त अड़गा हूँ, क्योकि धन एकत्र करने के बिलो को उनके उचित रूप मे पास नही होने देता। अफसरो के साथ मेरी इस परेड को एक उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत किया कि मैं बल-प्रयोग करके प्रान्त का शासन अपने हाथो मे ले लेना चाहता हूँ। उसने पोस्टमास्टर- जनरल सर एवरैर्ड फाकनर के यहाँ भी प्रार्थनापत्र दिया कि मुझे पद से हटा दिया जाये, परन्तु इसका असर केवल यही हुआ कि एवरैर्ड ने उसे हल्की-सी झिड़क दी।

गवर्नर और सदन के बीच लगातार चलने वाले संघर्ष के वावजूद, जिसमे सदन का सदस्य होने के नाते मेरा वहुत वडा भाग रहता था, मेरे और उनके बीच अत्यन्त शालीनतापूर्वक पत्र-व्यवहार हुआ करता था और व्यक्तिगत रूप से हम आपस मे कभी नही झगडे। तव से अनेक अवसरो पर मैंने सोचा है कि यह मालूम होने पर भी कि उनके सम्वादो के उत्तर असेम्बली की ओर से मैं ही लिखता हूँ, शायद उन्होने व्यावसायिक आदत के अनुसार ही मेरे विरुद्ध कोई विचार अपने मन मे न आने दिया हो। उन्हे वकालत की शिक्षा मिली थी और सम्भवत उनका विचार यह रहा हो कि हम लोग किसी मुकद्दमो की दोनो विरोधी पार्टियो के वकील भर हैं, वे जमीदारो के और मैं असेम्वली का। इसलिए वे कभी-कभी दोस्ताना ढग से मुश्किल बातो पर मुझे सलाह दिया करते और कभी-कभी, हालाँकि वहुत कम, मुझसे सलाह लिया करते।

हमने सम्मिलित रूप से ब्रैडक की सेना को सामान आदि पहुँचाये थे और जब उसकी पराजय का दु खद सम्वाद मिला तो गवर्नर ने तत्काल मुझे बुलवा भेजा, जिससे वे ऐसा प्रबन्ध करने की सलाह कर सके कि पिछडी हुई काउन्टियो से लोग भागें नही। अब मुझे याद नही कि मैंने उन्हें क्या सलाह दी थी, लेकिन मैं सोचता हूँ कि मैंने यही कहा था कि डनबर के पास सम्वाद भेजना चाहिए और उसे, यदि सम्भव हो तो, मान लेना चाहिए कि वह अपनी सेनाएँ सीमान्त प्रदेश की रक्षा के लिए वहाँ ले जाये, जव तक कि कोलोनियो से और अधिक सेना न आ जाये। नयी सेना आ जाने पर ही वह आगे वढे और सीमान्त प्रदेश से मेरे वापस लौट आने पर वह इस यात्रा का भार मुझपर लाद सकता है। और मैं प्रान्तीय सेनाओ की मदद से ड्यूक्ज़ेने के किले पर पहुँच जाऊँगा जब कि डनबर और उसके सिपाही दूसरे काम मे लगे रहेंगे। गवर्नर ने मुझे जनरल का पद देने का प्रस्ताव भी रखा। मेरी सेना-सम्बन्धी योग्यताओ पर जितना विश्वास उन्हे था उतना मुझे नही था और मुझे विश्वास है कि यह व्यक्तिकरण उनके वास्तविक उद्गारों

से कही अधिक मालूम पड़ रहा था, लेकिन शायद उनका विचार था कि मेरी लोकप्रियता के कारण आदमी आसानी से सेना मे भरती होने लगेगे और असेम्बली मे मेरे प्रभाव के कारण जमीदारों पर बिना कर लगाये सेना के खर्च का रुपया मजूर किया जा सकेगा। जब उन्हे पता चला कि उनकी आशा के विपरीत इस काम के लिए मैं इतना उत्सुक नही हूँ तो यह योजना खत्म कर दी गई, जिसके कुछ ही दिनो बाद वे सरकार से अलग हो गये और कैप्टेन डेनी अगले गवर्नर नियुक्त हुए।

इस नये गवर्नर के शासन-काल मे जनता के कार्यो मे किये हुए अपने कामो का ब्योरा देने से पहले मैं सोचता हूँ कि एक विचारक के रूप मे अपनी ख्याति के उत्थान और विस्तार के विषय मे कुछ बताना उचित ही होगा।

सन् १७४६ मे, जब मैं बोस्टन मे था, मेरी मुलाकात डाक्टर स्पेन्स से हुई थी, जो स्काटलैण्ड से काफी दिनो पहले आ गये थे। उन्होने मुझे अपने विद्युत्-सम्बन्धी कुछ प्रयोग दिखाये। उनके प्रयोग बहुत अधिक अच्छे ढग से नही किये गये थे, क्योंकि वे स्वय निपुण न थे। लेकिन मेरे लिए सर्वथा नये विषय होने के कारण मुझे इन प्रयोगो ने बहुत प्रभावित और चकित किया। मेरे फिलाडेल्फिया लौटने के कुछ ही दिनों बाद, मुझे पुस्तकालय-संघ की लन्दन की रॉयल सोसायटी के सदस्य मिस्टर पी० कॉलिन्सन ने एक कांच की नली भेट की। उन्होने इस नली के विषय मे कुछ विवरण भी दिया कि इस प्रकार प्रयोगो मे उसे कैसे काम मे लाया जाये। मैंने तत्काल बडी उतावली से वे प्रयोग दुहराये जिन्हे मैंने बोस्टन मे देखा था और काफी अभ्यास के बाद उन्हे करने मे दक्ष भी हो गया, जिनके विवरण हमे लन्दन से मिले थे, अनेक नये प्रयोग भी मैंने किये। मैंने काफी अभ्यास करने की बात कही, क्योकि मेरा घर कुछ समय तक लगातार ऐसे लोगो से भरा रहता था जो इन नये अचरजो को देखने के लिए आते रहते थे।

इस उलझन को थोडा-बहुत अपने दोस्तो मे बाँट देने के लिए मैंने

उसी प्रकार की कई काँच की नालियाँ अपने शीशे के कारखाने मे फुंकवाई और इस तरह कुछ समय बाद हममे से कई लोग वैसे प्रयोग कर लेने लगे। ऐसे लोगो मे मिस्टर किनरस्ले प्रमुख थे, जो वडे अच्छे पडोसी थे और बेकार थे। मैंने उन्हे पैसो के लिए उन प्रयोगो को प्रदर्शित करने के लिए तैयार किया और उनके लिए दो भाषण भी तैयार किये, जिनमे प्रयोगो को क्रम से रखा गया था और उनके लिए ऐसे ढग से स्पष्टीकरण किया गया था कि पहला दूसरे को स्पष्ट करे। इस कार्य के लिए उन्होने एक अच्छा-सा उपकरण लिया जिसके वे सभी नन्हे-नन्हे यन्त्र, जिन्हे मैंने अपने लिए तैयार कराया था, कारीगरो ने वडी अच्छी तरह बनाये थे। उनके भाषणो मे लोग काफी तादाद मे आये और सन्तुष्ट भी हुए, और कुछ समय वाद वे एक कोलोनी से दूसरी कालोनी पहुँचने लगे, रास्ते मे पडने वाले बडे नगरो मे उनका प्रदर्शन करते और कुछ पैसा भी एकत्र करते। पश्चिमी द्वीपसमूह मे हवा मे अधिक नमी के कारण प्रयोगो का प्रदर्शन करने मे कुछ अधिक कठिनाई हुई।

मिस्टर कॉलिन्सन के प्रति काँच की नली और विवरण के लिए आभारी होने के कारण मैंने उन्हे उन नालियो के उपयोग की सफलता के विषय मे लिखना जरूरी समझा, और उन्हे अपने प्रयोगो के विवरण सहित अनेक पत्र लिखे। उन्होने वे सभी पत्र रॉयल सोसाइटी मे पढवाये, जहाँ सर्वप्रथम उन्हे इस लायक नही समझा गया कि उन्हे कार्यविवरण मे छपवाया जाय। एक लेख, जो मैंने मिस्टर किनरस्ले के लिए तडित् और बिजली की समानता पर लिखा था, अपने परिचित डाक्टर मिचेल के पास भेजा, जो उस सोसायटी के एक और सदस्य थे, और जिन्होने मुझे लिखा कि उसे पढा गया था, लेकिन निर्णायको ने उसकी बड़ी हँसी उडाई। फिर भी उन पत्रो को डाक्टर फॉदरगिल को दिखाया गया, और उन्होने उन्हे वहुत अधिक महत्त्व का बताया, और उनके प्रकाशित किये जाने की सलाह दी। मिस्टर कॉलिन्सन ने तब उन्हे 'जेन्टिलमैन्स मैगजीन' मे प्रकाशित किये जाने के

लिए केव को दे दिया। लेकिन उन्होने उन्हें अलग से एक पैम्फलेट के रूप मे प्रकाशित करना उचित समझा और डॉक्टर फॉंदरगिल ने उसकी भूमिका लिखी। लगता है कि केव ने अपने मुनाफे का सही अन्दाजा लगा लिया था क्योकि बाद मे प्राप्त हुए अतिरिक्त वर्णनो के मिल जाने से वह एक अच्छी-खासी पुस्तक बन गई, जिसके पाँच सस्करण हुए, और जिसकी लिखाई के लिए उन्हे एक भी पैसा खर्च नही करना पडा। यह लगभग उस समय से कुछ पहले की बात है जब उन लेखों की ओर इंगलैण्ड मे बहुत अधिक ध्यान दिया गया। फ्रास ही नही, बल्कि सारे यूरोप के मशहूर विचारक काउन्ट दे बफन के हाथ मे उन लेखों की एक प्रति पड गई और उन्होने श्री डैलीबार्द से उसे फ्रेंच भाषा मे अनुवाद कराकर पेरिस मे छपाया। इस प्रकाशन से राजवंश के विज्ञान-शिक्षक पादरी नॉले को बहुत बुरा लगा, क्योकि उन्होने विद्युत्-सम्बन्धी अपना एक सिद्धान्त प्रकाशित किया था और उस समय वही प्रचलित था। पहले तो उन्हे विश्वास ही नही हुआ कि ऐसा कार्य अमेरिका मे भी हुआ है, और उन्होने कहा कि निश्चय ही यह उनके पेरिस के दुश्मनों का है जिससे उनके सिद्धान्त की ख्याति को क्षति पहुँचे। बाद मे जब उन्हे पूरी तरह से विश्वास दिला दिया गया कि फ्रैंकलिन नामक एक व्यक्ति, जिसके होने मे उन्हें शक था, वास्तव मे फिलाडेल्फिया मे है तो उन्होने लेखो का एक सकलन किया और उसे प्रकाशित किया, जो मुख्यतया मुझे लक्ष्य करके लिखे गये थे और जिनमे अपने सिद्धान्त की रक्षा के साथ-साथ उन्होने मेरे प्रयोगो के सही होने और उनसे निकाले गये निष्कर्षो को भी मानने से इन्कार कर दिया था।

मैंने एक बार पादरी साहब को जवाब देने की सोची और सचमुच लिखना शुरू कर दिया, लेकिन मेरे लेखो मे प्रयोगो के विवरण थे जिन्हें कोई भी व्यक्ति दोहरा सकता था और उनकी सत्यता सिद्ध कर सकता था, और अगर उन्हें सिद्ध न किया जाता तो उनके पक्ष मे कुछ नही कहा जा सकता था, अथवा कुछ निरीक्षणो को अनुमानो के रूप मे

व्यक्त किया गया था—सिद्धान्त प्रतिपादित करने के लिए नही; इसलिए उनके पक्ष मे कुछ कहने की आवश्यकता मुझे नही हुई। मैंने यह भी सोचा कि विभिन्न भाषाओ मे लिखने वाले दो व्यक्तियो का विरोध गलत अनुवाद की वजह से अधिक लम्बा हो सकता है, क्योंकि उससे एक दूसरे के मन्तव्य को गलत समझा जा सकता है। ऐसा सोचने का एक कारण यह भी था कि पादरी का एक पत्र अनुवाद की गलतियो पर आधारित था, इसलिए मैंने तय किया कि मेरे कागज ज्यो के त्यो रहे और मुझे विश्वास था कि सार्वजनिक कार्यों के बाद जो थोडा-सा समय मेरे पास बच रहता है उसका उपयोग पुराने प्रयोगो के ऊपर बहस करने से कही अधिक अच्छा यह है कि मैं नये प्रयोग करूँ। इसलिए मैंने मोशियो नॉले को जवाब कभी नही दिया और अपनी चुप्पी पर मुझे कभी भी खेद न हुआ, क्योंकि रायल अकेडमी आफ साईस के मोशियो-ले-राय ने, जो मेरे मित्र थे, मेरा पक्ष ग्रहण करके उसका विरोध किया। मेरी पुस्तक का अनुवाद इटालियन, जर्मन और लैटिन भाषाओ मे हुआ, और इस पुस्तक मे जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया था उसे यूरोप के वैज्ञानिको ने नॉले के सिद्धान्तो के मुकाबले मे अधिक स्वीकार करना शुरू किया और धीरे-धीरे उसे मान्यता मिल गई; इस प्रकार नॉले मोशियो-बी को छोडकर अपने मत का आखिरी व्यक्ति था। मोशियो-बी पेरिस के रहने वाले थे और नॉले के प्रथम शिष्य थे।

मेरी पुस्तक को एकाएक इतनी प्रसिद्धि इसलिए दी गई, क्योंकि उसमे प्रस्तावित एक प्रयोग को मारली मे डैलिबार्ड और देलॉर ने सफलतापूर्वक पूरा किया था। प्रयोग था—बादलो से बीजली खीचने का। इस प्रयोग से सारे ससार की जनता का ध्यान इस ओर खिच गया। मोशियो देलॉर ने—जिनके पास प्रयोग करने के लिए वैज्ञानिक उपकरण थे और जो, वैज्ञानिक विषयो पर भाषण दिया करते थे—उन तथाकथित 'फिलाडेल्फिया प्रयोगो' को करना शुरू किया, और जब वे बादशाह और पूरे दरबार के सामने दुहराये गये तो पेरिस के सभी उत्सुक व्यक्ति

उन्हें देखने के लिए इकट्ठे हुए। मैं इन प्रयोगो का और कुछ दिनो बाद फिलाडेलफिया मे एक पतंग के ऊपर जो प्रयोग मैंने किया था और जो खुशी मुझे मिली थी, उसका विस्तृत वर्णन करके पृष्ठो की सख्या नही बढाना चाहता, क्योकि दोनो ही बिजली के इतिहास की पुस्तको मे मौजूद हैं।

एक अंग्रेज चिकित्सक डाक्टर राईट ने पेरिस से रॉयल सोसाइटी के अपने एक मित्र को विस्तारपूर्वक लिखा कि मेरे प्रयोगो को विदेशो मे कितने सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। और आश्चर्य है कि मेरे लेखो को इंगलैंड मे बहुत कम पढा गया है। इस पर सोसाइटी ने उन पत्रो पर पुन विचार करना शुरू किया जो पहले पढे गये थे। सुप्रसिद्ध डाक्टर वाट्सन ने उनका सक्षिप्त विवरण तैयार किया। साथ ही बाद मे जो पत्र इस विषय पर मैंने इंगलैंड भेजे, उनका विवरण भी उसने तैयार किया और उनके लेखक की प्रशसा भी की। यह सक्षिप्त विवरण तब सोसा-इटी के "ट्रान्जैक्शन" मे प्रकाशित हुआ और सोसाइटी के लन्दन स्थित कुछ सदस्यो ने विशेषकर अत्यन्त प्रखरबुद्धि श्री केन्टन ने, एक नुकीली छड की सहायता से बादलो से बिजली खीचने और इसकी सफलता दूसरो को बताने के बाद, मुझे अपने उस व्यवहार का बदला चुका दिया जो उन्होने पहले महत्त्वहीन समझकर मुझसे किया था। उन्होने मुझे रॉयल सोसाइटी का सदस्य चुन लिया, हालाकि मैंने इस सम्मान के लिए कभी प्रार्थनापत्र नही दिया और तय किया कि मुझे सामान्य चन्दा नही देना पडेगा जो लगभग पच्चीस गिन्नी होता। और उसके बाद से हमेशा उनका "ट्रान्जेक्शन" मेरे पास मुफ्त आ रहा है। उन्होने १७५३ मे सर गॉडफ्रे कॉपले स्वर्णपदक भी मुझे प्रदान किया, जिसके साथ अध्यक्ष लार्ड मैकिल्सफील्ड का एक अत्यन्त सुन्दर भाषण भी था। और इस तरह मेरा बहुत ऊंचा सम्मान हुआ।

हमारे नये गवर्नर कैप्टन डेनी उपर्युक्त पदक रायल सोसाइटी से लाये और जनता द्वारा उनके सम्मान मे आयोजित एक मनोरजन के

कार्यक्रम मे उन्होने मुझे प्रदान किया। पदक देते समय वडे नम्र शब्दो मे उन्होने कहा कि मेरे चरित्र से वे अरसे से परिचित हैं और मेरा बहुत आदर करते है। भोज के वाद जब सभी लोग रिवाज के अनुसार शराब पीने लगे तो वे मुझे एक दूसरे कमरे मे ले गये और वहाँ उन्होने मुझे बताया कि इगलैंड के उनके मित्रो ने उन्हें मुझसे मित्रता करने की सलाह दी थी, क्योकि मैं ही उन्हें सबसे अच्छी सलाह दे सकता हूँ। उनके शासन को आसान बनाने मे भी मैं ही सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता था, इसलिए वे मुझे भली प्रकार समझ लेना चाहते थे और उन्होने मुझसे वायदा किया कि अपनी शक्ति भर किसी भी समय वे मेरे लिए कुछ भी कर सकने के लिए तैयार होगे। उन्होने यह भी कहा कि प्रान्त के बारे मे मालिक के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना ही उचित है और अगर इतने दिनो से चला आ रहा विरोध खत्म करके उनके और जनता के बीच सौहार्द स्थापित किया जाये तो इससे सभी का और विशेष रूप मे मेरा लाभ होगा। इस मन्तव्य को पूरा करने मे मुझे ही सबसे अधिक उपयोगी समझा गया था, उन्होने मुझे विश्वास दिलाया कि इस काम के वदले मे मुझे उचित मुआवजा मिलेगा। शराब पीने वाले व्यक्तियो ने जब देखा कि हम फौरन वापस मेज पर नही आ रहे है तो उन्होने मंडिरा का एक पात्र हमारे पास भेज दिया। गवर्नर ने खूब शराब पी और उसके बाद और भी जोरदार शब्दो मे मेरी मदद मांगी तथा वायदे किये।

मेरे उत्तरो का सार यह है भगवान् की दया से मेरी परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि मालिको की मुझे आवश्यकता नही, और असेम्बली का सदस्य होने के नाते मैं ऐसी कृपाएँ स्वीकार भी नही कर सकता, मालिको के साथ मेरी कोई व्यक्तिगत शत्रुताएं नही हैं और उनके द्वारा प्रस्तावित कार्य जब भी जनता की भलाई के लिए होगे तो कोई भी उनका विरोध नही करेगा बल्कि सभी उत्साह से आगे वढेंगे ; अतीत मे मेरे विरोध का आधार यह था कि प्रस्ताव स्पष्टत मालिको और जमीदारो के ही हित-

साधन के लिए थे और जनता का हित नही करते थे, मैं गवर्नर के प्रति कृतज्ञ था कि उन्होने मुझे इतना सम्मान दिया और उन्हे भरोसा करना चाहिए कि उनके शासन को अधिक से अधिक सरल बनाने मे मैं कुछ उठा नही रखूंगा। साथ ही मैंने आशा व्यक्त की कि वह अपने साथ दुर्भाग्यपूर्ण हिदायते लिखकर नही लाये होगे, जो उनके पूर्व अधिकारी लिखकर लाये थे।

इस पर उन्होने तब कोई प्रकाश नही डाला, लेकिन बाद मे जब असेम्बली के साथ काम शुरू हुआ तो वे हिदायतें पुनः प्रकट हुईं और सघर्ष पुन. नये सिरे से शुरू हुआ और मैं हमेशा की तरह विरोध करने मे सक्रिय हो गया, चूंकि मैं भली प्रकार लिखना जानता था इसलिए सबसे पहले तो मुझे असेम्बली मे हिदायतें पेश करनी पडती थी और बाद मे उन पर टिप्पणी करनी पडती। यह सब सामग्री उस समय की असेम्बली की कार्यवाही के विवरण मे अथवा बाद मे मेजर द्वारा प्रकाशित हिस्टारिकल रिव्यू मे मिल सकती है। लेकिन व्यक्तिगत रूप से हमारे बीच कोई शत्रुता नही हुई। हम अक्सर साथ रहते। वे साहित्य-रुचि के व्यक्ति थे, काफी अनुभवी और बातचीत करने मे रुचि रखने वाले। बडे खुशदिल और मनोरजक थे। उन्होने मुझे सबसे पहली बार बताया कि मेरा जमाने पहले का दोस्त राल्फ अभी भी जीवित है और इगलैंड के सबसे अच्छे राजनीति-लेखको मे से एक समझा जाता है। प्रिंस फ्रेडरिक और बादशाह के बीच होने वाले विवाद मे वह शामिल था और अब उसे तीन सौ पौड सालाना पैन्शन मिलती है। कवि के रूप मे तो उसकी प्रसिद्ध नही के बराबर थी क्योंकि पोप ने 'डेनसियड' मे उसकी कविता को बहुत धिक्कारा था, परन्तु उसका गद्य किसी भी बडे लेखक के समान अच्छा समझा जाता है।

आखिरकार असेम्बली ने जब देखा कि जमीदार लोग जान-बूझकर लगातार अपने अधीन कर्मचारियो को ऐसी हिदायतें देते जा रहे है जो जनता के अधिकारो का उल्लघन तो करती ही हैं, बादशाह के शासन मे

भी बाधा पहुँचाती है, तो तय किया कि उनके विरुद्ध बादशाह के दरबार मे प्रार्थनापत्र पेश किया जाये, और मुझे इगलैंड जाकर प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करने और उसके पक्ष मे कुछ कहने के लिए अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। सदन मे गवर्नर के पास एक बिल भेजा गया जिसमे बादशाह के निजी उपयोग के लिए साठ हजार पौंड की रकम निश्चित की गई थी जिसमे से दस हजार पौंड तत्कालीन जनरल लार्ड लूडूं की आज्ञा मिलने पर दिया जाना था, जिसे गवर्नर ने प्राप्त हिदायतो के अनुसार पारित करने से कतई इन्कार कर दिया।

मैंने कैप्टेन मॉरिस के साथ तय कर लिया कि न्यूयार्क बन्दरगाह पर मैं जहाज पर चढूंगा और मेरा सामान आदि जहाज पर लाद दिये गये। उसी समय लार्ड लूडूं फिलाडेल्फिया आये और उन्होने मुझे बताया कि वे विशेष रूप से इसीलिए आये है कि गवर्नर और असेम्बली के बीच किसी प्रकार समझौता हो जाये और उनके आपसी झगडो पर बादशाह को किसी तरह की परेशानी न हो। इसी उद्देश्य से उन्होने मुझे और गवर्नर को बुलाया जिससे वे दोनो पक्षो की बात सुन सकें। हम इकट्ठे हुए और विषय पर बातचीत करने लगे। असेम्बली की ओर से मैंने अनेक तर्क उपस्थित किये जो उस समय के सार्वजनिक पत्रो मे मिल सकते हैं। वे मेरे ही लिखे हुए थे और असेम्बली की कार्यवाही के विवरण के साथ प्रकाशित हुए थे, और गवर्नर ने अपनी हिदायतो के पक्ष मे बातें कही: बताया कि उन हिदायतो को पूरा करने का प्रतिज्ञापत्र वे भर चुके हैं और अगर वे उनका पालन नही करेंगे तो स्वय बरबाद हो जायेंगे, फिर भी लार्ड लूडूं की सलाह पर वे हिदायतो के विरुद्ध काम करने को तैयार थे। लार्ड लूडूं ने ऐसा नही किया, हालाकि एक बार तो मुझे ऐसा लगा कि मैंने उन्हे ऐसा करने को राजी कर लिया, परन्तु अन्त में उन्होने यही निश्चय किया कि असेम्बली को ही हर समझौता कर लेना चाहिए, और उन्होने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उद्देश्य को प्राप्त करने मे कुछ उठा न रखूं; वायदा किया कि हमारे सीमान्त

की रक्षा के लिए बादशाह की सेनाओं का पूरा उपयोग वे करेंगे और कहा कि अगर हम स्वय अपनी प्रतिरक्षा का प्रबन्ध नही करेंगे तो सीमान्त प्रदेशो पर हमेशा शत्रुओ के आक्रमण होते रहेगे।

मैंने सदन को सारी बातो से परिचित कराया और कई प्रस्ताव उनके सामने प्रस्तुत किये जिन्हे मैने लिखा था। इन प्रस्तावो मे मैने अपने अधिकारो की घोषणा की थी और कहा था कि हम उन अधिकारो को छोड नही सकते केवल बल-प्रयोग के कारण इस अवसर पर उन्हे मुलतवी रख रहे है। हमने इस बल-प्रयोग का विरोध किया और अन्त मे इस बिल को अस्वीकृत करके मालिको के पक्ष के अधिक अनुसार एक दूसरा बिल तैयार किया गया। इसे गवर्नर ने पास कर दिया और उसके बाद मै अपनी यात्रा को जाने मे सफल हुआ। परन्तु इसी बीच मे जहाज मेरे सामान के साथ रवाना हो चुका था। यह मेरे लिए काफी बडा नुकसान था और इसका बदला मुझे केवल यही मिला कि लार्ड लूडूं ने इस काम के लिए मुझे धन्यवाद दिया, जब कि असेम्बली की इस सहूलियत का सारा श्रेय उन्हे स्वय मिला।

वे मुझसे पहले न्यूयार्क के लिए रवाना हो गये और चूंकि जहाजों के रवाना होने का समय वे ही निर्धारित करते थे और दो जहाज जाने के लिए तैयार खडे थे, जिनमे से एक, उन्होने मुझे बताया, जल्दी यात्रा करने वाला था, इसलिए मैंने उनसे उसके रवाना होने का ठीक समय जानने की प्रार्थना की ताकि कही वह मेरी किसी देर के कारण मेरे पहुचने से पहले न छूट जाय। उनका उत्तर था, "मैंने लोगो को बताया है कि जहाज शनिवार को रवाना हो जायेगा लेकिन मैं व्यक्तिगत रूप से तुम्हे बताता हूँ कि अगर तुम सोमवार की सुबह को पहुँच जाओगे तो देर नही होगी, लेकिन इसके बाद और विलम्ब मत करना।" नाव पर किसी आकस्मिक बाधा के कारण मै सोमवार की दोपहर तक पहुँच सका और चूंकि हवा अनुकूल थी इसलिए मैं सोच रहा था कि जहाज तब तक रवाना हो गया होगा, लेकिन पहुँचने पर जब मुझे मालूम हुआ कि जहाज अभी बन्दर-

गाह मे है और अगले दिन से पहले रवाना नही होगा, तो मैं आश्वस्त हुआ। सोचा जा सकता है कि अब मैं यूरोप की यात्रा पर रवाना होने ही वाला था। मैं भी यही सोचता था लेकिन तव मैं उनके चरित्र से इतनी अच्छी तरह परिचित नही था, जिसका एक आवश्यक अग अनिर्णयात्मकता थी। मैं कुछ उदाहरण दूंगा। जहाँ तक मेरा विचार है कि मैं अप्रैल के शुरू मे न्यूयार्क पहुंचा था लेकिन जहाज जून के अन्तिम दिनो मे रवाना हुआ। उस समय दो जहाज वहुत दिनो से बन्दरगाह पर ठहरे थे, जिन्हे जरनल के उन पत्रो के लिए रोक रखा गया था जो हमेशा अगले दिन तैयार हो जाने वाले थे। एक दूसरा जहाज आया, उसे भी रोक लिया गया, और हमारे जहाज के रवाना होते समय एक चौथे जहाज के पहुचने की वडी आशा की जाती थी। हमारा जहाज सबसे पहले रवाना होना था क्योकि बन्दरगाह मे सबसे अधिक दिनो वही ठहरा था। सभी जहाजो मे यात्री ठहरा लिये गये थे जो चलने को अत्यन्त उत्सुक थे, और व्यापारी अपने खतो तथा असबाब के बीमो के बारे मे (क्योकि वह युद्धकाल था) परेशान हो रहे थे, लेकिन उनकी परेशानी से कोई लाभ नही, जनरल के पत्र अभी तक तैयार नही थे, इस पर मजा यह कि जो भी आदमी वहाँ जाता जनरल को हाथ मे कलम लिये हुए लिखते देखता और यही परिणाम निकालता कि उन्हे बहुत अधिक पत्र लिखने है।

एक दिन प्रात. मैं भी उनसे मिलने गया। उनके भीतरी कमरे मे मुझे फिलाडेल्फिया का एक सदेशवाहक इनिस मिला, जो गवर्नर डेनी के सम्वाद लेकर एक विशेष जहाज द्वारा जनरल के पास आया था। उसने मुझे फिलाडेल्फिया के कुछ मित्रो के पत्र दिये। मैंने उससे पूछा कि वह कब वापस जायगा और न्यूयार्क मे कहाँ ठहरा हुआ है जिससे मैं उसके हाथ कुछ पत्र भेज सकूं। उसने मुझे बताया कि उसे उत्तर देने के लिए जनरल ने अगले दिन प्रात. नौ बजे बुलाया है और पत्र पाते ही फौरन चल पडेगा। मैने उसी दिन अपने खत उसे दे दिये। पन्द्रह दिन

बाद वह फिर मुझे उसी जगह पर मिला। "अरे, तुम तो बड़ी जल्दी लौट आए, इनिस !" "लौट नही, आया मैं अभी गया ही नही हूँ।" "यह कैसे ?" "पिछले दो हफ्ते से हर प्रात लगातार मैं महामहिम के पत्र के लिए आ रहा हूँ लेकिन वह अभी तक तैयार नही हुआ।" "वे तो बहुत ज्यादा लिखते है, क्या यह सम्भव है कि पत्र अभी तक तैयार न हुआ हो। मै तो उन्हे हमेशा मेज पर ही बैठा देखता हूँ।" इनिस ने उत्तर दिया, "हाँ, वे सेन्ट जार्ज की मूर्ति की तरह है, जो हमेशा घोड़े पर सवार तो रहती है लेकिन आगे कदम नही रखती।" संदेशवाहक का यह निरीक्षण बिलकुल सही आधार पर था, क्योंकि इगलैंड पहुँचकर मुझे मालूम हुआ कि यह एक कारण था जिसकी वजह से मिस्टर पिट ने जनरल को अलग कर दिया था और चूंकि बाद मे उन्हे कोई समाचार नही मिला कि जनरल क्या कर रहे हैं तब उन्हें जनरल अमहर्स्ट और वुल्फ को खबर लेने के लिए भेजना पडा।

रोज ही यह उम्मीद की जाती थी कि जहाज अब चल पडेगा और तीनो ही सैन्डहुक पहुँचकर बेडे मे शामिल हो जायेंगे, इसलिए यात्रियो ने सवार रहना ही सबसे अच्छा समझा कि एकाएक आज्ञा पाकर जहाज चल न दे और वे कही छूट न जायें। अगर हमे ठीक-ठीक याद है तो हम लगभग छह हफ्तों तक वहाँ पड़े-पडे यात्रा का भोजन खाते रहे। बाद मे हमे और रसद इकट्ठी करनी पडी। आखिरकार बेडा रवाना हुआ। जनरल और उसकी सारी सेना भी लुईसबर्ग जाने को सवार हुए। उनका इरादा उस किले को घेरा डालकर अपने अधिकार मे करने का था। बेड़े के सभी जहाज जनरल के हुक्म को पाने के लिए तैयार हो गये कि ज्यो ही उनके पत्र तैयार हुए वह उन्हें लेकर चल पड़े। पाँच दिन बाद हमे बेड़े से अलग होने का आज्ञापत्र मिला और हम इंगलैंड की ओर चल पड़े। दूसरे दो जहाज उन्होने रोक लिये और उन्हें अपने साथ हैलीफ़ैक्स ले गये, जहाँ वे कुछ छोटे-छोटे किलो पर छोटे आक्रमणो मे अपने सिपाहियो का उपयोग करते रहे। बाद मे लुईसबर्ग को घेरने का विचार

त्यागकर सभी यात्रियो सहित न्यूयार्क वापिस लौट आये। उनकी अनुपस्थिति मे फ्रासीसी और आदिवासियो ने उस प्रान्त के सीमान्त पर स्थित फोर्डजार्ज पर अधिकार कर लिया था और आदिवासियो ने सेना की कई टुकडियो को बुरी तरह बरबाद कर दिया था।

बाद मे लन्दन मे मैं कैप्टन बॉनेल से, जो उसमें से एक जहाज के कमाण्डर थे, मिला। उन्होने मुझे बताया कि एक महीने तक रोके जाने के बाद उन्होने जनरल को सूचना दी कि उनका जहाज इतना खराब हो गया है कि तेज यात्रा नही कर सकता जो एक विचारणीय प्रश्न है, और प्रार्थना की कि जहाज को खोलकर उसकी तलहटी को साफ करने के लिए उन्हें समय दिया जाये। जनरल ने पूछा कि इसमे कितना समय लगेगा तो जवाब मिला—तीन दिन। जनरल ने कहा, "अगर आप एक दिन मे सफाई कर सकें तो मैं आज्ञा दे सकता हूँ वरना नही, क्योकि परसो आप को अवश्य यहाँ से रवाना हो जाना पडेगा।" और इस तरह आजकल करते-करते उसके बाद तीन महीने रुके रहने पर भी उन्हें जहाज की सफाई करने की आज्ञा नही मिली।

बॉनेल के यात्रियो मे से एक को मैंने लन्दन मे भी देखा, जो अपने मालिक के विरोध मे—क्योकि उसे धोखा दिया गया था और इतने लम्बे अर्से तक न्यूयार्क मे रखा गया था, और तब उसे हैलीफैक्स ले जाया गया था और वापस लाया गया था—इतना अधिक नाराज था कि कसम खा रहा था कि वह उनके ऊपर हरजाने का दावा करेगा। उसने दावा किया या नही, इसके बारे मे मैंने कभी नही सुना, लेकिन अपने मामले मे क्षति की बाबत उसका कहना पूरी तरह जायज था।

मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यह सचमुच आश्चर्य की बात है कि ऐसे व्यक्ति पर एक महान् सेना के नेतृत्व का भार किस प्रकार दिया गया, लेकिन तब से आज तक इस विस्तृत ससार मे बहुत-कुछ देखने के बाद और पदो के प्राप्त करने और दिये जाने के उद्देश्यो से परिचित हो चुकने पर मेरा अचरज कम हो गया है। जनरल शर्ली, जिनके ऊपर

ब्रैडक की मृत्यु के बाद सेना के नेतृत्व का दायित्व पड़ा, मेरी समझ मे, यदि अपने पद पर कायम रहता, तो १७५७ के लूडूं से कही अधिक अच्छी तरह युद्ध करता, जो हमारे राष्ट्र के लिए कल्पना से कही अधिक ओछा, खर्चीला और लज्जाजनक सिद्ध हुआ, क्योंकि सैन्य-शिक्षण न मिलने पर भी शर्ली समझदार और चतुर था, और दूसरों की नेक सलाह पर ध्यान देता था। उसमे विवेकपूर्ण कार्य-पद्धति के खाके बनाने, और उन पर शीघ्रता और तत्परता से अमल करने की शक्ति थी। लूडूं अपनी सेना से कोलोनियों की रक्षा करने की जगह उन्हें अरक्षित छोड़कर हैलीफ़ैक्स मे निरुद्देश्य परेड कराता रहा, यही वजह थी कि फोर्टजार्ज हाथ से जाता रहा। इसके अलावा उसने खाद्य पदार्थों के निर्यात पर इस बहाने से कि दुश्मन को रसद नही मिलेगी, सख्त प्रतिबन्ध लगाकर हमारे व्यावसायिक कार्यों को अव्यवस्थित कर दिया और व्यापार को चौपट कर दिया, लेकिन असलियत में उसकी मंशा रसद की कीमतें घटाने की थी, जिससे ठेकेदारो को अधिक लाभ हो सके, जिसमे, सम्भवत केवल सन्देह के कारण कहा जाता है कि उसका भी हिस्सा था। और जब अन्ततः प्रतिबन्ध हटाया गया तो चार्ल्सटाउन की लापरवाही से समय से सूचना न भेजी गई। कैरोलाइना का बेडा लगभग तीन महीने तक रुका रहा, इस कारण जहाजों के पेंदे कीड़ो से इतने खराब हो गये कि बेडे के काफी जहाज लौटते समय डूब गये।

मैं सोचता हूँ कि शर्ली सेना-संचालन जैसे गम्भीर दायित्व के कार्य से छुटकारा पाकर खुश हुआ और यह सेना के कार्यो से अपरिचित व्यक्ति के लिए स्वाभाविक ही है। मैं उस पार्टी मे मौजूद था जो न्यूयार्क निवासियों ने लार्ड लूडूं के सम्मान मे दी थी, जब उन्होने सेना के नेतृत्व का भार सम्हाला था। अफसरों, नागरिको और अजनबियो की भारी भीड उपस्थित थी और पडोस से माँगकर लाई गई कुर्सियों मे से एक जो काफी नीची थी, मिस्टर शर्ली के हिस्से मे पडी। मैं उनके बगल मे ही बैठा था, यह देखकर बोला, "सर, उन्होने आपको बहुत नीची कुर्सी दी

है।" उन्होने जवाव दिया, "कोई फिकर नही, मिस्टर फ्रेंकलिन, मैं नीची कुर्सी को ही सबसे अधिक सुविधानजनक समझता हूँ।"

पहले बताये अनुसार जब मुझे न्यूयार्क मे रोक रखा गया था, मुझे रसद आदि सम्बन्धी सभी विवरण जो मैंने ब्रैडक को दिये थे, प्राप्त हुए, कुछ मे देरी हुई जो उन भिन्न-भिन्न व्यक्तियो से मिलने थे जिन्हे मैंने अपने व्यापार की सहायता के लिए नौकर रखा था। मैंने उन्हे लार्ड लूडूं के सामने इस विचार से रखा कि बकाया चुकता कर दिया जाय। उन्होने सभी विवरण नियमित रूप से सम्बन्धित अफसर को जाँच करने को दिये, जिसने उसके हर एक वाऊचर की जाँच करके उनके सही होने का सर्टीफिकेट दे दिया, और तब बकाया के चुकता किये जाने के लिए लार्ड ने मुझे खजाची के नाम एक पत्र देने का वादा किया। फिर भी वायदा समय-समय पर टलता गया और इसके लिए मैंने कई बार भेंट करने की कोशिश की, लेकिन कभी भी सफल न हो सका। आखिरी समय मे, जब मैं चलने वाला था, उन्होने मुझे बताया कि काफी सोच-विचार के बाद वे यह तय कर पाये हैं कि अपने हिसाब-किताब को वह अपने पूर्वाधिकारी के हिसाब से मिलाना ठीक नही समझते। उन्होने कहा, "और तुम जब इगलैंड पहुँचोगे तो खजाने मे अपना हिसाब दिखाते ही तुम्हें पैसा मिल जायेगा।"

मैंने यह भी बताया कि न्यूयार्क मे इतना अधिक समय तक रोक लिये जाने के कारण मेरा कितना अधिक पैसा बिना पूर्व सूचना के खर्च हो गया है, अत मुझे तत्काल भुगतान हो जाय, लेकिन इसका भी कुछ प्रभाव नही पडा। और मेरे यह बताने पर कि मैंने बिना किसी कमीशन के काम किया है, इसलिए मेरा पैसा, जो मैंने पेशगी दिया है, रोके रखना हर दृष्टि से अनुचित है, उसने उत्तर दिया "ओह महानुभाव, आप अपने मन से यह विचार निकाल दें कि हमे विश्वास हो जायेगा कि आप लाभ मे नही है, हम ऐसे कामो को अधिक अच्छी तरह समझते हैं, और जानते है कि सेनाओ को रसद आदि चीजें देने वाले लोग इस प्रकार

के साधन काम मे लाते हैं कि उनकी थैलियाँ भर सकें।" मैंने उन्हें विश्वास दिलाने का यत्न किया कि मेरी स्थिति भिन्न थी और मैंने एक कौडी भी नही कमाई है लेकिन वह मुझ पर विश्वास करने के लिए तनिक भी तैयार नही थे और वास्तव में, मुझे तभी से मालूम हुआ कि इस प्रकार के कार्यो मे आशातीत रुपया बनाया जाता । जहाँ तक मेरे बकाया का सवाल है, आज तक मुझे नही मिला है और न आगे ही इसकी उम्मीद है।

हमारे जहाज़ के कप्तान ने चलने से पहले अपने जहाज़ की तेजी की बहुत डीग मारी थी, दुर्भाग्य से जब हम समुद्र मे पहुँचे तो वह चले हुए छियानवे जहाज़ों मे से सबसे अधिक सुस्त रफ्तार वाला साबित हुआ, जो उसके लिए बडी बदनामी की बात साबित हुई। इसके कारण के विषय मे बहुत से अनुमान लगाने के बाद, जब हम एक जहाज के नजदीक पहुँचे जो हम से कम सुस्त नही था फिर भी जो हमसे आगे हो गया था, तो कप्तान ने सभी को जहाज के पिछले भाग मे झण्डे के अधिक से अधिक नजदीक आने के लिए कहा। जब हम वहाँ खडे हो गये तो जहाज की गति बढी और शीघ्र ही उसने अपने पडौसी जहाज को बहुत पीछे छोड दिया। इससे हमारे कप्तान की आशका सत्य सिद्ध हो गई कि जहाज पर आगे की ओर अधिक भार था और ऐसा लगता था कि पानी के सारे पीपे आगे की ओर रख दिये गये थे। उसने उनको पीछे की ओर सरकाने की आज्ञा दी, और ऐसा करने पर जहाज़ की गति स्वाभाविक हो गई और वह बेडे में आगे हो गया।

कैप्टेन ने बताया कि उसका जहाज एक बार तेरह नॉट की गति से चला था जो लगभग तेरह मील प्रति घण्टे के बराबर समझी जाती है। जहाज़ के एक यात्री कप्तान केनेडी भी थे, जो बडे जोर देकर कह रहे थे कि यह असम्भव है, और कभी भी कोई जहाज़ इतनी तेजी से नही चला, और यह कि निश्चय ही या तो जहाज़ की लॉग-लाइन ठीक नही खीची गई थी या उस पर सामान अपेक्षित से कम मात्रा मे लादा

गया था। दोनो कप्तानो के बीच बाज़ी लग गई। तेज हवा बहने पर उनके मतो का निर्णय हो जायेगा। कैनेडी ने लॉग-लाइन की सतर्कता से परीक्षा की और सन्तुष्ट हो जाने पर खुद लगर फेंकना तय किया। कुछ दिनो बाद जब हवा तेज और अनुकूल हुई और जहाज़ के कप्तान लुट्विज ने कहा कि उनके विचार से जहाज तेरह नॉट की गति से चल रहा है तो कैनेडी ने उसकी परीक्षा की और बाजी हार गया।

ऊपर की घटना का वर्णन मैंने निम्न निरीक्षण के लिए किया है। जहाज़ बनाने की कला के अपरिपक्व होने के कारण लोगो का ऐसा विचार रहा है कि बिना परीक्षण के यह जानना सम्भव नही है कि कोई जहाज़ तेज गति से चलने वाला होगा या नही क्योकि तेज चलने वाले जहाज की ही तरह का एक नया जहाज़ तैयार किया गया, लेकिन वह तेज की जगह बेहद सुस्त साबित हुआ। मेरे विचार मे ऐसा कुछ इस कारण से भी होता है कि अलग-अलग नाविको के जहाज़ पर माल लादने, समुद्र मे खीचकर ले जाने, और तब चलाने के अलग-अलग ढंग होते हैं। हाँ, नाविक का अपना तरीका होता है, और एक ही जहाज़ किसी कप्तान की आज्ञा के अनुसार लादे जाने की जगह किसी दूसरे कप्तान के आदेश मे लादा जाने पर अधिक तेज या सुस्त चल सकता है। साथ ही, बहुत कम ही ऐसा होता है कि कोई जहाज़ किसी एक ही आदमी द्वारा चलाया जाता है। एक आदमी उसे तैयार करता है, दूसरा उसे पानी पर तैराता है, तीसरा लादता और चलाता है। इसमे से कोई भी एक-दूसरे के विचारो और अनुभवो से परिश्रम सयोजित करके उचित निर्णय नही कर पाता।

समुद्र मे यात्रा करते समय मामूली कार्यवाहियो के दौरान भी, मैंने अक्सर एक ही किस्म की हवा मे, विभिन्न अफसरो को अलग-अलग ढग से सर्वेक्षण का नेतृत्व करते देखा है। कोई पालो को और मोड देगा तो कोई उन्हें समतल करना चाहेगा, इससे पता चलता था कि नौपरि-वहन के उनमे कोई निश्चित नियम नही है। इसलिए पहली बात मैं

यह सोचता हूँ कि तेजी से नौपरिवहन के लिए जहाज में सबसे उपयुक्त पेटे, दूसरे मस्तूल के सर्वोत्तम परिणाम और उपयुक्ततम स्थान, फिर पालों के आकार और बनावट तथा हवा के अनुकूल उनकी स्थिति, एवं अन्त मे बोझा ढोने की उनकी क्षमता के सम्बन्ध मे कई प्रयोग किये जाने चाहिए। आज तो प्रयोगो का जमाना है, और मैं सोचता हूँ कि सही ढग से बनाई और जोडी गई मशीनें काफी लाभप्रद सिद्ध होगी। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि जल्दी ही कोई प्रवीण विशेपज्ञ इस काम मे हाथ लगाये, जिससे उसकी सफलता की मैं कामना कर सकूं।

अपनी यात्रा के दौरान कई बार हमारा पीछा किया गया, लेकिन हर बार हम बच निकले और तीस दिन के अन्दर-अन्दर हमे समुद्र की थाह लग गई। हमने काफी अच्छी तरह निरीक्षण किया था, और कप्तान ने खुद को अपने फाल्माउथ बन्दरगाह के इतने नजदीक समझा था यदि रात मे हम लोग तेजी से चलते तो सुबह होते-होते हम उस बन्दरगाह के मुहाने से काफी दूर निकल सकते थे, और रात मे इस प्रकार भागते हुए हम दुश्मनो के आदमियो की निगाह में पडे बिना ही रह सकते थे। ये लोग अक्सर मुहाने के समीप ही लगर डाले रहते थे। इस प्रकार, जितना भी मुमकिन था हमने सभी पाल खोल दिये और हवा के काफी माकूल और मुआफिक होने की वजह से हम सीधे काफी रास्ता तय कर ले गये। कप्तान ने अपने सर्वेक्षण और विचार के अनुसार अपना रास्ता इस तरह अख्तियार किया, जिससे सिली टापू को पार किया जा सके। लेकिन लगता है कि कभी-कभी सेंट जार्ज चैनल के पास जल के भीतर ही इतनी तेज धारा बहती थी जिससे नाविक धोखे मे आ जाते थे और इसी की वजह से सर क्लाउडेसले शोवेल की टुकडी नष्ट हो गई थी। शायद यही जल के भीतर बहने वाली तीखी धारा ही हमारे साथ जो कुछ हुआ, उसका कारण थी।

हमारे जहाज मे सामने की ओर एक चौकीदार रहता था, जिससे अक्सर "सामने की ओर मुस्तैदी से निगाह रखो" कहकर पूछ लिया

जाता था, और वह भी 'हो हो' कहकर इसका उत्तर दे दिया करता था, लेकिन ऐसा करते वक्त शायद उसकी आँखें मुँदी रहती थी और वह उनीदा रहता था, यूँ कहा जाय कि वह कभी-कभी यंत्रवत् उत्तर दे दिया करता था। ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योकि उसने ठीक हम लोगों के सामने की ओर की एक वत्ती नही देखी जो फैले हुए पालो की वजह से पतवार के पास नियुक्त व्यक्ति को भी नही दिखाई पडी। अन्य पहरेदार भी चूक गए। अकस्मात् जहाज के हिचकोले लेने के वक्त वस वह रोशनी हमे दिखाई पडी और हम वहुत ही चौकन्ने हो गये। रोशनी के हम काफी नज़दीक थे, सो वह मुझे किसी गाडी के पहिये जितनी वडी दिखाई पड़ रही थी। आधी रात का समय था और कप्तान वेखवर सो रहा था लेकिन कैप्टेन कैनेडी ने उसे जहाज की छत पर चढकर और खतरे का एहसास करते हुए, जहाज के सारे पाल ज्यो के त्यो रखते हुए, जहाज को छिपाने का आदेश दिया। यह कार्रवाई मस्तूलो के लिए खतरनाक थी, फिर भी हम साफ निकल गये। इस प्रकार हमारा जहाज तहस-नहस होने से वच गया क्योकि जिस ओर हम लोग जा रहे थे, उसके ठीक सामने की चट्टानो पर प्रकाशस्तम्भ वना हुआ था। इस छुटकारे से प्रकाशस्तम्भो की उपादेयता के वारे मे मेरी आस्था वहुत वढ गई और मुझे यह संकल्प उत्पन्न हुआ कि यदि मैं जीवित लौटा तो अमेरिका मे प्रकाशस्तम्भो के निर्माण-कार्य को मैं आगे वढाऊँगा।

सुवह के वक्त हमे थाह लेने आदि से पता चला कि हम लोग अपने वन्दरगाह के समीप ही हैं, लेकिन घने कुहासे के कारण हमारा स्थान नजर मे नही आ रहा था। कोई नौ वजे के करीब कुहरा छँटने लगा और पानी पर से इस तरह ऊपर उठने लगा जैसे किसी नाट्य-शाला मे पर्दे उठाते है। अव फालमाउथ नगर, वन्दरगाह मे खडे पोत और आस-पास का इलाका नजर आने लगा। शून्य सागर को अपने चारों ओर फैले देखने के अलावा जिन्हें और किसी चीज की संभावना नही थी उनके लिए यह दृश्य वड़ा ही आनन्ददायक था। हमे यह सोच-सोचकर

और भी खुशी हो रही थी कि युद्धजनित चिन्ताओं से अब मुक्ति मिल गई।

मैं तत्काल अपने बेटे के साथ लन्दन के लिए रवाना हो गया। हम लोग थोडी देर के लिए यूँ ही सलिसबेरी प्लेन स्थित स्टोनहेंज लार्ड पेमब्रोक को बगले और बगीचो और विल्सन मे उनके प्राचीन सग्रहो को देखने के लिए रुके। २७ जुलाई १७५७ को हम लन्दन में थे। मिस्टर चार्ल्स द्वारा ठीक किये कमरे मे ठीक ठिकाना करने के बाद मे डा० फॉदरगिल से मिलने के लिए रवाना हो गया। अपने मामले के सम्बन्ध में मुझे इन्ही से सलाह-मशविरा लेने के लिए कहा गया था और उनके नाम मेरी खातिर सिफारिश भी की गई थी। वे सरकार से फौरन शिकायत किये जाने के खिलाफ थे और उनका ख्याल था कि जमीदारो से पहले निजी तौर पर दरख्वास्त करनी चाहिए, जो संभवतः हालतो और अपने कुछ व्यक्तिगत मित्रो की राय से मामले को शान्तिपूर्वक हल करने के लिए राजी ही हो जायँ। तब मैंने अपने पुराने मित्र और सवाददाता मिस्टर पीटर कॉलिंसन से भेंट की। उन्होने मुझे बताया कि वर्जीनिया के एक बडे व्यापारी जॉन हेनबरी ने मुझसे मेरे यहाँ आते ही मुलाकात करने की इच्छा प्रकट की थी, जिससे वे तत्कालीन कौसिल के प्रेसीडेन्ट लार्ड ग्रेन-विल के पास मुझे लेकर जा सकें। वे जल्दी से जल्दी मुझसे मिलना चाहते थे। मैंने दूसरे दिन सुबह उनके साथ चलना मजूर कर लिया। यथा-निश्चय दूसरे दिन मिस्टर हेनबरी मेरे यहाँ आए और अपनी गाडी पर बैठाकर मुझे लार्ड के यहाँ ले गए। व्यापारी ने बड़े आदर से मुझे बैठाया, अमेरिका की वर्तमान स्थिति के सबन्ध मे थोड़ी बहुत पूछताछ और बातचीत के बाद वे मुझसे बोले, "आप अमरीकियो को अपने सविधान के बारे मे गलत ख्याल है, आप लोगो का कहना है कि राजा द्वारा अपने गवर्नरों को दिये जाने वाले निर्देश कानून नही होते और अपनी मर्जी मुता-बिक उनके पालन अथवा उल्लघन के संबन्ध मे आप लोग स्वतत्र है। लेकिन ये निर्देश विदेश जाते हुए किसी मत्री को किसी कार्य आदि के

बारे मे उसके व्यवहार के नियंत्रण-निमित्त दिये जाने वाले, एहतिहयाती निर्देशपत्र नही होते। इन निर्देशो की रूपरेखा विद्वान् न्यायाधीशो द्वारा तैयार की जाती है, फिर उन पर विचार किया जाता है, बहस की जाती है, और सम्भवतः कौसिल के सशोधन भी किये जाते हैं और फिर कही राजा के उन पर हस्ताक्षर होते है। और फिर जहां तक उनका आप लोगो से सम्बन्ध है, उन्हें इस देश का कानून समझा जाता है, क्योकि राजा उपनिवेशो का विधायक माना जाता है।" मैंने लार्ड महोदय से कहा कि मेरे लिए यह नया सिद्धान्त है। मैंने अपने देश के चार्टरो (माग-पत्रो) से यही जाना-समझा था कि हमारे सारे कानून विधायक परिषदो मे ही बनाये जायेंगे और बस स्वीकृति के लिए उन्हें राजा के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। किन्तु एक बार उन्हें पेश कर दिए जाने पर राजा न उन्हे रद्द कर सकता है और न कोई रद्दोबदल। और जैसे विधान-परिषदे बिना उसकी स्वीकृति के स्थायी कानून नही बना सकती, उसी तरह वह भी उनके बिना उनके लिए कोई कानून नही बना सकता। उन्होने मुझे यह विश्वास दिया कि मैं सरासर भ्रम मे हूं। हालांकि मैंने स्वय इस बात को नही माना। फिर भी लार्ड महोदय की बात से मैं चौकस जरूर हो गया था, सो वापस कमरे मे लौटते ही मैंने अपने लोगों के प्रति अदालत द्वारा अपनाये जा सकने वाले दृष्टिकोण को लिख डाला। मुझे याद पडा कि कोई बीस वर्ष पूर्व पार्लमेण्ट मे एक ऐसा बिल प्रस्ता-वित किया गया था, जिसका उद्देश्य राजा के निर्देशो को उपनिवेशो मे कानून सरीखी मान्यता देना था लेकिन विधेयक की यह धारा लोकसभा मे रद्द कर दी गई थी। इसके लिए हमने उनकी मित्रो और स्वतन्त्रता के समर्थको के रूप मे सराहना की थी। किन्तु जब उन १७६५ मे हम लोगो के प्रति जो उनके बर्ताव से यह बात साफ हुई कि लोकसभा ने सम्प्रभुता का उत्तर अंश केवल इसलिए राजा के हाथ मे सौपने से इन्कार किया था, जिससे वे उस अधिकार को अपने ही हाथो मे सुरक्षित कर सकें।

कुछ दिन बाद, डा० फॉदरगिल द्वारा जमीदारो से बातचीत करने

के बाद, उन लोगों ने स्प्रिंग गार्डेन मे मिस्टर टी० पेन्स के मकान पर मुझसे मुलाकात द्वारा स्वीकार कर लिया। पहले-पहल उचित ढंग से अदायगी के पारस्परिक वायदो के आधार पर बातचीत चली। लेकिन मेरा ख्याल है कि उचित ढंग से अदायगी के सम्बन्ध में दोनों पक्षों के अपने-अपने विचार थे। इसके बाद मैंने शिकायतो को खुलासा किया, और फिर उस पर भी विचार-विमर्श किया गया। जितना बन पडा मालिको ने अपने रवैये को न्यायसंगत बताया। मैंने एसेम्बली के रवैये की पैरवी की। अब हममे काफी मतभेद हो चुका था। एक-दूसरे के मतों से हम लोग इतने अलग हो गए कि समझौते की कोई भी आशा नहीं रही। अन्त मे यह तय पाया गया कि मैं अपनो शिकायतो का लिखित विवरण पेश करूँ और उन लोगो ने उस पर गौर करने का वायदा किया। उसके बाद ही मैंने सब-कुछ लिख कर दे दिया, किन्तु उन लोगो ने वे कागज अपने वकील फर्डिनान्ड जान पेरिस के हाथों मे सौंप दिए। पेरिस पिछले ७० वर्षों से चले आते लार्ड बाल्टीमूर की मेरीलैंड स्थित पार्श्व सम्पत्ति के मामले में, इन मालिकों के मुकदमे सम्बन्धी सारे कागजातो आदि का प्रबन्ध करता था, और उसने ही इस विवाद मे असेम्बली को मालिको की ओर से भेजे गए सारे संदेशों और कागजातों को लिखा था। वह दम्भी और क्रोधी व्यक्ति था और चूंकि मैंने अक्सर असेम्बली में उसके कागजातों के जवाब देने में कुछ कडाई की थी, यद्यपि उसकी दलीलें सचमुच कमजोर और आवेशपूर्ण हुआ करती थी, उसने मुझसे कट्टर दुश्मनी साध रखी थी। जब कभी हमारी मुलाकात होती तो वह इसका इजहार भी करता। इसलिए मैंने भूस्वामियो के इस प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर दिया कि हमारे दोनो पक्षो के बीच की शिकायतो पर फर्डिनान्ड के जरिए बातचीत हो। मैंने सिवाय मालिकों के और किसी के भी साथ बातचीत करने से इन्कार कर दिया। इसके बाद उन लोगो ने उसकी राय पर कागजात सम्मति और सलाह के लिए एटर्नी और सालीसिटर जनरल के सिपुर्द कर दिये। आठ दिनो की

मुहलत के बजाय कागजात वहाँ एक साल तक पडे रहे। इस दौरान मैंने अनेक बार जमीदारो से जवाब पाने की कोशिश की, लेकिन हर बार सिर्फ यही उत्तर मिलता कि सालिसिटर और एटर्नी जनरल से उन्हें अभी तक कोई खबर नही मिली। आखिर उन्हे क्या जवाब मिला था यह मुझे कभी पता नही चला, क्योकि उन लोगो ने मुझे इसकी कोई सूचना नही दी। बजाय इसके उन्होने असेम्बली के पास पेरिस द्वारा तैयार और दस्तखतशुदा एक लम्बा खरीता भेजा, जिसमे मेरे कागज का हवाला दिया गया था, और मेरी धृष्टता के तौर पर औपचारिकता के अभाव की शिकायत की गई थी, और साथ ही अपने आचरण के हल्के ढंग से युक्तिसगत भी बताया गया था। उसमे कहा गया था कि यदि असेम्बली किसी निष्कपट व्यक्ति को इस मामले मे हल के लिए भेजे तो वे निबटारे के लिए सहमत होंगे। किन्तु मैं ऐसा व्यक्ति नही हूँ।

सम्भवत. औपचारिकता का अभाव अथवा मेरी धृष्टता का कारण, मेरा उनको उनके द्वारा अपने-आप धारण की गई 'पेंसिलवानिया प्रान्त के असली और सार्वभौम स्वामी' की उपाधि से विभूषित न करना था। मैंने मौखिक रूप से हुई बातचीत को केवल लिखित रूप देने के इरादे से लिखे गए कागज मे इसे अनावश्यक समझकर ही छोड दिया था।

लेकिन इसी विलम्ब के दौरान मे, असेम्बली द्वारा गवर्नर डेनी की सहमति से, जनता की सम्पत्ति के साथ-साथ भूस्वामियो की भी सम्पत्ति पर कर लगाने का कानून पास कर देने से उन लोगो ने सदेशो का उत्तर देना बन्द कर दिया। हमारे विवाद की खास जड यही थी।

जब यह कानून सामने आया तो भूस्वामियो ने पेरिस की सलाह से उसे राजकीय स्वीकृति दिये जाने का विरोध करने का सकल्प किया। सो उन्होने राजपरिषद् मे याचिका प्रस्तुत की और सुनवाई की मंजूरी भी मिल गई। मामले की पैरवी के लिए भूस्वामियो ने दो वकील और कानून के समर्थन के लिए दो वकील मैंने पेश किये। उनका आरोप था कि सम्पत्ति को दबा देने की गरज से यह कानून बनाया गया है, और यदि

यह कानून लागू रहा तथा भूस्वामियो को, जिनका और जनता के बीच विद्वेष है, कर-निर्धारण के मामले मे जनता की कृपा पर छोड दिया गया तो निश्चय ही उनका नाश हो जायेगा। हम लोगो ने जवाब मे कहा कि कानून का ऐसा कोई इरादा नही और न ही उसका ऐसा कोई असर ही पडेगा। कर-निर्धारण करने वाले ईमानदार और निष्कपट व्यक्ति होते है और सही एव उचित ढंग से कर-निर्धारण की वे शपथ भी लेते है, और महज भूस्वामियों का कर बढाने के लिए जनता का कर कम करके वे किसी लाभ की आशा मे अपने को कलुषित नही करेंगे, इसी आशय की दलीलें पेश की गईं। अलबत्ते हमने कानून को रद्द करने पर आगे आने वाले शरारत भरे पहलुओ पर विशेष जोर दिया। क्योकि १००,००० पौड की जो रकम राजा के इस्तेमाल और उनकी सेवा मे खर्च के लिए दी गई है और जो अब जनता मे खपी हुई है, वह धनराशि इस कानून के रद्द हो जाने से बेकार हो जायेगी और कितने ही इससे तबाह हो जायेंगे। हमने भावी अनुदानो का भी सख्त विरोध किया और मालिको की सिर्फ इस निराधार शका पर कि उनकी सम्पत्ति पर बहुत ज्यादा कर लगेगा, इस समय आफत ढाने की स्वार्थपरता की निन्दा की। इसके बाद उनमे से एक वकील लार्ड मैन्सफील्ड उठे और इशारे से मुझे बुलाकर क्लर्क के कमरे मे ले गए। इस बीच वकीलो की बहस जारी थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या सचमुच मेरी राय मे इस कानून के लागू होने पर भूस्वामियों की सम्पत्ति को कोई क्षति नही पहुँचेगी। फिर उन्होने कहा, "तब इस बात की ताईद मे एक समझौता होने मे आपको कोई आपत्ति नही हो सकती।" मैंने कहा, "बिलकुल नही।" उन्होने इसके बाद पेरिस को बुलाया और थोडी बातचीत के बाद लार्ड महोदय के प्रस्ताव को दोनो पक्षो द्वारा स्वीकार कर लिया गया। कौसिल के क्लर्क द्वारा इस आशय का कागज तैयार किया गया, जिस पर मैंने और मिस्टर चार्ल्स ने, जो प्रान्त की ओर से मामूली मामलो के एजेंट थे, दस्तखत कर दिये। बाद मे लार्ड मैन्सफील्ड कौसिल भवन मे वापस लौटे, जहाँ अन्तिम रूप से कानून को पास होने

दिया गया। कुछ परिवर्तनो की सिफारिश की गई और हमने भी मान लिया कि एक दूसरे कानून द्वारा परिवर्तन हो जाना चाहिए, किन्तु असेम्बली ने उसे जरूरी नही समझा, क्योकि कौंसिल का आदेश पहुचने से पहले ही कानून द्वारा एक साल का कर लगाया जा चुका था, इसलिए उन्होने निर्धारको की कार्यवाही की जाँच के लिए एक समिति नियुक्त कर दी और इस समिति मे भूस्वामियों के अनेक खास दोस्तो को शामिल कर लिया। पूरी पडताल के बाद, उन्होने सर्वसम्मति से इस रिपोर्ट पर हस्ताक्षर कर दिये कि पूरी निष्पक्षतापूर्वक कर निर्धारित किया गया है।

चूंकि समझौते के पहले भाग से सारे प्रदेश मे चलने वाले नोटो को साख मिल गई थी, इसलिए उस पर मेरी सहमति को असेम्बली ने प्रान्त की एक आवश्यक सेवा के रूप मे मान्यता दी। मेरे लौटने पर रस्मी तौर पर उन्होने मुझे धन्यवाद दिया। किन्तु कानून पास किए जाने की वजह से भूस्वामी गवर्नर डेनी से बेहद चिढे हुए थे और निर्देशो मे उल्लघन के लिए, जिसमे पालन की उन्होने प्रतिज्ञा की थी, मुकदमा चलाने की धमकी देकर बाहर निकल आए। जनरल के कहने पर और सरकार की सेवा के लिए यह सब कुछ करने पर तथा अदालत मे काफी दबदबा होने के कारण गवर्नर ने धमकियो को ठुकरा दिया और वे धमकियाँ कभी कार्यरूप मे परिणत नही हुईं।......

[अपूर्ण]